घातक-सुधा

अनुवादक—बाबू रघुपति सहाय, बी० ए०

यह एक फ्रांसीसी आध्यात्मिक कहानी का सरल अनुवाद है। बहुत ही रोचक, मूल्य ।)

लोकवृत्ति

लेखक—स्व० बाबू जगन्मोहन वर्मा

इस उपन्यास में वर्तमान समाज का बहुत ही मनोह चित्र खींचा गया है। ईसाई मिशन की लेडियों के हथकण्डे असामियो और जमींदारों की मुकदमेबाज़ी, अछूतों के सुधा आदि विषय का इस उपन्यास में ऐसा उत्तम समावेश किर गया है कि पढ़ने से आँखें खुल जाती हैं। पृष्ठ-संख्या ए भग ३००, मूल्य १।) सचित्र।

आज़ाद-कथा

बासठवाँ परिच्छेद

जमाना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गाँव में पड़ी थी, आज सुरैयाबेगम बनी हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बैठी हुई है। यह सब रुपए का खेल है।

सुरैयाबेगम—क्यों महरी, रोशनी काहे की है? न लैम्प, न झाड़, न कँवल और सारा खेमा जगमगा रहा है।

महरी—हुज़ूर, अक्ल काम नहीं करती। जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिये और दुनिया-भर जगमगाने लगी।

सुरैयाबेगम—दारोगा कहाँ है? किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है?

महरी—हुज़ूर, वह तो चले गये।

सुरैयाबेगम—क्या बाजा है, वाह-वाह!

महरी—हुज़ूर, गोरे बजा रहे हैं।

सुरैयाबेगम—जरा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ़-चढ़कर हैं। घोड़े क्या, देव हैं। कितना चौड़ा माथा है, और जरा-सी थुँथनी! कितनी थोड़ी-सी जमीन में चक्कर देते हैं। वल्लाह, अक्ल दंग है।

महरी—बेगमसाहब, कमाल है।

सुरैयाबेगम—इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं।

महरी—सच है हुजूर, यह सब जादू के खेल हैं।

सुरैयाबेगम—मगर जादूगर भी पक्के है।

महरी—ऐसे जादूगरों से खुदा समझे।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आई थी, चिढ़कर बोली—ऐ वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें! आखिर, उनका कुसूर क्या है, यही न कि तमाशा दिखाते हैं?

महरी—यह तमाशेवाले तुम्हारे कौन हैं?

औरत—तुम्हारे कोई होंगे।

महरी—फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं?

औरत—बहन, किसी को पीठ-पीछे बुरा न कहना चाहिए।

महरी—ऐ, तो तुम बीच में बोलनेवाली कौन हो?

औरत—तुम सब तो जैसे लड़ने आई हो। बात की, और मुँह नोच लिया।

सुरैयाबेगम के साथ महरी के सिवा और भी कई लौंडियाँ थीं, उनमें एक का नाम अब्बासी था। वह निहायत हसीन और बला की शोख थी। उन सबों ने मिलकर इस औरत को बनाना शुरू किया—

महरी—गाँव की मालूम होती हैं!

अब्बासी—गँवारिन तो हैं ही, यह भी कहीं छिपा रहता है?

सुरैयाबेगम—अच्छा, अब बस, अपनी ज़बान बंद करो। इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की ज़बान तक न हिली। और हम आपस में कटी मरती है।

इतने में सामने एक जीबरा लाया गया। सुरैयाबेगम ने कहा—यह कौन जानवर है? किसी मुल्क का गधा तो नहीं है? चूँ तक नहीं करता। कान दबाए दौड़ता जाता है।

अब्बासी—हुजूर, बिलकुल बस मे कर लिया।

महरी—इन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी। जरा इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतब दिखाए कि चारों तरफ तालियाँ पड़ने लगीं। सुरैयाबेगम ने भी खूब तालियाँ बजाईं। जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग बैठे थे। बेगम साहब को तालियाँ बजाते सुना तो एक रँगीले शेखजी बोले—

कोई माशूक है इस परदए जंगारी मे।

मिरजासाहब—रगों में शोखी कूट-कूटकर भरी है।

पंडितजी—शौकीन मालूम होती हैं।

शेखजी—वल्लाह, अब तमाशा देखने को जी नहीं चाहता।

मिरजासाहब—एक सूरत नज़र आई।

पंडितजी—तुम बड़े ख़ुशनसीब हो।

ये लोग तो यों चहक रहे थे। इधर सरकस में एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बन्द थे। शेरों के आते ही चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। अब्बासी बोली—देखिए हुजूर, वह शेर जो बीचवाले कठघरे में बंद है, वही सबसे बड़ा है।

महरी—और गुस्सेवर भी सबसे ज्यादा मालूम होता है। कैसी नीली-नीली आँखें हैं। और जब मुँह खोलता है तो ऐसा मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जाएगा।

सुरैयाबेगम—कहीं कठघरा तोड़कर निकल भागें तो सबको खा जावें।

महरी—नहीं हुजूर, सधे हुए हैं। देखिए वह आदमी एक शेर का कान पकड़कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है। देखिए-देखिए हुजूर, उस आदमी ने एक शेर को लिटा दिया और किस तरह पाँव से उसे रौंद रहा है।

अब्बासी—शेर क्या है, बिलकुल बिल्ली है। देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती हो रही है। कभी शेर आदमी को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रहा। इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज़ बिछाई गई और उस पर बड़े बड़े गोश्त के टुकड़े रक्खे गए। एक आदमी ने सीख को एक टुकड़े में छेद दिया और गोश्त को कठघरे में डाला। गोश्त का पहुँचना था कि शेर उसके ऊपर ऐसा लपका जैसे किसी ज़िन्दा जानवर पर शिकार करने के लिये लपकता है। गोश्त को मुँह में दबाकर बार-बार डकारता था और ज़मीन पर पटक देता था। जब डकारता, मकान गूँज जाता और सुननेवालों के रोंगटे खडे हो जाते। बेगम ने घबराकर कहा—मालूम होता है शेर कठघरे से निकल भागा है। कहाँ हैं दारोग़ाजी, जरा उनको बुलाना तो!

बेगमसाहब तो यहाँ मारे डर के चीख रही थीं, और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकीलसाहब और मियाँ सलारबख्श में तकरार हो रही थी—

वकील—रुक क्यों गया बे? बाहर क्यों नहीं चलता?

सलारबख्श—तो आप ही आगे बढ़ जाइए न!

वकील—तो अकेले हम कैसे जा सकते है?

सलारबख्श—यह क्यों? क्या भेड़िया खा जायगा? या पीठ पर लादकर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले-पतले भी तो आप नहीं हैं! हाथी पर बैठिए तो काँख दे।

वकील—बगैर नौकर के जाना हमारी शान के खिलाफ़ है।

सलारबख्श—तो आपका नौकर कौन है? हम तो इस वक्त मालिक मालूम होते हैं।

वकील—अच्छा, बाहर निकलकर इसकका जवाब दूँगा। देख तो सही!

सलारबख्श—अजी, जाओ भी, जब यहाँ ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओगे? अब चुपके हो रहिए। नाहक-बिन-नाहक की बात बढ़ेगी।

वकील—बस, हम इन्हीं बातों से तो खुश होते हैं।

सलारबख्श—खुदा सलामत रक्खे हुजूर को। आपकी बदौलत हम भी दो गाल हँस-बोल लेते हैं।

वकील—यार, किसी तरह इस सुरैयाबेगम का पता तो लगाओ कि यह कौन हैं। शिब्बोजान तो चकमा देकर चली गईं, शायद यही निकाह पर राजी हो जायँ!

सलारबख्श—ज़रूर! और खूबसूरत भी आप ऐसे ही हैं।

सुरैयाबेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दिल में हँसती जाती थी। इतने में एक खूबसूरत जवान नज़र पड़ा। हाथ-पाँव साँचे के ढले हुए, मसें भीगती हुईं, मियाँ आज़ाद से सूरत बिलकुल मिलती थी। सुरैयाबेगम की आँखों में आँसू भर आये। अब्बासी से कहा—ज़री, दारोग़ासाहब को बुलाओ। अब्बासी ने बाहर आकर देखा तो दारोग़ा साहब हुक्क़ा पी रहे हैं। कहा—चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ।

दारोग़ा—अच्छा-अच्छा! चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है! ज़रा हुक्क़ा तो पी लेने दो।

अब्बासी—अच्छा न चलिए, फिर हमको उलाहना न दीजिएगा! हम जताए जाते हैं।

दारोग़ा—(हुक्का पटककर) चलो, साहब चलो। अच्छी नौकरी है, दिन-रात गुलामी करो तब भी चैन नहीं। यह महीना खत्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोग़ासाहब जब सुरैयाबेगम के पास पहुँचे तो उन्होंने आहिस्ता से कहा—वह जो कुर्सी पर एक जवान काले कपड़े पहनकर बैठा हुआ है। उसका नाम जाकर दर्याफ्त करो। मगर आदमियत से पूछना।

दारोगा—या खुदा, हुजूर बड़ी कड़ी नौकरी बोलीं। गुलाम को ये सब बातें याद क्योंकर रहेंगी। जैसा हुक्म हो।

अब्बासी—ऐ, तो बातें कौन ऐसी लम्बी-चौड़ी हैं जो याद न रहेगी?

दारोगा—अरे भाई, हममें तुममें फ़र्क़ भी तो है! तुम अभी सत्रह-अठारह वर्ष की हो और यहाँ बाल सफ़ेद हो गये हैं। ख़ैर, हुजूर जाता हूँ।

दारोग़ासाहब ने जवान के पास जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि उनका नाम मियाँ आज़ाद है। बेगमसाहब ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खुशी के आँखों में आँसू भर आये। दारोग़ा को हुक्म दिया, जाकर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप जानते हैं? आज नमक का हक अदा करो। किसी तरकीब से इनको मकान तक लाओ।

दारोग़ासाहब समझ गये कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया। अब खुदा ही खैर करे। अगर अलारक्खी का ज़िक्र छेड़ा और ये बिगड़ गये तो बड़ी किरकिरी होगी। और अगर न जाऊँ तो यह निकाल-बाहर करेंगी। चले, पर हर क़दम पर सोचते जाते थे कि न-जाने क्या आफत आये। जाकर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले—एक अर्ज़ है हुज़ूर, मगर शर्त यह है कि आप खफा न हों। सवाल के जवाब में सिर्फ़ 'हाँ' या 'नहीं' कह दें।

जवान—बहुत खूब! 'हाँ' कहूँगा या 'नहीं'।

दारोगा—हुज़ूर का गुलाम हूँ।

जवान—अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना हो कहिए। मैं बुरा न मानूँगा।

दारोगा—एक बेगमसाहब पूछती हैं, कि हुजूर अलारक्खी के नाम से वाकिफ हैं?

जवान—बस, इतनी ही बात! अलारक्खी को मैं खूब जानता हूँ। मगर यह किसने पूछा है?

दारोगा—कल सुबह को आप जहाँ कहें, वहीं आ जाऊँ। सब बातें तय हो जायँगी।

जवान—हज़रत, कल तक की खबर न लीजिए वरना आज रात को मुझे नींद न आएगी।

दारोगा ने जाकर बेगमसाहब से कहा—हुजूर, वह तो इसी वक्त आने कहते हैं। क्या कह दूँ? बेगम बोलीं—कह दो, जरूर साथ चलें।

उसी जगह एक नवाबसाहब अपने मुसाहबों के साथ बैठे तमाशा देख रहे थे। नवाब ने फ़रमाया—क्यों मियाँ नत्थू, यह क्या बात निकाली है कि जिस जानवर को देखो बस में आ गया। अक्ल काम नहीं करती।

नत्थू—खुदावन्द, बस बात सारी यह है कि ये लोग अक्ल के पुतले हैं। दुनिया के परदे पर कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका इल्म इनके यहाँ न हो। चिड़िया का इल्म इनके यहाँ, हल चलाने का इल्म इनके यहाँ, गाने-बजाने का इल्म इनके यहाँ। कल जो बारहदरी की तरफ़ से होकर गुज़रा तो देखा, बहुतसे आदमी जमा हैं। इतने में अँगरेज़ी बाजा बजने लगा तो हुजूर जो गोरे बाजा बजाते थे, उनके सामने एक-एक किताब खुली हुई थी। मगर बस, धोंतू धोंतू! इसके सिवा कोई बोल ही सुनने में नहीं आया।

मिरज़ा—हुजूर के सवाल का जवाब तो दो! हुजूर पूछते हैं कि जानवरों को बस में क्यों कर लाए?

नत्थू—कहा न कि इनके यहाँ हर बात का इल्म है। इल्म के ज़ोर से देखा होगा कि कौन जानवर किस चीज़ पर आशिक़ है। बस, वही चीज़ मुहैया कर ली।

नवाब—तसल्ली नहीं हुई। कोई ख़ास वजह ज़रूर है।

नत्थू—हुजूर, हिन्दोस्तान का नट भी वह काम करता है जो किसी और से न हो सके। बाँस गाड़ दिया, ऊपर चढ़ गया और अँगूठे के ज़ोर से खड़ा हो गया।

मिरज़ा—हुजूर, ग़ुलाम ने पता लगा लिया। जो कभी झूठ निकले तो नाक कटवा डालूँ। बस, हम समझ गए। हुजूर, आज तक कोई बड़े से बड़ा पहलवान भी शेर से नहीं लड़ सका। मगर इस जवान की हिम्मत को देखिए कि अकेला तीन-तीन शेरों से लड़ता रहा। यह आदमी का काम नहीं है और अगर है तो कोई आदमी कर दिखाए! हुजूर के सिर की कसम, यह जादू का खेल है। वल्लाह, जो इसमें फर्क हो तो नाक कटवा डालूँ।

नवाब—सुभान-अल्लाह, बस यही बात है।

नत्थू—हाँ, यह माना। यहाँ पर हम भी क़ायल हो गए। इंसाफ शर्त है।

नवाब—और नहीं तो क्या, ज़रा-सा आदमी और आधे दर्जन शेरों से कुश्ती लड़े। ऐसा हो सकता है भला! शेर लाख कमज़ोर हो जाय, फिर शेर है। ये सब जादूगर हैं। जादू के जोर से शेर, रीछ और सब जानवर दिखा देते हैं। असल में शेर-वेर कुछ भी नहीं हैं। सब जादू ही जादू है।

नत्थू—हुजूर, हर तरह से, रुपया खींचते हैं। हुजूर के सिर की क़सम। हिन्दोस्तानी इससे अच्छे शेर बनाकर दिखा दें। क्या यहाँ जादूगरी है

ही नहीं? मगर कदर तो कोई करता ही नहीं। हुज़ूर, ज़रा ग़ौर करते तो मालूम हो जाता कि शेर लड़ते तो थे, मगर पुतलियाँ नहीं फिरती थीं। बस, यहीं मालूम हो गया कि जादू का खेल है।

ज़बरखाँ—वल्लाह, मैं भी यही कहनेवाला था। मियाँ नत्थू मेरे मुँह से बात छीन ले गए।

नत्थू—भला शेरों को देखकर किसी को भी डर लगता था। ईमान से कहिएगा।

ज़बरखाँ—मगर जब जादू का खेल है तो शेर से लड़ने में कमाल ही क्या है।

नवाब—और सुनिए, इनके नज़दीक कुछ कमाल ही नहीं! आप तो वैसे शेर बना दीजिए! क्या दिल्लगीबाज़ी है? कहने लगे इसमें कमाल ही क्या है!

मिरज़ा—हुज़ूर, यह ऐसे ही बेपर की उड़ाया करते हैं।

नत्थू—जादू के शेरों से न लड़ें तो क्या सचमुच के शेरों से लड़ें? वाह री आपकी अक्ल!

नवाब—कहिए तो उससे जो समझदार हो। बेसमझ से कहना फ़ज़ूल है।

नत्थू—हुज़ूर, कमाल यह है कि हज़ारों आदमी यहाँ बैठे हैं, मगर एक की समझ में न आया कि क्या बात है।

नवाब—समझे तो हमीं समझे!

मिरज़ा—हुज़ूर की क्या बात है। वल्लाह, खूब समझे!

इतने में एक खिलाड़ी ने एक रीछ को अपने ऊपर लादा और दूसरे की पीठ पर एक पाँव से सवार होकर उसे दौड़ाने लगा। लोग दंग हो गए। सुरैयाबेगम ने उस आदमी को पचास रुपए इनाम दिए।

वकील साहब ने यह कैफ़ियत देखी तो सुरैयाबेगम का पता लगाने के लिए बेकरार हो गए। सलारबख्श से कहा—भैया संगारू, इस बेगम का पता लगाओ। कोई बड़ी अमीर-कबीर मालूम होती हैं।

सलारबख्श—हमें तो यह अफ़सोस है कि तुम भालू क्यों न हुए। बस, तुम इसी लायक़ हो कि रस्सों से जकड़कर दौड़ाए।

वकील—अच्छा बचा, क्या घर न चलोगे?

सलारबख्श—चलेंगे क्यों नहीं, क्या तुम्हारा कुछ डर पड़ा है?

वकील—मालिक से ऐसी बातें करता है? मगर यार, सुरैयाबेगम का पता लगाओ।

मियाँ आज़ाद, नवाब और वकील दोनों की बातें सुन-सुनकर दिल ही दिल में हँस रहे थे। इतने में नवाब साहब ने आज़ाद से पूछा—क्यों जनाब, यह सब नजरबन्दी है या कुछ और?

आज़ाद—हजरत, यह सब तिलस्मात का खेल है। अक्ल काम नहीं करती।

नवाब—सुना है, पाँच कोस के उधर का आदमी अगर आए तो उस पर जादू का खाक असर न हो।

आज़ाद—मगर इनका जादू बड़ा कड़ा जादू है। दस मंजिल का आदमी भी आए तो चकमा खा जाए।

नवाब—आपके नजदीक वह कौन अँगरेज बैठा था?

आज़ाद—जनाब, अँगरेज़ और हिन्दोस्तानी कहीं नहीं हैं। सब जादू का खेल है।

नवाब—इनसे जादू सीखना चाहिए।

आज़ाद—ज़रूर सीखिए। हजार काम छोड़कर।

जब तमाशा ख़त्म हो गया तो सुरैयाबेगम ने आज़ाद को बहुत तलाश

एवज जब एक दिल के लाख दिल हों मेरे पहलू में;
तड़पने का मजा तब फुरक़ते दिलदार में आए।
नहीं परवा हमारा सिर जो कट जाए तो कट जाए;
थके बाजू न कातिल का न बल तलवार में आए।
दमे-आखिर वह पोंछे अश्क 'सफदर' अपने दामन से;
लाही रहम इतना तो मिजाजे यार में आए।

सुरैयाबेगम को सारी रात जागते गुजरी। सवेरे दारोगा ने आकर सलाम किया।

बेगम—आज का इक़रार है न?

दारोग़ा—हाँ हुजूर, खुदा मुझे सुर्खरू करे। अलारक्खी का नाम सुनकर तो वह बेखुद हो गए। क्या अर्ज करूँ हुजूर!

बेगम—अभी जाइए और चारों तरफ़ तलाश कीजिए।

दारोगा—हुजूर, ज़रा सवेरा तो हो ले, दो-चार आदमियों से मिलूँ, पूछूँ-बूछूँ तब तो मतलब निकले। यों बटरकरलैस किस मुहल्ले में जाऊँ और किससे पूछूँ?

अब्बासी—हुजूर, मुझे हुक्म हो तो मैं भी तलाश करूँ। मगर भारी-सा जोड़ा लूँगी।

बेगम—जोड़ा! अल्लाह जानता है सिर से पाँव तक जेवर से लदी होगी।

बीअब्बासी बन ठनकर चलीं और उधर दारोग़ाजी मियाने पर लदकर रवाना हुए। अब्बासी तो खुश-खुश जाती थी और यह मुँह बनाए सोच रहे थे कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ? अब्बासी लहँगा फड़काती हुई चली जाती थी कि राह में एक नवाबसाहब की एक महरी मिली। दोनों में घुल-घुलकर बातें होने लगीं।

अब्बासी—कहो बहन, खुश तो हो!

चन्नू—हाँ बहन, अल्लाह का फ़ज़ल है। क्यों अब्बासी?

अब्बासी—कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती फिरती हूँ।

चन्नू—कौन है, मैं भी सुनूँ।

अब्बासी—यह तो नहीं जानती, पर नाम है मियाँ आज़ाद। बचन जवान हैं।

चन्नू—अरे, उन्हें मैं ख़ूब जानती हूँ। इसी शहर के रहनेवाले हैं। मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं। कहीं शादी तो नहीं की? है तो जवान पैना ही।

अब्बासी—ऐ, हटो भी! यह दिल्लगी हमें नहीं भाती।

चन्नू—लो, यह मकान आ गया। बस, इसी में रहते हैं! 'गोद न जोता, अल्लाह-मियाँ से माँगता'।

चन्नू तो अपनी राह गई, अब्बासी एक गली में होकर एक बुढ़िया के मकान पर पहुँची। बुढ़िया ने पूछा—अब किस सरकार में हो जी?

अब्बासी—हुस्नआरा बेगम के यहाँ।

बुढ़िया—और उनके मियाँ का क्या नाम है?

अब्बासी—अभी क्वाँरी हैं।

बुढ़िया—जो क्वाँरी हैं या बेवा! कोई जान-पहचान मुलाकाती है या कोई नहीं है?

अब्बासी—एक बूढ़ी-सी औरत कभी कभी आया करती हैं। और तो हमने किसी को आते-जाते नहीं देखा।

बुढ़िया—कोई मर्दज़ाद भी आता-जाता है?

अब्बासी—क्या मजाल! चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती? इतने दिनों में सिर्फ़ एक तमाशा देखने गई थीं।

बुढ़िया—ऐ लो, और सुनो! तमाशा देखने जाती हैं और फिर कहती हो कि ऐसी-वैसी नहीं हैं। अच्छा, हम टोह लगा लेंगी।

अब्बासी—उन्होंने तो कसम खाई है कि शादी ही न करूँगी, और अगर करूँगी भी तो एक खूबसूरत जवान के साथ जो आपका पड़ोसी है। मियाँ आजाद नाम है।

बुढ़िया—अरे, यह कितनी बड़ी बात है! गो मैं वहाँ बहुत कम आती-जाती हूँ पर वह मुझे खूब जानते हैं। बिलकुल घर का-सा वास्ता है। तुम बैठो, मैं अभी आदमी भेजती हूँ।

यह कहकर बुढ़िया ने एक औरत को बुलाकर कहा—छोटे मिरजा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए।

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जाकर मिरजा आजाद को बुढ़िया का पैगाम सुनाया। हुजूर, वह खबर सुनाऊँ कि आप भी फड़क जायँ। मगर इनाम देने का वादा कीजिए।

आजाद—आजाद नहीं, अगर मालामाल न कर दें।

मुबारक—उछल पड़िएगा।

आज़ाद—क्या कोई रक़म मिलनेवाली है?

मुबारक—अजी, वह रक़म मिले कि नवाब हो जाओ। एक बेगम-साहब ने पैगाम भेजा है। बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए।

आज़ाद—उनको यहीं न बुला लाओ।

मुबारक—मैं बैठी हूँ, आप बुलवा लीजिए।

थोड़ी देर में बुढ़िया एक डोली पर सवार आ पहुँची और बोली—क्या इरादे हैं? कब चलिएगा?

सब चौंक पड़े। एक बोला—लेना-लेना! चोर-चोर! पकड़ लेना! जाने न पाए। बड़ी मुशकिल से चन्द घोड़े पकड़े गये। कुछ जख्मी हुए, कुछ भाग गये। अब तहकीकात शुरू हुई। आजाद मिरजा भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगड़ रहे थे जिसने घोड़े छोड़े थे। अफ़सर से बोले—यह शैतान का काम है, खुदा की कसम।

अफ़सर–उसकी गोशमाली की जायगी।

आज़ाद—वह इसी लायक है। मिल जाय तो चचा ही बनाकर छोड़ूँ!

खैर, एक बार एक दफ़तर में आप क्लर्क हो गये। एक दिन आपको दिल्लगी सूझी, सब अमलों के जूते उठाकर दरिया में फेंक दिए। सरिश्तेदार उठे, इधर-उधर जूता ढूँढ़ते हैं, कहीं पता ही नहीं। नाज़िर उठे, जूता नदारद। पेशकार को साहब ने बुलाया, देखते हैं तो जूता गायब।

पेशकार—अरे भाई, कोई साहब जूता ही उड़ा ले गये।

चपरासी—हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार—वाह, अच्छा लाला बिशुनदयाल, ज़रा अपना बूट तो उतार दो।

लाला बिशुनदयाल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहनकर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गये।

साहब—वेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर हो गया। बहुत बड़ा कीमती बूट पहना है।

पेशकार—हुजूर, कोई साहब जूता उड़ा ले गये। दफ़तर में किसी का जूता नहीं बचा।

बड़े साहब तो मुसकिराकर चुप हो गये, मगर छोटे साहब बड़े दिल्लगीबाज़ आदमी थे। इजलास से उठकर दफ़तर में गये तो देखते हैं कि क़हक़हे पर कहकहा पड़ रहा है। सब लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं।

छोटे साहब ने कहा—हम इस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया। जिस दिन हमारा जूता गायब कर दे, हम उसको इनाम दें।

आजाद—और अगर हमारा जूता ग़ायब कर दे तो हम पूरे महीने की तनख्वाह दे दें।

एक बार मिरज़ा आज़ाद एक हिन्दू के यहाँ गये। वह इस वक्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डाटकर कहा—एँ, यह क्या शरारत !

आज़ाद—कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो ?

ठाकुर—रसोई जूठी कर दी !

आज़ाद—भई, बड़ा अफ़सोस हुआ। हम यह क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा ?

ठाकुर—नहीं जी, कोई मुसलमान खा लेगा।

आजाद—तो हमसे बढ़कर और कौन है।

आजाद बिस्मिल्लाह कहकर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा—हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दाँत है ?

ख़ैर, आज़ाद ने पत्तों में खाना खाया और दुआ दी कि ख़ुदा करे ऐसा एक उल्लू रोज फँस जावे।

डोम-धारी, तबलिए गवैए, कलावँत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिरज़ा आज़ाद से मुलाक़ात न हो। एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपए इनाम दिए। तब से उस गिरोह में इनकी धाक बैठ गई थी। एक बार आप पुलीस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार

थे। आज़ाद का घोड़ा टर्रा था, और इनसे बिना मज़ाक़ के रहा न जाया चाहे। चुपके से उतर पड़े। घोड़ा हिनहिनाता हुआ इंस्पेक्टरसाहब के घोड़े की तरफ चला। उन्होंने लाख सँभाला लेकिन गिर ही पड़े। पीठ में बड़ी चोट आई।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब बेगमसाहब के यहाँ पहुँचीं तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन् कमरे के अन्दर चली गईं। बुढ़िया ने आकर पूछा—हुज़ूर, कहाँ तशरीफ़ रखती हैं।

बेगम—अब्बासी, कहो क्या खबरें हैं?

अब्बासी—हुज़ूर के अकबाल से सब मामला चौकस है।

बेगम—आते हैं या नहीं? बस, इतना बता दो।

अब्बासी—हुज़ूर, आज तो उनके यहाँ एक मेहमान आ गये, मगर कल ज़रूर आवेंगे।

इतने में एक महरी ने आकर कहा—दारोगासाहब आये हैं।

बेगम—आ गये! जीते आये, बड़ी बात!

दारोगा—हाँ हुज़ूर, आपकी दुआ से जीता आया। नहीं तो बचने की तो कोई सूरत ही न थी।

बेगम—खैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा?

दारोगा—हुज़ूर के नमक की क़सम कि शहर का कोई मुक़ाम न छोड़ा।

बेगम—और कहीं पता न चला? है न!

दारोगा—कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहाँ तलाश न की हो।

बेगम—अच्छा, नतीजा क्या हुआ? मिले या न मिले?

दारोगा—हुज़ूर, सुना कि रेल पर सवार होकर कहीं बाहर जाते हैं। फौरन् गाड़ी किराए की और स्टेशन पर जा पहुँचा, मियाँ आज़ाद से

बार आँखें हुईं कि इतने में सीटी फूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली। मैं लपका कि दो-दो बातें कर लूँ मगर एक अँगरेज ने हाथ पकड़ लिया।

बेगम—यह सब सच कहते हो न?

दारोगा—झूठ कोई और बोला करते होंगे।

बेगम—सुबह से कुछ खाया तो न होगा?

दारोगा—अगर एक घूँट पानी के सिवा कुछ और खाया हो तो कसम ले लीजिए।

अब्बासी—हुजूर, हम एक बात बताएँ तो इनकी शेखी अभी-अभी निकल जाए। कहारों को यहाँ बुलाकर पूछना शुरू कीजिए।

बेगमसाहब को यह सलाह पसंद आई। एक कहार को बुलाकर तहक़ीक़ात करने लगीं—

अब्बासी—बचा, झूठ बोले तो निकाल दिए जाओगे।

कहार—हुजूर, हमें जो सिखाया है, वह कहे देते हैं।

अब्बासी—क्या कुछ सिखाया भी है?

कहार—सुबह से अब तक सिखाया ही किए या कुछ और किया? यहाँ से अपनी ससुराल गए। वहाँ किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहाँ से एक मजलिस में गए। हिस्से लिए और चखकर बोले—कहीं ऐसी जगह चलो जहाँ किसी की निगाह न पड़े। हम लोगों ने नाके के बाहर एक तकिए में मियाना उतारा। दारोगाजी ने वहाँ नानबाई की दूकान से सालन और रोटी मँगाकर खाई। हम लोगों को चबैने के लिये पैसे दिए। दिन-भर सोया किए। शाम को हुक्म दिया, चलो।

अब्बासी—दारोगासाहब, सलाम! अजी, इधर देखिए दारोगा-साहब!

बेगम—क्यों साहब, यह झूठ! रेल पर गए थे आप? बोलिए!

दारोग़ा—हुज़ूर, यह नमकहराम है, क्या अर्ज़ करूँ !

दारोग़ा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते, मगर बेबस थे। बेगम ने कहा—बस, जाओ। तुम किसी मसरफ़ के नहीं हो।

रात को अब्बासी बेगमसाहब से मीठी मीठी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज आई। बेगम ने पूछा—कौन गाता है ?

अब्बासी—हुज़ूर, मुझे मालूम है। यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहाँ एक आदमी नौकर है, उस को खूब जानती हूँ। सलारबख्श नाम है। एक दिन वकील साहब इधर से जाते थे। मैं दरवाजे पर खड़ी थी। कहने लगे—महरी साहब, सलाम ! कहो, तुम्हारी बेगमसाहब का नाम क्या है ? मैंने कहा आप अपना मतलब कहिए, तो कहने लगे—कुछ नहीं, यों ही पूछता था।

बेगम—ऐसे आदमियों को मुँह न लगाया करो।

अब्बासी—मुख्तार है हुज़ूर, महताबी से मकान दिखाई देता है।

बेगम—चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे ! जाने भी दो।

अब्बासी—नहीं हुज़ूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चलकर देख लीजिए।

बेगमसाहब महताबी पर गईं तो देखा कि वकीलसाहब पलंग पर फैले हुए हैं और सलारू हुक्का भर रहा है। नीचे आईं तो अब्बासी बोली—हुज़ूर, वह सलारबख्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेग—मवह कौन थी ? ज़रा नाम तो पूछना।

अब्बासी—नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है। देखिए शायद जेहन में आ जाय। आप दस-पाँच नाम लें।

बेगम—नज़ीरबेगम, जाफरीबेगम, हुसेनीखानम, शिब्बोखानम।

अब्बासी—(उछलकर) जी हाँ, यही नहीं, मगर शिब्बोखानम नहीं, शिब्बोजान बताया था।

सुरैयाबेगम ने सोचा, इस पगलेका पड़ोस अच्छा नहीं, मुल देके चला आई हूँ, ऐसा न हो, ताक-झाँक करे; दरवाजे तक आ ही चुका, अब्बासी और सलारू में बात-चीत भी हुई, अब फकत इतना मालूम होना बाक़ी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो गजब ही हो जाय। किसी तरह मकान बदल देना चाहिए। रात को तो इसी खयाल में सो रहीं। सुबह को फिर वही धुन समाई कि आज़ाद आएँ और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखाएँ। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनाएँ। मगर आज़ाद अब की मेरा यह ठाट देखेंगे तो क्या खयाल करेंगे। कहीं वह न समझें कि दौलत पाकर मुझे भूल गई। अब्बासी को बुलाकर पूछा—तो आज कब जाओगी?

अब्बासी—हुज़ूर, बस कोई दो घड़ी दिन रहे जाऊँगी और बात की बात में साथ लेकर आ जाऊँगी।

उधर मिरजा आज़ाद बन-ठनकर आने ही को थे कि एक शाहसाहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुँचे। आजाद ने झुककर सलाम किया और बोले—आप खूब आए। बतलाइए हम जिस काम को जाना चाहते हैं वह पूरा होगा या नहीं?

शाह—लगन चाहिए। धुन हो तो ऐसा कोई काम नहीं जो पूरा न हो।

आज़ाद—गुस्ताखी माफ कीजिए तो एक बात पूछूँ, मगर बुरा न मानिएगा!

शाह—गुस्ताखी कैसी, जो कुछ कहना हो शौक से कहो।

आज़ाद—उस पगली औरत से आपको क्यों मुहब्बत है?

शाह—उसे पगली न कहो, मैं उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत

पर मरता हूँ। मैंने बहुतसे औलिया देखे पर ऐसी औरत मेरी नज़र आज तक नहीं गुजरी। अलारक्खी सचमुच जन्नत की परी है। उस याद कभी न भूलेगी। उसका एक आशिक आप ही के नाम का था

इन्हीं बातों में शाम हो गई, आसमान पर काली घटाएँ छा और ज़ोर से मेंह बरसने लगा। आज़ाद ने जाना मुलतवी कर दिय सुबह को आप एक दोस्त की मुलाक़ात को गये। वहाँ देखा कि आदमी मिलकर एक आदमी को बना रहे हैं और तालियाँ बजा रहे वह दुबला-पतला मरा-पिटा आदमी था। इनको करीने से मालूम गया कि यह चण्डूबाज है। बोले—क्यों भई चण्डूबाज, कभी नौ भी की है?

चण्डूबाज—अजी हज़रत, उम्र भर डंड पेले और जोड़ियाँ हिला शाही में *अब्बाजान की बदौलत हाथीनशीन थे। अभी पारसाल तक* भी घोड़े पर सवार होकर निकलते थे। मगर जुए की लत थी, टके टके मुहताज हो गए। आखिर, सराय में एक भठियारी अलारक्खी के य नौकरी कर ली।

आज़ाद—किसके यहाँ?

चण्डूबाज—अलारक्खी नाम था। ऐसी खूबसूरत कि मैं क अर्ज़ करूँ।

आजाद—हाँ, रात को भी एक आदमी ने तारीफ़ की थी।

चण्डूबाज—तारीफ़ कैसी! तसवीर ही न दिखा दूँ?

यह कहकर चण्डूबाज ने अलारक्खी की तसवीर निकाली।

आज़ाद—ओ हो हो!

अजब है खींची मुसव्विर ने किस तरह तसवीर;
कि शोखियों से वह एक रंग पर रहे क्योंकर!

चंडूबाज़—क्यों, है परी या नहीं ?

आज़ाद—परी, परी, असल परी !

चंडूबाज़—उसी सराय में मियाँ आज़ाद नाम के एक शरीफ़ टिके थे। उन पर आशिक़ हो गई। बस, कुछ आप ही की-सी सूरत थी।

आज़ाद—अब यह बताओ कि वह आजकल कहाँ है ?

चंडूबाज—यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं। सराय से तो भाग गई थीं।

आजाद ने ताड़ लिया कि अलारक्खी और सुरैयाबेगम में कुछ न कुछ भेद जरूर है। चण्डूबाज़ को अपने घर लाए और खूब चण्डू पिलाया। जब दो-तीन छींटे पी चुके तो आज़ाद ने कहा—अब अलारक्खी का मुफ़स्सल हाल बताओ।

चण्डूबाज़—अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए। शोख, चुलबुली, चंचल, आगभभूका, तीखी चितवन, मगर हँसमुख। मियाँ आज़ाद पर रीझ गई। अब आज़ाद ने वादा किया कि निकाह पढ़वाएँगे मगर क़ौल हारकर निकल गए। इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आए मगर फिर भाग गए। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीझे। उन्होंने कहा—रूम की लड़ाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राज़ी हों। बस, रूम की राह ली। चलते वक्त उनकी अलारक्खी से मुलाकात हुई तो उसने कहा—हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूल जाना। आजाद ने कहा, हरगिज़ नहीं।

आज़ाद—हुस्नआरा कहाँ रहती है ?

चण्डूबाज—यह हमें नहीं मालूम।

आजाद—अलारक्खी को देखो तो पहचान लो या न पहचानो ?

चंडूबाज़—फौरन् पहचान लें। न पहचानना कैसा?

मियाँ चंडूबाज तो पीनक लेने लगे। इधर अब्बासी आज़ाद मिरजा के पास आई और कहा—अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने-जाने का ज़िक्र न कीजिएगा। आपके टालमटोल से वह बहुत चिढ गई हैं। कहती हैं, आना हो तो आएँ और न आना हो तो न आएँ। यह टालमटोल क्यों करते हैं?

आज़ाद ने कहा—मैं तैयार बैठा हूँ। चलिए।

यह कहकर आज़ाद ने गाड़ी मँगवाई और अब्बासी के साथ अन्दर बैठे। चंडूबाज़ कोचबक्स पर बैठे। गाड़ी रवाना हुई। सुरैया-बेगम के महल पर गाड़ी पहुँची तो अब्बासी ने अन्दर जाकर कहा—मुबारक, हुज़ूर आ गए।

बेगम—शुक्र है!

अब्बासी—अब हुज़ूर, चिक की आड़ बैठ जायँ।

बेगम—अच्छा, बुलाओ।

आज़ाद बरामदे में चिक के पास बैठे। अब्बासी ने कमरे के बाहर आकर कहा—बेगमसाहब फ़रमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ़ ले जाइए।

आज़ाद—बेगमसाहब से कह दीजिए, कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायाब नुसख़ा है।

अब्बासी—वह फ़रमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदारी हमने बहुत चंगे किए हैं।

आज़ाद—और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं हो सकता?

बेगम—आपकी बातों से सिर का दर्द और बढता है। ख़ुदा के लिए आप मुझे इस वक्त आराम करने दीजिए।

आज़ाद—

हम ऐसे हो गए अल्लाह-अकबर ऐ तेरी कुदरत,

हमारा नाम सुनकर हाथ वह कानों प' धरते हैं।

या तो वह मज़े-मज़े की बातें थीं, और अब यह बेवफ़ाई!

बेगम—तो यह कहिए, कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैं? कहिए, मिज़ाज तो अच्छे हैं?

आज़ाद—दूर से मिज़ाजपुर्सी भली नहीं मालूम होती।

बेगम—आप तो पहेलियाँ बुझाते हैं। ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने लाकर बिठा दिया? वाह-वाह!

अब्बासी—(मुसकिराकर) हुज़ूर, जबरदस्ती घुँस पड़े।

बेगम—मुहल्लेवालों को इत्तिला दो।

आज़ाद—थाने पर रपट लिखवा दो और मुश्कें बँधवा दो।

यह कहकर आज़ाद ने अलारक्खी की तसवीर अब्बासी को दी और कहा—इसे हमारी तरफ से पेश कर दो। अब्बासी ने जाकर बेगम-साहब को वह तसवीर दी। बेगमसाहब तसवीर देखते ही दंग हो गईं। ऐं, इन्हें यह तसवीर कहाँ मिली? शायद यह तसवीर छिपाकर ले गए थे। पूछा—इस तसवीर की क्या क़ीमत है?

आज़ाद—यह बिकाऊ नहीं है!

बेगम—तो फिर दिखाई क्यों?

आज़ाद—इसकी क़ीमत देनेवाला कोई नज़र नहीं आता।

बेगम—कुछ कहिए तो, किस काम की तसवीर है!

आज़ाद—हुज़ूर मिला लें। एक शाहज़ादे इस तसवीर के दो लाख रुपए देते थे।

बेगम—यह तसवीर आपको मिली कहाँ?

आज़ाद—जिसकी यह तसवीर है उससे दिल मिल गया है।

बेगम—ज़री मुँह धो आइए।

इस फिक़रे पर अब्बासी कुछ चौंकी, बेगम साहब से कहा—ज़री हुज़ूर, मुझे तो दें। मगर बेगम ने सन्दूकचा खोलकर तसवीर रख दी।

आज़ाद—इस शहर की अच्छी रस्म है। देखने को चीज़ ली और हजम! बीअब्बासी, हमारी तसवीर ला दो।

बेगम—लाखों कुदूरतें है, हजारों शिकायतें।

आज़ाद—किससे?

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक;
इधर आँखें मिलीं उनसे उधर दिल मिल गया दिल से।

बेगम—अजी, होश की दवा करो।

आज़ाद—हम तो इस जुब्त के कायल हैं।

बेगम—(हँसकर) बजा।

आज़ाद—अब तो खिलखिलाकर हँस दीं। खुदा के लिए, अब इस चिक के बाहर आओ या मुझी को अन्दर बुलाओ। नकाब और घूँघट का तिलस्म तोड़ो। दिल बेकाबू है।

बेगम—अब्बासी, इनसे कहो कि अब हमें सोने दें। कल किसी की राह देखते-देखते रात आँखों में कट गई।

आज़ाद—दिन का मौका न था, रात को मेंह बरसने लगा।

बेगम—बस, बैठे रहो।

यह अबस कहते हो, मौका न था और घात न थी;
मेंहदी पाँवो मे न थी आपके, बरसात न थी।
कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी;

दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी ?
बस, यही कहिए कि मंजूर मुलाकात न थी ।

आजाद—

माशूकपन नहीं अगर इतनी कजी न हो !

अब्बासी दंग थी कि या खुदा, यह क्या माजरा है । बेगमसाहब तो जामे से बाहर ही हुई जाती हैं । महरियाँ दाँतों अँगुलियाँ दबा रही थीं । इनको हुआ क्या है । दारोगासाहब कटे जाते थे, मगर चुप ।

बेगम—कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है ? सबको देख लिया । तड़पा-तड़पाकर मार डाला । खैर हमारा भी खुदा है ।

आजाद—पिछली बातों को अब भूल जाइए ।

बेगम—बेमुरौवतों को किसी के दर्द का हाल क्या मालूम ? नहीं तो क्या वादा करके मुकर जाते !

आजाद—नालिश भी तो दाग़ दी आपने !

बेगम—इन्तजार करते-करते नाक में दम आ गया ।

राह उनकी तकते-तकते यह मुद्दत गुज़र गई ;
आँखो को हौसला न रहा इंतजार का ।

आज़ाद, बस दिल ही जानता है । ठान ली थी, कि जिस तरह मुझे जलाया है, उसी तरह तरसाऊँगी । इस वक्त कलेजा बाँसों उछल रहा है । मगर बेचैनी और भी बढ़ती जाती है । अब उधर का हाल तो कहो, गये थे !

आज़ाद—वहाँ का हाल न पूछो । दिल पाश-पाश हुआ जाता है ।

सुरैयाबेगम ने समझा कि अब पाला हमारे हाथ रहा । कहा—आखिर, कुछ तो कहो । माजरा क्या है ?

आज़ाद—अजी, औरत की बात का एतबार क्या ?

बेगम—वाह, सबको शामिल न करो। पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं। अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किए थे, वे याद हैं या भूल गए?

इक़रार जो किए थे कभी हम से आपने;
कहिए वे याद हैं कि फ़रामोश हो गए?

आजाद—याद हैं। न याद होना क्या माने?

बेगम—आपके वास्ते हुक्का भर लाओ।

आज़ाद—अगर हुक्म हो तो अपने खिदमतगार से हुक्का मँगवा लूँ। अब्बासी, ज़रा उनसे कहो, हुक्का भर लावें।

अब्बासी ने जाकर चण्डूबाज से हुक्क़ा भरने को कहा। चण्डूबाज हुक्का लेकर ऊपर गए तो अलारक्खी को देखते ही बोले—कहिए अलारक्खी साहब, मिज़ाज तो अच्छे हैं?

सुरैयाबेगम धक-से रह गई। वह तो कहिए खैर गुजरी कि अब्बासी वहाँ पर न थी। वरन् बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चण्डूबाज़ को बुलाकर कहा—यहाँ हमारा नाम सुरैयाबेगम है। खुदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कहना। यह तो बताओ, तुम इनके साथ कैसे हो लिए? तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी? चलते वक्त कोड़ा मारा था।

चण्डूबाज—इसके बारे में फिर अर्ज़ करूँगा।

आजाद—क्या खुदा की शान है कि खिदमतगार तो अन्दर बुलाया जाय और मालिक तरसे!

बेगम—क्यों घबराते हो? जरा बातें तो कर लेने दो? उस मुए मसखरे को कहाँ छोड़ा?

आज़ाद—वह लड़ाई पर मारा गया।

बेगम—ऐ है, मार डाला गया! बड़ा हसोड़ था बेचारा!

सुरैयाबेगम ने अपने हाथों से गिलौरियाँ बनाईं और अपने ही हाथ से मिरजा आज़ाद को खिलाईं। आजाद दिल में सोच रहे थे कि या खुदा, हमने कौनसा ऐसा सवाब का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मिहरबान हो गया है! हालाँकि न कभी की जान न पहचान। यकीन हो गया कि ज़रूर हमने कोई नेक काम किया होगा। चण्डूबाज को भी हैरत हो रही थी कि अलारक्खी ने इतनी दौलत कहाँ पाई। इधर-उधर भौचक्के हो-होकर देखते थे, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ समझते थे। इतने में आजाद बोले—ज़माना भी कितने रंग बदलता है।

सुरैयाबेगम—हाँ, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं।

आज़ाद—यों नहीं कहतीं, कि लोग चाहते कुछ हैं और होता कुछ और है।

सुरैयाबेगम—दो-चार दिन और सब्र करो। जहाँ इतने दिनों खामोश रहे, अब चन्द रोज तक और चुपके रहो।

चण्डूबाज—खुदावन्द, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए कल फिर आइएगा। मगर पहले बीमला ।

सुरैयाबेगम—ज़रा समझ-बूझकर!

चण्डूबाज—कुसूर हुआ।

आज़ाद—हम समझे ही नहीं, क्या कुसूर हुआ?

सुरैयाबेगम—एक बात है। यह खूब जानते हैं।

आजाद—फिर अब चलूँ! मगर ऐसा न हो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड जाय। अगर ऐसा हुआ तो मै जान दे दूँगा।

सुरैयाबेगम—मैं तो यह खुद ही कहने को थी। तुम मेरी जबान से बात छीन ले गए।

आज़ाद—हमारी मुहब्बत का हाल खुदा ही जानता है।

सुरैयाबेगम—खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का हाल हमसे ज्यादा और कोई नहीं जानता। या (चण्डूबाज की तरफ इशारा करके) यह जानते हैं। याद है न? अगर अब की भी वैसा ही इक़रार है तो खुदा ही मालिक है।

आज़ाद—अब इन बातों का ज़िक्र ही न करो।

सुरैयाबेगम—हमें इस हालत में देखकर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होगा कि इस दरजे पर यह कैसे पहुँच गई। वह बूढा याद है जिसकी तरफ़ से आपने खत लिखा था?

आज़ाद-मिरजा कुछ जानते होते तो समझते, हाँ-हाँ कहते जाते थे। आखिर इतना कहा—तुम भी तो वकील के पास गई थीं? और हमको पकड़वा बुलाया था! मगर सच कहना, हम भी किस चालाकी से निकल भागे थे!

सुरैयाबेगम—और उसका आपको फख है। शरमाओ न शरमाने दो।

आज़ाद—अजी, वह मौका ही और था।

सुरैयाबेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया। अपना जोगिन बनना, शहसवार का आना, थानेदार के घर से भागना, फिर वकील-साहब के यहाँ आ फँसना, गरज, सारी बातें कह सुनाईं।

आज़ाद—ओफ-ओह, बहुत मुसीबतें उठाईं!

सुरैयाबेगम—अब तो यही जी चाहता है कि शुभ घड़ी निकाह हो तो सारा ग़म भूल जाय।

चण्डूबाज़—हम बेगमसाहब की तरफ होंगे। आप ही ने तो कोड़ा जमाया था?

आज़ाद—कोड़ा अभी तक नहीं भूले! हम तो बहुतसी बातें भूल गये।

सुरैयाबेगम—अब तो रात बहुत ज्यादा गई, क्यों न नीचे जाकर दारोगा साहब के कमरे में सो रहो।

आजाद उठने ही को थे कि अज़ान की आवाज़ कान में आई। बातों में तड़का हो गया। आज़ाद वहाँ से चले तो रास्ते में सुरैयाबेगम का हाल पूछने लगे—क्योंजी, बेगमसाहब हमको वही आज़ाद समझती हैं ? क्या हमारी-उनकी सूरत बिलकुल मिलती है ?

चण्डूबाज़—जनाब, आप उनसे बीस हैं, उन्नीस नहीं।

आज़ाद—तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदमी है।

चण्डूबाज—वाह-वाह,मैं कह देता तो आप वहाँ घुसने भी पाते? अब कहिए तो जाकर जड़ दूँ। बस,ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है !

ये बातें करते हुए आज़ाद घर पहुँचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कांस्टेबलों ने उनको घेर लिया। आज़ाद ने पैंतरा बदलकर कहा—ऐं, तुम लोग कौन हो ?

जमादार ने आगे बढ़कर वारंट दिखाया और कहा—आप मेरे हिरासत में हैं। चण्डूबाज़ दबके-दबके गाड़ी में बैठे थे। एक सिपाही ने उनको भी निकाला। आज़ाद ने गुस्से में आकर दो कांस्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सबों ने मिलकर उनकी मुश्कें कस लीं और थाने की तरफ़ ले चले। थानेदार ने आज़ाद को देखा तो बोले—आइए मिरजासाहब, बहुत दिनों के बाद आप नज़र आए। आज आप कहाँ भूल पड़े ?

आज़ाद—क्या मरे हुए से दिल्लगी करते हो ! हवालात से बाहर निकाल दो तो मजा दिखाऊँ। इस वक्त जो चाहो कह लो, मगर इजलास पर सारी कुलई खोल दूँगा। जिस जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूँगा, भाग कर जाओगे कहाँ ?

थानेदार—रस्सी जल गई, मगर रस्सी का बल न गया।

आजाद तो डींगें मार रहे थे और चण्डूबाज़ को चण्डू की धुन सवार थी। बोले—अरे यारो, जरी चण्डू पिलवा दो भाई! आखिर इतने आदमियों में कोई चण्डूबाज़ भी है, या सब-के-सब रूखे ही हैं?

थानेदार—अगर आज चण्डू न मिले तो क्या हो?

चण्डूबाज़—मर जायँ, और क्या हो?

थानेदार—अच्छा देखें, कैसे मरते हो? कोई शर्त बदता है? हम कहते हैं कि अगर इसको चण्डू न मिले तो यह मर जाय।

इंस्पेक्टर—और हम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा।

चण्डूबाज़—वाह री तक़दीर, समझे थे, अलारक्खी के यहाँ अब चैन करेंगे, चैन तो रहा दूर, क़िस्मत यहाँ ले आई।

थानेदार—अलारक्खी कौन? यह बता दो, तो अभी चण्डू मँगा दूँ।

चण्डूबाज़—साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी।

अब सुनिए, शाम के वक्त सुरैयाबेगम बन-ठनकर बैठी आज़ाद की इंतज़ार कर रही थी। मगर आज़ाद तो हवालात में थे। यहाँ आता कौन। अब्बासी को आज़ाद के गिरफ्तार होने की खबर तो मिल गई, मगर उसने सुरैयाबेगम से कहा नहीं।

पैंसठवाँ परिच्छेद

शहजादा हुमायूँ फ़र कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेलकर लौटे, तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलवा भेजा। अब्बासी ने शहजादा के आने की खबर सुनी तो चमकती हुई आई। शहज़ादे ने देखा तो फड़क गए। बोले—आइए, बीमहरी साहब, हुस्नआराबेगम का मिज़ाज तो अच्छा है?

अब्बासी—हाँ, हुजूर।

शहजादा—और दूसरी बहन? उनका नाम तो हम भूल गए।

अब्बासी—बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल गए होंगे। कोठे पर से धूप में आईना दिखाए, घूरा-घूरी करे और लोगों से पूछे—बड़ी बहन ज्यादा हसीन है या छोटी? है ताज्जुब की बात कि नहीं?

शहजादा—हमें तो तुम हसीन मालूम होती हो।

अब्बासी—ऐ हुजूर, हम गरीब आदमी, भला हमें कौन पूछता है?

शहजादा—हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—हुजूर तो मुझे शर्मिन्दा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिजाज पाया है! यही हँसना-बोलना रह जाता है हुजूर!

शहज़ादा—अब किसी तरकीब से ले चलो।

अब्बासी—हुजूर भला मैं कैसे ले चलूँ! रईसों का घर, शरीफों की बहू-बेटियों में पराए मर्द का क्या काम।

शहज़ादा—कोई तरकीब सोचो, आखिर किस दिन काम आओगी?

अब्बासी—आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं। आज एक मिस आनेवाली हैं।

शहज़ादा—फिर किसी तरकीब से मुझे वहाँ पहुँचा दो। आज तो आँखें सेकने का खूब मौका है।

अब्बासी—अच्छा, एक तदबीर है। आज बाग़ ही में बैठक होगी। आप चलकर किसी दरख्त पर बैठ रहें।

शहज़ादा—नहीं भाई, यह हमें पसन्द नहीं। कोई देख ले तो नाहक उल्लू बनूँ। बस, तुम बागबान को गाँठ लो। यही एक तदबीर है।

अब्बासी ने जाकर माली को लालच दिया। कहा—अगर शहजादा

को अन्दर पहुँचा दो तो दो अशर्फियाँ इनाम दिलवाऊँ। माली राजी हो गया। तब अब्बासी ने आकर शहज़ादे से कहा—लीजिए हजरत, फ़तह है! मगर देखिए, धोती और मीरजाई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी-सी टोपी दीजिए, तब वहाँ पहुँच पाइएगा।

शाम को हुमायूँ फर ने माली का वेष बनाया और माली के साथ बाग में पहुँचे तो देखा कि बाग के बीचोबीच एक पक्का और ऊँचा चबूतरा है और चारों बहनें कुर्सियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुलदस्ता बनाकर दिया और कहा—जाकर मेज पर रख दो। हुमायूँ फर ने मिस साहब को झुककर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गए।

सिपह्रआरा—हीरा-हीरा, यह कौन है?

हीरा—हुज़ूर, गुलाम है आपका। मेरा भान्जा है।

सिपह्रआरा—क्या नाम है?

हीरा—लोग हुमायूँ कहते हैं हुज़ूर!

सिपह्रआरा—आदमी तो सलीकेदार मालूम होता है। अरे हुमायूँ, थोड़ेसे फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दे।

शहज़ादा ने फूल तोड़कर महरी को दिए और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक्का बाँध दिया। खत का मजमून यह था—

'मेरी जान,

अब सब्र की ताक़त नहीं। अगर जिलाना हो तो जिला लो, वरना कोई हिकमत काम न आएगी।

हुमायूँ फर"

जब शहज़ादा हुमायूँ फ़र चले गए तो सिपह्रआरा ने माली से कहा—अपने भान्जे को नौकर रख लो।

माली—हुजूर, सरकार ही का नमक तो खाता है! यों भी नौकर है वों भी नौकर है।

सिपह्आरा—मगर हुमायूँ तो मुसलमानों का नाम होता है।

माली—हाँ हुजूर, वह मुसलमान हो गया है।

दूसरे दिन शाम को सिपह्आरा और हुस्नआरा बाग़ में आईं तो देखा, चबूतरे पर शतरंज के दो नक़शे खिंचे हुए हैं।

सिपह्आरा—कल तक तो ये नक़शे नहीं थे। अहाहा, हम समझ गए। हुमायूँ माली ने बनाए होंगे।

माली—हाँ हुजूर, उसी ने बनाया है।

सिपह्आरा—बहन, जब जानें कि नक़शा हल कर दो।

हुस्नआरा—बहुत टेढ़ा नकशा है। इसका हल करना मुशकिल है। (माली से) क्योंजी, तुम्हारे भाञ्जे को शतरंज खेलना किसने सिखाया?

माली—हुजूर, उसको शौक है, लड़कपन से खेलता है।

हुस्नआरा—उससे पूछो, इस नक़शे को हल कर देगा?

माली—कल बुलवा दूँगा हुजूर!

सिपह्आरा—इसका भाञ्जा बड़ा मनचला मालूम होता है।

हुस्नआरा—हाँ, होगा। इस जिक्र को जाने दो।

सिपह्आरा—क्यों-क्यों, बाजीजान! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया?

हुस्नआरा—कल इसका जवाब दूँगी।

सिपह्आरा—नहीं, आखिर बताओ तो? तुम इस वक्त खफा क्यों हो?

हुस्नआरा—यह मिरजा हुमायूँ फ़र की शरारत है।

सिपह्आरा—ओफ ओह! यह हथकंडे!

हुस्नआरा—(माली से) सच सच बता, यह हुमायूँ कौन है ? खबरदा जो झूठ बोला !

सिपह्रआरा—भान्जा है तेरा ?

माली—हुजूर ! हुजूर !

हुस्नआरा—हुजूर-हुजूर लगाई है, बताता नहीं। तेरा भान्जा औ यह नकशे बनाए ?

माली--हुजूर, मैं माली नहीं हूँ, जाति का कायथ हूँ, मगर घर-बा छोड़कर बागबानी करने लगा। हमारा भान्जा पढ़ा-लिखा हो तो ताज्जुब की कौन बात है !

हुस्नआरा—चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े-खड़े निकलवा दूँगी।

सिपह्रआरा अपने दिल में सोचने लगी कि हुमायूँ फर ने बेतौर पीछा किया। और फिर अब तो उनको ख़बर पहुँच ही गई है तो फिर माली बनने की क्या ज़रूरत है।

हुस्नआरा—खुदा गवाह है। सज़ा देने के क़ाबिल आदमी है। भल-मनसी के यह मानी नहीं हैं कि किसी के घर में माली या चमार बनकर घुसे। यह हीरा निकाल देने लायक़ है। इसको कुछ चटाया होगा, जभी फिसल पड़ा।

माली के होश उड़ गए। बोला—हुजूर मालिक हैं। बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूँ, मगर कोई क़ुसूर गुलाम से नहीं हुआ। अब बुढ़ापे में हुजूर यह दाग़ न लगाएँ।

हुस्नआरा—कल अपने भान्जे को ज़रूर लाना।

सिपह्रआरा—अगर क़ुसूर हुआ है तो सच-सच कह दे।

माली—हुजूर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं।

दूसरे दिन शहज़ादा ने माली को फिर बुलवाया और कहा—आज एक बार और दिखा दो।

माली—हुज़ूर, ले चलने में तो ग़ुलाम को उज्र नहीं, मगर डरता हूँ कि कहीं बुढ़ापे में दाग़ न लग जाय।

शहज़ादा—अजी वह मौक़ूफ़ कर देंगी तो हम नौकर रख लेंगे।

माली—सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज़्ज़त को डरता हूँ।

शहज़ादा—क्या महीना पाते हो?

माली—६ रुपए मिलते हैं हुज़ूर!

शहज़ादा—आज से ६ रुपए यहाँ से तुम्हारी ज़िन्दगी-भर मिला करेंगे। क्यों, हमारे आने के बाद औरतें कुछ नहीं कहती थीं?

माली—आपस में कुछ बातें करती थीं, मगर मैं सुन नहीं सका। तो मैं शाम को आऊँगा?

शहज़ादा—तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पाएगा।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूँ फ़र दुआ माँगने लगे कि किसी तरह शाम हो। बार-बार कमरे के बाहर जाते, बार-बार घड़ी की तरफ देखते। सोचे, आओ ज़रा सो रहें। सोने में वक्त भी कट जायगा और बेकरारी भी कम हो जावेगी। लेटे; मगर बड़ी देर तक नींद न आई। खाना खाने के बाद लेटे तो ऐसी नींद आई कि शाम हो गई। उधर सिपहआरा ने हीरा माली को अकेले में बुलाकर डाटना शुरू किया। हीरा ने रोकर कहा—नाहक अपने भान्जे को लाया। नहीं तो यह लथाड़ क्यों सुननी पड़ती।

सिपहआरा—कुछ दीवाना हुआ है बुड्ढे! तेरा भान्जा और इतना सलीक़ेदार? इतना हसीन?

हीरा—हुज़ूर, अगर मेरा भान्जा न हो तो नाक कटवा डालूँ।

सिपहआरा—(महरी से) ज़रा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूँ।

महरी ने माली को अलग ले जाकर समझाना शुरू किया—अरे भले आदमी, बता दे। जो तेरा रत्ती-भर नुकसान हो तो मेरा जिम्मा।

हीरा—इस बुढौती में कलंक का टीका लगवाना चाहती हो?

महरी—अब मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शहजादा हुमायूँ फर के सिवा और किसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती। बता, ये वही कि नहीं?

हीरा—हाँ, आये तो वही थे।

महरी—(सिपहआरा से) लीजिए हुजूर, अब इसे इनाम दीजिए।

सिपहआरा—अच्छा हीरा, आज जब वह आएँ तो यह कागज दे देना।

इत्तिफाक़ से हुस्नआरा बेगम भी टहलती हुई आ गईं। वह भी दफ्ती पर एक शेर लिख लाई थीं। सिपहआरा को देकर बोलीं—हीरा से कह दो कि जिस वक्त हुमायूँ फर आएँ, यह दफ्ती दिखा दे।

सिपहआरा—ऐ तो बाजी, जब हुमायूँ फर हों भी?

हुस्नआरा—कितनी सादी हो? जब हों भी?

सिपहआरा—अच्छा, हुमायूँ फर ही सही! वह शेर तो सुनाओ।

हुस्नआरा—हमने यह लिखा है—

असीरे हिर्स-व-शहवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद,
दरीं आतश कसे गर पुख्ता बाशद खाम मीबाशद।

(जो आदमी हिर्स और शहवत में कैद हो गया, वह नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुककर सलाम किया और शाम को हुमायूँ फर के मकान पहुँचा।

हुमायूँ—आ गए? अच्छा, ठहरो। आज बहुत सोए।

हीरा—खुदावन्द, बहुत खफ़ा हुई और कहा कि हम तुमको मौकूफ कर देंगे।

हुमायूँ—तुम इसकी फिक्र न करो।

हीरा—हुज़ूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है।

झुटपुटे वक्त हुमायूँ हीरा के साथ बाग में पहुँचे। यहाँ हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूँ फर को दिखाए। अभी वह पढ़ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग में आ गई और हीरा को बुलाकर कहा—तुम्हारा भांजा आया?

हीरा—हाजिर है हुज़ूर!

हुस्नआरा—बुलाओ।

हुमायूँ ने आकर सलाम किया और गरदन झुका ली।

हुस्नआरा—तुम्हारा क्या नाम है जी!

हुमायूँ—हुमायूँ।

हुस्नआरा—क्यों साहब, मकान कहाँ है?

हुमायूँ—

घर-बार से क्या फकीर को काम;
क्या लीजिए छोड़े गाँव का नाम?

हुस्नआरा—अल्लाह, आप शायर भी हैं?

हुमायूँ—हुज़ूर, कुछ बक लेता हूँ।

हुस्नआरा—कुछ सुनाओ।

हुमायूँ—हुक्म हो तो जमीन पर बैठ जाऊँ।

सिपहआरा—बड़े गुस्ताख हो तुम! कहीं नौकर हो?

हुमायूँ—जी हाँ हुजूर, आजकल शहजादा हुमायूँ फ़र की बहन के यहाँ नौकर हूँ।

इतने में बड़ी बेगम आ गईं। हुमायूँ फर मारे खौफ़ के भाग गए।

छियासठवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम ने आज़ाद मिरजा के कैद होने की खबर सुनी तो दिल पर बिजली-सी गिर पड़ी। पहले तो यक़ीन न आया, मगर जब खबर सच्ची निकली तो हाय-हाय करने लगी।

अब्बासी—हुजूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अज़ीज़ हैं। वह पैरवी करनेवाले हैं। रुपए भी खर्च करेंगे।

सुरैयाबेगम—रुपया निगोड़ा क्या चीज़ है। तुम जाकर कहो जितने रुपयों की जरूरत हो, हमसे लें।

अब्बासी आज़ाद मिरजा के चचा के पास जाकर बोली—बेगम साहब ने मुझे आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपए की ज़रूरत हो तो हम हाज़िर हैं। जितने रुपए कहिए, भेज दें।

यह बड़े मिरजा आजाद से भी बढ़कर बगड़ेबाज़ थे। सुरैयाबेगम के पास आकर बोले—क्या कहूँ बेगमसाहब, मेरी तो इज्जत खाक में मिल गई।

सुरैयाबेगम—या मेरे अल्लाह, यह क्या ग़ज़ब हो गया।

बड़े मिरजा—क्या करूँ, सारा ज़माना तो उनका दुश्मन है। पुलीस से अदावत, अमलों से तकरार। मेरे पास इतने रुपए कहाँ कि पैरवी करूँ। वकील बग़ैर लिए-दिए मानते नहीं। जान अज़ाब में है।

सुरैयाबेगम—इसकी तो आप फिक्र ही न करें। सब बन्दोबस्त हो जायगा। सौ-दो सौ, जो कहिए हाजिर है।

बड़े मिरज़ा—फ़ौजदारी के मुक़दमे में ऊँचे वकील ज़रा लेते बहुत हैं। मैं कल एक बारिस्टर के पास गया था। उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सौ लूँगा। अगर आप चार सौ रुपए दे दें तो उम्मेद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास आ जायँ।

बेगमसाहब ने चार सौ रुपए दिलवा दिए। बड़े मिरज़ा रुपए लेकर बाहर गए और थोड़ी देर के बाद आकर एक चारपाई पर धम से गिर पड़े और बोले—आज तो इज्ज़त ही गई थी, मगर खुदा ने बचा लिया। मैं जो यहाँ से गया तो एक साहब ने आकर कहा—आज़ाद मिरज़ा को थानेदार हथकड़ी पहनाकर चौक से ले जायगा। बस, मैंने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफ़ाक़ से एक रिसालदार मिल गए। उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कहा—दो सौ रुपए दो तो पुलीसवालों को गाँठ लूँ। मैंने फौरन् दो सौ रुपए निकालकर उनके हाथ पर रक्खे। अब दो सौ और दिलवाइए तो वकीलों के पास जाऊँ। बेगम ने दो सौ रुपए और दिलवा दिए। बड़े मिरज़ा दिल में खुश हुए, अच्छा शिकार फँसा। रुपए लेकर चलते हुए।

इधर सुरैयाबेगम रो-रोकर आँखें फोड़े डालती थीं, महरियाँ समझातीं, दिन रात रोने से क्या फ़ायदा, अल्लाह पर भरोसा रखिए, उसकी मर्ज़ी हुई तो आज़ाद मिरज़ा दो-चार दिन में घर आवेंगे। मगर ये नसीहतें बेगमसाहब पर कुछ असर न करती थ। एक दिन एक महरी ने आकर कहा—हुज़ूर, एक औरत ड्योढ़ी पर खड़ी है। कहिए तो बुलाऊँ! बेगम ने कहा—बुला लो। वह औरत परदा उठाकर आँगन में दाखिल हुई और झुककर बेगम को सलाम किया। उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुलबदन का चुस्त पाजामा, बाँका अमामा, मखमल का दगला, उस पर हलका कारचोबी का काम, हाथ में

आबनूस का पिंजड़ा; उसमें एक चिड़िया बैठी हुई। सारा घर उसी की ओर देखने लगा। सब-की-सब दङ्ग थीं कि या खुदा, यह उठती जवानी, गुलाब-सा रंग, और यों गली-कूचों की सैर करती फिरे! अब्बासी बोली—क्यों बीवी, तुम्हारा मकान कहाँ है? और यह पहनावा किस मुल्क का है? तुम्हारा नाम क्या है बीबी?

औरत—हमारा घर मन-चले जवानों का दिल है और नाम माशूक़।

यह कहकर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी—हुजूर, आपको यकीन न आएगा, कल मैं परिस्तान में बैठी, वहाँ की सैर देख रही थी कि पहाड़ पर बड़े जोरों की आँधी आई और इतनी गर्द उड़ी कि आसमान के नीचे एक और आसमान नजर आने लगा। इसके साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज़ आई और एक उड़न-खटोला आसमान से उतर पड़ा।

अब्बासी—अरे उडनखटोला! इसका जिक्र तो कहानियों में सुना करते थे।

औरत—बस हुजूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला ग़ायब हो गया। वह परी, असल में परी न थी, वह एक इंसान था। मैं उसे देखते ही हज़ार जान से आशिक हो गई। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं क़ैद हो गया है।

सुरैयाबेगम—क्या, क़ैद है! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें मालूम है?

औरत—जी हाँ हुजूर, मैंने पूछ लिया है। उसे आजाद कहते हैं।

सुरैयाबेगम—अरे! यह तो कुछ और ही गुल खिला। किसी ने तुम्हें बहका तो नहीं दिया?

औरत—हुजूर, वह आपके यहाँ भी आए थे। आप भी उन पर रीझी हुई हैं।

सुरैया बेगम—मुझे तो तुम्हारी सब बातें दीवानों की बकझक मालूम होती हैं। कहाँ परी, कहाँ आज़ाद, कहाँ उड़नखटोला! समझ में कोई बात नहीं आती।

औरत—इन बातों को समझने के लिए जरा अक्ल चाहिए।

यह कहकर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गई।

थोड़ी देर में दारोग़ासाहब ने अन्दर आकर कहा—दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं। मिरजा आजाद जेल से भाग निकले हैं। और वही आज औरत के वेष में आए थे। बेगमसाहब के होश-हवास ग़ायब हो गए। अरे! यह आजाद थे!

सरसठवाँ परिच्छेद

आज़ाद अपनी फ़ौज के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फ़ौज में आकर कहा—अभी बिगुल दो। दुश्मन सिर पर आ पहुँचा। बिगुल की आवाज़ सुनते ही अफ़सर, प्यादे, सवार सब चौंक पड़े। सवार ऐंठते हुए चले, प्यादे अकड़ते हुए बढ़े। एक बोला—मार लिया है, दूसरे ने कहा—भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहाँ है। मुख़बिर दौड़ाए गए तो पता चला कि रूस की फ़ौज दरिया के उस पार परे जमाए खड़ी है। दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फ़ौज के साथ एक लेडी, शहसवारों की तरह रान-पटरी जमाए, कमर से तलवार लटकाए, चेहरे को नक़ाब से छिपाए, अजब शोख़ी और बाँकपन के साथ लड़ाई

में शरीक होने के लिये आई है। उसके साथ दस जवान औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं। मुखबिर ने इन औरतों की कुछ ऐसी तारीफ़ की कि लोग सुनकर दंग रह गए। बोला—इस रईसजादी ने कसम खाई है कि उम्र-भर क्वाँरी रहूँगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फन खूब सिखाया था। रूस में बस यही एक औरत है जो तुर्कों से मुकाबला करने के लिये मैदान में आई है। उसने कसम खाई है कि आज़ाद का सिर लेकर ज़ार के कदमों पर रख दूँगी।

आज़ाद—भला, यह तो बतलाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार? फिर मेरा नाम उसको क्योंकर मालूम हुआ?

मुखबिर—अब यह तो हुज़ूर वही जानें, उनका नाम मिस क्लारिसा है। वह आपसे तलवार का मुकाबिला करना चाहती है। मैदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने ज़माने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था।

आजाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया। अफ़सरों ने उनको बनाना शुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर कबूल किए लेता हूँ तो नतीजा क्या? जीता, तो कोई बड़ी बात नहीं। लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं। अगर चोट खाई तो जग हँसाई होगी। मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आड़े हाथों लेंगी, कि एक छोकरी से चरका खा गए। सारी डींग खाक में मिल गई। और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियाँ बजेंगी कि एक नाज़ुकबदन औरत के मुक़ाबिले से भागे। जब खुद कुछ फैसला न कर सके तो पूछा—दिल्लगी तो हो चुकी, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए?

जनरल—सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए, वरना चुपके हो रहिए।

आज़ाद—जनाब, खुदा ने चाहा, तो एक चोट न खाऊँ और बेदाग लौट आऊँ। औरत लाख दिलेर हो फिर औरत है!

जनरल—यहाँ मूँछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहाँ कलई खुल जायगी।

अनवर पाशा—जिस वक्त वह हसीना हथियार सजकर सामने आएगी, होश उड़ जायँगे। ग़श पर ग़श आयँगे। ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हँसी है? हाथ न उठेगा। मुँह की खाओगे। उनकी एक निगाह तुम्हारा काम-तमाम कर देगी।

आजाद—इसकी कुछ परवा नहीं। यहाँ तो दिली आरज़ू है कि किसी नाजनीन की निगाहों के शिकार हों।

यही बातें हो रही थीं कि एक आदमी ने आकर कहा—कोई साहब हजरत आज़ाद को ढूँढ़ते हुए आए हैं। अगर हुक्म हो, तो बुला लाऊँ। बड़े तीखे आदमी हैं। मुझसे लड़ पड़े थे। आज़ाद ने कहा, उसे अन्दर आने दो। सिपाही के जाते ही मियाँ खोजी अकड़ते हुए आ पहुँचे।

आज़ाद—मुद्दत के बाद मुलाकात हुई, कोई ताज़ा खबर कहिए।

खोजी—कमर तो खोलने दो, अफ़ीम घोलूँ, चुस्की लगाऊँ तो होश आए। इस वक्त थका-माँदा, मरा-पिटा आ रहा हूँ। साँस तक नहीं समाती है।

आज़ाद—मिस मीडा का हाल तो कहो!

खोजी—रोज़ कुम्मैत घोड़े पर सवार दरिया-किनारे जाती हैं। रोज़ अखबार पढ़ती है। जहाँ तुम्हारा नाम आया, बस, रोने लगीं।

आज़ाद—अरे, यह अँगुली में क्या हुआ है जी! जल गई थी क्या?

खोजी—जल नहीं गई थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई।

आजाद—ऐं, यह माजरा क्या है? एक कान कौन कतर ले गया है?

खोजी—न हम इतने हसीन होते न परियाँ जान देतीं।

आज़ाद—नाक भी कुछ चिपटी मालूम होती है।

खोजी—सूरत, सूरत! यही सूरत बला-ए जान हो गई। इसी के हाथों यह दिन देखना पड़ा।

आज़ाद—सूरत-भूरत नहीं, आप कहीं से पिटकर आए हैं। कमजोर, मार खाने की निशानी, किसी से भिड पडे होंगे। उसने ठोंक डाला होगा! यही बात हुई है न?

खोजी—अजी, एक परी ने फूलों की छड़ियों से सजा दी थी।

आजाद—अच्छा, कोई खत-पत्र भी लाए हो? या चले आए यों ही हाथ झुलाते?

खोजी—दो दो खत हैं। एक मिस मीडा का, दूसरा हुरमुजजी का।

आजाद और खोजी नहर के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। अब जो आता है, खोजी को देखकर हँसता है। आखिर खोजी बिगडकर बोले—क्या भीड़ लगाई है? चलो, अपना काम करो।

आज़ाद—तुमको किसी से क्या वास्ता, खड़े रहने दो।

खोजी—अजी नहीं, आप समझते नहीं हैं। ये लोग नजर लगा देंगे।

आज़ाद—हाँ, आपका कल्ला-ठल्ला देखकर नज़र लग जाय तो ताज्जुब भी नहीं।

खोजी—अजी, वह एक सूरत ही क्या कम है! और क़सम ले लो कि किस मर्दक को अब तक मालूम हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं! और हमें इसका कुछ ग़रूर भी नहीं—

मुतलक नहीं गरूर जमालोकमाल पर।

आजाद—जी हाँ, बाकमाल लोग कभी ग़रूर नहीं करते, सीधे-सादे होते ही हैं। अच्छा, आप अफ़ीम घोलिए, साथ है या नहीं?

खोजी—जी नहीं, और क्या! आपके भरोसे आते हैं? अच्छा, लाओ, निकलवाओ। मगर जरा जल्दा हो। कमसरियट के साथ तो होती होगी?

आजाद—अब तुम मरे। भला, यहाँ अफ़ीम कहाँ? और कमसरियट में? क्या खूब!

खोजी—तब तो बेमौत मरे। भई, किसी से माँग लो।

आज़ाद—यहाँ अफीम का किसी को शौक ही नहीं।

खोजी—इतने शरीफ़ज़ादे हैं और अफीमची एक भी नहीं? वाह!

आज़ाद—जी हाँ, सब गँवार हैं। मगर आज दिल्लगी होगी, जब अफीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिलाओगे।

खोजी—यह तो अभी से जम्हाइयाँ आने लगीं। कुछ तो फिक्र करो यार!

आजाद—अब यहाँ अफीम न मिलेगी। हाँ, करौलियाँ जितनी चाहो मँगा दूँ।

खोजी—(अफीम की डिबिया दिखाकर) यह भरी है अफीम! क्या उल्लू समझे थे! आने के पहले ही मैंने हुरमुजजी से कहा कि हुजूर अफीम मँगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमुजजी का खत।

आज़ाद ने खत खोला तो यह लिखा था—

"माई डियर आजाद"

जरा खोजी से खैर व आफ़ियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दाँत टूट गए, कान कट गए, और घूसे और मुक्के खाए। आप इनसे इतना पूछिए, कि लालारुख़ कौन है?

तुम्हारा

हुरमुज"

आजाद—क्यों साहब, यह लालारुख कौन है ?

खोजी—ओफ़ ओह, हम पर चकमा चल गया। वाहरे हुरमुजजी, वल्लाह ! अगर नमक न खाए होता तो जाकर करौली भोंक देता।

आज़ाद—नहीं, तुम्हें वल्लाह, बताओ तो ? यह लालारुख कौन है ?

ख़ोजी—अच्छा हुरमुजजी, समझेंगे !

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के साथ,
इस बावफ़ा को बेचेंगे एक बेवफ़ा के हाथ।

हाय लालारुख, जान जाती है, मगर मौत भी नहीं आती।

आजाद—छिटे हुए हो, कुछ हाल तो बतलाओ। हसीन है ?

खोजी—(झल्लाकर) जी नहीं, हसीन नहीं हैं। काली-कलूटी है। आप भी वल्लाह निरे चोंच ही रहे ! भला, किसी ऐसी-वैसी को जुरंत कैसे होती; कि हमारे साथ बात करती। याद रक्खो, हसीन पर जब नज़र पड़ेगी, हमीन ही की पड़ेगी। दूसरे की मजाल नहीं।

'ग़ालिब' इन सीमी तनों के वास्ते,
चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए।

आजाद—अच्छा, अब लालारुख का तो हाल बतलाओ।

ख़ोजी—अजी, अपना काम करो, इस वक्त दिल काबू में नहीं है। वह हुस्न है कि आपके बाबाजान ने भी न देखा होगा। मगर हाथों में चुल है। घंटे-भर में पाँच-सात बार जरूर चपतियाती थीं। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, हमको इसी बात से नफ़रत थी। वरना, नख-शिख से दुरुस्त ! और चेहरा चमकता हुआ, जैसे आबनूस ! एक दिन दिल्लगी-दिल्लगी में उठकर एक पचास जूते लगा दिए, तड़-तड़-तड़ ! हैं, हैं, यह क्या हिमाकत है, हमें यह दिल्लगी पसन्द नहीं, मगर वह

सुनती किसकी है ! अब फरमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज़ हँसी-हँसी में कान काट लिया। एक दिन दूकान पर खड़ा हुआ, सौदा खरीद रहा था। पीछे से आकर दस जूते लगा दिए। एक मरतबे एक हौज में हमको ढकेल दिया। नाक टूट गई, मगर है लाखों में लाजवाब !

तर्जे निगह ने छीन लिए ज़ाहिदों के दिल,
आँखें जो उनकी उठ गईं दस्ते-दुआ के साथ।

आज़ाद—तो यह कहिए, हँसी हँसी में खूब जूतियाँ खाईं आपने।

खोजी—फिर यह तो है ही, और इश्क कहते किसे हैं। एक दफ़ा मैं सो रहा था, आने के साथ ही इस ज़ोर से चाबुक जमाई कि मैं तड़प-कर चीख उठा। बस, आग हो गई कि हम पीटें, तो तुम रोओ क्यों ? जाओ, बस, अब हम न बोलेंगी। लाख मनाया मगर बात तक न की। आखिर यह सलाह ठहरी कि सरे बाजार वह हमें चपतियाए और हम सिर झुकाए खड़े रहें।

लब ने जो जिलाया तो तेरी आँख ने मारा;
कातिल भी रहा साथ मसीहा के हमेशा।
परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया;
मुश्ताक रहे हम रुखे जेबा के हमेशा।

आज़ाद—किसी दिन हँसी-हँसी में आपको जहर न खिला दे ?

खोजी—क्यों साहब, खिला दें क्यों नहीं कहते ? कोई कण्डेवाली मुक़र्रर की है। वह भी रईसजादी है ! आपकी मिस मीडा पर गिर पड़े तब कुचल जायँ। अच्छा, हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी बीती कहो।

आज़ाद—एक नाज़नीन हमसे तलवार लड़ना चाहती है। क्या रा

है ? पैग़ाम भेजा है कि किसी दिन आज़ाद पाशा से और हमसे अकेले तलवार चले।

खोजी—मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है? शक्ल-सूरत कैसी है?

आज़ाद—सब पूछ चुके हैं। रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहाँ होतीं तो खूब दिल्लगी रहती। हाँ, तुमने तो उनका ख़त दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही।

खोजी ने मीडा का ख़त निकालकर दिया। यह मज़मून था—

'प्यारे आज़ाद,

आजकल अखबारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी ख़त भी तो भेजा करो। यहाँ जान पर बन आई है, और तुमने वह चुप्पी साधी है कि खुदा की पनाह। तुमसे इस बेवफ़ाई की उम्मेद न थी।

यों तो मुँह-देखे की होती है मुहब्बत सबको,
जब मैं जानूँ कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे।

तुम्हारी

मीडा'

अरसठवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाजनीन से मुक़ाबिला था। आज़ाद को रात-भर नींद नहीं आई। सवेरे उठकर बाहर आए तो देखा कि दोनों तरफ़ की फौजें आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ से तोपें चल रही हैं।

ख्वोजी दूर से एक ऊँचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे, और चिल्ला रहे थे होशियार, होशियार! यारो, कुछ खबर भी है। हाय इस वक्त अगर तोड़ेदार बन्दूक होती तो परे के परे साफ कर देता। इतने में आजाद पाशा ने देखा कि रूसी फौज के सामने एक हसीना कमर से तलवार लटकाए, हाथ में नेजा लिए, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिये ललकार रही है। आजाद की उस पर निगाह पड़ी तो दिल में सोचे, खुदा इसे बुरी नजर से बचाए। यह तो इस काबिल है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदान जंग! हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय।

गजब की चीज है यह हुस्न, इन्साँ लाख बचता है;
मगर दिल खिंच ही जाता है तबीयत आ ही जाती है।

उस हसीना ने जो आज़ाद को देखा तो यह शेर पढ़ा—

सँभल के रखियो कदम राहे-इश्क में मजनूँ;
कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई है।

यह कहकर घोडा बढ़ाया आजाद के घोड़े की तरफ़ झुकी और झुकते ही उन पर तलवार का वार किया। आजाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया। तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गूँजने लगा। मिस क्लारिसा ने झल्लाकर घोड़े को फेरा और चाहा कि आजाद के दो टुकड़े कर दे, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आजाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोककर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ लिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झेंप गए। मिस क्लारिसा भी लजाई और मारे गुस्से के झल्लाकर वार करने लगी। वार बार चोट आती थी, मगर आज़ाद की यह कैफियत थी कि कुछ चोटें तलवार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आज़ाद उससे

लड तो रहे थे, मगर वार करते दिल काँपता था। एक दफ़ा उस शेर-दिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी लाश जमीन पर फड़कती नज़र आती, मगर आज़ाद ने इस तरह बचाया कि हाथ बिलकुल ख़ाली गया। जब उस खातून ने देखा कि आज़ाद ने एक चोट भी नहीं खाई तो फिर झुँझलाकर इतने वार किए कि दम लेना भी मुशकिल हो गया। मगर आज़ाद ने हँस-हँसकर चोटें बचाईं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गरदन पर जमाया कि गरदन कटकर दूर गिरी। आज़ाद फौरन् कूद पड़े और चाहते थे कि उछलकर मिस क्लारिसा के हाथ से तलवार छीन लें कि उसने घोडे को चाबुक जमाई और अपने फौज की तरफ चली। आज़ाद सँभलने भी न पाए थे कि घोड़ा हवा हो गया। आजाद घोडे पर लटके रह गए।

जब घोडा रूस की फ़ौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खुशी के आवाजे लगाए और कोई चालीस-पचास आदमियो ने आजाद को घेर लिया। दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पाँच ने दूसरा हाथ। दो-चार ने टाँग ली। आज़ाद बोले—भाई, अगर मेरा ऐसा ही खौफ है तो मेरे हथियार खोल लो और क़ैद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे। हम भागकर जायँगे कहाँ? अगर तुम्हारे यही हथकण्डे हैं तो दस-पाँच दिन में तुर्क जवान आप-ही-आप बँधे चले आएँगे। मिस क्लारिसा की तरह पन्द्रह-बीस परियाँ मोरचे पर जायँ तो शायद तुर्की की तरफ़ से गोलन्दाज़ी ही बन्द हो जाय!

एक सिपाही—टँगे हुए चले आए, सारी दिलेरी धरी रह गई!

दूसरा सिपाही—वाह री क्लारिसा! क्या फुर्ती है!

आजाद—इसमें तो शक नहीं कि इस वक्त हम शिकार हो गए। क्लारिसा की अदा ने मार डाला।

एक अफ़सर—आज हम तुम्हारी गिरफ्तारी का जश्न मनाएँगे।

आज़ाद—हम भी शरीक होंगे। भला, क्लारिसा भी नाचेंगी?

अफ़सर—अजी वह आपको अँगुलियों पर नचावेंगी। आप हैं किस भरोसे?

आज़ाद—अब तो खुदा ही बचाए तो बचें। बुरे फँसे।

> तेरी गली में हम इस तरह से हैं आए हुए;
> शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाए हुए।

अफ़सर—आज तो हम फूले नहीं समाते। बड़े मूढ को फाँसा।

आज़ाद—अभी खुश हो लो, मगर हम भाग जायँगे। मिस क्लारिसा को देखकर तबीयत लहराई, साथ चले आए।

अफ़सर—वाह, अच्छे जवाँमर्द हो! आए लड़ने और औरत को देख फिसल पडे। सूरमा कहीं औरतों पर फिसला करते हैं!

आज़ाद—बूढे हो गये हो न! ऐसा तो कहा ही चाहो।

अफ़सर—हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे! मगर बात कुछ और ही निकली। अगर आप मेरे मेहमान न होते तो हम आपकी मुँह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो गैरत चाहिए।

इतने में एक रूमी सिपाही ने आकर अफ़सर के हाथ में एक खत रख दिया। उसने पढा तो यह मज़मून था—

(१) हुक्म दिया जाता है कि मियाँ आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाय, जो सबसे ज़्यादा सर्द है।

(२) जब तक यह आदमी जिन्दा रहे, किसी से बोलने न पावे। अगर किसी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बेंत पड़ें।

(३) खाना सिर्फ़ एक वक्त दिया जाय। एक दिन आध सेर

उबाला हुआ साग और दूसरे दिन गुड़ और रोटी। पानी के तीन कटोरे रख दिए जायँ, चाहे एक ही बार पी जाय चाहे दस बार पिए।

(४) दस सेर आटा रोज पीसे और दो घण्टे रोज दलेल बोली जाय। चक्की का पाट सिर पर रखकर चक्कर लगाए। ज़रा दम न लेने पाए।

(५) हफ्ते में एक बार बरफ़ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पहनने को दिया जाय।

आज़ाद—बात तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी।

अफ़सर—इस भरोसे भी न रहना। आधी रात को सिर पर पानी का झडेड़ा रोज़ दिया जायगा।

आज़ाद मुँह से तो हँस रहे थे, मगर दिल काँप रहा था कि खुदा ही खैर करे। ऊपर से यह हुक्म आ गया तो फ़रियाद किससे करें और फरियाद करें भी तो सुनता कौन है? बोले, खत्म हो गया—या और कुछ है।

अफ़सर—तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गई है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई हलकी सज़ा दी जाय।

आजाद—तब तो वह ज़रूर ही माफ़ कर देंगी।

यह कहकर आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

खोल दी है जुल्फ किसने फूल से रुख़सार पर?
छा गई काली घटा है आनकर गुलजार पर।

अफ़सर—अब तुम्हारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा।

आज़ाद—दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ, हम तो मर मिटे।

सख्तियाँ ऐसी उठाईं इन बुतों के हिज्र में;
रंज सहते-सहते पत्थर का कलेजा हो गया।

उनहत्तरवाँ परिच्छेद

शाम के वक्त हलकी-फुलकी और साफ-सुथरी छोलदारी में मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाजुक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। चाँदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाए हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी। उधर मियाँ आज़ाद कैद में पड़े हुए हुस्नआरा को याद करके सिर धुनते थे कि एक आदमी ने आकर कहा—चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं। आज़ाद छोलदारी के क़रीब पहुँचे तो सोचने लगे, देखें, यह किस तरह पेश आती है। अगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ही मर जायँगे। अन्दर जाकर सलाम किया और हाथ बाँधकर खड़े हो गये। क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कहा—कहिए, मिज़ाज ठण्डा हुआ या नहीं?

आजाद—इस वक्त तो हुजूर के पंजे में हूँ, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे सूली दीजिए।

क्लारिसा—जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूँ, मगर वज़ीर के हुक्म से मजबूर हूँ! वज़ीर ने मुझे अख्तियार तो दे दिया है कि चाहूँ तो तुम्हें छोड़ दूँ लेकिन बदनामी से डरती हूँ। जाओ, रुखसत!

फौज के अफ़सर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आज़ाद को लेकर सरहद पर पहुँचा आवें। उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आज़ाद ने पूछा—क्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं?

एक सिपाही—बस, एक सूरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायँ वह तुम्हें छोड़ दें।

आजाद—भला, वे लोग क्यों छोडने लगे?

सिपाही—तुम्हारी जवानी पर तरस आता है। अगर हम साथ चले तो ज़रूर छोड़ देंगे।

तीसरे दिन आज़ाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही परे जमाए हुए हथियारों से लैस, उनके साथ चलने को तैयार थे। जब आजाद घोड़े पर सवार हुए तो हजारहा आदमी उनकी हालत पर अफ़सोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रूमाल से आँसू पोंछ रही थीं। एक औरत इतनी बेकरार हुई कि जाकर अफ़सर से बोली—हुज़ूर, यह आप बड़ा ग़ज़ब करते हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साइबेरिया भेज रहे हैं!

अफसर—मैं मजबूर हूँ। सरकारी हुक्म की तामील करना मेरा फर्ज है।

दूसरी स्त्री—इस बेचारे की जान का खुदा हाफ़िज़ है। बेकुसूर जान जाती है।

तीसरी स्त्री—आओ, सब-की-सब मिलकर चलें और मिस साहब से सिफारिश करें। शायद दिल पसीज जाय।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस क्लारिसा के पास जाकर बोली—हुज़ूर, यह क्या ग़जब करती हैं। अगर आजाद मर गए तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी?

क्लारिसा—उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है।

वह स्त्री—कितनी जालिम! कितनी बेरहम हो! जरा आजाद की सूरत तो चलकर देख लो।

क्लारिसा—हम कुछ नहीं जानते!

अब तक तो आजाद को उम्मेद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुझ पर रहम करें, लेकिन जब इधर से कोई उम्मेद न रही और मालूम हो

गया कि बिना साइबेरिया गए जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने ज़ोर से चीखे कि मिस क्लारिसा के बदन के रोएँ खड़े हो गए और थोड़ी ही दूर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े।

एक सिपाही—अरे यारो, अब यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही—मरे या जिए, साइबेरिया तक पहुँचाना ज़रूरी है।

तीसरा सिपाही—भाई, छोड़ दो। कह देना, रास्ते में मर गया।

चौथा सिपाही—हमारी फौज में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है। हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफसर की कदर करनी चाहिए थी।

पाँचवाँ सिपाही—अगर आप सब लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालें। मगर तुम लोग साथ न दोगे।

छठा सिपाही—पहले इसे होश में लाने की फिक्र तो करो।

जब पानी के खूब छींटे दिए गए तो आज़ाद ने करवट बदली। सवारों की जान में जान आई। सब उनको लेकर आगे बढ़े।

सत्तरवाँ परिच्छेद

आज़ाद तो साइबेरिया की तरफ़ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर बैठे-बैठे अफीम की डिबिया निकाली। वहाँ पानी कहाँ? एक आदमी दरख्त के नीचे बैठा था। आपने उससे कहा—भाईजान, जरा पानी तो पिला दो। उसने ऊपर देखा, तो एक बौना बैठा हुआ है। बोला—तुम कौन हो? दिल्लगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था। खोजी उर्दू में बात करते थे, वह फ्रांसीसी में जवाब देता था।

खोजी—अफीम घोलेंगे मियाँ ! ज़रा-सा पानी दे डालो भाई ?

फ्रांसीसी—वाह, क्या सूरत है । पहाड़ पर न जाकर बैठो ?

खोजी—भई वाह रे हिन्दोस्तान ! वल्लाह इस फसल में सबील पर पानी मिलता है, केंवड़े का बसा हुआ । हिन्दू पौसरे बैठाते हैं औ तुम जरा पानी भी नहीं देते ।

फ्रांसीसी—कहीं ऊपर से गिर न पड़ना ।

खोजी—(इशारे से) अरे मियाँ पानी-पानी !

फ्रांसीसी—हम तुम्हारी बात नहीं समझते ।

खोजी—उतरना पड़ा हमें । अबे, ओ गीदी, जरा-सा पानी क्यों नहं दे जाता ? क्या पाँवों की मेंहदी गिर जायगी ?

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्त तोड़-तोड़ फेंकने लगे । फ्रांसीसी झल्लाकर बोला—बचा,क्यो शामत आई हैं । ऊपर आकर इतने घूँसे लगाऊँगा कि सारी शरारत निकल जायगी । खोजी ने ऊपर से एक शाख तोड़कर फेंकी । फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी । इतने में एक तुर्क आ निकला । उसने समझा-बुझाकर खोजी को नीचे उतारा । खोजी ने अफीम घोली, चुस्की लगाई और फिर दरख्त पर जाकर एक मोटी शाख से टिककर पीनक लेने लगे । अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक्त खूब गोले चल रहे थे । तुर्कों ने जान तोड़कर मुकाबिला किया मगर फ्रांसीसी तोपखाने ने उनके छक्के छुड़ा दिए और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खाकर गिर पड़ा । तुर्क तो हारकर भाग निकले । रूसियों की एक पलटन ने इस मैदान में पड़ाव डाला । खोजी पीनक से चौंककर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नजर उन पर पड़ी । बोला—कौन ? तुम कौन हो ? अभी उतर आओ ।

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगें। नीचे उतर आए। अभी जमीन पर पाँव भी न रक्खा था, कि एक रूसी ने इनको गोद में उठाकर फेंका तो धम से ज़मीन पर गिर गए।

खोजी—ओ गीदी, खुदा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे !

एक रूसी—भई, यह पागल है कोई।

दूसरा—इसको फौज के साथ रक्खो। खूब दिल्लगी रहेगी।

रूसियों ने कई तुर्क सिपाहियों को कैद कर लिया था। खोजी भी उन्हीं के साथ रख दिए गए। तुर्कों को देखकर उन्हें जरा तसकीन हुई। एक तुर्क बोला—तुम तो आज़ाद के साथ आए थे न ? तुम उनके नौकर हो ?

खोजी—मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो।

तुर्क—ऐं, आप आजाद पाशा के बाप हैं !

खोजी—हाँ-हाँ, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मैंने ही तो आज़ाद को मार-मारकर लड़ना सिखाया।

तुर्कों ने खोजी को आज़ाद का बाप समझकर फौजी कायदे से सलाम किया। तब खोजी रोने लगे—अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो। क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-पोसकर इतना बड़ा किया था ? अब तुम्हारी माँ को क्या सूरत दिखाऊँगा।

तुर्क—आप ज्यादा बेचैन न हों। आज़ाद जरूर छूटेंगे।

खोजी—भई, मुझे तो बुढ़ापे में दाग दे गये।

तुर्क—हुजूर, अब दिल को सँभालें।

खोजी—भई, मेरी इतनी इज्जत न करो नहीं तो रूसियों को शक हो जायगा कि यह आज़ाद पाशा के बाप है। तब बहुत तंग करेंगे।

तुर्क—खुदा ने चाहा तो अफ़सर लोग आप को जरूर छोड़ देंगे।

खोजी—जैसी मौला की मरज़ी !

इकहत्तरवाँ परिच्छेद

बड़ी बेगम का मकान परीखाना बना हुआ है। चारों बहनें रविशों में अठखेलियाँ करती हैं। नाजोअदा से तौल-तौलकर कदम धरती हैं। अब्बासी फूल तोड़-तोड़कर झोलियाँ भर रही है। इतने में सिपह्आरा ने शोखी के साथ गुलाब का फूल तोड़कर गेतीआरा की तरफ फेंका। गेतीआरा ने उछाला तो सिपह्आरा की जुल्फ को छूता हुआ नीचे गिरा। हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानाराबेगम से गेंद खेलने लगीं। जिस वक्त गेंद फेंकने के लिये हाथ उठाती थीं सितम ढाती थीं। वह कमर का लचकना और गेसू का बिखरना, प्यारे-प्यारे हाथों की लोच और मुसकिरा-मुसकिराकर निशानेबाज़ी करना अजब लुत्फ़ दिखाता था।

अब्बासी—माशा-अल्लाह, हुज़ूर किस सफाई के साथ फेंकती हैं!

सिपह्आरा—बस अब्बासी, अब बहुत खुशामद की न लो। क्या जहानारा बहन सफ़ाई से नहीं फेंकतीं? बाजी जरी झपटती ज्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पाएँगी। देख लेना।

अब्बासी—जिस सफाई से हुस्नआराबेगम गेंद खेलती हैं, उस सफाई से जहानाराबेगम का हाथ नहीं जाता।

सिपह्आरा—मेरे हाथ से भला फूल गिर सकता है! क्या मजाल!

इतने में जहानाराबेगम ने फूल को नोंच डाला और उफ़ कहकर बोली—अल्लाह जानता है, हम तो थक गए।

सिपह्आरा—ऐ वाह, बस इतने में ही थक गई? हमसे कहिए, शाम तक खेला करें।

अब सुनिए, कि एक दोस्त ने मिरजा हुमायूँ फर को जाकर इत्तिला

दो कि इस वक्त बाग में परियाँ इधर से उधर दौड़ रही हैं। इस वक्त की कैफ़ियत देखने क़ाबिल है। शहज़ादे ने यह खबर सुनी तो बोले—भई, खुशखबरी तो सुनाई मगर कोई तदबीर तो बताओ। ज़रा आँखें ही सेंक लें। हाँ, हीरा माली को बुलाओ। जरा देखें।

हीरा ने आकर सलाम किया।

शहजादा—भई, इस वक्त किसी हिकमत से अपने बाग़ की सैर कराओ।

हीरा—खुदावन्द, इस वक्त तो माफ़ करें, सब वहीं हैं।

शहज़ादा—उल्लू ही रहे, अरे मियाँ, वहाँ सन्नाटा होता तो जाकर क्या करते! सुना है, चारों परियाँ वहीं हैं! बाग़ परिस्तान हो गया होगा! हीरा ले चल, तुझे अपने नारायन की कसम! जो माँगे फ़ौरन् दूँ।

हीरा—हुजूर ही का तो नमक खाता हूँ, या किसी और का? मगर इस वक्त मौक़ा नहीं है।

शहजादा—अच्छा, एक शेर लिख दूँ वहाँ पहुँचा दो।

यह कहकर शहजादा ने यह शेर लिखा—

छकाया तूने एक आलम को साक़ी जामे-गुलगूँ से,
हमें भी कोई सागर, हम भी हैं उम्मेदवारों में।

हीरा यह रुक्का लेकर चला। शहज़ादे ने समझा दिया कि सिपहआरा को चुपके से दे देना। हीरा गया तो देखा कि अब्बासी और बूढ़ी महरी में तकरार हो रही है। सुबह के वक्त अब्बासी हुस्नआरा के लिये कुम्हारिन के यहाँ से दो झँझरियाँ लाई थी। दाम एक आना बतलाया। बड़ी बेगम ने जो यह झँझरियाँ देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी लाओ। महरी वैसी ही झँझरियाँ दो आने को लाई। इस वक्त अब्बासी डींग मारने लगी कि मैं जितनी सस्ती चीज़ लाती

हूँ, कोई दूसरा भला ला तो दे ! महरी और अब्बासी में पुरानी चश्म थी। बोली—हाँ भई, तुम क्यों न सस्ती चीज़ लाओ ! अभ कमसिन हो न ?

अब्बासी—तुम भी तो किसी ज़माने में जवान थीं। बाज़ार-भर को लूट लाई होगी। मेरे मुँह न लगना।

महरी—होश की दवा कर छोकरी ! बहुत बढ़-बढ़कर बातें न बना मुई ! ज़माने-भर की आवारा ! और सुनो !

अब्बासी—देखिए हुज़ूर, यह लाम-काफ़ ज़बान से निकालती हैं और मैं हुज़ूर का लिहाज़ करती हूँ। जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं।

महरी—मुँह पकड़कर झुलस देती मुरदार का !

अब्बासी—मुँह झुलस अपने होतों-सोतों का।

महरी—हुज़ूर, अब हम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे ये बातें न सुनी जायँगी।

अब्बासी—एँ, तुम तो बेचारी नन्ही हो। हमीं गरदन मारने के क़ाबिल हैं। सच है और क्या !

सिपहआरा—सारा क़ुसूर महरी का है। यही रोज़ लड़ा करती है अब्बासी से।

महरी—ऐ हुज़ूर, पीच पी हज़ार नेमत पाई। जो मैं ही झगड़ालू हूँ, तो बिस्मिल्लाह, हुज़ूर लौंडी को आज़ाद कर दें। कोई बात न चीत, आप ही गाली-गुफ्ते पर आमादा हो गई।

जहानारा—'लड़ेंगे जोगी-जोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे।' अम्मा जान सुन लेंगी तो हम सबकी ख़बर लेंगी।

अब्बासी—हुज़ूर ही इंसाफ़ से कहें। पहल किसकी तरफ़ से हुई !

जहानारा—पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो, इससे सस्ती चीज़ मिल जाती है?—जिसको गाली दोगी, वह बुरा मानेगी ही।

हुस्नआरा—महरी, तुम्हें यह सूझी क्या। जवानी का क्या जिक्र था भला!

अब्बासी—हुज़ूर, मेरा क़ुसूर हो तो जो चोर की सज़ा वह मेरी सजा।

महरी—मेरे अल्लाह, औरत क्या, विष की गाँठ है।

अब्बासी—जो चाहो सो कह लो, मैं एक बात का भी जवाब न दूँगी।

महरी—इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। मैं तो इसकी नस-नस से वाकिफ हूँ।

अब्बासी—और मैं तो तेरी कब्र तक से वाकिफ हूँ!

महरी—एक को छोड़ा दूसरे के घर बैठी, उसको खाया अब किसी और को चट करेगी। और बातें करती है!

सत्तर........के बाद कुछ कहने ही को थी कि अब्बासी ने सैकड़ों गालियाँ सुनाईं और ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ़ और खुद दूसरी तरफ़। हीरा माली ने बढ़कर दुपट्टा दिया। तो कहा—चल हट, और सुनो! इस मुए बूढ़े की बातें! इस पर क़हक़हा पड़ा। शोर सुनते ही बड़ी बेगमसाहब, लाठी टेकती हुई आ पहुँची, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को खबर भी न हुई।

बड़ी बेगम—यह क्या शोहदापन मचा था? बड़े शर्म की बात है। आख़िर कुछ कहो तो? यह क्या धमाचौकड़ी मची थी? क्यों महरी, यह क्या शोर मचा था?

महरी—ऐ हुज़ूर, बात मुँह से निकली और अब्बासी ने टेटुआ लिया। और क्या बताऊँ!

बड़ी बेगम—क्यों अब्बासी, सच-सच बताओ! खबरदार!

अब्बासी—(रोकर) हुजूर!

बड़ी बेगम—अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अब्बासी—हुजूर, जहानाराबेगम से पूछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहा, कोसा, गालियाँ दीं, जो ज़बान पर आया कह डाला। और हुजूर इन आँखों की ही क़सम खाती हूँ, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की।

बड़ी बेगम—जहानारा, क्या बात हुई थी? बताओ साफ़-साफ़।

जहानारा—अम्माजान, अब्बासी ने कहा कि हम दो झँझरियाँ एक आने को लाए और महरी ने दो आने दिए इसी बात पर तकरार हो गई।

बड़ी बेगम—क्यों महरी, इसके क्या मानी? क्या जवानों को बाज़ार वाले मुफ्त उठा देते हैं। बाल सफ़ेद हो गए मगर अभी तक आवारापन की बू नहीं गई। हमने तुमको मौकूफ़ किया महरी। आज ही निकल जाओ।

इतने में मौक़ा पाकर हीरा ने सिपहआरा को शहज़ादे का ख़त दिया। सिपहआरा ने पढ़कर यह जवाब लिखा—भई, तुम तो ग़ज़ब के जल्दबाज हो। शादी-ब्याह भी निगोड़ा मुँह का नेवाला है! तुम्हारी तरफ़ से पैग़ाम तो आता ही नहीं।

हीरा ख़त लेकर चल दिया।

बहत्तरवाँ परिच्छेद

कोठे पर चौका बिछा है और एक नाज़ुक पलंग पर सुरैयाबेगम सादी और हलकी पोशाक पहने आराम से लेटी हैं। अभी हम्माम से आई हैं। कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के हार और गजरे

रक्खे हैं, ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिए खड़ी है। इतने में एक महरी ने आकर कहा—दारोग़ाजी हुज़ूर से कुछ अर्ज़ करना चाहते हैं। बेगमसाहब ने कहा—अब इस वक्त कौन उठे। कहो, सुबह को आवें। महरी बोली—हुज़ूर, कहते हैं बड़ा ज़रूरी काम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादर ताने रहें और दारोग़ासाहब चादर के उस पार बैठें। दारोग़ासाहब ने आकर कहा—हुज़ूर, अल्लाह ने बड़ी ख़ैर की। खुदा को कुछ अच्छा ही करना मंज़ूर था। ऐसे बुरे फँसे थे कि क्या कहूँ!

बेगम—एँ, तो कुछ कहोगे भी?

दारोगा—हुज़ूर, बदन के रोएँ खड़े होते हैं।

इस पर अब्बासी ने कहा—दारोग़ाजी, घास तो नहीं खा गए हो! दूसरी महरी बोली—हुज़ूर, सठिया गये हैं। तीसरी ने कहा—बौखलाए हुए आए हैं। दारोगासाहब बहुत झल्लाए। बोले—क्या क़दर होती है वाह! हमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियाँ सिर चढ़ी जाती हैं। हुज़ूर इतना भी नहीं कहतीं कि बूढ़ा आदमी है। उससे न बोलो।

बेगम—तुम तो सचमुच दीवाने हो गए हो। जो कहना है, वह कहते क्यों नहीं?

दारोगा—हुज़ूर, दीवाना समझें या गधा बनाएँ, गुलाम आज काँप रहा है। वह जो आज़ाद हैं, जो यहाँ कई बार आए भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकैत, परले सिरे के दग़ाबाज, काल-जुआरी, धावत शराबी जमाने-भर के बदमाश, छटे हुए गुर्गे, एक ही शरीर और बदजात आदमी हैं। तूती का पिंजड़ा लेकर वही औरत के भेस में आया था। आज,सुना किसी नवाब के यहाँ भी गए थे। वह आजाद, जिनके धोखे में आप हैं, वह तो रूम गए हैं। इनका-उनका मुकाबिला क्या!

वह आलिम-फाजिल, यह बेईमान-बदमाश। यह भी उसने गलत कहा कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया।

बेगम—दारोगा, बात तो तुम पते की कहते हो मगर ये बातें तुमसे बताई किसने?

दारोगा—हुजूर, वह चण्डूबाज जो आजाद मिरजा के साथ आया था। उसी ने मुझसे बयान किया।

बेगम—ऐ है, अल्लाह ने बहुत बचाया।

महरी—और बातें कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था!

दारोगा साहब चले गए तो बेगम ने चण्डूबाज को बुलाया। महरियों ने परदा करना चाहा तो बेगम ने कहा—जाने भी दो। बूढ़े खूसट से परदा क्या?

चण्डूबाज—हुजूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है।

बेगम—हाँ, आज़ाद मिरजा का तो हाल कहो।

चण्डूबाज—उसके काटे का मंत्र ही नहीं।

बेगम—तुमसे कहाँ मुलाक़ात हुई?

चण्डूबाज—एक दिन रास्ते में मिल गए।

बेगम—वह तो कैद न थे! भागे क्योंकर?

चण्डूबाज—हुजूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने किस जादू-मंत्र से तीनों को ढेर कर दिया और भाग निकले।

बेगम—अल्लाह बचाए ऐसे मूजी से।

चण्डूबाज—हुजूर मुझे भी खूब सब्ज बाग दिखाया।

महरी—अल्लाह जानता है, मैं उसकी आँखों से ताड़ गई थी कि बड़ा नटखट है।

चण्डूबाज—हुजूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि कैद से भाग कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी कत्ल कर दिया।

बेगम—सब आदमियों में से निकल भागा ?

महरी—आदमी है कि जिन्नात ?

अब्बासी—हुज़ूर, हमें आज डर मालूम होता है। ऐसा न हो, हमारे यहाँ भी चोरी करे।

चण्डूबाज रुखसत होकर गए तो सुरैयाबेगम सो गईं। महरियाँ भी लेटीं, मगर अब्बासी की आँखों में नींद न थी। मारे ख़ौफ के इतनी हिम्मत भी न बाक़ी रही कि उठकर पानी तो पीती। प्यास से तालू में काँटे पड़े थे। मगर दबकी पड़ी थी। उसी वक्त हवा के झोंकों से एक कागज़ उड़कर उसके चारपाई के क़रीब खड़खड़ाया तो दम निकल गया!

सिपाही ने आवाज दी—'सोनेवाले जागते रहो।' और यह काँप उठी। डर था, कोई चिमट न जावे। लाशें आँखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठनाठन बजा। तब अब्बासी ने अपने दिल में कहा, अरे अभी बारह ही बजे। हम समझे थे, सवेरा हो गया। एकाएक कोई बिहाग के धुन में गाने लगा—

सिपहिया जागत रहियो,
इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और।
सिपहिया जागत रहियो।

अब्बासी सुनते-सुनते सो गई, मगर थोड़ी ही देर में ठनाके की आवाज़ आई तो जाग उठी। आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पाँव काँपने लगे। इतने में बेगमसाहब ने पुकारा—अब्बासी पानी पिला। अब्बासी ने पानी पिलाया और बोली—हुज़ूर, अब कभी लाशों-वाशों का जिक्र न कीजिएगा। मेरा तो अजब हाल था। सारी रात आँखों में ही कट गई।

बेगम—ऐसा भी डर किस काम का, दिन को शेर रात को भेड़।

बेगमसाहब सोने को ही थीं कि एक आदमी ने फिर गाना शुरू किया।

बेगम—अच्छी आवाज़ है!

अब्बासी—पहले भी गा रहा था।

महरी—एँ, यह वकील हैं।

कुछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गईं। सवेरे मुँह-अँधेरे महरी उठी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला टूटा पड़ा है। दो सन्दूक टूटे-फूटे एक तरफ रक्खे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर। गुल मचाकर कहा—अरे! लुट गई, हाय लोगो लुट गई! घर में कुहराम मच गया। दारोगासाहब दौड़ पड़े। अरे यह क्या गज़ब हो गया। बेगम की भी नींद खुली। यह हालत देखी तो हाथ मलकर कहा—लुट गई! यह शोर-गुल सुनकर पड़ोसिनें गुल मचाती हुई कोठे पर आईं और बोलीं—बहन, यह बमचख कैसी है! क्या हुआ? खैरियत तो है!

बेगम—बहन, मैं तो मर मिटी।

पड़ोसिन—क्या चोरी हो गई? दो बजे तक तो मैं आप लोगों की बातें सुनती रही। यह चोरी किस वक्त हुई?

अब्बासी—बहन, क्या कहूँ हाय!

पड़ोसिन—देखिए तो अच्छी तरह। क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया?

बेगम—बहन, किसके होश ठिकाने हैं।

अब्बासी—मुझ जलम-जली को पहले ही खटका हुआ था। कान खड़े हो गए, मगर फिर कुछ सुनाई न दिया। मैंने कुछ ख़याल न किया।

दारोगा—हुज़ूर, यह किसी शैतान का काम है। पाऊँ तो खा ही डालूँ।

महरी—जिस हाथ से सन्दूक़ तोड़े, वह कटकर गिर पड़े। जिस पाँव से आया उसमें कीड़े पड़ें। मरेगा बिलख बिलखकर।

अब्बासी—अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले।

महरी—मगर अब्बासी, तुम भी एक ही कलजिभी हो। वही हुआ।

सुरैयाबेगम ने असबाब की जाँच की तो आधे से ज्यादा गायब पाया। रोकर बोली—लोगो, मैं कहीं की न रही। हाय मेरे अब्बा, दौड़ो। तुम्हारी लाड़िली बेटी आज लुट गई! हाय मेरी अम्माजान! सुरैयाबेगम अब फ़क़ीरिन हो गई।

पड़ोसिन—बहन, ज़रा दिल को ढारस दो। रोने से और हलकान होगी।

बेगम—क़िस्मत ही पलट गई। हाय!

पड़ोसिन—ऐ! कोई हाथ पकड़ लो। सिर फोड़े डालती हैं। बहन, बहन! खुदा के वास्ते सुनो तो! देखो, सब माल मिला जाता है। घबराओ नहीं।

इतने में एक महरी ने गुल मचाकर कहा—हुज़ूर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है!

अब्बासी—भागते भूत की लँगोटी ही सही।

लोगों ने सलाह दी कि थानेदार को बुलाया जाय, मगर सुरैयाबेगम तो थानेदार से डरी हुई थीं, नाम सुनते ही काँप उठीं और बोलीं—बहन, माल चाहे यह भी जाता रहे मगर थानेवालों को मैं अपनी ड्योढ़ी न नाँघने दूँगी। दारोग़ाजी ने आँख ऊपर उठाई तो देखा, छत कटी हुई है। समझ गए कि चोर छत काटकर आया था। एकाएक कई कांस्टेबिल बाहर आ पहुँचे। कब वारदात हुई? नव दफे तो हम पुकार गए। भीतर-बाहर से तो बराबर आवाज आई। फिर यह चोरी कब हुई? दारोगाजी ने कहा—हमको इस टाँय टाँय से कुछ वास्ता नहीं है जी? आए वहाँ से रोब जमाने! टके का आदमी और हमसे ज़बान मिलाता

है। पड़े-पड़े सोते रहे और इस वक्त तहकीकात करने चले हैं ? साठ हजार का माल गया है। कुछ ख़बर भी है !

कांस्टेबिलों ने जब सुना कि साठ हज़ार की चोरी हुई तो होश उड़ गए। आपस में यों बातें करने लगे—

१—साठ हजार ! पचास और दुइ साठ ? काहे ?

२—पचास दुइ साठ नहीं, पचास और दस साठ !

३—अजी खुदा खुदा करो। साठ हजार। क्या निरे जवाहिरात ही थे ? ऐसे कहाँ के सेठ है।

दारोगा—समझा जायगा, देखो तो सही ! तुम सबकी साजिश है।

१—दारोगा तरकीब तो अच्छी की। शाबाश !

२-बेगम साहब के यहाँ चोरी हुई तो बला से। तुम्हारी तो हाँडियाँ चढ़ गईं। कुछ हमारा भी हिस्सा है ?

इतने में थानेदारसाहब आ पहुँचे और कहा, हम मौक़ा देखेंगे। परदा कराया गया। थानेदारसाहब अन्दर गए तो बोले—अल्लाह, इतना बड़ा मकान है ! तो क्यों न चोरी हो ?

दारोग़ा—क्या ? मकान इतना बड़ा देखा और आदमी रहते नहीं देखते !

थानेदार—रात को यहाँ कौन-कौन सोया था ?

दारोग़ा—अब्बासी, सबके नाम लिखवा दो।

थानेदार—बोलो अब्बासी महरी, रात को किस वक्त सोई थी तुम ?

अब्बासी—हुज़ूर, कोई ग्यारह बजे आँखें लगीं।

थानेदार—एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने न इतना चमकना।

अब्बासी—यह बातें मैं नहीं समझती। चमकना-मटकना बाज़ारी

औरतें जानें। हम हमेशा बेगमों में रहा किए हैं। यह इशारे किसी और से कीजिए। बहुत थानेदारी के बल पर न रहिएगा। देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैं तो पेट से पाँव निकाले।

थानेदार—तुम तो जामे से बाहर हुई जाती हो।

बेगमसाहब कमरे में खड़ी काँप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले। थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा—अपना बयान लिखवाओ।

अब्बासी—हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आँख खुली। हमने सुराही से पानी उँड़ेला और बेगमसाहब को पिलाया।

थानेदार—जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोग़हल्फ़ी का जुर्म नहीं लग सकता।

अब्बासी—क्या ईमान छोड़ना है? जो ठीक-ठीक है वह क्यों छिपावें?

थानेदार—जवानी भी कैसी मस्त करनेवाली चीज़ होती है।

अब्बासी ने अँगुलियाँ मटका-मटकाकर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनाई कि थानेदारसाहब की शेखी किरकिरी हो गई। दारोग़ासाहब से बोले—आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए। वे भेदिए के चोरी नहीं हो सकती। दारोग़ा ने कहा—हमें किसी पर शक नहीं। थानेदार ने देखा कि यहाँ रग न जमेगा तो चुपके से रुखसत हुए।

तिहत्तरवाँ परिच्छेद

खोजी आजाद के बाप बन गए तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की कैदी हरदम उनकी खिदमत करने को मुस्तैद रहते थे। एक दिन एक रूसी फौजी अफसर ने उनकी अनोखी सूरत और माशे माशे-भर के हाथ-पाँव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करे। एक फारसीदाँ तुर्क को मुतरज्जिम बनाकर ख्वाजासाहब से बातें करने लगा।

अफसर—आप आज़ाद पाशा के बाप हैं ?

खोजी—बाप तो क्या हूँ मगर खैर, बाप ही समझिए। अब तो तुम्हारे पंजे में पड़कर छक्के छूट गए।

अफसर—आप भी कभी किसी लड़ाई में शरीक हुए थे ?

खोजी—वाह, और जिन्दगी-भर करता क्या रहा ? तुम-जैसा भोंदा अफ़सर आज ही देखा। हमारा कैंडा ही गवाही देता है कि हम फौज के जवान हैं। कैंडे से नहीं पहचानते ? इसमें पूछने की क्या जरूरत है। दुगलेवाली पलटन के रिसालदार थे। आप हमसे पूछते हैं, कोई लड़ाई देखी है ? जनाब यहाँ वह-वह लड़ाइयाँ देखी हैं कि आदमी की भूख प्यास बन्द हो जाय।

अफसर—आप गोली चला सकते हैं ?

खोजी—अजी हजरत, अब फ़स्द खुलवाइए। पूछते हैं गोली चलाई है। ज़रा सामने आ जाइए तो बताऊँ। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाँट हो गई। खुदा की कसम, हमसे कुत्ता ग्यारह-बारह क़दम पर खड़ा था। धर के दागता हूँ तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अफ़सर—ओ हो ! आप खूब गोली चलाता है।

खोजी—अजी तुम हमको जवानी में देखते !

अफसर ने इनकी बेतुकी बातें सुनकर हुक्म दिया कि दोनाली बन्दूक लाओ। तब तो मियाँ खोजी चकराए। सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बन्दूक चलाई नहीं और न हमको याद आता है कि बन्दूक कभी उम्र-भर छुई भी हो, मगर इस वक्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले—इस बन्दूक में गज़ तो नहीं होता ?

अफ़सर—उड़ती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो ?

खोजी—उड़ती चिड़िया कैसी ! आसमान तक के जानवरों को भून डालूँ।

अफ़सर—अच्छा तो बन्दूक ले।

खोजी—ताककर निशाना लगाऊँ तो दरख्त की पत्तियाँ गिरा दूँ।

यह कहकर आप टहलने लगे।

अफ़सर—आप निशाना क्यों नहीं लगाता? उठाइए बन्दूक!

खोजी ने ज़मीन में खूब जोर से ठोकर मारी और एक ग़ज़ल गाने लगे। अफ़सर दिल में खूब समझ रहा था कि यह आदमी महज डींग मारना जानता है। बोला—अब बन्दूक लेते हो या इसी बन्दूक से तुमको निशाना बनाऊँ?

खैर, बड़ी देर तक दिल्लगी रही। अफ़सर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरेवालों को हुक्म दे दिया कि इन पर बहुत सख्ती न करना। रात को खोजी ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई खत्म हो जायगी और हम न इधर के रहेंगे न उधर के। आधी रात को उठे और खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा! आज रात को तू मुझे इस कैद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नज़र आए और मैं गुल मचाकर कहूँ कि हम आ पहुँचे आ पहुँचे। आज़ाद से भी मुलाकात हो और खुश-खुश वतन चलें।

यह दुआ माँगकर खोजी रोने लगे। हाय अब वह दिन कहाँ नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ा रहे हों। वह दिल्लगी, वह चुहल अब नसीब हो चुकी। किस मजे से कटी जाती थी और किस लुत्फ से गडेरियाँ चूसते थे। कोई खुटियाँ ख़रीदता है, कोई कतारे चुसाता है। शोर-गुल की यह कैफियत है कि कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनाई देती, मक्खियों की भिन-भिन एक तरफ, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ, कोई औरत चण्डूखाने में आ गई तो और भी चुहल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नज़र एक छोटे से टट्टू पर पड़ी। पहरेवाले सो रहे थे। खोजी टट्टू के पास गए और उसकी गर्दन पर हाथ फेरकर कहा—बेटा कहीं दग़ा न देना। माना कि तुम छोटे से टट्टू हो और ख्वाजासाहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदां मददे खुदा। टट्टू को खोला और उस पर सवार होकर आहिस्ता-आहिस्ता कैम्प से बाहर की तरफ चले। बदन काँप रहा था मगर जब कोई सौ क़दम के फासिले पर निकल गए तो एक सवार ने पुकारा—कौन जाता है? खड़ा रह!

खोजी—हम हैं जी घासकट, सरकारी घोड़ों की घास छीलते हैं।

सवार—अच्छा तो चला जा।

खोजी जब जरा दूर निकल आए तो दो चार बार खूब गुल मचाया—मार लिया मार लिया! ख्वाजासाहब दो करोड़ रूसियों में से बेदाग़ निकले आते हैं। लो भई तुर्कों ख्वाजासाहब आ पहुँचे।

अपनी फ़तह का डंका बजाकर खोजी घोड़े से उतरे और चादर बिछाकर सोए तो ऐसी मीठी नींद आई कि उम्र-भर न आई थी। घड़ी भर रात बाकी थी कि उनकी नींद खुली। फिर घोड़े पर सवार हुए और आगे चले। दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नजदीक एक फ़ौज मिली। आपने समझा, तुर्कों की फौज है। चिल्लाकर बोले—आ पहुँचे आ पहुँचे! अरे यारो दौड़ो। ख्वाजासाहब के कदम धो-धोकर पीओ, आज ख्वाजासाहब ने वह काम किया कि रुस्तम के दादा से भी न हो सकता। दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे थे और मैं पैंतरे बदलता हुआ दन् से गायब। लकड़ी टेकी और उड़ा। दो करोड़ रूसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी नहीं। कह दिया, लो हम जाते होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कहकर चले।

अभी वह यह हाँक लगा ही रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड लिए और घोड़े से उतार लिया।

खोजी—ऐं कौन है भई ? मैं समझ गया, मियाँ आज़ाद हैं

मगर आजाद वहाँ कहाँ, यह रूसियों की फ़ौज थी। उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया। रूसियों ने उन्हें देखकर खूब तालियाँ बजाईं। खोजी दिल ही दिल में कटे जाते थे मगर बचने की कोई तदबीर न सूझती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं। उधर देखा इधर पड़ी। खोजी बिगड़कर बोले—अच्छा गीदी, इस वक्त तो बेबस हूँ अब की फँसाओ तो कहूँ। क़सम है अपने कदमों की आज तक कभी किसी को नहीं सताया। और सब कुछ किया, पतंग उड़ाए, बटेर लड़ाए, चण्डू पिया, अफ़ीम खाई, चरस के दम लगाए, मदक के छींटे उडाए मगर किस मरदूद ने किसी ग़रीब को सताया हो।

यह सोचकर खोजी की आँखों से आँसू निकल आये।

एक सिपाही ने कहा—बस अब उसको दिक न करो। पहले पूछ लो कि यह है कौन आदमी। एक बोला—यह तुर्की है कपड़े कुछ बदल डाले हैं। दूसरे ने कहा—यह गोइन्दा है, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुबहा हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली। अब ख़ोजी और सब असबाब तो दिखाते हैं मगर अफ़ीम की डिबिया नहीं खोलते।

एक रूसी—इसमें कौन चीज है ? क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते ? हम जरूर देखेंगे।

खोजी—ओ गीदी, मारूँगा बन्दूक, धुआँ उस पार हो जायगा। खबरदार जो डिबिया हाथ से छुई ! अगर तुम्हारा दुशमन हूँ तो मै हूँ। मुझे चाहे मारो चाहे कैद करो, पर मेरी डिबिया में हाथ न लगाना।

हन्सियों को यकीन हो गया कि डिबिया में जरूर कोई कीमती चीज़ है। खोजी ने डिबिया छीन ली। मगर अब उनमें आपस में लड़ाई होने लगी। एक कहता था डिबिया हमारी है, दूसरा कहता था हमारी है। आखिर यह सलाह हुई कि डिबिया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बाँट दी जाय। ग़रज़ डिबिया खोली गई तो अफ़ीम निकली। सब-के सब शर्मिन्दा हुए। एक सिपाही ने कहा—इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए इन में तलवार चलते चलते बची।

दूसरा बोला—इसे आग में जला दो।

खोजी—हम कहे देते हैं डिबिया हमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायँगे तो क़यामत आ जायगी। अभी तुम हमें नहीं जानते!

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागलख़ाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया। अब मियाँ खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गई। चिल्लाकर बोले—हाय आज़ाद! अब तुम्हारी सूरत न देखेंगे! ख़ैर, खोजी ने नमक का हक़ अदा कर दिया। अब वह भी कैद की मुसीबतें झेल रहा है और सिर्फ़ तुम्हारे लिए। एक बार ज़ालिमों के पंजे से किसी तरह भाग-छूटकर निकल भागे थे, मगर तक़दीर ने फिर उसी कैद में ला फँसाया। ज्यों मर्दों पर हमेशा मुसीबत आती है, इसका तो गम नहीं, गम इसी का है कि शायद अब तुमसे मुलाकात न होगी। खुदा तुम्हें खुश रखे, मेरी याद करते रहना—

शायद वह आएँ मेरे जनाज़े पे दोस्तो,
आँखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए।

चौहत्तरवाँ परिच्छेद

मियाँ आज़ाद कासकों के साथ साइबेरिया चले जा रहे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूब नदी के किनारे जा पहुँचे, । वहाँ उनकी तबीयत इतनी खुश हुई कि हरी-हरी दूब पर लेट गए और बड़ी हसरत से यह ग़जल पढ़ने लगे—

रख दिया सिर को तेग़े-कातिल पर,
हम गिरे भी तो जाके मंजिल पर।
आँख जब बिसमिलों में ऊँची हो,
सिर गिरे कटके पाय कातिल पर।
एक दम भी तड़प से चैन नहीं,
देख लो हाथ रखके तुम दिल पर।

यह ग़ज़ल पढ़ते-पढ़ते उन्हें हुस्नआरा की याद आ गई और आँखों से आँसू गिरने लगे। कासक लोगों ने समझाया कि भई, अब वे बातें भूल जाओ, अब यह समझो कि तुम वह आज़ाद ही नहीं हो। आजाद खिलखिलाकर हँसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नहीं हैं, कासकों ने घबराकर उनको सँभाला और समझाने लगे कि यह वक्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवास ठीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सके वरना खुदा ही हाफ़िज़ है। साइबेरिया से कितने ही कैदी भाग आते हैं मगर तुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो।

इतने में वह जहाज़ जिस पर सवार होकर आज़ाद को डैन्यूब के पार जाना था तैयार हो गया। तब तो आज़ाद की आँखों से आँसुओं का ऐसा तार बँधा कि कासकों के भी रूमाल तर हो गए। जिस वक्त जहाज पर सवार हुए दिल काबू में न रहा। रो-रोकर कहने लगे—हुस्नआरा, अब

आज़ाद का पता न मिलेगा। आज़ाद अब दूसरी दुनिया में हैं, अब ख्वाब में भी इस आज़ाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा।

यह कहते-कहते आज़ाद बेहोश हो गये। कासकों ने उनको इत्र सुँघाया और खूब पानी के छींटे दिए तब जाकर कहीं उनकी आँखें खुलीं। इतने में जहाज़ उस पार पहुँच गया तो आज़ाद ने रूम की तरफ़ मुँह कर के कहा—आज सब झगड़ा खत्म हो गया। अब आज़ाद की कब्र साइबेरिया में बनेगी और कोई उस पर रोनेवाला न होगा।

कासकों ने शाम को एक बाग़ में पड़ाव डाला और रात-भर वहीं आराम किया। लेकिन जब सुबह को कूच की तैयारियाँ होने लगीं तो आज़ाद का पता न था। चारों तरफ हुल्लड़ मच गया, इधर-उधर सवार छूटे पर आज़ाद का पता न पाया। वह बेचारे एक नई मुसीबत में फँस गए थे।

सबेरे मियाँ आज़ाद की आँख जो खुली तो अपने को अजब हालत में पाया। जोर की प्यास लगी हुई थी, तालू सूखा जाता था, आँखें भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज़ पर नज़र डालते थे धुँधली दिखाई देती थी। हाँ, इतना अलबत्ता मालूम हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओठ सूख गए थे, गो आँखें खोलते थे मगर बात करने की ताक़त न थी। इशारे से पानी माँगा और जब पेट-भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते हैं कि एक हसीन औरत सामने बैठी हुई है। औरत क्या हूर थी! आज़ाद ने कहा, खुदा के वास्ते बताओ कौन हो? हमें कैसे यहाँ फाँस लाई, मेरे तो कुछ समझ ही में नहीं आता, कासक कहाँ हैं? डैन्यूब कहाँ है! मैं यहाँ क्यों छोड़ दिया गया। क्या साइबेरिया इसी मुक़ाम का नाम है? हसीना ने आँखों के इशारे से ...ब्र करो, सब कुछ मालूम हो जायगा। आप तुर्की हैं या फ़ांसीसी?

आज़ाद—मैं हिन्दी हूँ। क्या यह आप ही का मकान है?

हसीना—नहीं, मेरा मकान पोलैण्ड में है, मगर मुझे यह जगह बहुत पसन्द है। आइए आपको मकान की सैर कराऊँ।

आज़ाद ने देखा कि पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर कीमती पत्थरों की एक कोठी बनी है। पहाड़ ढालू था और उस पर हरी-हरी घास लहरा रही थी। एक मील के फ़ासिले पर एक पुरानी गिरजा का सुनहला मीनार चमक रहा था। उत्तर की तरफ़ डैन्यूब नदी अजब शान से लहरें मारती थी। किश्तियाँ दरिया में आती हैं। रूस की फ़ौजें दरिया के पार जाती हैं। मेढा हवा से उछल रहा है। कोठी के अन्दर गए तो देखा कि पहाड़ को काटकर दीवारें बनी हैं। उसकी सजावट देखकर उनकी आँखें खुल गईं। छत पर गए तो ऐसा मालूम हुआ कि आसमान पर जा पहुँचे। चारों तरफ़ पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हरी-हरी दूब से लहरा रही थीं। कुदरत का यह तमाशा देखकर आज़ाद मस्त हो गए और यह शेर उनकी जबान से निकला—

लगी है मेंह की झड़ी, बाग़ में चलो झूलें,
कि झूलने का मज़ा भी इसी बहारमें है।
यह कौन फूट के रोया कि दर्द की आवाज़,
रची हुई जो पहाड़ों के आबशार मे है।

हसीना—मुझे यह जगह बहुत पसन्द है। मैंने जिन्दगी-भर यहीं रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यहीं रहते तो बड़े मजे से जिन्दगी कटती।

आज़ाद—यह आपकी मिहरबानी है! मैं तो लड़ाई ख़त्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चला जाऊँगा।

हसीना—इस ख़याल में न रहिएगा, अब इसी को अपना वतन समझिए।

आज़ाद--मेरा यहाँ रहना कई जानों का गाहक हो जायगा। जिस खातून ने मुझे लड़ाई में शरीक होने के लिए यहाँ भेजा है वह मेरे इन्तजार में रो-रोकर जान दे देगी।

हसीना—आपकी रिहाई अब किसी तरह मुमकिन नहीं। अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का ख़याल छोड दीजिए वरना सारी ज़िन्दगी साइबेरिया में काटनी पढ़ेगी।

आजाद—इसका कोई गम नहीं मगर कौल जान के साथ है।

हसीना—मैं फिर समझाए देता हूँ आप पछताएँगे।

आज़ाद—आपको अख्तियार है।

यह सुनते ही उस औरत ने आजाद को फिर क़ैदखाने में भेजवा दिया।

अब मियाँ खोजी का हाल सुनिए। रूसियों ने उन्हें दीवाना समझकर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फ़ौज में पहुँचकर डून की लेने लगे। हमने यों रूसियों से मुक़ाबिला किया और यों नीचा दिखाया। एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भी हो गई, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया। लगोट कसा और खुदा का नाम लेकर ताल ठोंकके अखाड़े में उतर पड़ा, वह भी दाँव-पेंच में बर्क था और हाथ-पाँव ऐसे कि क्या कहूँ। मेरे हाथ-पाँव से भी बड़े।

एक सिपाही—ऍं, अजी हम न मानेंगे। आपके हाथ-पाँव से ही हाथ-पाँव तो देव के भी न होंगे!

खोजी—बस ज्यों हीं उसने हाथ बढ़ाया मैंने हाथ बाँध लिया। फिर जो जोर करता हूँ तो हाथ खट से अलग!

सिपाही—अरे हाथ ही तोड़ डाले! बेचारे को कहीं का न रक्खा!

ख़ोजी—बस फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अण्टी दी, धम-से गिरा। तीसरा आया, चपत जमाई और घर दबाया। चौथा

चोर-चोर का गुल मचाने लगे। यह गुल सुनकर दो-चार आदमी आ गए और खोजी को चपतें जमाने लगे।

ख़ोजी—तुम लोगों की क़ज़ा आई है, मैं धुन के रख दूँगा!

जवान—चुपके से घर की राह लो, ऐसा न हो मुझे तुम्हारी खोपड़ी सुहलानी पड़े।

इत्तिफ़ाक़ से एक तुर्की सवार का उस तरफ़ से गुज़र हुआ। खोजी ने चिल्लाकर कहा—दोहाई है सरकार की! यह डाकू मारे डालते हैं।

सवार ने ख़ोजी को देखकर पूछा—तुम यहाँ कहाँ?

ख़ोजी ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझकर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डाँटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। खोजी शेर हो गए। एक के कान पकड़े और कहा, आगे चल। दूसरे पर चपत जमाई और कहा, पीछे चल।

इस तरह ख़ोजी ने इन वेचारों की बुरी गति बनाई, मगर पड़ाव पर पहुँचकर उन्हें छोड़वा दिया।

जब सब लोग खाकर लेटे तो खोजी ने फिर डींग मारनी शुरू की। एक बार मैं दरिया नहाने गया तो बीचोंबीच में जाकर ऐसा गोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ।

एक सिपाही—तब तो यों कहिए कि आप गोताखोरों के उस्ताद हैं! कल जरा हमें भी गोता लेकर दिखाइए।

खोजी—हाँ-हाँ, जब कहो।

सिपाही—अच्छा तो कल की रही।

ख़ोजी ने समझा यह सब रोब में आ जायँगे। मगर वे एक छटे गुर्गे। दूसरे दिन उन सबों ने खोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले। पड़ाव से दरिया साफ़ नज़र आता था। खोजी के मदन के

रोंगटे खड़े हो गए, भागने ही को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो तुर्कों ने उनके कपड़े उतार लिए। खोजी की यह कैफियत थी कि कलेजा थरथर काँप रहा था, मगर ज़बान से बात न निकलती थी। जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे—भाइयो, मेरी जान के क्यों दुश्मन हुए हो ? अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारे सबब से इतनी जहमत उठाई, कैद हुआ और अब तुम लोग हँसी-हँसी में मुझे डुबा देना चाहते हो। गरज खोजी बहुत गिड़गिड़ाए मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गए तो कोसने लगे—खुदा तुमसे समझे ! यहाँ कोई अफ़सर भी नहीं है। न हुई करौली नहीं इस वक्त जीता चुनवा देता। खुदा करे तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे। सब-के-सब कपड़े उतार लिए गोया उनके बाप का माल था। अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ लूँगा। मगर दिल्लगीबाजों ने इतने ग़ोते दिए कि वे बेदम हो गए और एक गोता खाकर डूब गए।

पचहत्तरवाँ परिच्छेद

आजाद को साइबेरिया भेजकर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया। वहाँ की आब-हवा उसको ऐसी पसन्द आई, कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस क्लारिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा लगा हुआ है। हैरत हुई कि या खुदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमे कहाँ से आ गए ! एक औरत को भेजा कि जाकर पता लगाए कि ये लोग कौन हैं। वह औरत जो उस खेमे में गई तो क्या देखती है कि एक ज़वाहिरनिगार तख्त पर एक हूरों को शरमानेवाली शहज़ादी

बैठी हुई है, देखते ही दंग हो गई, जाकर मिस क्लारिसा से बोली—हुज़ूर, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा अगर ख्वाब नहीं तो जादू जरूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलाएँ ले।

क्लारिसा—तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कौन ?

लौंडी—हुज़ूर, मुझ पर तो ऐसा रोब छाया कि मुँह से बात ही न निकली। हाँ, इतना मालूम हुआ कि एक रईसज़ादी हैं और सैर करने के लिये आई हैं।

इतने में वह औरत खेमे से बाहर निकल आई। क्लारिसा ने झुककर उसको सलाम किया और चाहा कि बढ़कर हाथ मिलाए, मगर उसने क्लारिसा की तरफ़ तेज निगाहों से देखकर मुँह फेर लिया। यह कोहकाफ़ की परी मीडा थी। जब से उसे मालूम हुआ था कि क्लारिसा ने आजाद को साइबेरिया भेजवा दिया है वह उसके खून की प्यासी हो रही थी। इस वक्त क्लारिसा को देखकर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौका फिर हाथ न आएगा, मगर फिर सोचो की पहले नरमी से पेश आऊँ। बातों-बातों में सारा माजरा कह सुनाऊँ, शायद कुछ पसीजे।।

क्लारिसा—तुम यहाँ क्या करने आई हो ?

मीडा—मुसीबत खींच लाई है और क्या कहूँ। लेकिन आप यहाँ कैसे आइ ?

क्लारिसा—मेरा भी वही हाल है। वह देखिए सामने जो कब्र है उसी में वह जवान दफ़न है जिसकी मौत ने मेरी जिन्दगी को मौत से बदतर बना दिया है। हाय ! उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने है मगर मेरे सिवा किसी को नज़र नहीं आती।

मीडा—मैं भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हूँ। जिस जवान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया वह अब नज़र नहीं आता, उसको एक

ज़ालिम बागवान ने बाग़ से जुदा कर दिया। खुदा जाने, वह ग़रीब किन जंगलों में ठोकरें खाता होगा।

क्लारिसा—मगर तुम्हें यह तसकीन तो है कि तुम्हारा यार ज़िन्दा है और कभी न कभी उससे मुलाकात होगी। मैं तो उसके नाम को रो चुकी। मेरे और उसके माँ बाप शादी करने पर राजी थे, हम खुश थे कि दिल की मुरादें पूरी होंगी, मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान टूट पड़ा, मेरे प्यारे को फौज में शरीक होने का हुक्म मिला। मैंने सुना तो जान-सी निकल गई। लाख-लाख समझाया मगर उसने एक न सुनी। जिस रोज यहाँ से रवाना हुआ मैंने खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहाँ रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अखबारों में लड़ाई के हाल पढ़कर दिल को तसल्ली देती थी। एकाएक अखबार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया। मगर वह बेचारा जान से मारा गया। उस पाशा का नाम आजाद है। यह खबर सुनते ही मेरी आँखों मे खून उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के खून का बदला आज़ाद से लूँगी। यह तय करके यहाँ से चली और जब आज़ाद मेरे हाथों से बच गया तो मैंने उसे साइबेरिया भेजवा दिया।

मीडा यह सुनकर बेहोश हो गई।

छिहत्तरवाँ परिच्छेद

जिस वक्त खोजी ने पहला ग़ोता खाया तो ऐसे उलझे कि उभरना मुशकिल हो गया। मगर थोड़ी ही देर में तुर्कों ने गोते लगाकर इन्हें ढूँढ़ निकाला। आप किसी क़दर पानी पी गए थे। बहुत देर तक तो होश ही ठिकाने न थे। जब ज़रा होश आया तो सबको एक सिरे से

गालियाँ देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज में ज़रा टाँठा हो लूँ त
इनसे खूब समझूँ। डेरे पर आकर आज़ाद के नाम खत लिखने लगे
उनसे एक आदमी ने कह दिया था कि अगर किसी आदमी के ना
ख़त भेजना हो और पता न मिलता हो तो ख़त को पत्तों में लपे
दरिया के किनारे खड़ा हो और तीन बार 'भेजो-भेजो' कहकर खत क
दरिया में डाल दे, खत आप ही आप पहुँच जायगा। खोजी के दिल ं
यह बात बैठ गई। आजाद के नाम एक ख़त लिखकर दरिया में डा
आए। उस ख़त में आपने अपनी बहादुरी के कामों की खूब डींगें मारी थीं

रात का वक्त था, ऐसा अँधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी क
दिल सोया हो। ठण्डी हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रू
तक काँप जाती थी। एकाएक रूस की फौज से नक्कारे की आवाज
आई। मालूम हुआ कि दोनों तरफ के लोग लड़ने को तैयार हैं। खोजी
घबराकर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहाँ से आ रही हैं।
इतने में तुर्की फौज भी तैयार हो गई और दोनों फौजें दरिया के किनारे
जमा हो गईं। ख़ोजी ने दरिया की सूरत देखी तो काँप उठे। कहा—अगर
खुश्की की लड़ाई होती तो हम भी आज जौहर दिखाते। यों तो सब
अफ़सर और सिपाही ललकार रहे थे मगर ख़ोजी की उमगें सबसे बढ़ी
हुई थीं। चिल्ला-चिल्लाकर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खुश्क हो
जाय तो मैं फिर मज़ा दिखलाऊँ। एक हाथ में परे के परे काटकर रख दूँ।

गोला चलने लगा। तुर्कों की तरफ़ से एक इंजीनियर ने कहा कि
यहाँ से आध मील के फासिले पर किश्तियों का पुल बाँधना चाहिए।
कई आदमी दौड़ाए गए कि जाकर देखें, रूसियों की फौज किस कि
मुकाम पर है। उन्होंने आकर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों
का नाम-निशान नहीं है। फ़ौरन् पुल बनाने का इंतजाम होने लगा।

यहाँ से डेढ़ कोस पर पैंतीस किश्तियाँ मौजूद थीं। अफ़सर ने हुक्म दिया कि उन किश्तियों को यहाँ लाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए आए। उनमें से एक ख़ोजी थे।

ख़ोजी—पैंतीस किश्तियाँ यहाँ से आध कोस पर मुस्तैद हैं। मैंने सोचा, जब तक सवार तुम्हारे पास पहुँचेंगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियाँ आएँ तब तक यहाँ खुदा जाने क्या हो जाय, इस लिए एक सवार को लेकर फ़ौरन् किश्तियों को इधर ले आया।

फ़ौज के अफ़सर ने यह सुना तो खोजी की पीठ ठोंक दी और कहा—शाबाश! इस वक्त तो तुमने हमारी जान बचा दी।

खोजी अकड़ गए। बोले—जनाब, हम कुछ ऐसे-वैसे नहीं है! आज हम दिखा देंगे कि हम कौन हैं। एक-एक को चुन-चुनकर मारूँ!

इतने में इंजीनियरों ने फुर्ती के साथ किश्ती का पुल बाँधने का इन्तज़ाम किया। जब पुल तैयार हो गया तो अफ़सर ने कुछ सवारों को उस-पार भेजा। खोजी भी उनके साथ हो लिए। जब पुल के बीच में पहुँचे तो एक दफ़ा गुल मचाया—ओ गीदी, हम आ पहुँचे।

तुर्कों ने उनका मुँह दबाया और कहा—चुप!

इतने में तुर्कों का दस्ता उस-पार पहुँच गया। रूसियों को क्या खबर थी कि तुर्क लोग क्या कर रहे हैं। इधर ख़ोजी जोश में आकर तीन-चार तुर्कों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले। जब उनको मालूम हो गया कि रूसी फ़ौज थक गई तो तुर्कों ने एक दम से धावा बोल दिया। रूसी घबरा उठे। आपस में सलाह की, कि अब भाग चलें। खोजी भी घोड़े पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोड़े को एक एँड़ दी और भागते सिपाहियों में से सात आदमियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तुर्की फ़ौज में वाह-वाह का शोर मच गया।

ख्वाजासाहब अपनी तारीफ़ सुनकर ऐसे खुश हुए कि परे में घुस गए और घोड़े को बढ़ा-बढ़ाकर तलवार फेंकने लगे। दम के दम में रूसी सवारों से मैदान खाली कर दिया। तुर्की फ़ौज में खुशी के शादियाने बजने लगे। ख्वाजासाहब के नाम फ़तह लिखी गई। इस वक्त उनके दिमाग़ सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात पर बिगड़ते थे। हुक्म दिया—फ़ौज के जनरल से कहो, आज हम उनके साथ खाना खायँगे। खाना खाने बैठे तो मुँह बनाया, वाह! इतने बड़े अफ़सर और यह खाना! न मीठे चावल न फिरनी, न पोलाव, खाना खाते वक्त अपनी बहादुरी की कथा कहने लगे—वल्लाह, सबों के हौसले पस्त कर दिए। ख्वाजासाहब हैं कि बातें! मेरा नाम सुनते ही दुश्मनों के कलेजे काँप गए। हमारा वार कोई रोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जाके इस काबिल हुए कि रूसियों के लश्कर में अकेले घुस पड़े! और हमें डर किसका है? बहिश्त के दरवाज़े खुले हुए हैं।

अफ़सर—हमने वज़ीरजंग से दरख्वास्त की है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले।

खोजी—इतना ज़रूर लिखना कि यह आदमी दगलेवाली पल्टन का रिसालदार था।

अफ़सर—दगलेवाली पल्टन कैसी? मैं नहीं समझा।

खोजी—तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिन्दी की चिन्दी निकालते हो। अवध का हाल मालूम है या नहीं? अवध से बढ़कर दुनिया में और कौन बादशाहत होगी?

अफ़सर—हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई खिताब मिले तो आप पसन्द करेंगे?

खोजी—वाह, नेकी और पूछ-पूछ!

उस दिन से सारी फ़ौज में खोजी की धूम मच गई। एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुर्कों पर गोले उतारने शुरू किए। तुर्क लोग आराम से लेटे हुए थे। एकाएक तोप की आवाज़ सुनी तो घबरा गए। जब तक मुकाबिला करने के लिये तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आए। उस वक्त खोजी ने अपने सिपाहियों को ललकारा, तलवार खींचकर पहाड़ी पर चढ़ गए और कई आदमियों को ज़ख्मी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गई। जिसे देखो उन्हीं की तारीफ़ कर रहा था।

एक सिपाही—आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता। अब आपके वास्ते कोई खिताब तजवीज़ा जायगा।

खोजी—मेरा आज़ाद आ जाय तो मेरी मिहनत ठिकाने लगे, वरना सब हेच है।

अफ़सर—जिस वक्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गए।

खोजी—गिरते ही सँभल भी तो गए थे।

अफ़सर—चित गिरे थे?

खोजी—जी नहीं। पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा।

अफ़सर—ज़रा-सा तो आपका कद है और इतनी हिम्मत!

खोजी—क्या कहा, ज़रा-सा कद, किसी पहलवान से पूछिए। कितनी ही कुश्तियाँ जीत चुका हूँ।

अफ़सर—हमसे लड़िएगा?

खोजी—आप-ऐसे दस हों तो क्या परवा?

फ़ौज के अफ़सर ने उसी दिन वज़ीरजंग के पास खोजी की सिफ़ारिश लिख भेजी।

सतहत्तरवाँ परिच्छेद

खोजी थे तो मसखरे, मगर वफादार थे। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सवार रहती थी। बराबर याद किया करते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि आज़ाद को पोलैण्ड की शहज़ादी ने कैद कर दिया है तो वह आज़ाद को खोजने निकले। पूछते-पूछते किसी तरह आज़ाद के कैदखाने तक पहुँच ही तो गए। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया।

खोजी—आज़ाद, आज़ाद, अरे मियाँ तुम कौन हो ?

आज़ाद—ओ हो हो !

खोजी—भाईजान, तुम भूत हो या प्रेत, हमे छोड़ दो। मैं अपने आज़ाद को ढूँढ़ने जाता हूँ।

आज़ाद—पहले यह बताओ कि यहाँ तक कैसे पहुँचे ?

खोजी—सब बताएँगे, मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्हारी यह गति कैसी हो गई ?

आज़ाद ने सारी बातें खोजी को समझाईं, तो आपने कहा—वल्लाह, निरे गावदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के लाले पड़े हैं, तुमको चाहिए कि जिस तरह मुमकिन हो शहजादी को खुश करो, तुमको तो यह दिखाना चाहिए कि शहज़ादी को छोड़कर कहीं जाओगे ही नहीं। खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हारा ऐतबार होगा।

आज़ाद—हो सिड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की कहते हो, मगर यह तकरीर कौन करे ?

खोजी—और हम आये क्या करने हैं ?

यह कहकर आप शहजादी के सामने आकर खड़े हो गए। उसने इनकी सूरत देखी तो हँस पड़ी। मियाँ खोजी समझे कि हम पर रीझ गई। बोले—क्या लड़ाओगी क्या ? आज़ाद सुनेगा तो बिगड़ उठेगा। मगर वाह रे

मैं ! जिसने देखा वही रीझा और यहाँ यह हाल है कि किसी से बोलते तक नहीं, एक हो तो बोलूँ, दो हो तो बोलूँ, चार निकाह तक तो जायज़ है मगर जब इन्द्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूँ ?

शहज़ादी—ज़रा बैठ तो जाइए। यह तो अच्छा मालूम नहीं होता कि मैं बैठी रहूँ और आप खड़े रहें।

खोजी—पहले यह बताओ दहेज़ क्या दोगी ?

अरबिन—और अकड़ते किस बिरते पर हो। सूखी हड्डियों पर यह ग़ुरूर ?

ख़ोजी—तुम पहलवानों की बातें क्या जानो। यह चोरबदन कहलाता है, अभी अखाडे में उतर पड़ूँ तो फिर कैफियत देखो !

अरबिन—टेनी मुर्ग़ के बराबर तो आपका क़द है और दावा इतना लम्बा-चौड़ा !

खोजी—तुम गँवारिन हो, ये बातें क्या जानो। तुम क़द को देखा चाहो और यहाँ लम्बे आदमी को लोग बेवकूफ कहते हैं। शेर को देखो और ऊँट को देखो। मिश्र में एक बड़े डील-डौल जवान को पटकनी बताई। मारा चारों शाने चित। उठकर पानी भी न माँगा।

खैर, बहुत कहने-सुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टाँगें कुरसी पर रख लीं और बोले—अब दहेज का हाल बताओ। लेकिन मैं एक शर्त से शादी करूँगा, इन सब लौंडियों को महल बनाऊँगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रक्खूँगा। ताऊस-महल, गुलाब-महल......।

शहज़ादी—तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए।

खोजी—हँसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो तो किसी पहलवान को बुलाओ। अगर हम कुश्ती निकालें तो शादी मंजूर ?

शहज़ादी ने एक मोटी-ताज़ी हबशिन को बुलाया। खोजी ने आँख ऊपर उठाई तो देखते हैं कि एक काली-कलूटी देवनी हाथ में एक मोटा सोटा लिए चली आती है। देखते ही उनके होश उड़ गए। हबशिन ने आते ही इनके कन्धे पर हाथ रक्खा तो इनकी जान निकल गई। बोले—हाथ हटाओ।

हबशिन—दम हो तो हाथ हटा दो।

खोजी—मेरे मुँह न लगना, खबरदार!

हबशिन ने उनका हाथ पकड़ लिया और मरोड़ने लगी। खोजी झल्ला-झल्लाकर कहते थे, हाथ छोड़ दे। हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊँगा, मुझसे बुरा कोई नहीं।

हबशिन ने हाथ छोड़कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो ज़मीन से छः अंगुल ऊँचे!

हबशिन—कहो, शादी पर राजी हो या नहीं?

खोजी—औरत समझकर छोड़ दिया। इसके मुँह कौन लगे!

इस पर हबशिन ने ख्वाजासाहब को गोद में उठाया और ले चली। उन्होंने सैकड़ों गालियाँ दीं—खुदा तेरा घर खराब करे, तुझ पर आसमान टूट पड़े, देखो मैं कहे देता हूँ कि पीस डालूँगा। मैं सिर्फ इस सबब से नहीं बोलता, कि मर्द होकर औरत ज़ात से क्या बोलूँ। कोई पहलवान होता तो मैं अभी समझ लेता, और समझता क्या? मारता चारों शाने चित।

हबशिन—और दिल्लगी तो हो चुकी, अब यह बताओ कि आज़ाद से तुमने क्या कहा? वह तो आपके दोस्त हैं।

खोजी—ऊँह, तुमको किसी ने बहका दिया, वह दोस्त नहीं लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक खत लिखा है, ले जाओ और उसका जवाब लाओ

अरबिन आपका ख़त लेकर आज़ाद के पास पहुँची और बोली—हुज़ूर, आपके वालिद ने इस खत का जवाब माँगा है।

आजाद—किसने माँगा है? तुमने यह कौन लफ्ज़ कहा?

अरबिन—हुज़ूर के वालिद ने। वह जो ठिगने से आदमी हैं।

आज़ाद—वह सुअर, मेरे घर का गुलाम है। वह मसख़रा है। हम उसके खत का जवाब नहीं देते।

अरबिन ने आकर खोजी से कहा—आपका खत पढ़कर आपके लड़के बहुत ही खफ़ा हुए।

खोजी—नालायक है कपूत, जी चाहता है अपना सिर पीट लूँ।

शहज़ादी ने कहा—जाकर आजाद पाशा को बुला लाओ, इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जरा देर में आज़ाद आ पहुँचे। ख़ोजी उन्हें देखकर सिटपिटा गए।

इधर तो शहज़ादी खोजी के साथ यों मजाक कर रही थी। उधर एक लौंडी ने आकर कहा—हुज़ूर दो सवार आए हैं और कहते हैं कि शहजादी को बुलाओ। हमने बहुत कहा कि शहजादी साहब को आज फ़ुरसत नहीं है मगर वह नहीं सुनते।

शहज़ादी ने ख़ोजी से कहा बाहर जाकर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं? ख़ोजी ने जाकर उन दोनों को खूब गौर से देखा और आकर बोले—हुज़ूर, मुझे तो रईसजादे मालूम होते हैं। शहजादी ने जाकर शहज़ादों को देखा तो आज़ाद भूल गए। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ न होने पावे। आज़ाद तो इस खयाल में बैठे थे कि शह-ज़ादी आती होगी और शहजादी नए मेहमानों की ख़ातिरदारी का इन्तजाम कर रही थी। लौंडियाँ भी चल दीं, ख़ोजी और आज़ाद अकेले रह गए।

आज़ाद—मालूम होता है उन दोनों लौंडों को देखकर लट्टू हो गई।

खोज़ी—तुमसे तो पहले ही कहते थे मगर तुमने न माना। अगर शादी हो गई होती तो मजाल थी कि ग़ैरों को अपने घर में ठहराती।

आज़ाद—जी चाहता है इसी वक्त चलकर दोनों के सिर उड़ा दूँ।

खोजी—यही तो तुममें बुरी आदत है। ज़रा सब्र से काम लो, देखो क्या होता है।

अठहत्तरवाँ परिच्छेद

इन दोनों शहज़ादों में एक का नाम मिस्टर क्लार्क था और दूसरे का हेनरी। दोनों की उठती जवानी थी। निहायत ख़ूबसूरत। शहज़ादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बातें सुनने से उसका जी न भरता था। मियाँ आजाद तो मारे जलन के अपने महल से निकलते ही न थे। मगर ख़ोजी टोह लेने के लिये दिन में कई बार वहाँ आ बैठते थे। उन दोनों को भी ख़ोजी की बातों में बड़ा मजा आता।

एक दिन खोजी दोनों शहज़ादों के पास गए, तो इत्तिफाक़ से शहज़ादी वहाँ न थी। दोनों शहज़ादों ने खोजी की बड़ी ख़ातिर की। हेनरी ने कहा—ख्वाजासाहब, हमको पहचाना?

यह कहकर उसने टोप उतार दिया। खोजी चौंक पड़े। यह मीडा थी। बोले—मिस मीडा, तुम मिलीं।

मीडा—चुप-चुप! शहज़ादी न जानने पाए। हम दोनों इसी लिए आए हैं कि आज़ाद को यहाँ से छुड़ा ले जायँ।

खोजी—अच्छा क्या यह भी औरत है?

मीडा—यह वही औरत है जो आज़ाद को पकड़ ले गई थीं।

खोजी—अल्लाह मिस क्लारिसा! आप तो इस क़ाबिल हैं कि आप का बायाँ क़दम ले।

मीडा—अब यह बताओ कि यहाँ से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है?

खोजी—हाँ, वह तदबीर बताऊँ कि कभी पट ही न पड़े। यह शहज़ादी बड़ी पीनेवाली है, इसे खूब पिलाओ और जब बेहोश हो जाय तो ले उड़ो।

खोजी ने जाकर आज़ाद से यह किस्सा कहा। आज़ाद बहुत खुश हुए। बोले—मैं तो दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था।

खोजी—मिस क्लारिसा कहीं तुम्हें दग़ा न दे।

आज़ाद—अजी नहीं, यह मुहब्बत की घातें है।

खोजी—अभी ज़रा देर में महफ़िल जमेगी, न कहोगे कैसी तदबीर बताई।

खोजी ने ठीक कहा था। थोड़ी ही देर में शहज़ादी ने इन दोनो आदमियों को बुला भेजा। ये लोग वहाँ पहुँचे तो शराब के दौर चल रहे थे।

शहज़ादी—आज हम शर्त लगाकर पिएँगे।

हेनरी—मंज़ूर। जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। जो पहले छोड़ दे वह हारा।

क्लार्क—(आज़ाद से) तुम कौन हो मियाँ, साफ़ बोलो!

आज़ाद—मै आदमी नहीं हूँ, देवज़ाद हूँ परियाँ मुझे खूब जानती हैं।

क्लारिसा—

उड़ता है मुझसे ओ सितमईजाद किस लिए,
बनता है आदमी से परीजाद किस लिए?

क्लारिसा ने शहज़ादी को इतनी शराब पिलाई कि वह मस्त होकर झूमने लगी। तब आज़ाद ने कहा—ख्वाजासाहब, आप सच कहना, हमारा इश्क़ सच्चा है या नहीं। मीडा, खुदा जानता है आज का दिन मेरी ज़िन्दगी का सबसे मुबारक दिन है। किसे उम्मेद थी कि इस कैद में तुम्हारा दीदार होगा।

खोजी—बहुत बहको न भाई, कहीं शहजादी सुन रही हों तो आफ़त आ जाय।

आज़ाद—वह इस वक्त दूसरी दुनिया में हैं।

खोजी—शहजादीसाहब, यह सब भागे जा रहे हैं, ज़रा होश में तो आइए।

आज़ाद—अबे चुप रह नालायक़। मीडा, बताओ किस तदबीर से भागोगी, मगर तुमने तो वह रूप बदला कि, खुदा की पनाह! मैं यहाँ दिल में सोचता था कि ऐसे हसीन शहजादे यहाँ कहाँ से आ गए, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। वल्लाह, जो ज़रा भी पहचाना हो। मिस क्लारिसा, तुमने तो ग़ज़ब ही कर दिया। कौन जानता था कि साइबेरिया भेजकर तुम मुझे छुड़ाने आओगी।

मीडा—अब तो मौक़ा अच्छा है, रात ज्यादा आ गई है। पहरेवाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें।

आज़ाद अस्तबल में गए और चार तेज घोड़े छाँटकर बाहर लाए। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गईं मगर खोजी की हिम्मत छूट गई, डरे कि कहीं गिर पड़ें तो हड्डी-पसली चूर हो जाय। बोले—भाई, तुम लोग जाओ; मुझे यहीं रहने दो। शहजादी को तसल्ली देनेवाला भी तो कोई चाहिए। मैं उसे बातों में लगाए रक्खूँगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाहा तो एक हफ्ते के अन्दर कुस्तुनतुनिया में तुमसे मिलूँगा।

इयाँ की हैं उन्हें माफ़ करना। मैंने जो कुछ किया दिल के जलन से मजबूर होकर किया। तुम्हारी जुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी। जाओ रुख़सत।"

यह कहकर उसने क्लारिसा से कहा—शहज़ादी, ख़ुदा के लिये इन्हें साइबेरिया न भेजना। वज़ीरजंग से तुम्हारी जान पहचान है! वह तुम्हारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ़ कर दोगी, तो वह ज़रूर माफ़ कर देंगे।

उन्यासीवाँ परिच्छेद

उधर आज़ाद जब फौज से गायब हुए तो चारों तरफ़ उनकी तलाश होने लगी। दो सिपाही घूमते घामते शहज़ादी के महल की तरफ़ आ निकले। इत्तिफ़ाक़ से खोजी भी अफ़ीम की तलाश में घूम रहे थे। इन दोनों सिपाहियों ने खोजी को आज़ाद के साथ पहले देखा था। खोजी को देखते ही पकड़ लिया और आज़ाद का पता पूछने लगे।

खोजी—मैं क्या जानूँ कि आज़ाद पाशा कौन है। हाँ नाम अलबत्ता सुना है।

एक सिपाही—तुम आज़ाद के साथ हिन्दोस्तान से आए हो और तुमको खूब मालूम है कि आज़ाद पाशा कहाँ हैं।

खोजी—कौन आज़ाद के साथ आया है? मैं पठान हूँ पेशावर से आया हूँ, मुझसे आज़ाद से वास्ता?

मगर यह दोनों सिपाही भी छटे हुए थे, खोजी के झाँसे में न आए। खोजी ने जब देखा कि इन ज़ालिमों से बचना मुश्किल है तो सोचे कि सिड़ी बन जाओ। कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूसरे के लेकर क्यों मरो। मरना न होता तो अपना वतन छोड़कर इतनी दूर आते ही क्यों। खासे मज़े में नवाब के यहाँ टनटनाते थे। सल्तू बना-बनाया

मजे उड़ाते थे। चीनी की प्यालियों में मालवे की अफ़ीम घुलती थी। चंडू के छींटे उड़ते थे चरस के दम लगते थे। वह सब मजे छोड-छाडकर उल्लू बने, मगर फँसे सो फँसे !

सिपाही—तुम्हारा नाम क्या है ? सच-सच बता दो।

खोजी कल तक दरिया चढ़ा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी।

सिपाही—तुम्हारे बाप का क्या नाम था ?

खोजी—हमको अपना नाम तो याद ही नहीं। बाप के नाम को कौन कहे ?

सिपाही—तुम यहाँ किसके साथ आए ?

खोजी—शैतान के साथ।

सिपाहियों ने जब देखा कि यह ऊल-जलूल बक रहा है तो उन्हें एक मोटे-से दरख्त में बाँधा और बोले—ठीक-ठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हे फाँसी दे देंगे।

खोजी की आँखों से आँसू निकल पड़े। खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूँ मगर मरते वक्त दुआ माँगता हूँ कि आज़ाद का बाल भी बाँका न हो।

आखिर, सिपाहियों को खोजी के सिड़ी होने का यक़ीन आ ही गया। छोड़ दिया। खोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे—तुम लोग जिन्दगी के मजे क्या जानो, हमने वह-वह मजे उठाए है कि सुनो तो फड़क जाओ। नवाबसाहब की बदौलत बादशाह बने फिरते थे, सुबह से दस बजे तक चण्डू के छींटे उड़े, फिर खाना खाया, सोए तो चार बजे की खबर लाए, चार बजे से अफ़ीम घुलने लगी, पौंडे छीले और गँडेरियाँ चूसीं, इतने में नवाबसाहब निकल आए। वैसे रईस यहाँ कहाँ? वहाँ के एक अदना कहार ने बीस लाख की शराब अपनी बिरादरीवालों को एक रात

में पिला दी। एक कहार ने सोने-चाँदी की कुज्जियों में शराब पिला
इस पर एक बूढ़े खुर्राट ने कहा—न भाई पंचो, आपन मरजाद न छोड़
हमरे बाप यही कुज्जी माँ पिहिन। हमरे दादा पिहिन, अब हम कहाँ
बड़े रईस होइ गयन! महरा ने सोने-चाँदी की प्यालियाँ मँगवाईं
फ़क़ीरों को बाँट दीं। दस हजार प्यालियाँ चांदी की थीं और दस हज
सोने की। जब बादशाह को यह खबर मिली तो हुक्म दिया कि जित
कहार आए हों, सबको एक-एक लँहगा दिलवा दिया जाय। अब इ
गई-गुजरी हालत पर भी जो बात वहाँ है वह कहीं नहीं है।

सिपाही—आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे?

ख़ोजी—हमारे मुल्क में एक से एक सिपाही मौजूद हैं। जो अपने वक्त का रुस्तम।

सिपाही—आप भी तो वहाँ के पहलवान ही मालूम होते हैं।

खोजी—इस वक्त तो सर्दी ने मार डाला है, अब बुढ़ापा आया, जवा
में अलबत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ लेता था तो हुमस नहीं सक
था। अब न वह शौक़, न वह दिल, अब तो फ़क़ीरी अख्तियार की।

सिपाही—आपकी शादी भी हुई है?

ख़ोजी—आपने भी वही बात पूछी। फ़कीर आदमी शादी हुई हुई, बराबर के लड़के हैं।

सिपाही—आप कुछ पढ़े लिखे भी हैं?

ख़ोजी—ऊह, पूछते हैं पढ़े-लिखे हैं। यहाँ बिना पढ़े ही आलिम
फ़ाज़िल हैं, पढ़ने का मरज़ नहीं पालते, यह आरज़ा तो यहीं देखा, अप
यहाँ तो चण्डू, चरस, मदक का चरचा रहता है। हाँ, अगले ज़माने
पढ़ने-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही—तो आपका मुल्क जाहिलों ही से भरा हुआ है?

खोजी—तुम खुद गँवार हो। हमारे यहाँ एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन तीन हज़ार हाथ जोडी के हिलाते हैं। डण्डों पर झुक गए तो चार-पाँच हजार डंड पेल डाले। गुलचले ऐसे कि अँधेरी रात में सिर्फ आवाज़ पर तीर लगाया और निशाना ख़ाली न गया।

ये बातें करके, खोजी ने अफ़ीम घोली और रूसियों से पीने के लिये कहा। और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफ़िर की शामत जो आई तो उसने एक चुस्की लगाई। ज़रा देर में नशे ने रँग जमाया तो झूमने लगा। साथियों ने क़हक़हा लगाया।

खोजी—एक दिन का ज़िक्र है कि नवाबसाहब के यहाँ हम बैठे गप्पें उड़ा रहे थे। एक मौलवी साहब आए। यहाँ उस वक्त सरूर डटा हुआ था, हमने अर्ज की, मौलवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाजिर करूँ। मौलवी ने आँखें नीली-पीली कीं और कहा—कोई ममखरा है बे तू! मैंने कहा—यार, ईमान से कह दो कि तुमने कभी अफ़ीम पी है या नहीं। मौलवी साहब इतने जामे से बाहर हुए कि मुझे हजारों गालियाँ सुनाईं। आज बडी सर्दी है, हाथ ठिठुरे जाते हैं।

सिपाही—यह वक्त हवा खाने का है।

खोजी—खुदा की मार इस अक्ल पर। यह वक्त हवाखाने का है? यह वक्त आग तापने का है। हमारे मुल्क के रईस इस वक्त खिड़कियाँ बन्द करके बैठे होंगे। हवा खाने की अच्छी कही, यहाँ तो रूह तक काँप रही है और आपको हवाखाने की सूझती है।

सिपाही—एक मुसाफ़िर ने हमसे कहा था कि हिन्दोस्तान में लोग पुराने रस्मों के बहुत पाबन्द हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं।

खोजी—तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकूफ़ थे? उनके रस्मों को जो न माने वह कपूत, जो रस्म जिस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाही—अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की जरूरत नहीं?

खोजी—लाख जरूरत हो तो क्या; पुरानी रस्मों में कभी तरमीम न करनी चाहिए। क्या वे लोग अहमक़ थे? एक आप ही बड़े अक्लमन्द पैदा हुए!

रूसियों को खोजी की बातों में बड़ा मज़ा आया। उन्हें यकीन हो गया कि यह कोई दूसरा आदमी है। आजाद का दोस्त नहीं। खोजी को छोड़ दिया और कई दिन के बाद वह कुस्तुन्तुनियाँ पहुँच गए।

अस्सीवाँ परिच्छेद

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियाँ बनाव-चुनाव करके हँस-खेल रही थीं। सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोंकों से उड़ा जाता था। जहानारा मोतिए के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याह रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा—बहन यह गरमी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा! अब कहने से तो बुरा मानिएगा, जहानारा बहन निखरें तो आज दूल्हा भाई आनेवाले हैं, यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया।

अब्बासी—आज चबूतरे पर अच्छी तरह छिड़काव नहीं हुआ।

हीरा—जरी बैठकर देखिए तो, कोई दस मशकें तो चबूतरे ही प डाली होंगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आई और बोली—हुज़ हमने यह आज गिल्लो पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आ महीना बाँध दिया। सुबह को हम हलुआ खिलाएँगे। शाम को पेड़ा। अब सिपहआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अ रोज़ गेंद ही खेला करोगी? ऐसा न हो आज भी अम्माजान आ जायँ

अब्बासी—हुज़ूर, जब बाज़ी सत्यानास हो गई तब तो हमको मिली और अब हुज़ूर निकली जाती हैं।

हुस्नआरा—हम नहीं जानते। फिर खेलने क्यों बैठी थीं?

अब्बासी—अच्छा मजूर है, फेंकिए पाँसा।

सिपहआरा—दो महीने की तनख्वाह है इतना सोच लो।

अब्बासी—ऐ हुज़ूर आपकी जूतियों का सदका, कौन बड़ी बात है। फेंकिए तीन काने।

सिपहआरा ने जो पाँसा फेंका तो पचीस! दूसरा पचीस, तीस, फिर पचीस, गरज़ सात पँवें हुईं। बोलीं—ले अब दस रुपए बाएँ हाथ से ढीले कीजिए। महरी बाजी की सन्दूक़ची तो लाओ आलमारी के पास रक्खी है।

हुस्नआरा ने महरी को आँख के इशारे से मना किया। महरी कमरे से बाहर आकर बोली—ऐ हुज़ूर कहाँ है? वहाँ तो नहीं मिलती।

सिपहआरा—बस जाओ भी, हाथ झुलाती आईं, चलो हम बतावें कहाँ है।

महरी—जो हुज़ूर बता दें तो और तो लौंडी की हैसियत नहीं है मगर सेर-भर मिठाई हुज़ूर की नज़र करूँ।

सिपहआरा महरी को साथ लेकर कमरे की तरफ चलीं। देखा तो सन्दूकची नदारद! हैं, यह सन्दूकची कौन ले गया? महरी ने लाख हँसी जब्त की मगर ज़ब्त न हो सकी। तब तो सिपहआरा झल्लाईं, यह बात है! मैं भी कहूँ सन्दूकची कहाँ गायब हो गई। तुम्हें क़सम है दे दो।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आईं तो सबने मिलकर क़हक़हा लगाया। एक ने पूछा—क्यों सन्दूक़चो मिली? दूसरी बोली—हमारा हिस्सा न भूल जाना। हुस्नआरा ने कहा—बहन दस ही रुपया निका

नजीर—अब तुम्हें कौन समझाए।

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डालकर बागीचे की तरफ ले गईं तो हुस्नआरा ने कहा, इनके तो मिजाज ही नहीं मिलते।

बड़ी बेगम—बड़ी कल्ला-दराज़ छोकरी है। इसके मियाँ की जान अजाब में है, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें।

हुस्नआरा—नहीं अम्माजान यह न फर्माइए, ऐसी नहीं है, मगर हाँ जबान नहीं रुकती।

एकाएक जानी बेगम ने आकर कहा—अच्छा बहन अब रुखसत करो। घर से निकले बड़ी देर हुई।

हुस्नआरा—आज तुम दोनों न जाने पाओगी। अभी आए कितनी देर हुई?

जानी—नज़ीर बेगम को चाहे न जाने दो, मैं तो जाऊँगी ही। मियाँ के आने का यही वक्त है। मुझे मियाँ का जितना डर है उतना और किसी का नहीं। नज़ीर की आँखों का तो पानी मर गया है।

नजीर—इसमें क्या शक, तुम बेचारी बड़ी ग़रीब हो।

इसी तरह आपस मे बहुत देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही। मगर जानी बेगम ने किसी का कहना न माना। थोड़ी ही देर में वह उठकर चली गईं।

इक्यासीवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम चोरी के बाद बहुत गमगीन रहने लगीं। एक दिन अब्बासी से बोलीं—अब्बासी, दिल को जरा तसकीन नहीं होती। अब हम समझ गए, कि जो बात हमारे दिल में है वह हासिल न होगी।

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया। लाल-लाल आँखों से घूरकर रह गए, पाते तो खा ही जाते।

सलारू—यह तो न हुआ कि कोचवान को एक डण्डा रसीद करते। उलटे मुझ पर बिगड़ रहे हो।

कोचवान चाहता था कि उतरकर वकील साहब की गरदन नापे, मगर सुरैयाबेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा—घर लौट चलो।

बेगमसाहब जब घर पहुँचीं तो दारोग़ाजी ने आकर कहा कि हुज़ूर घर से आदमी आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है। मुझे हुज़ूर रुखसत दें। यह लाला खुशवक्त राय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज काम करेंगे।

सुरैयाबेगम ने कहा—जाइए मगर जल्द आइएगा।

दूसरे दिन सुरैयाबेगम ने लाला खुशवक्त राय से हिसाब माँगा। लाला साहब पुराने फ़ैशन की दस्तार बाँधे, चपकन पहने, हाथ में क़लमदान लिए आ पहुँचे।

सुरैयाबेगम—लाला क्या सरदी मालूम होती है, या जूड़ी आती है, लेहाफ़ दूँ!

लालासाहब—हुज़ूर, मैं बारहों महीने इसी पोशाक में रहता हूँ। नवाब साहब के वक्त में उनके दरबारियों की यही पोशाक थी। अब वह ज़माना कहाँ, वह बात कहाँ, वह लोग कहाँ। मेरे वालिद ६ रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते थे। दरवाजे पर दो दस्ते मुकर्रर थे। बीस जवान। अस्तबल में दो घोड़े। फीलखाने में एक मादा हाथी! एक जमाना वह था कि दरवाजे पर हाथी झूमता था अब एक कोने में जान बचाए बैठे हैं।

"बेगमसाहब की ख़िदमत में आदाब !

आपका ख़त आया, अफ़सोस तुम भी उसी मरज़ में गिरफ़्तार हो। आपसे मिलने का शौक तो है मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी ग़म ग़लत हो। आज़ाद का हाल इतना मालूम है कि रूम की फ़ौजों में अफ़सर हैं। सुरैयाबेगम सच कहती हैं कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा पहुँचती। मगर ख़ौफ़ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें।

तुम्हारी

हुस्नआरा"

यह ख़त लिखकर अब्बासी को दिया। अब्बासी ख़त लेकर सुरैया बेगम के मकान पर पहुँची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैयाबेगम को टोह लगा ली। दंग हो गए कि या खुदा, यह यहाँ कहाँ। घर जाकर सलारू-से कहा। सलारू ने सोचा, मियाँ पागल तो हैं हीं, किसी औरत पर नज़र पड़ी होगी कह दिया शिब्बोजान हैं। बोला—हुज़ूर, फिर कुछ फ़िक्र कीजिए। वकील साहब ने फ़ौरन ख़त लिखा—

"शिब्बोजान, तुम्हारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुज़री दिल ही जानता है। अफ़सोस, तुम बड़ी बेमुरव्वत निकलीं। अगर जाना ही था तो मुझसे पूछकर गई होतीं। यह क्या कि बिला कहे-सुने चल दीं, अब ख़ैर इसी में है कि चुपके से चली आओ। जिस तरह किसी को कानोकान ख़बर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह अब भी किसी से कहो न सुनो चुपचाप चली आओ। तुम ख़ूब जानती हो कि मैं नामी-गिरामी वकील हूँ।

तुम्हारा

वकील"

सलारू ने कहा—मियाँ खूब ग़ौर करके लिखना और नहीं एक बात हम बतावें। हमको भेज दीजिए, मैं कहूँगा, बीवी वह तो मालिक है, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो। गो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ मगर उम्र-भर लखनऊ मे रहा हूँ!

वकील साहब ने सलारू को डाँटा और खत में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूँ तो तुमको फँसा दूँ। लेकिन मुझसे यह न होगा हाँ, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक़ करेंगे।

यह खत लिखकर एक औरत के हाथ सुरैयाबेगम के पास भेज दिया। बेगम ने लालासाहब से कहा—ज़रा यह ख़त पढ़िए तो। लालासाहब ने खत पढ़कर कहा, यह तो किसी पागल का लिखा मालूम होता है। वह तो खत पढ़कर बाहर चले गए और सुरैयाबेगम सोचने लगीं कि अब क्या किया जाय? यह मूजी बेतरह पीछे पड़ा। सवेरे लाला खुशवक्त राय सुरैयाबेगम की ड्योढ़ी पर आए तो देखा कि यहाँ कुहराम मचा हुआ है। सुरैयाबेगम और अब्बासी का कहीं पता नहीं। सारा महल छान डाला गया मगर बेगमसाहब का पता न चला। लालासाहब ने घबराकर कहा—ज़रा अच्छी तरह देखो शायद दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। गरज़ सारे घर में तलाश की मगर बेफायदा।

लालासाहब—यह तो अजीब बात है, आखिर दोनों चली कहाँ गईं? जरा असबाब-वसबाब तो देख लो, है या सब ले-देके चल दीं।

लोगों ने देखा तो जेवर का नाम भी न था। जवाहिरात और क़ीमती कपड़े सब नदारद।

बयासीवाँ परिच्छेद

शहज़ादा हुमायूँ फ़र भी शादी की तैयारियाँ करने लगे। सौदागरों की कोठियों में जा-जाकर सामान खरीदना शुरू किया। एक दिन एक नवाब साहब से मुलाकात हो गई। बोले—क्यों हजरत, यह तैयारियाँ!

शहज़ादा—आपके मारे कोई सौदा न खरीदे?

नवाब—जनाब,

चितवनों से ताड़ जाना कोई हमसे सीख जाय।

शहज़ादा—आपको यकीन ही न आए तो क्या इलाज!

नवाब—खैर, अब यह फ़रमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं? भला दो हफ्ते तक तो धमाचौकड़ी रहे। मगर उस्ताद तायफे नोक के हों। रही-कलावँत होंगे तो हम न आएँगे। बस यह इन्तज़ाम किया जाय कि दो महफ़िलें हों। एक रईसों के लिये और एक कदरों के लिये।

इधर तो यह तैयारियाँ हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहाँ यह ख़त पहुँचा कि शहज़ादा हुमायूँ फर को गुर्दे के दर्द की बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सजा पा चुका है। उसको किसी नशे से परहेज नहीं।

बड़ी बेगम ने यह खत पढ़वाकर सुना तो बहुत घबराई। मगर हुस्न-आरा ने कहा, यह किसी दुश्मन का काम है। आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूँ फर जुए की इल्लत में पकड़े गए। बड़ी बेगम ने कहा—अच्छा अभी जल्दी न करो। आज डोमिनियाँ न आएँ कल-परसों देखा जायगा।

दूसरे दिन अब्बासी यह ख़त लेकर शहज़ादा हुमायूँ फर के पास गई। शहज़ादा ने ख़त पढा तो चेहरा सुर्ख हो गया। कुछ देर तक सोचते

रहे। तब अपने सन्दूक से एक खत निकालकर दोनों की लिखावट मिलाई।

अब्बासी—हुज़ूर ने दस्तखत पहचान लिया न?

शहजादा—हाँ, खूब पहचाना पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज नहीं आता, अगर हाथ लगा तो ऐसा ठीक बनाऊँगा कि उम्र-भर याद करेगा। लो, तुम यह खत भी बेगमसाहब को दिखा देना और दोनों खत वापस ले आना। यह वही खत था जो शहज़ादे की कोठी में आग लगने के बाद आया था।

रात-भर शहजादा को नींद नहीं आई, तरह-तरह के खयाल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाए थे कि भाँडों का गोल आ पहुँचा। लाला कालीचरन ने जो ड्योढ़ी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गरदन निकालकर कहा—अरे भाई, आज क्या.

इतना कहना था कि भाँड़ों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। एक बोला—हमें तो सूसा मालूम होता है। दूसरे ने कहा—लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल हैं। सचमुच का बनमानुस बनाकर खड़ा कर दिया। तीसरे ने कहा—उस्ताद दुम की कसर रह गई। चौथा बोला—फिर खुदा और इन्सान के काम में इतना फर्क भी न रहे। लालासाहब झल्लाए तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया। चोट करता है, जरा सँभले हुए। अब उठा ही चाहता है। एक बोला—भला बतलाओ तो यह बनमानुस यहाँ क्योंकर आया। किसी ने कहा—चिड़ीमार लाया है। किसी ने कहा—रास्ता भूलकर बस्ती की तरफ़ निकला आया है। आखिर एक अशर्फी देकर भाँडों से नजात मिली।

दूसरे दिन शहज़ादा सुबह के वक्त उठे तो देखा कि एक खत सिरहाने रक्खा है। खत पढ़ा तो दंग हो गए।

"सुनो जी, तुम बादशाह के लड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा। एक दिन आग लगा चुका हूँ अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले लूँगा। जिस रोज से मैंने यह खबर सुनी है, यही जी चाह रहा है कि छुरी लेकर पहुँचूँ और दम के दम में काम तमाम कर दूँ। याद रक्खो कि मैं बेचोट किए न रहूँगा।"

शहजादा हुमायूँ फ़र उसी वक्त साहब-जिला की कोठी पर गए और सारा क़िस्सा कहा। साहब ने खुफ़िया पुलीस के एक अफसर को इस मामले की तहक़ीक़ात करने का हुक्म दिया।

साहब से रुखसत होकर वह घर आए तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं। यह हज़रत एक ही घाघ थे, आलिमों से भी मुलाकात थी, बाँकों से भी मिलते जुलते रहते थे। शहज़ादा ने उनसे भी इस खत का ज़िक्र किया। हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का ज़रूर पता लगाएँगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूँ फ़र को क़त्ल करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा। आदमी ने जाकर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यह परवाना दिया—

"आपको कलमी होता है कि मुबलिग पाँच हज़ार रुपया अपनी तहसील के खजाने से लेकर, आज रात को कालाडीह के मुक़ाम पर हाजिर हों। अगर आपको फ़ुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए।"

तहसीलदार ने खजानची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया लदवाया और चार चपरासियों को साथ लेकर कालाडीह चले। वह गाँव यहाँ से दो कोस पर था। रास्ते में एक घना जङ्गल पड़ता था। उसी

गन्धी—हुज़ूर, अव्वल नम्बर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिये हाथ बढ़ाया गन्धी ने सीटी बजाई और सीटी की आवाज सुनते ही पचास-साठ कान्स्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ्तार कर लिया। यह गन्धी न था, इन्स्पेक्टर था जिसे हाकिम-जिला ने शहसवार का पता लगाने के लिये तैनात किया था।

मियाँ शहसवार जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो रास्ते में उन्हें लल-कारने लगे। अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहाँ हो।

इंस्पेक्टर—हिस्स! चोर के पाँव कितने, चौदह बरस को जाओगे।

शहसवार—सुनो, मियाँ, हमारे काटे का मन्त्र नहीं, ज़रा जबान को लगाम दो, वरना आज के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा।

इंस्पेक्टर—पहले अपनी फिक्र तो करो।

शहसवार—हम कह देंगे कि इस इन्स्पेक्टर को हमसे अदावत है।

इन्स्पेक्टर—अजी, कुढ़-कुढ़कर जेलखाने में मरोगे।

तिरासीवाँ परिच्छेद

इधर बड़ी बेगम के यहाँ शादी की तैयारियाँ हो रही थीं। डोमि-नियों का गाना हो रहा था। उधर शहजादा हुमायूँ फ़र एक दिन दरिया की सैर करने गए। घटा छाई हुई थी। हवा जोरों के साथ चल रही थी। शाम होते-होते आँधी आ गई और किश्ती दरिया में चक्कर खाकर डूब गई। मल्लाह ने किश्ती के बचाने की बहुत कोशिश की, मगर मौत से किसी का क्या बस चल सकता है। घर पर यह खबर आई तो कुहराम मच गया। अभी कल की बात है कि दरवाज़े पर भांड़ मुबारकबाद गा

आरा समझ जायँगी। हमसे रोना जब्त न हो सकेगा, कहा मानिए, हमको न ले चलिए।

बड़ी बेगम—यहाँ इतने बड़े मकान में अकेली कैसे रहोगी?

जहानारा—यह मंजूर है, मगर जब्त मुमकिन नहीं।

सब-की-सब दिल में खुश थीं कि बाग़ की सैर करेंगे, मगर यह खबर ही न थी कि बड़ी बेगम किस सबब से बाग़ लिए जाती हैं। चारों बहनें पालकीगाड़ी पर सवार हुईं और आपस में मज़े-मज़े की बातें करती हुई चलीं। मगर अब्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियाँ गिरती थीं। बाग में पहुँचकर जहानारा ने सिर-दर्द का बहाना किया और लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं। सिपहआरा ने मौक़ा पाकर कहा—अब्बासी, एक दिन हम और शहजादे इस बाग में टहल रहे होंगे। निकाह हुआ और हम उनको बाग़ में ले आए। हम पाँच रोज़ यहाँ ही रहेंगे। अब्बासी की आँखों से बेअख्तियार आँसू निकल पड़े। दिल में कहने लगी, किधर ख़याल है, कैसा निकाह और कैसी शादी? वहाँ जनाज़े और कफ़न की तैयारियाँ हो रही होंगी।

एकाएक सिपहआरा ने कहा—बहन हिचकियाँ आने लगीं।

हुस्नआरा—कोई याद कर रहा होगा।

अब सुनिए कि उसी बाग़ के पास एक शाह साहब का तकिया था जिसमें कई शहज़ादों और रईसों की कब्रें थीं। हुमायूँ फ़र का जनाज़ा भी उसी तकिए में गया, हजारों आदमी साथ थे। बाग़ के एक बुर्ज से बहनों ने इस जनाजे को देखा तो सिपहआरा बोली—बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाजा है। खुदा उसको बख्शे।

हुस्नआरा—ओफ़ ओह! सारा शहर साथ है। अल्लाह, यह कौन मर गया, किससे पूछें?

पस अज़ फ़िना भी किसी तौर से क़रार नहीं ;
सिला बहिश्त तो कहता हूँ कूय यार नहीं।

अब्बासी—कोई बूढ़ा आदमी था।

सिपहआरा—तो फिर क्या ग़म!

बड़ी बेगम—तो फिर जितने बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हों सबको मर जाना चाहिए?

सिपहआरा—ऐसी बातें न कहिए, अम्माजान।

हुस्नआरा—बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन।

बड़ी बेगम और सिपहआरा नीचे चली गईं। हुस्नआरा भी आ रही थीं कि कब्रिस्तान से आवाज आई—हाय हुमायूँ फ़र, तुमसे इस दग़ा की उम्मेद न थी।

हुस्नआरा—ऐं अब्बासी, यह किसका नाम लिया?

अब्बासी—हुज़ूर, बहादुर मिरज़ा कहा, कोई बहादुर मिरज़ा होंगे।

हुस्नआरा—हाँ, हमीं को धोखा हुआ। पाँव-तले से ज़मीन निकल गई।

जब तीनों बहनें नीचे पहुँच गईं, तो बड़ी बेगम ने कहा—आख़िर तुम्हारे मिज़ाज में इतनी ज़िद क्यों है?

हुस्नआरा—अम्माजान, वहाँ बड़ी ठण्डी हवा थी।

बड़ी बेगम—मुरदा वहाँ आया हुआ है और तुम सब, भला सोचो तो।

सिपहआरा—फिर इससे क्या होना है।

बड़ी बेगम—चलो बैठो, होता क्या है।

तीनों बहनें लेटीं तो सिपहआरा को तो नींद आ गई मगर हुस्नआरा और गेतीआरा की आँख न लगी। बातें करने लगीं।

हुस्नआरा—क्या जाने, कौन बेचारा था ?

गेतीआरा—कोई उसके घर के दिलवालों से पूछे।

हुस्नआरा—कोई बड़ा शहज़ादा था !

गेतीआरा—हमें तो इस वक्त चारों तरफ़ मौत की शक्ल नजर आती है।

हुस्नआरा—क्या जाने, अकेले थे या लड़के वाले भी थे।

गेतीआरा—खुदा जाने, मगर था अभी जवान।

हुस्नआरा—देखो बहन सैकड़ों आदमी जमा हैं मगर—कैसा सन्नाटा है, जो है ठण्डी साँसें भरता है !

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं। बोलीं—कुछ मालूम हुआ बाजीजान, इस बेचारे की शादी हुई थी कि नहीं ? जो शादी हुई होगी तो सितम है।

हुस्नआरा—खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आए।

सिपहआरा—बेचारी बेवा अपने दिल में न-जाने क्या सोचती होगी ?

हुस्नआरा—इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे !

रात को सिपहआरा ने ख्वाब में देखा कि हुमायूँ फ़र बैठे उनसे बातें कर रहे हैं।

हुमायूँ—खुदा का हज़ार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद है, हम तुमसे गले मिले थे ?

सिपहआरा—बहुरूपिए के भी कान काटे।

हुमायूँ—याद है जब हमने महताबी पर कनकौआ उड़ाया था ?

सिपहआरा—एक ही ज़ात शरीफ़ हैं आप।

हुमायूँ—अच्छा तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब कौन है ?

सिपहआरा—हम !

हुमायूँ—और जो मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करो ?

इतना कहते-कहते हुमायूँ फर के चेहरे पर जर्दी छा गई, और आँखें उलट गईं। सिपहआरा एक चीख मारकर रोने लगी। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घबराई हुई सिपहआरा के पास आई बड़ी बेगम ने पूछा—क्या है बेटी, तुम चिल्लाई क्यों ?

अब्बासी—ऐ हुज़ूर, ज़री आँख खोलिए।

बड़ी बेगम—बेटा, आँख खोल दो।

बड़ी मुशकिल से सिपहआरा की आँखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने भी न पाई थी कि किसी ने बाग़ीचे की दीवार के पास रोकर कहा—हाय शाहज़ादा हुमायूँ फ़र !

सिपहआरा ने रोकर कहा—अम्मीजान, यह क्या हो गया ! मेरा तो कलेजा उलटा जाता है।

दीवार के पास से फिर आवाज़ आई—हाय हुमायूँ फ़र ! क्या मौत को तुम पर जरा भी रहम न आया ?

सिपहआरा—अरे क्या यह मेरे हुमायूँ फ़र हैं !! या खुदा यह क्या हुआ अम्मीजान !

बड़ी बेगम—बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सब्र करो।

सिपहआरा—हाय कोई हमें प्यारे शाहज़ादे की लाश दिखा दो।

बड़ी बेगम—बेटा मैं तुम्हें समझाऊँ कि इस सिन में तुम पर यह मुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा।

सिपहआरा—हाय हमें शाहज़ादे की लाश दिखा दो। अम्मीजान, अब सब्र की ताकत नहीं रही, मुझे जाने दो, खुदा के लिये मत रोको, अब शर्म कैसा और हिजाब किसके लिये।

बड़ी बेगम—बेटी ज़रा दिल को मज़बूत रक्खो, खुदा की मर्जी में इंसान को क्या दखल।

सिपहआरा—क्या कहती है आप अम्मीजान, दिल कहाँ है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं। यहाँ तो रूह तक पिघल गई।

बड़ी बेगम—बेटी खूब खुलकर रो लो। मै नसीबों-जली यही दिन देखने के लिये बैठी थी!

सिपहआर—आँसू नहीं है अम्मीजान, रोऊँ कैसे? बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दो। इस वक्त वह भी मुझे छोड़कर चल दीं?

हुस्नआरा अलग जाकर रो रही थीं! आई मगर खामोश। न रोई न सिर पीटा, आकर बहन के पलग के पास बैठ गई।

सिपहआरा—बाजी, चुप क्यों हो! हमें तसकीन तक नहीं देतीं वाह!

हुस्नआरा खामोश बैठी रही, हाँ सिर उठाकर सिपहआरा पर नजर डाली।

सिपहआरा—बाजी बोलिए, आखिर चुप कब तक रहिएगा।

इतने में रूहअफ़ज़ा भी आ गई, उन्होंने मारे ग़म के दीवार पर सिर पटक दिया था। सिपहआरा ने पूछा—बहन यह पट्टी कैसी बँधी है?

रूहअफ़ज़ा—कुछ नहीं यों ही।

सिपहआरा—कहीं सिर विर तो नहीं फोड़ा। अम्माजान अब दिल नहीं मानता, खुदा के लिये हमे लाश दिखा दो। क्यों अम्माजान, शहजादे की मां की क्या हालत होगी?

बड़ी बेगम—क्या बताऊँ बेटा—

औलाद किसी की न जुदा होवे किसी से,
बेटी, कोई इस दाग को पूछे मेरे जी से!

इतने में एक आदमी ने आकर कहा कि हुमायूँ फ़र की माँ रो रही हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के क़रीब लाओ। हुमायूँ फ़र की रूह खुश होगी। बड़ी बेगम ने कहा—सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है, ऐसा न हो कि मेरी बेटी डर जाय, इसका तो और दिल बहलाना चाहिए, न कि लाश दिखाना। और लोगों से पूछो उनकी क्या राय है। मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए हैं।

आखिर यह राय तय पाई कि दुलहिन लाश पर जरूर जायँ।

सिपहआरा चलने को तैयार हो गई।

बड़ी बेगम—बेटा, अब मैं क्या कहूँ। तुम्हारी जो मर्जी हो वह करो

सिपहआरा—बस हमें लाश दिखा दो; फिर हम को तकलीफ़ न देंगे।

बड़ी बेगम—अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह जिन्दा नहीं हो सकता।

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जाकर सन्दूक लाओ सन्दूक आया तो सिपहआरा ने अपना कीमती जोड़ा निकाला, सुहा का इत्र मला, कोनती दुपट्टा ओढ़ा जिसमें मोतियों की बेल लगी हु थी। सिर पर पर जड़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूल, ना में नथ, जिसके मोतियों की कीमत अच्छे अच्छे जौहरी न लगा सके कानों में पत्ते, वालियाँ बिजलियाँ, करनफूल, गले में मोतियों की माल तौक़, चन्दनहार, चम्पाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियाँ, पोर-पोर छल्ले पाँव में पायजेब, छागल। इस तरह सोलहों सिङ्गार करके वह बड़ी बेग और अब्बासी के साथ, पालकीगाड़ी में सवार हुई। शहर में धूम म गई कि दुलहिन दूल्हा के लाश पर जाती है। शहज़ादे की माँ को इत्त दी गई कि दुलहिन आती हैं। ज़रा देर में गाड़ी पहुँच गई। हज़

मौलवी—हम इसके क़ायल नहीं, ख्वाब क्या चीज है !

सिपह्आरा को इस वक्त वह दिन याद आया, जब शहज़ादा हुमायूँ फ़र अपनी बहन बनकर उनसे गले मिलने गए। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। हमने उस दिन हुमायूँ फ़र को बुरा भला क्यों कहा था !

बड़ी बेगम ने कहा—बेटी, अब ज़रा बैठ जाओ, दम ले लो।

अब्बासी—हुज़ूर, इस मर्ज का तो इलाज ही नहीं है।

सिपह्आरा—दवा हर मर्ज़ की है। इस मर्ज की दवा भी सब्र है। सब्र ही ने हमें इस क़ाबिल किया कि हुमायूँ फ़र की लाश अपनी आँखों देख रहे हैं !

जब लोगों ने देखा कि सिपह्आरा की हालत खराब होती जाती है, तो उसे लाश के पास से हटा ले गए। गाड़ी पर सवार किया और घर ले गए।

गाड़ी में बैठकर सिपह्आरा रोने लगी और बड़ी बेगम से बोली—अम्माजान, अब हमें कहाँ लिए चलती हो ?

बड़ी बेगम—बेटी, मैं क्या करूँ, हाय।

सिपह्आरा—अम्माजान, करोगी क्या, मैंने क्या कर लिया।

अब्बासी—हमारी क़िस्मत फूट गई, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था। आज के दिन और हम मातम करें।

सिपह्आरा—अम्माजान, इस वक्त बेचारा कहाँ होगा ?

बड़ी बेगम—बेटी, खुदा के कारखाने में किसी को दखल है ?

चौरासीवाँ परिच्छेद

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों से दो औरतों ने रहना शुरू किया है। एक का नाम फ़िरोज़ा है। दूसरी का फ़रखुन्दा। इस

लिए पानी भरने ! सूझता नहीं कौन लेटा है कौन बैठा है ? इस प
एक आदमी ने कहा, वाह तुम तो कुएं के मालिक बन बैठे। अब तुम्हा
मारे कोई पानी न भरे। दूसरा बोला—सराफ़ की दूकान से चाद
लाए, मुफ्त में शक्कर ली और डपट रहे हैं।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर सवार चले जाते थे। इन लोगों की बातें सुन
कर बोले। साहब को एक अर्जी दे दो बस सारी शेखी किरकिरी हो जाय

कांस्टेबिल ने ललकारा—रोक ले टट्टू हम चालान करेंगे।

ठाकुर—क्यों रोक ले, हम अपनी राह जा रहे हैं तुमसे मतलब?

कांस्टेबिल—कह दिया रोक लो, यह टट्टू जख्मी है चलो तुम्हा
चालान होगा।

ठाकुर—तो जख्म कहाँ है ? हमें ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं हैं, हमसे बहु
रोब न जमाना।

इतने में दो-एक आदमियों ने आकर दोनों को समझाया, भाई
जवाना छोड़ दो, इज्जतदार आदमी है। इस गाँव के ठाकुर हैं, इनको
बेइज्जत न करो।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेली ले देकर अलग करो,
कहाँ की झंझट लगाई है। मुफ्त में चालान कर देगा तो गाँव-भर में
हँसी होगी। कुछ यह समझे, कुछ वह समझे। अठन्नी निकालकर
कांस्टेबिल की नज़र की, तब जाकर पीछा छूटा।

अब तो गाँव में और भी धाक बँध गई। पनभरनियाँ मारे डरके
पानी भरने न आईं, यह इधर-उधर ललकारने लगे। गल्ले की चन्द
गाड़ियाँ सामने से गुजरीं। आपने ललकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों वे पटरी
से नहीं जाता, सड़क तो साहब लोगों के लिये है। एक गाड़ीवान ने
कहा—अच्छा साहब पटरी पर किये देते हैं। आपने उठकर एक तमाचा

लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करें, दूसरे टराँयँ। सबके सब दंग हो गये कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी। हलवाई से कहा हमको सेर-भर पूरी तौल दो। वह भी काँप रहा था कि देखें कब शामत आती है, कहा अभी लाया। तब आप बोले कि आलू की तरकारी है ? वह बोला—आलू तो हमारे पास नहीं है मगर उस खेत से खुदवा लाओ तो सब मामला ठीक हो जाय। कहने-भर की देर थी। आप जाकर किसान से बोले—अरे एकआध सेर आलू खोद दे। उसकी शामत जो आई तो बोला—साहब चार आना सेर होई, चाहे लेव चाहे न लेव। समझलो। आपने कहा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों।

किसान आलू लाया। तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे माँगे। इसके जवाब में आपने उस ग़रीब को पीटना शुरू किया।

किसान—सेर-भर आलू लिहिस, पैसा न दिहिस, और ऊपर से मारत है।

मुराइन—और अलई कै पलवा वक़्त है, राम करैं देवी-भवानी खा जायँ।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुँह क्यों लगते हो। जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आलू ला दो। किसान आलू खोद लाया। आपने उसे रूमाल में बाँधा और ८ पैसे निकालकर हलवाई को देने लगे।

हलवाई—यह भी रहने दो, पान खा लेना।

कांस्टेबिल—खुशी तुम्हारी। आलू तो हमारे ही थे।

हलवाई—बस अब सब आप ही का है।

कांस्टेबिल ने खा-पीकर लम्बी तानी तो दो घण्टे तक सोया किए। जब उठे तो पसीने में तर थे। एक गँवार को बुलाकर कहा—पंखा झल। वह बेचारा पंखा झलने लगा। जब आप गाफ़िल हुए तो उसने इनकी लुटिया और लकड़ी उठाई और चलता धन्धा किया। यह उनके भी उस्ताद निकले।

जमादार की आँख खुली तो पंखा झलनेवाले का कहीं पता ही नहीं। इधर-उधर देखा तो लुटिया ग़ायब। लाठी नदारद। लोगों से पूछा, धमकाया, डराया मगर किसी ने न सुना और बताये कौन? सबके सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकीदारों को बुलाया और धमकाने लगे। फिर सबों को लेकर गाँव के ठाकुर के पास गए और कहा—इसी दम दौड़ आएगी। गाँव-भर फूँक दिया जायगा, नहीं तो अपने आदमियों से पता लगवाओ।

ठाकुर—ले अब हम कस-कस उपाव करी। चोर का कहाँ ढूंढी।

जमादार—हम नहीं जानता। ठाकुर होकर के एक चोर का पता नहीं लगा सकता।

ठाकुर—तुमहू तो पुलीस के नोकर हो। ढूँढ़ निकालो।

ठाकुर साहब से लोगों ने कहा यह सिपाही बड़ा शैतान है। आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है। बस यह मौक़ूफ़ हो जाय। ठाकुर बोले—हम सरकारी आदमियों से बतबढाव नहीं करते। कांस्टेबिल को तीन रुपये देकर दरवाजे से टाला।

जमादार साहब यहाँ से खुश खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करने लगे। उसने जाकर अपने बाप से कह दिया। वह पहलवान था, लँगोट बाँधकर आया और जमादार साहब को पटकके खूब पीटा।

बहुतसे आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे। जमादार ने चूँ तक न की, चुपके से झाड़ पोंछकर उठ खड़े हुए और गाँव की दूसरी तरफ़ चले। इत्तिफ़ाक़ से फ़िरोज़ा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नजर पड़ी तो हैरत हुई। बोले—अरे यह किसका मकान है? कोई है इसमें?

पड़ोसी—इस मकान में एक बेगम रहती हैं। इस वक्त कोई मर्द नहीं है।

जमादार—तू कौन है? बता इसमें कौन रहता है? और मकान किसका है?

पड़ोसी—मकान तो एक अहीर का है मुल इसमें एक बेगम टिकी है।

जमादार—कहो दरवाज़े पर आवें। बुला लाओ।

पड़ोसी—वाह, वह परदेवाली है। दरवाजे पर न आएँगी।

जमादार—क्या! परदा कैसा? बुलाता है कि घुस जाऊँ घर में? परदा लिए फिरता है!

फ़िरोज़ा के होश उड़ गए। फरखुन्दा से बोली—अब ग़ज़ब हो गया। भागके यहाँ आई थी मगर यहाँ भी वही बला सिर पर आई।

फ़रखुन्दा—इसको कहाँ से ख़बर हुई।

फिरोजा—क्या बताऊँ! इस वक्त कौन इससे सवाल-जवाब करेगा?

फ़रखुन्दा—देखिए पड़ोसिन को बुलाती हूँ। शायद वह काम आएँ।

दरवाजा खुलने में देर हुई तो कांस्टेबिल ने दरवाज़े पर लात मारी और कहा—खोल दो दरवाज़ा, हम दौड़ लाए हैं। मुहल्लेवालों ने कहा—भई तुम्हारे पास न सम्मन न सफ़ीना। फिर किस के हुक्म से दरवाजा खुलवाते हो? ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुर्म तो बताओ!

जमादार—तुम चल के साहब से पूछो जिनके भेजे हम आए हैं सम्मन-सफ़ीना दीवानी के मज़कूरी लाते हैं। हम पुलीस के आदमी हैं

दूसरे आदमी ने आगे बढ़कर कहा—सुनो भई जवान, तुम इस वक्त बड़ा भारी ज़ुल्म कर रहे हो। भला इस तरह कोई काहे को रहने पायेगा।

जमादार ने अकड़कर कहा—तुम कौन हो? अपना नाम बताओ। तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो। हम रपट बोलेंगे

यह सुनकर वह हज़रत चकराए और चुपके से लम्बे हुए। तब जमादार ने गुल मचाकर कहा, मुख़बिरों ने हमें खबर दी है कि तुम्हारे लड़का होनेवाला है। हमको हुक्म है कि दरवाजे पर पहरा दें।

पड़ोसिन ने जो यह बात सुनी तो दाँतों-तले अँगुली दबाई—ऐ है यह ग़जब खुदा का; हमें आज तक मालूम ही न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जहान औरत शहर से भागकर गाँव में क्यों आई! यह मालूम ही न था कि यहाँ कुछ और गुल खिलनेवाला है।

इतने में फरखुन्दा ने कोठे पर जाकर पड़ोसिन से कहा—ज़री अपने मियाँ से कहो कि इस सिपाही से कुल हाल पूछें—माजरा क्या है?

पड़ोसिन कुछ सोचकर बोली—भई हम इस मामले में दखल न देंगे। ओह तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फैलाया था, हमारे मियाँ को मालूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें।

इतने में पड़ोसिन के मियाँ भी आए। फ़रखुन्दा उनसे बोली, खाँ साहब ज़री इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीबत का वक्त है।

खाँ साहब—कुछ न कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा।

फ़रखुन्दा—अच्छा आप फैसला करा दें। जो माँगे वह हमसे इसी दम ले।

खाँ साहब—इन पाजियों ने नाक में दम कर दिया है और इस तरफ़ की

रिभाया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो। सरकार ने इन पियादों को इन्तज़ाम के लिये रक्खा है और यह लोग ज़मीन पर पांव नहीं रखते। सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिये जाँय।

पड़ोसिन—पहले बेगम से यह तो पूछो कि शहर से यहाँ आकर क्यों रही हैं? कोई न कोई वजह तो होगी।

फ़रखुन्दा ने दो रुपए दिए और कहा जाकर यह दे दीजिए। शायद मान जाय। खांसाहब ने रूपए दिए तो सिपाही बिगड़कर बोला, यह रुपया कैसा? हम रिशवत नहीं लेते।

खाँ साहब—सुनो मियाँ जो हमसे टर्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिजाज ही नहीं मिलता।

सिपाही—मियाँ क्यों शामतें आई हैं, हम पुलीस के लोग हैं, जिस वक्त चाहें तुम-जैसों को जलील कर दें। बतलाओ तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती है। क्या किसी भले घर की औरत भगा लाए हो और ऊपर से टर्राते हो!

खाँ साहब—यह धमकियाँ दूसरों को देना। यहाँ तुम—जैसों को अँगुलियों पर नचाते हैं।

सिपाही ने देखा कि यह आदमी कडा है तो आगे बढ़ा। एक नान-बाई की दूकान पर बैठकर मजे से पुलाव उड़ाया और सड़क पर जाकर एक गाडी पकडी। गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिड़-गिडाने लगा, मगर सिपाही ने एक न मानी। इस पर एक बाबूजी बोल उठे—बड़े बेरहम आदमी हो जी। छोड़ क्यों नहीं देते?

सिपाही—कप्तान साहब ने मँगवाया है, छोड़ कैसे दूँ। यह इसी तरह के बहाने किया करते हैं, ज़माने-भर के झूठे!

आखिर गाडीवान ने सात पैसे और एक कद्दू देकर गला छुड़ाया।

तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीदार से हुक्का भरवाकर पीने लगे। जब जरा अँधेरा हुआ, तो चौकीदार ने आकर कहा—हवलदार साहब, बड़ा अच्छा सिकार चला जाता है। एक महाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है। गहनन से लदी है।

सिपाही—यहाँ से कितनी दूर?

चौकीदार--कुछ दूर नाहीं न, घड़ी भर में पहुँच जैहो। बस एक गाड़ीवान है और एक छोकरा। तीसर कोऊ नाहीं।

सिपाही—तब तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुँह देखा है। हमारे साथ कौन कौन चलेगा?

चौकीदार—आदमी सब ठीक हैं, कहै भरकी देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब ठीक करी?

सिपाही—हाँ हाँ और क्या।

—अब सुनिये कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग़ की तरफ़ से गुजरी जा रही थी कि एकाएक छः-सात आदमी उस पर टूट पड़े। गाड़ीवान को एक डण्डा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के जेवर उतार लिये और चोर चोर का शोर मचाने लगे। गाँव में शोर मच गया कि डाका पड़ गया। कांस्टेबिल ने जाकर थाने में इत्तला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है। चौकीदार ने कई आदमियों का नाम लिखाया और फ़ीरोजा के पड़ोसी खाँ साहब भी उन्हीं में थे। दूसरे दिन उसी सिपाही ने खाँ साहब के दरवाजे पर पहुँचकर पुकारा। खाँ साहब ने बाहर आकर सिपाही को देखा तो मोछों पर ताव देकर बोले, क्या है साहब, क्या हुक्म है?

सिपाही—चलिए वहाँ बरगद के तले तहक़ीक़ात हो रही है। दारोगा जी बुलाते हैं।

सिपाही—बस बहुत बढ़ बढ़कर बातें न कीजिये चुपके से मेरे साथ चलिये।

खाँ साहब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फ़ीरोज़ा के दरवाजे पर खड़े होकर कहा, इन्हें तो लिए जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आएगी।

खाँ साहब बरगद के नीचे पहुँचे तो देखा गाँवभर के बदमाश जमा हैं और दारोगाजी चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब हमें क्यों बुलाया?

दारोग़ा—आज गाँव भर के बदमाशों की दावत है। खाँ साहब ने डण्डे को तौलकर कहा, तो फिर दो एक बदमाशों की हम भी खबर लेंगे।

दारोगा—बहुत गरमाइये नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा वह हमने किया।

खाँ—और जो चौकीदार आपको कुयें में कूद पडने की सलाह दे?

दारोग़ा—तो हम कूद पड़ें।

खाँ—तो हमारी निस्बत आखिर क्या जुर्म लगाया गया है?

दारोग़ा—कल रात को तुम कहाँ थे?

खाँ—अपने घर पर और कहाँ।

चौकीदार—हुज़ूर बखरी में नाही रहे और एक मनई इनका नहीं बाग के भीतर देखिस रहे।

खाँ साहब ने चौकीदार को एक चाँटा दिया, सुअर, अबे हम चोर हैं? रात को हम घर पर न थे? दारोगा ने कहा, क्यों जी हमारे सामने यह मार पीट। तुम भी पठान हो और हम भी पठान हैं। अगर अब की हाथ उठाया तो तुम्हारी खैरियत नहीं।

इतने में एक अंग्रेज़ घोड़े पर सवार उधर से आ निकला। यह जमघट देखकर दारोग़ा से बोला, क्या बात है? दारोग़ा ने कहा, गरीब परवर,

खाँ—और वहाँ गीत गाने के लिए तुमको बुला लेंगे।

दूसरे गवाह ने बयान किया, मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ़ जाता था तो खाँसाहब मुझे मिले थे।

खाँ—क़सम खुदा की कोई आदमी मेरी ही शक्ल का रहा होगा।

दारोग़ा—यह आपने ठीक कहा।

काले खाँ—जब पठान हो के ऐसी हरकतें करने लगे तो इस गाँव का खुदा ही मालिक है। कौन कह सकता है कि यह सफ़ेद पोश आदमी डाका डालेगा।

खाँ—खुदा की क़सम जी चाहता है सिर पीट लूँ, मगर खैर, हम भी इसका मज़ा चखा देंगे।

दारोग़ा—पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइये, मज़ा पीछे चखवाइयेगा।

यह कहकर दारोग़ाजी खाँसाहब के घर पहुँचे और कहा, जल्दी परदा करो, हम तलाशी लेंगे। खाँसाहब की बीवी ने सैकड़ों गालियाँ दीं मगर मजबूर होकर परदा किया। तलाशी होने लगी। दो बालियाँ निकलीं, एक जुगुनू और एक छल्ला। खाँसाहब की बीबी हक्का-बक्का होकर रह गई, यह ज़ेवर यहाँ कहाँ से आये? या खुदा अब हमारी आबरू तेरे ही हाथ है!

पचासीवाँ परिच्छेद

फ़ीरोज़ा बेगम और फ़रखुन्दा रात के वक्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज़ हुई। फरखुन्दा की आँख खुल गई। यह धमाका कैसा! मुँह पर से चादर उठाई, मगर अँधेरा देखकर उठने की हिम्मत न पड़ी। इतने में पाँव की आहट मिली, रोयें खड़े हो गये। सोची, अगर बोली तो

फ़ीरोज़ा—हाँ हाँ वही।

आज़ाद—अच्छा समझा जायगा। खडे-खडे उससे समझ लूँ तो सही। उसने अच्छे घर बयाना दिया।

सुरैया—कमबख्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुँह दिखाने के लायक न रक्खा। यहाँ भी बला की तरह सिर पर सवार हो गया। तुमने भी इतने दिनों के बाद आज खबर ली। दूसरों का दर्द तुम क्या समझोगे। जो बेइज़्ज़ती कभी न हुई थी वह आज हो गई। एक दिन वह था कि अच्छे अच्छे आदमी सलाम करने आते थे और आज एक कानिस्टिबिल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ है और तुम्हारे होते!

आज़ाद—सुरैया बेगम, खुदा की क़सम मुझे बिल्कुल खबर न थी, मैं इसी वक्त जाकर दारोग़ा और कानिस्टिबिल दोनों को देखता हूँ। देख लेना सुबह तक उनकी लाश फड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाट उतार चुका हूँ। इस वक्त रुखसत करो, कल फिर मिलूँगा।

यह कहकर आज़ाद मिर्ज़ा बाहर निकले। यहाँ उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले, भई जवानों! आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गये, तैय्यार हो जाओ। उसी वक्त आज़ाद मिर्ज़ा और रहमी डाकू, गुलबाज़, रामू यह सब के सब दारोग़ा के मकान पर जा पहुँचे। रामू को तो बैठक में रक्खा और महल्ले भर के मकानों की कुण्डियाँ बन्द कर के दारोग़ाजी के घर में सेंद लगाने के फ़िक्र करने लगे।

दरबान—कौन! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नहीं?

आज़ाद—क्या बतायें, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकली?

दरबान—हाँ निकली तो है, बहुत से आदमी साथ थे।

आज़ाद—हमारे बड़े दोस्त थे, अफ़सोस !

लक्ष्मी—हुजूर सब्र कीजिए, अब क्या हो सकता है।

दरबान—हाँ भाई परमेश्वर की माया कौन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं ?

लक्ष्मी—कनवजिया ब्राह्मण हैं। बेचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे है, कौन उनकी परवरिश करेगा।

दरबान को बातों में लगाकर इन लोगों ने उसकी मुश्कें कस लीं और कहा, बोले और हमने क़त्ल किया, बस मुँह बन्द किये पड़े रहो।

दीवार में सेंद पड़ने लगी। रामू कहीं से सिरक़ा लाया। सिरका छिड़क-छिड़क कर दीवार में सेंद दी। इतने में एक कानिस्टिबिल ने हाँक लगाई। जागते रहियो, अँधेरी रात है।

आज़ाद—हमारे लिये अँधेरी रात नहीं, तुम्हारे लिये होगी।

चौकीदार—तुम लोग कौन हो ?

आजाद—तेरे बाप। पहचानता है या नहीं ?

यह कहकर आज़ाद ने करौली से चौकीदार का काम तमाम कर दिया।

लक्ष्मी—भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली !

आज़ाद—बस मालूम हो गया कि तुम नाम के चोर हो, बिल्कुल कच्चे !

अब यह तजवीज़ पाई कि मिर्ज़ा आज़ाद सेंद के अन्दर जायें। आज़ाद ने पहले सेंद में पाँव डाले, मगर पाँव डालते ही किसी आदमी ने अन्दर से तलवार जमाई, दोनों पाँव खट से अलग।

आज़ाद—हाय मरा ! अरे दौड़ो।

लक्ष्मी—बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे !

चारों ने मिलकर आज़ाद मिर्ज़ा का धड़ उठाया और रोते-पीटते ले चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिये गये।

मुहल्ले भर में जाग हो गई। अब जो दरवाजा खोलता है बन्द पाता है। यह दरवाजा कौन बन्द कर गया? दरवाजा खोलो! कोई सुनता ही नहीं। चारो तरफ़ यही आवाज़ें आ रही थीं। सिर्फ़ एक दरवाज़े में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढ़ा सिपाही एक हाथ में मसाल दूसरे में सिरोही लिये बाहर निकला। देखा तो दारोग़ाजी के घर में सेंद पड़ी हुई है। बोला, अरे यह तो सेंद लगी है! चोर-चोर!

एक कानि०—खून भी हुआ है। जल्द आओ।

सिपाही—मार लिया है, जाने न पाये।

यह कहकर उसने दरवाजे खोलने शुरू किये। लोग फ़ौरन लट्ठ ले ले कर निकले, देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदमियों को देखते ही चोर तो भाग निकले। आज़ाद मिर्ज़ा और लक्ष्मी रह गये। आजाद की टाँगें कटी हुई। लक्ष्मी जख्मी। थाने पर ख़बर हुई। दारोग़ाजी भागे हुए अपने घर आये। मालूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंद देते देख लिया था। फ़ौरन जाकर कोठरी में बैठ रही। ज्यों ही आज़ाद मिर्ज़ा ने सेंद में पाँव डाला तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।

आज़ाद पर मुकदमा चलाया गया। जुर्म साबित हो गया। काले पानी भेज दिये गये।

जब जहाज़ पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाकात हुई। आज़ाद ने पूछा, कहो भाई तुमने क्या किया था? उसने आँखों में आँसू भर कहा, भाई क्या बताऊ, बे कुसूर हूँ। फ़ौज में नौकर था, इश्क़ के पेचे में पड़कर नौकरी छोड़ी, मगर माशूक़ तो न मिला हम ख़राब हो गये।

यह शह-सवार था।

औरत—हुजूर से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिए। दो, तीन दिन में जवाब दीजिएगा। यहाँ रईस ज़ादे रहते हैं, बहुत ही खूबसूरत, खुश मिजाज और शौकीन। दिल बहलाने के लिये नौकरी कर ली है। हुकूमत की नौकरी है।

सुरैया—हुकूमत की नौकरी कैसी होती है?

औरत—ऐसी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करें। कोतवाल हैं।

अब्बासी—अच्छा उन्हीं थानेदार का पैगाम लाई होगी?

औरत—ऐ थानेदार काहे को है, बराय नाम नौकरी करली। वरना उनको नौकरी की क्या जरूरत है, वह ऐसे ऐसे दस थानेदारों को नौकर रख सकते हैं।

अब्बासी—हुजूर को तो शादी करना मंजूर ही नहीं है।

औरत—वाह! कैसी बातें करती हो।

सुरैया—तुम उनकी सिखाई पढ़ाई आई हो, हम समझ गये। उनसे कहदेना कि हम वेकस औरतें हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पजे झाड के हमारे पीछे पड़े हो?

औरत—हुजूर के कदमों की कसम, उन्हों ने नहीं भेजा है।

सुरैया—अच्छा तो इसमें ज़बरदस्ती काहे की है।

औरत—आप के और उनके दोनों के हक में यही अच्छा है, कि हुजूर इन्कार न करें। वह अफ़सर पुलीस हैं, ज़रासी देर में बेआबरू कर सकते हैं।

सुरैया—हमारा भी खुदा है।

औरत—खैर न मानो।

औरत दो चार बातें सुनाकर चली गई, तो अब्बासी और सुरैया-बेगम सलाह करने लगीं।

सुरैया—अब यहाँ से भी भागना पड़ा, और आज ही कल में।

अब्बासी—इस मुये को ऐसी कद पड़ गई कि क्या कहें, मगर अब भाग के जायेंगे कहाँ?

सुरैया—जिधर खुदा ले जाय। कहीं से लाला ख़ुशवक़्तराय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बुड्ढा है। कोई ऐसी तदबीर करो कि वह कल सुबह तक यहाँ आ जाय।

अब्बासी—कहिए तो कल्लू को भेजूँ बुला लाये।

कल्लू कौम का लोहार था। ऊपर से तो मिला हुआ था, मगर दिल में इनका दुश्मन था। अब्बासी ने उसको बुलाके कहा, तुम जाके लाला खुशवक़्तराय को लिवा आओ। कल्लू ने कहा तुम साथ चलो तो क्या मुजायका है, मगर अकेला तो मैं न जाऊँगा। आखिर यही तै हुआ कि अब्बासी भी साथ जाय। शाम के वक्त दोनों वहाँ से चले। अब्बासी मर्दाना भेष में थी। कुछ दुर चलकर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूँ! तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिन्दगी खराब करती हो? उनकी जमा-जथा लेकर चली आओ, और हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—तुम मर्दों का एतबार क्या।

कल्लू—हम उन लोगों में नहीं हैं।

अब्बासी—भला अब लाला साहब का मकान कितनी दूर होगा?

कल्लू—यही कोई दो कोस, कहो तो सवारी केराया करलूँ। गोद में ले चलूँ।

अब्बासी—एँ, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे।

कल्लू—भाई बहुत कही, ऐसी कही कि हमारी ज़बान बन्द हो गई।

अब्बासी—ऐ, तुम ऐसे गँवारों को बन्द करना कौन बात है।

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुँचे। यह कल्लू के दोस्त शिव दीन का मकान था। शिवदीन ने कहा, आओ यार मिजाज़ अच्छे ?

कल्लू—सब चैन ही चैन है। इन को ले आया हूँ, जो कुछ सलाह करनी हो कर लो, सुनो अब्बासी, शिवदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अब यहाँ से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो ?

अब्बासी—बड़ी दग़ा दी कल्लू, बड़ी दग़ा दी तुमने।

कल्लू—अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग ज़रा सुरैया बेगम से मुलाक़ात करने जायँगे।

अब्बासी—बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे !

अब्बासी तो यहाँ रोती रही। उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुँचे और दरवाजा तोड़ कर अन्दर दाखिल हुए। सुरैया बेगम की आँख खुल गई, बिचारी अकेली मकान में मारे डर के दुबकी पड़ी थी। बोली—कौन है ? अब्बासी।

कल्लू—अब्बासी नहीं है, हम हैं, अब्बासी के मियाँ।

सुरैया—हाय मेरे अल्लाह, ग़जब हो गया !

शिव०—चुप्पे-चुप्पे बोलो, बताओ रुपया कहाँ है ? सब बता दो नहीं मारी जाओगी।

कल्लू—बतायें तो अच्छा, न बतायें तो अच्छा, हम घरभर तो ढूँढ़ ही मारेंगे। सुना है कि तुम्हारे पास जवाहिर के ढेर हैं।

सुरैया—अमीर जब थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूँ।

कल्लू—तुम यों न बताओगी, अब हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं ?

सुरैया बेगम ने मारे ख़ौफ़ के एक एक चीज़ का पता बतला दिया।

जब सारी जमा-जथा लेकर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरैयाबेगम से बोला, चल हमारे साथ, उठ।

सुरैया—खुदा के लिए मुझे छोड़ दो। रहम करो।

शिव०—चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैयाबेगम ने हाथ जोड़े, पाँव पड़ी, रो रोकर कहा, खुदा के वास्ते, मेरी इज़्ज़त न लो। मगर कल्लू ने एक न सुनी। कहने लगा तुझे किसी रईस अमीर के हाथ बेचगे, तुम भी चैन करोगी, हम भी चैन करेंगे।

सुरैया—मेरा माल लिया, जेवर लिया, अब तो छोड़ो।

कल्लू—चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियाई जाओगी? देखो मुँह से आवाज़ न निकलै, वरना हम छुरी भोंक देंगे।

सुरैया(रोकर)—या खुदा मैंने कौन सा गुनाह किया था, जिसके एवज़ यह मुसीबत पड़ी।

कल्लू—चलती है कि बैठी रोती है?

आखिर सुरैया बेगम को अँधेरी रात में घर छोड़कर उनके साथ जाना पड़ा।

सत्तासीवाँ परिच्छेद

आध कोस चलने के बाद इन चोरों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया। इनमें एक का नाम बुद्धसिंह था, दूसरे का हुलास। यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुनकर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम काँप रही थीं कि देखें आबरू बचती है या नहीं। हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह अब क्या करना चाहिए?

बुद्धसिंह—अपनी तो यह मरजी है कि कोई मन-चला मिल जाय तो उसी दम पटील डालो।

हुलास—मैं तो समझता हूँ यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फसैं। सुनो बेगम, हम डकैत हैं, बदमाश नहीं। हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के हाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अमीरज़ादी बनाकर रक्खे। चुपचाप हमारे साथ चली आओ।

चलते-चलते तीनों आमों के एक बाग़ में पहुँचे। दोनों डाकू तो चरस पीने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगीं—खुदा जाने किसके हाथ बेचें, इससे तो यही अच्छा है कि क़त्ल कर दें। इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले।

एक—मिर्ज़ाजी दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया। आज़ाद और शहसवार। दोनों ही कालेपानी गये। अब दो मुड्ढ और बाकी हैं।

मिर्ज़ा—वह दो कौन हैं?

पहला—वही हुलास और बुद्धसिंह। अरे वह दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं! क्यों यारो चरस के दम उड रहे हैं? तुम लोगों के नाम वारण्ट जारी है।

हुलास—मीरसाहब, आप भी बस वही रहे। पड़ोस में रहते हो फिर भी वारण्ट से डेराते हो। ऐसे-ऐसे कितने वारण्ट रोज़ ही जारी हुआ करते हैं। हमसे और पुलीस से तो जानी दुश्मनी है, मगर क़सम खा कर कहता हूँ कि अगर पचास आदमी भी गिरफ्तार करने आयें तो हमारी गर्द तक न पायें। हम दोनों एक पलटन के लिए काफ़ी हैं। कहिये आप लोग कहाँ जारहे हैं?

मिर्ज़ा—अजी हम भी किसी शिकार ही के तलाश में निकले हैं। जब मीर और मिर्ज़ा चले गये तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को ले

आवाज़ की तरफ़ कान लगाये हुए चले तो देखा कि एक बूढ़ा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है। इनको देखकर बोला, बाबा मुझ फ़क़ीर को ज़रा सा पानी पिलाओ। बस मैं पानी पीकर इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा। फिर किसी को अपना मुँह न दिखाऊँगा।

हुलास ने उसे पानी पिलाया, पानी पीकर वह बोला, बाबा खुदा तुम्हें इसका बदला दे। इसके एवज़ तुम्हें क्या दूँ, खैर अगर दो घण्टे भी ज़िन्दा रहा तो अपना कुल हाल तुमसे बयान करूँगा और तुम्हें कुछ दूँगा भी।

हुलास—आपके पास जो कुछ जमा-जथा हो वह हमको बता दीजिए।

बूढ़ा—कहा न कि दो घण्टे भी ज़िन्दा रहा तो सब बातें बता दूँगा। मैं सिपाही हूँ, लड़कपन से यही मेरा पेशा है।

हुलास—आपने तो एक क़िस्सा छेड़ दिया, मुझे खौफ़ है कि ऐसा न हो कि आपकी जान निकल जाय तो फिर वह रुपया वहीं का वहीं पड़ा रहे।

बूढ़ा (गाकर)—पहुँची न राहत हमसे किसी को....

हुलास—जनाब आप को गाने की सूझती है और हम डर रहे हैं कि कहीं आप का दम न निकल जाय। रुपए बता दो, हम बड़ी धूम-धाम से तुम्हारा तीजा करेंगे।

बुद्धसिंह—पानी और पिलवा दो तो फिर खूब ठण्डा होकर बतायगा।

बूढ़ा—मेरा एक लड़का है, दुनिया में और कोई नहीं। बस यही एक लड़का, जवान, खूबसूरत, घोड़े पर खूब सवार होता था।

सुरैया—फिर अब कहाँ है वह?

बूढ़ा—फ़ौज में नौकर था। किसी बेगम पर आशिक हुआ, तब से

पता ही नहीं। अगर इतना मालूम हो जाय कि उसकी जान निकल गई तो कब्र बनवा दूँ।

सुरैया—लम्बे है या ठिगनें ?

बूढा—लम्बा है। चौड़ा सीना, ऊँची पेशानी, गोरा रँग।

सुरैया—हाय हाय! क्या बताऊँ बड़े मियाँ, मेरा उनका बरसों साथ रहा है। मेरे साथ निकाह होने को था।

बूढ़ा—बेटा जरा हमारे पास आजाओ। कुछ उसका हाल बताओ। जिन्दा तो है ?

सुरैया—हाँ इतना तो मैं कह सकती हूँ कि ज़िन्दा है।

बूढ़ा—अब वह है कहाँ ? जरा देख लेता तो आरजू पूरी हो जाती।

हुलास—आप का सर दबा दूँ, तलुवे मलूँ, जो ख़िदमत कहिए करूँ।

बूढा—नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैंने अपने लड़के को लड़ाई के फन खूब सिखाए थे। हर एक के साथ मुरौवत से पेश आता था। बस इतना बता दो कि जिन्दा है या मर गया ?

सुरैया—ज़िन्दा हैं और खुश है।

बूढा—अब मैं अपनी सारी तकलीफें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि कभी तकलीफ़ हुई थी।

ये बातें होही रही थीं कि पचास आदमियों ने आकर इन लोगों को चारों तरफ से घेर लिया। दोनो डाकुओं की मुश्कें कस ली गईं। उदसिंह मज़बूत आदमी था। रस्सी तोडाकर, तीन सिपाहियों को जख्मी किया और भागकर झील में कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूदकर उसे पकडे। हुलास बँधा रह गया।

यह पुलीस का इन्सपेक्टर था।

सुरैयाबेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है। इन लोगों को डाकुओं की खबर कैसे मिल गई। चुप चाप खड़ी थीं कि सिपाहियों ने उनसे हँसी-दिल्लगी करनी शुरू की। एक बोला, वाह वाह, यह तो कोई परी है भाई। दूसरा बोला, अगर ऐसी सूरत कोई दिखादे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊँ।

हुलास—सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हम से मतलब है या उससे।

इंसपेक्टर—इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाये और भूल जाय तो फिर सिरे से गिने। आँखें नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूँगा।

सुबह के वक्त शहर में दाखिल हुए तो सुरैयाबेगम ने चादर से मुँह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली। ओढ़नी मुँह पर ढापती है, हटाओ ओढ़नी।

सुरैयाबेगम की आँखों से आँसू जारी हो गए। उसके दिल पर जो कुछ गुज़रती थी, उसे कौन जान सकता है। रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने लगी।

रँगरेज़—अरे यह दुपट्टा कितना अच्छा रँगा हुआ है!

नानबाई—कहाँ से आते हो जवानो? क्या कहीं डाका पड़ा था?

शेख़ जी—अरे यारो, यह नाज़नीन कौन है? क्या मुखड़ा है, कसम खुदा की ऐसी सूरत कभी न देखी थी, बस यही जी चाहता है कि इससे निकाह पढ़वालें। यह तो अब्बो जान से भी बढ़कर है।

यह शेखजी वही वकील साहब थे जिनके यहाँ अलारक्खी, अब्बोजान बनकर रही थी। अलारक्खी भी साथ था। बोला, मियाँ आँखोंवाले तो बहुत देखे मगर आपकी आँख निराली है।

सुरैया—मियाँ, मेरी तक़दीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा।

वकील—ख़ैर अब उन बातों का जिक्र ही क्या। सच कहता हूँ शब्बोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफ़सोस कि तुमने मेरी मुहब्बत की क़द्र न की। जिस दिन तुम मेरे घर से निकल भागीं, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बदन से जान निकल गई। अब तुम घबराओ नहीं हम तुम्हारी तरफ़ से पैरवी करेंगे। तुम जानती ही हो कि हम कैसे मशहूर वकील हैं और कैसे कैसे मुक़द्दमे बात की बात में जीत लेते हैं।

सुरैया—इस वक्त आप आगए, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई। तुम्हारे घर से निकली तो पहिले एक मुसीबत में फँस गई, बारे ख़ुदा ख़ुदा कर के इससे नजात पाई और कुछ दौलत भी हाथ आई तो तुम्हारे ही महल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी।

वकील—अरे वह सुरैया बेगम आपही थीं?

सुरैया—हाँ मैं ही थी।

वकील—अफ़सोस इतने करीब रहकर भी कभी मुझे न बुलाया! मगर वह आपकी दौलत क्या हुई और यहाँ हवालात में क्यों कर आईं?

सुरैया—हुआ क्या, दो बार चोरी हो गई, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आख़िर हम अपनी महरी को लेकर चल दिये। एक गाँव में रहने लगी, मगर वहाँ भी चोरी हुई, और डाकुओं के फन्दे में फँसी।

इतने ही में एक थानेदार ने आकर वकील साहब से कहा, अब आप तशरीफ़ ले जाइए। वक्त ख़तम हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गई। यह वही आदमी था जिसके पास एक बार वह

मुसाफ़िर—अच्छा मान लीजिये आप ही का कहना दुरुस्त है, भला हम फँस जायँ तो आपको क्या मिले ?

थानेदार—पाँच सौ रुपये नकद, तरक्की और नेकनामी अलग।

मुसाफ़िर—बस ! हमसे एक हज़ार ले लीजिये, अभी अभी गिना लीजिये। लेकिन गिरफ्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार—हज़रत, यह रक़म बहुत थोड़ी है, हमें जँचती नहीं।

मुसाफ़िर—आख़िर दो ही हज़ार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नज़र करता हूँ। मगर गुस्ताखी माफ़ हो, तो मैं भी कुछ कहूँ। मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहिये कैसा भाँपा।

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा। डरे, कहीं जाकर अफ़सरों से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिये जायँ। बोले, हजरत अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आप के हाथ है।

मुसाफ़िर—मेरी तरफ़ से आप इतमीनान रखिये।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गई। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुये, शाम होते होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक साफ़ सुथरा मकान अपने लिये ठीक किया और ज़मींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछे तो कहना, हमें नहीं मालूम। तीनों दिनभर के थके थे, खाने पीने की भी सुध न रही। सोये तो सवेरा हो गया। सुबह के वक्त थानेदार साहब बाहर आये तो देखा, कि ज़मींदार उनके इन्तज़ार में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब आपने तो उठते उठते नौ बजा दिये। एक अजनबी आदमी यहाँ आपकी तलाश में आया है। वरदी तो नहीं पहिने है, हाँ सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी

मुसाफ़िर—अच्छा मान लीजिये आप ही का कहना दुरुस्त है, भला हम फँस जायँ तो आपको क्या मिले ?

थानेदार—पाँच सौ रुपये नकद, तरक्की और नेकनामी अलग।

मुसाफिर—बस ! हमसे एक हजार ले लीजिये, अभी अभी गिना लीजिये। लेकिन गिरफ्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार—हजरत, यह रक़म बहुत थोड़ी है, हमें जँचती नहीं।

मुसाफ़िर—आखिर दो ही हज़ार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नज़र करता हूँ। मगर गुस्ताखी माफ़ हो, तो मैं भी कुछ कहूँ। मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहिये कैसा भाँपा।

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा। डरे, कहीं जाकर अफ़सरों से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिये जायँ। बोले, हजरत अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आप के हाथ है।

मुसाफ़िर—मेरी तरफ़ से आप इतमीनान रखिये।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गई। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुये, शाम होते होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक साफ सुथरा मकान अपने लिये ठीक किया और जमींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछे तो कहना, हमें नहीं मालूम। तीनों दिनभर के थके थे, खाने पीने की भी सुध न रही। सोये तो सवेरा हो गया। सुबह के वक्त थानेदार साहब बाहर आये तो देखा, कि जमींदार उनके इन्तज़ार में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब आपने तो उठते उठते नौ बजा दिये। एक अजनबी आदमी यहाँ आपकी तलाश में आया है। वर्दी तो नहीं पहिने है, हाँ सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी

थानेदार—इसी गाँव में मैं भी ठहरा हूँ। अगर तकलीफ़ न हो तो हमारे साथ घर तक चलिये।

थानेदार उनको लेकर डेरे पर आये। सुरैया बेगम दौड़कर छिपने को थीं, मगर थानेदार ने मना किया और कहा कि यह मेरे भाई हैं। इनसे पर्दा करना फ़ुज़ूल है।

शेरसिंह—यह आपकी कौन हैं?

थानेदार—जी, मेरे घर पड़ गई हैं।

सुरैया बेगम—ऐ हटो भी, क्या वाहियात बातें करते हो, हज़रत यो मेरे भाई हैं।

इसपर शेरसिंह ने क़हक़हा लगाया और थानेदार झेंपे।

शेरसिंह—आपने सुना नहीं, एक मुसलमान थानेदार किसी बेग़ि को हवालात से लेकर भागे। बड़ी तहक़ीक़ात हो रही है, मगर पत नहीं चलता।

थानेदार—कह तो नहीं सकता कि वह थानेदार ही था या को और, मगर परसों रात को जब हम और यह आ रहे थे तो देखा कि एक गाड़ी पर कोई फ़ौजी आदमी सवार है, और किसी औरत से बा करता जाता है। औरत का नाम सुरैया बेगम था। जो मुझे मालूम ह कि वही हज़रत हैं तो कुछ ले मरूं।

शेरसिंह—ज़रूर वही था, उस औरत का नाम सुरैया बेगम ही था क्या कहूँ, मैं उस वक्त न हुआ।

तीनों में बड़ी देर तक हँसी दिल्लगी होती रही। शेरसिंह जब चलन लगे तो कहा कल से हम भी यहीं ठहरेंगे। दूसरे दिन तड़के शेरसिंह अपना बोरिया बधना लेकर आ पहुँचे। थानेदार ने कहा हज़रत आप हिन्दू और हम मुसलमान, आपकी गंगा और हमारा क़ुरान, आप गंगा

शेरसिंह—खुदा तुझे ग़ारत करे कमबख्त ? तू तो इस काबिल है कि तुझको खोद के दफ़न कर दे।

थानेदार—अच्छा अब हमारी क्या सज़ा तजवीज हुई। साफ़ बता दो।

शेरसिंह—मुंये पर सौ दुर्रे और गधे की सवारी। बस अब मैं यहां से भाग जाऊँगा और उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूँगा। खुदा तुझसे समझे।

थानेदार—सुनो भाई जान, यह फ़क़त चकमा था। हम आजमाते थे कि देखें तुम कौल के कहाँ तक सच्चे हो। अब हम साफ़ कहते हैं कि हम कातिल नहीं है लेकिन मुजरिम हैं। अब कहिये।

शेरसिंह—अजी जब इतने बड़े जुर्म की सज़ा न दी तो अब क्या खौफ़ है। क्या कहीं से माल मार लाये हो ?

थानेदार—भाई माफ़ करो तो बता दें। सुनिये हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो। और यह वह बेड़िन हैं। अब चाहे बाँध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक़ अदा करो।

शेरसिंह—ओफ़! बड़ा झाँसा दिया। मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्योंकर गया। मैं पंजाब से खास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहाँ दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूँ और बेड़िन से नोंक-झोंक भी हो रही है। मगर टायँ टायँ फ़िस।

सुरैया—हुज़ूर ले जरा मुँह सम्हाल कर बात कीजिए। बेड़िन कोई और होगी। बेड़िन की सूरत नहीं देखी।

थानेदार—यह बेगम है। खुदा की कसम। सुरैयाबेगम नाम है।

शेरसिंह—वह तो बात-चीत से ज़ाहिर है। अच्छा बेगमसाहब बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती हो, तो इनको इस्तीफा दो और हमसे वादा करो।

थानेदार—इनको राजी कीजिए। हमसे क्या वास्ता। हमको तो अपनी जान प्यारी है।

सुरैया—ऐ वाह ! अच्छे मिले। तुम थानेदारी क्या करते थे ! अच्छा दिल्लगी तो हो चुकी अब मतलब की बात कहो। हम दोनों भागें, तो भाग के जायँ कहाँ ? और न भागें तो रहें कहाँ ?

शेरसिंह—एक काम करो। हमको वापस जाने दो। हम वहाँ जाके आयँ बायँ सायँ उड़ा देंगे। इसके बाद आकर तुमको पंजाब ले जायँगे।

थानेदार—अच्छा तो है। हम सब मिलकर पंजाब चलेंगे।

सुरैया—तुम जाओ, हम तो न जायँगे। और सुनिए वाह !

थानेदार—हमारी बात मानिए। आप घर-घर तहक़ीक़ात कीजिए और दो दिन तक यहाँ टिके रहिए और वहाँ जाकर कहिए कि मुल-जिम तराई की तरफ़ निकल गया।

शेरसिंह—हाँ सलाह तो अच्छी है। तो आप यहाँ रहें, मैं जाता हूँ।

शेरसिंह ने दिन-भर सारे क़स्बे में तहकीकात की। ज़मींदारों को बुलाकर खूब डाँट-फटकार सुनाई। शाम को आकर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए। जब शेरसिंह चले गये तो थानेदारसाहब बोले—दुनिया में रहकर अगर चालाकी न करें तो दम-भर गुज़ारा न हो। दुनिया में आठों गाँठ कुम्मैत हो तब काम चले।

सुरैया—वाह ! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चालाक।

थानेदार—नेकी से कुछ नहीं होता, चालाकी बड़ी चीज़ है। अगर हम शेरसिंह से चालाकी न करते तो उनसे गला कैसे छूटता।

दूसरे दिन थानेदारसाहब भी रवाना हुए। दिन-भर चलने के बाद गाड़ीवान से कहा—भाई यहाँ से मीरडीह कितनी दूर है ? गाड़ीवान ने कहा—हुज़ूर यही मीरडीह है।

थानेदार—यहाँ हम किसके मकान में टिकेंगे ?

गाड़ीवान—हुज़ूर, आदमी भेज दिया गया है।

यह कहकर उसने नन्दा नन्दा ! पुकारा। बड़ी देर के बाद नन्दा आया और गाडी को एक टीले की तरफ़ ले चला। वहाँ एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहख़ाने में ले गया।

थानेदार—क्या कुछ नीयत खोटी है भई ?

सुरैया—हम तो इसमें न जाने के। अल्लाह रे अँधेरा !

नन्दा—आप चलें तो सही।

थानेदार ने तलवार म्यान से खींच ली और सुरैया बेगम के साथ चले।

थानेदार—अरे नन्दा, रोशनदान तो खोल दे जाके।

नन्दा—अजी क्या जाने, किस वक्त के बन्द पड़े हैं।

सुरैया—है-है ! खुदा जाने कितने बरसों से यहाँ चिराग नहीं जला। यह जीने तो ख़त्म ही होने नहीं आते।

नन्दा—कोई एक सौ दस जीने हैं।

सुरैया—उफ् ! बस अब मैं मर गई।

नन्दा—अब नगिचाय आए। कोई पचीस ठो और हैं।

बड़ी मुशकिलों से ज़ीने तय हुए। मगर जब तहख़ाने में पहुँचे तो ऐसी ठण्डक मिली, कि गुलाबी जाड़े का मज़ा आया। दो पलंग बिछे हुए थे। दोनों आराम से बैठे। खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रक्खा था। दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे। यह मकान चारों तरफ़ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पहाड़ों की काली-काली चोटियाँ नज़र आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कहा—बहुत मुकामों की सैर की है मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आई थी। बस इसी जगह हमारा और तुम्हारा निकाह होना चाहिए।

सुरैया—भाई सुनो, बुरा मानने की बात नहीं। मैंने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूँगी। दिल का सौदा सिर्फ एक बार होता है। अब तो उसीके नाम पर बैठी हूँ। किसी और के साथ निकाह करने की तरफ़ तबीयत मायल नहीं होती।

थानेदार—आख़िर वह कौन साहब हैं जिन पर आप का दिल आया है? मैं भी तो सुनूँ।

सुरैया—तुम नाहक बिगड़ते हो। तुमने मेरे साथ जो सलूक किए हैं उनका एहसान मेरे सिर पर है, लेकिन यह दिल दूसरे का हो चुका।

थानेदार—अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली? मुझे क्यों मुसीबत में गिरफ्तार किया? पहले ही सोची होतीं। अब से बेहतर है तुम अपनी राह लो, मैं अपनी राह लूँ।

सुरैया—यह तुमने लाख रुपए की बात कही। चलिए सस्ते छूटे।

थानेदार—तुम न होगी तो क्या जिन्दगी न होगी?

सुरैया—और तुम न होगे तो क्या सवेरा न होगा?

थानेदार—नौकरी की नौकरी गई और मतलब का मतलब न निकला—

ग़ैर आँखें सेंके उस बुत से दिले मुज़्तर जले;
वाये बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले।

सुरैया—आँखें सेंकवानेवालियाँ और होती हैं।

थानेदार—इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरती हो और कहती हो, हम नेक हैं। वाह री नेकी!

सुरैया—तुमसे नेकी की सनद तो नहीं माँगती।

थानेदार—अब इस वक़्त तुम्हारी सूरत देखने को जी नहीं चाहता!

सुरैया—अच्छा आप अलग रहें। हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई।

थानेदार—हमको ख़याल यह है कि नौकरी मुफ्त गई।

सुरैया—मजबूरी !!

अट्ठासीवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम ने अब थानेदार के साथ रहना मुनासिब न समझा। रात को जब थानेदार खा-पीकर लेटा तो सुरैयाबेगम वहाँ से भागीं। अभी सोचही रही थीं कि एक चौकीदार मिला। सुरैयाबेगम को देखकर बोला—आप कहाँ? मैंने आपको पहचान लिया है। आप ही तो थानेदारसाहब के साथ उस मकान में ठहरी थी। मालूम होता है रूठकर चली आई हो। मैं ख़ूब जानता हूँ।

सुरैया—हाँ है तो यही बात, मगर किसी से ज़िक्र न करना।

चौकीदार—क्या मजाल, मैं नवाबों और रईसों की सरकार में रहा हूँ।

बेगम—अच्छा, मैं इस वक्त कहाँ जाऊँ?

चौकीदार—मेरे घर।

बेगम—मगर किसी पर जाहिर न होने पाए वरना हमारी इज़्ज़त जायगी।

बेगमसाहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुँचीं। चौकीदार की बीवी ने बेगम की बड़ी ख़ातिर की और कहा—कल यहाँ मेला है, आज टिक जाओ। दो-एक दिन में चली जाना।

सुरैयाबेगम ने रात वहीं काटी। दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ। चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साहब खड़े वाज़ कह रहे थे। सैकड़ों आदमी जमा थे। सुरैयाबेगम भी खड़ी होकर वाज़ सुनने लगी। पादरी साहब उसको देखकर भाँप गए कि यह कोई पर-

हो। पादरी साहब की लड़की तो नहीं है। शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया है।

तीन हिन्दोस्तानी आदमी भी गिरजा गए थे। उनमें यों बातें होने लगीं—

मिरजा—उस्ताद, क्या माल है, सच कहना!

लाला—इस पादरी के तो कोई लड़का-बाला नहीं था।

मुंशी—वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है!

नमाज़ के बाद जब पादरी साहब घर पहुँचे, तो सुरैया से बोले—बेटी हमने तुम्हारा नाम मिस पालेन रक्खा है। अब तुम अँगरेजी पढ़ना शुरू करो।

सुरैया—हमें किसी चीज के सीखने की आरज़ू नहीं है। बस यही जी चाहता है कि जान निकल जाय। किसका पढ़ना और कैसा लिखना। आज से हम गिरजाघर न जायँगे।

पादरी—यह न कहो बेटी! खुदा के घर में जाना, अपनी आक़बत बनाना है। यह खुदा का हुक्म है।

सुरैया—अगर आप मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो मैं भी आपको अपना बाप समझती हूँ मगर मैं साफ़-साफ़ कहे देती हूँ कि मैं ईसाई मज़हब न क़बूल करूँगी।

रात को जब सुरैयाबेगम सोई, तो आज़ाद की याद आई और यहाँ तक रोई कि हिचकियाँ बँध गईं।

पादरी साहब चाहते थे कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मजहब अख्तियार कर ले मगर सुरैयाबेगम ने एक न सुनी। एक दिन वह बैठी कोई किताब पढ़ रही थी कि जानसन नाम का एक अंगरेज़ आया और पूछने लगा—पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया—मैं अँगरेज़ी नहीं समझती।

बरस का है, दूसरे का मुशकिल से अट्ठारह का। एक का नाम वजाहत अली, दूसरे का नाम माशूक हुसेन। वजाहत अली दोहरे बदन का मज़बूत आदमी है। माशूक हुसेन दुबला-पतला, छरहरा आदमी है। उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ऐसा मालूम होता है कि अगर इसे ज़नाने कपड़े पहना दिए जायँ, तो बिलकुल औरत मालूम हो। पीछे-पीछे ६ हाथी और आते थे। जंगल में पहुँचकर लोगों ने हाथी रोक लिए ताकि शेर का हाल दरियाफ्त कर लिया जाय कि कहाँ है। माशूक हुसेन ने काँपकर कहा—क्या शेर का शिकार होगा? हमारे तो होश उड़ गए। अल्लाह के लिये हमें बचाओ। मेरी तो शेर के नाम ही से जान निकल जाती है। तुमने तो कहा था हिरनी और पाढ़े का शिकार खेलने चलते हैं।

वजाहत अली—वाह, इसी पर कहती थीं कि हम वन-वन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते। अब क्या हो गया, कि जरा-सा शेर का नाम सुना और काँप उठीं।

माशूकहुसेन—शेर ज़रा-सा होता है! ऐ वह इस हाथी का कान पकड़ ले, तो चिंघाड़कर बैठ जाय। निगोड़ा हाथी बस देखने ही-भर को होता है। इसके बदन में खून कहाँ। बस पानी ही पानी है।

वजाहत अली—अव्वल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुक़ाबिला कर सकेंगे। अट्ठारह-अट्ठारह निशाने-बाज़ साथ हैं। इनमें दो-तीन आदमी तो ऐसे चढ़े हुए हैं कि रात के वक़्त आवाज़ पर तीर लगाते हैं। क्या मजाल कि निशाना खाली जाय। तुम घबराओ नहीं, ऐसा लुत्फ़ आवेगा, कि सारी उम्र याद करोगी।

माशूक हुसेन—तुम्हें कसम है, हमें यहाँ से कहीं भेज दो। अल्लाह! कब यहाँ से छुटकारा होगा। ऐसी बुरी फँसी कि कुछ कहा नहीं जाता।

उसमें एक शेरनी बच्चों के पास बैठी है। इसी दम हाथी को पेल दीजिए।

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने ख़िदमतगार को हुक्म दिया—इनको एक शाली रूमाल और पचास अशर्फ़ियाँ आज ही देना। हाथी के लिये, पेल का लफ़्ज़ ख़ूब लाए! सुभान-अल्लाह।

इस पर मुसाहबों ने नवाब साहब की तारीफ़ों के पुल बाँध दिए।

१—ऐ सुभान-अल्लाह, वाह मेरे शहजादे क्यों न हो।

२—ख़ुदा आपको एक हज़ार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कहते हैं।

नवाब—अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ़ हाथी ले चलें।

माशूक—अरे लोगो यह क्या अन्धेर है। आख़िर इनमें में किसी के जोरू जाँता भी है या सब निहंग-लाडले, बेफ़िकरे, उठाऊ-चूल्हे ही जमा हैं। ख़ुदा के लिये इनको समझाओ। इतनी-सी जान, गोली लगी और आदमी ढेर से रह गया। आदमी में है क्या! अल्लाह करे शेर न मिले। मुई बिल्ली से तो डर लगता है। शेर की सूरत क्योंकर देखूँगी। भला इतना बताओ कि बँधा होगा या खुला। तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठघरों में बन्द थे।

एकाएक दो पासियों ने आकर कहा कि शेरनी कछार में चली गई। नवाब साहब ने वहीं डेरा डाल दिया और माशूक हुसेन के साथ अन्दर आ बैठे।

नवाब—यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगमसाहब बहादुरी के साथ शेर का शिकार खेलने को गईं।

माशूक—ऐ वाह! जो शरीफ़ज़ादी सुनेगी, अपने दिल में यही कहेगी कि शरीफ़ की लड़की और इतनी ढीठ। भलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुत्ते का नाम सुनते ही बदन के रोएँ खड़े हो जायँ।

बेगम—आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं।

नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलवान ने बरी-बरी कहकर हाथी को बैठाया। तब जीना लगाया गया। बेगमसाहब ने जीने पर कदम रक्खा, मगर झिझककर उतर गईं।

नवाब—पहली बार तो बेझिझक बैठ गई थीं, अब की डरती हो।

बेगम—ऐ लो, उस बार कहा था कि मुर्गाबी का शिकार होगा।

नवाब—शेर का शिकार आसान है, मुर्गाबी का शिकार मुश्किल है।

बेगम—चलिए रहने दीजिए। हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यहाँ रूह काँप रही है कि या खुदा, क्या होगा?

नवाब—होगा क्या? कुछ भी नहीं।

आखिर बेगमसाहब भी बैठीं। नवाब साहब भी बैठे। हवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैठे और हाथी झूमते हुए चले। थोड़ी देर के बाद लोग एक झील के पास पहुँचे। शिकारी ने कहा—झील में पानी कम है, हाथी निकल जायँगे।

बेगम—क्या कहा! क्या इस समुद्र में से जाना होगा?

नवाब—अभी दम के दम में निकले जाते हैं।

बेगम—कहीं निकले न? हमें यहाँ डुबोने लाए हो? जरी हाथी का पाँव फिसला और चलिए पानी के अन्दर गोते खाने लगे।

नवाब साहब ने बहुत समझाया, तब बेगमसाहब अपने हाथी को झील के अन्दर डालने पर राज़ी हुईं। मगर आँखें बन्द कर लीं और गुल मचाया कि जल्दी निकल चलो। पाँच हाथी तो साथ-साथ चले, दो पीछे थे। नवाब साहब ने कहा—अब आँखें खोल दो, आधी दूर चले आए हैं, आधी दूर और बाकी है। बेगम ने आँखें खोलीं तो झील की कैफ़ियत देखकर खिल उठीं। किनारों पर ऊँचे-ऊँचे दरख्त झूम रहे थे।

कोई झील के पानी को चूमता था, किसी की शाखें झील की तरफ झुकी थीं। बेगम ने कहा—अब हमें डर नहीं मालूम होता। मगर अल्लाह करे कोई शेर आज न मिले।

नवाब—खुदा न करे।

बेगम—वाह! आ जाय क्या मजाल है। हम मंतर पढ़ देंगे।

नवाब—भला आप इतनी हुई तो!

बेगम—अजी, मैं तुम सबको बनाती हूँ, डर कैसा! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आए तो गजब ही हो जाय। सुनते ही रोएँ खड़े होते हैं।

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिए बैठी थी। खेदे के आदमियों ने कहा—हुजूर, अब हाथी रोक लिए जायँ। सुरैयाबेगम काँप उठीं। हाय यह क्या हुआ। यह शेरनी कहाँ से निकल आई। या तो उसको कजा लाई है या हमको।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय। तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते लेकर कछार की तरफ़ दौड़े। सुरैयाबेगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक किस्म का लुत्फ़ भी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा—यह रोशनी कैसी है? नवाब बोले—शेरनी निकली होगी और शायद हमला किया हो। इसी लिए रोशनी की गई कि डरकर भाग जाय।

शेरनी ने जब आदमियों की आवाज़ सुनी, तो घबराई। बच्चों को एक ऐसी जगह ले गई जहाँ आदमी का गुज़र मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी भाग गई। सुरैयाबेगम यह खबर सुनकर खिलखिला-कर हँस पड़ीं। लो अब खेलो शिकार, बड़े वह बनकर चले थे! हमारी दुआ और कबूल न हो?

नवाब—आज से शिकार किए न जायँगे। लो कसम खाई।

नवाब साहब रईस तो थे ही कसम खा बैठे। एक मुसाहब ने कहा—हुजूर मुमकिन है कि शेर आज न मिले। कसम खाना ठीक नहीं है।

नवाब—हम हरगिज़ खाना न खाएँगे जब तक शेर का शिकार न करेंगे। इसमें चाहे रात हो जाय, शेर का जगल में न मिलना कैसा!

बेगम—खुदा तुम्हारी बात रख ले।

मुसाहब—जैसी हुजूर की मर्ज़ी।

बेगम—खुदा के लिये अब भी चले चलो। क्या तुम पर कोई सिर सवार है या किसी ने जादू कर दिया है। अब दिन कितना बाकी है!

नवाब—दिन कितना ही हो, हम शिकार जरूर करेंगे।

बेगम—तुम्हें बाप दादा का खाना हराम है जो शेर का शिकार किये बगैर जाओ।

नवाब—मंजूर! जब तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना न खाएँगे।

बेगम—बात तो यही है, खुदा तुम्हारी बात रख ले। ओ लोगो, कोई इनको समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, कोई सलाह देने-वाला भी है या नहीं?

एक मुसाहब—हुजूर ने तो क़सम खा ली, लेकिन साथ के सब आदमी भूखे-प्यासे हैं, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरना सब हलकान हो जायँगे।

नवाब—हमको किसी का ग़म नहीं है, कुछ परवा नहीं है। अगर आप लोग हमारे साथी हैं तो हमारा हुक्म मानिए।

बेगम—शाम होने आई, और शिकार का कहीं पता नहीं, फिर अब यहाँ ठहरना बेवकूफ़ी है या और?

बरकन—हुजूर ही के सब काटे बोए हुए हैं।

इतने में मेड़ेवालों ने कहा खुदावन्द अब होशियार रहिए।

शेरनी आती हैं। अब देर नहीं है। कछार छोडकर पूरब की तरफ़ भागी थी। हम लोगों को देखकर इस ज़ोर से गरजी कि होश उड़ गए, अट्ठाईस आदमी साथ थे, अट्ठाईसों भाग गए। उस वक्त कदम जमाना मुहाल था। शेर का कायदा है कि जब कोई गोली लगाता है तो आग हो जाता है। फिर गोली के बाप की नहीं मानता। अगर बम का गोला भी हो तो वह इस तरह आएगा, जैसे तोप का गोला आता है। और शेरनी का क़ायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो और सारी दुनिया के गोले कोई लेकर आए तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आँच आ सके।

बेगम—बँधी है या खुली हुई है? तमाशेवाले शेरों की तरह कठघरे में बन्द है न?

मुसाहब—हाँ-हाँ साहब, बँधी हुई है।

बेगम—भला उसको बाँधा किसने होगा?

अब एक दिल्लगी सुनिए। एक हाथी पर दो बंगाली थे। उन्होंने इतना ही सुना था कि नवाब साहब शिकार के लिये जाते हैं। अगर यह मालूम होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ बरस न आते। समझे थे कि झीलों में चिड़ियों का शिकार होगा। जब यहाँ आए और सुना कि शेर का शिकार है तो जान निकल गई। एक का नाम कालीचरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगीं।

बोस—नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह लोग हमारा दुश्मन है।

घोष—हम इनसे समझेगा। ओ शाला फोल का थान, हमारे को कीमत ले जायगा।

फीलवान ने हाथी को और भी तेज किया तो यह दोनों साहब चिल्लाए।

बोस—ओ शाला !

बोप—ओ शाला फील का बान, अच्छा हम साहब के यहाँ तुम्हारा नालिश करेगा। अरे बाबा हम लोग जाने नहीं माँगता । शेर शाला का मुकाबिला कौन करने सकता ?

फ़ीलबान—बाबूजी डरो नहीं अभी तो शेर दूर है। जब हौदा पकड़ लेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस —अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे बाप का बाप, हम हाथी को फेरने माँगता। ओ शाला, तुम आरामजादा।

फीलबान—अच्छा बाबू देते जाओ गालियाँ। खुदा की कसम शेर के मुँह में हाथी न ले जाऊँ तो पाजी।

बोस—बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिशवत देगा। हमारा बाप है, माँ है, सब तुम है।

जितने आदमी साथ थे, सब हँस रहे थे। इन दोनों की घबराहट देखने काबिल थी। कभी फ़ीलबान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतारकर खुदा से दुआ माँगते थे, कभी जंगल की तरफ़ देखकर कहते थे—बाबा हमारा जान लेने को हम यहाँ आया। हमारा मौत हमको यहाँ लाया। अरे बाबा हम लोग लिखने पढ़ने में अच्छा होता है। हम लोग बिलायत जाकर अँग्रेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपनी जान से बैर नहीं है। ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिप छापेगा।

फ़ीलबान—आप अपनी तारीफ़ रहने दें।

बोप—नहीं, तुम्हरा नाम हो जायगा। बड़ा-बड़ा लोग तुम्हारा नाम पढेगा तो बोलेगा, यह फील का बान बड़ा होशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायगा। हम तुमको नौकर रखा देगा।

फ़ीलवान मुसकिराकर बोला—वहीं से सब लिखके भेज दीजिएगा।

घोष—ओ शाला, तू हमारा जान लेगा! तुम जान लेगा शाला!

फीलबान—बाबू, गोल-माल न करो, ख़ुदा को याद करो।

घोष—गोल-माल तुम करता है कि हम करता है?

बोस—हाथी हिलेगी तो हम तुमको ढकेल देगा, तुम मर जायगा।

घोष—अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुतसे रुपए देने सकता।

फीलवान—अच्छा, एक हज़ार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें। भले आदमी इतना नहीं सोचते कि पाँच हाथी तो उस पार निकल गए और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बाँका नहीं हुआ तो क्या आप ही डूब जायँगे? क्या जान आप ही को प्यारी है?

घोष—अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जो पाँव फिसलेगी तो बड़ी ग़ज़ब हो जायगा।

फीलवान—अजी, न पाँव फिसलेगी, न बड़ी ग़ज़ब होगा। बस चुप-चाप बैठे रहिए। बोलिए-चालिए नहीं।

घोष—किस माफ़िक़ नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय।

फीलबान—हमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्हारी नानी मरने की बारी है।

फीलवान ने मारे शरारत के हाथी को दो-तीन बार आँकुस लगाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस अब जान गई। आपस में बातें करने लगे—

घोष—आमी दुई जानी डूबी जाबो।

बोस—हूँ, हाथीवाला बड़ो चोर।

घोष—ओमी आये बची आस, तेरे ढलो कोरा आम आर शिकार खेलने जाबे ना।

ब्रोस—तुमी अमाए जावरदस्ती नीए एछो।

घोष—हमारा प्रान भवाए आचे।

घोष—हाथी रोक ले श्रो शाला!

फीलवान—बाबूजी, अब हाथी हमारे मान का नहीं, अब इसका पाँव फिसला चाहता है, ज़रा सँभले रहिएगा।

नवाबसाहब ने इन दोनों आदमियों का रोना-चीखना सुना तो महावत से बोले—ख़बरदार जो इनको डराएगा तो तू जानेगा।

घोष—नवाब शाब, हमारा मदद करो, अब हम जाता है बैकुण्ठ।

महावत ने आहिस्ता से कहा—बैकुण्ठ जा चुके, नरक में जाओगे।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियाँ देने लगे। तुम शाला को पानी के बाहर जाके हम मार डालेगा।

महावत ने कहा—जब पानी के बाहर जा सको न।

घोष—नवाब शाब, यह शाला हमारे को गाली देता।

नवाब—गाली कैसी बाबू, आप इतना घबराते क्यों हैं?

घोष—हमारे को यह शाला गाली देते हैं।

नवाब—क्यों बे, खबरदार जो गाली-गलौज की।

फीलवान—हुज़ूर, मैं ऐसी सवारी से दरगुज़रा, इनको चारों तरफ़ मौत ही मौत नज़र आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाए?

बोस—अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा? अरे बाबा, अब हम ऐसी सवारी पर न आएगा।

बारे हाथी उस पार पहुँचा, तो इन दोनों की जान में जान आई। बोस बाबू बोले—नवाब शाब, हम इसी का साथ बड़ा तकलिप पाया। यह महावत हमारा उस जन्म का बैरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलने चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा।

नवाबसाहब ने फीलवान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ और बाबू लोगों से कहा—अगर आप लोगों को तकलीफ़ होती है तो उतर जाइए। इस पर घोष और बोस दोनों सिर पीटने लगे—अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोड़ के भागना माँगता। हम जायगा कहाँ? इधर जंगल उधर जंगल। हमारे को घर पहुँचा दो।

नवाबसाहब ने कहा—अगर एक हाथी को अकेला भेज दूँ तो शायद शेर या सुअर या कोई और जानवर हमला कर बैठे, हाथी का हाथी ज़ख्मी हो जाय और महावत की जान पर आ बने। आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो?

घोष—आपको अपना हाथी प्यारा, फील का बान प्यारा, हमारा जान प्यारा नहीं। फील का बान सात-आठ रुपए का नौकर, हम लोग हेड क्लार्की करता और क्या बात करेगा। हम जान नहीं रखता, वह जान रखता है?

नवाब—अच्छा फिर बैठे रहो, मगर डरो नहीं।

घोष—अच्छा, अब हम न बोलेगा।

बोस—कैसे न बोलेगा, तुम न बोलेगा? तुम न बोलेगा तो हम बोलेगा।

घोष—तुम शाला सुअर है। तुम क्या बोलेगा? बोलेगा तो हम तुमको कतल कर डालेगा। शाला हमारे को फाँसके लाया और अब जान लेना माँगता है।

बोस—(धोती सँभालकर) तुम दुष्ट चुप रहो। तुम नीच कौम है।

घोष—बोलेगा तो हम हलाल करेगा।

बोस—(दाँत दिखाकर) हम तुमको दाँत काट लेगा।

घोष—अरे तुम बके जाय शाला, बोदेजात, दुष्ट।

बोस—तुम नीच कोम, छोटा कोम, भीख माँगनेवाला सुअर।

दोनों में खूब तकरार हुई। कभी घोष ने घूँसा ताना, कभी बोस ने पैंतरा बदला, मगर दोनों में कोई वार न करता था। दोनों कुन्दे तोल-तोलकर रह जाते थे। नवाबसाहब ने यह हाल देखा तो चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिठाएँ, मगर घोष ने मंजूर न किया, बोले—यह हमारे देश का, हम इसके देश का, और कोई हमारा देश का नहीं।

इतने में आदमियों ने ललकारकर कहा—खबरदार, शेरनी निकली जाती है। हुक्म हुआ कि हाथी इस तरफ़ बढ़ाओ। सब हाथी बढ़ाए गए। एक दरख्त की आड़ में शेरनी दो बच्चे लिए हुए दबकी खड़ी थी। नवाबसाहब ने फौरन् गोली सर की। वह खाली गई। नवाबसाहब ने फिर बन्दूक सर की, अब की गोली शेरनी के कल्ले पर जा पड़ी। गोली खाना था कि वह झल्लाकर पलट पड़ी और तोप के गोले की तरह झपटी। आते ही उसने एक हाथी को थप्पड़ लगाया तो वह चिग्घाड़कर भागा। नवाबसाहब ने फिर बन्दूक चलाई, मगर निशाना खाली गया। शेरनी ने उसी हाथी को जिसे थप्पड़ मारा था, कान पकड़कर बैठा दिया। बारे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शेरनी तड़पकर गिर पड़ी।

इधर तो यह कैफियत हो रही थी, उधर दोनों बङ्गाली बाबू हौदे के अन्दर औंधे पड़े थे। आँखें दोनों हाथों से बन्द कर ली थीं। बेगमसाहब ने उन्हें हौदे में बैठे न देखा तो पूछा—क्या वह दोनों बाबू भाग गए?

फीलवान—नहीं खुदावन्द, मैं हाथी बढ़ाए लाता हूँ।

हाथी करीब आया तो नवाबसाहब दोनों बङ्गालियों को देखकर इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गए।

नवाब—अब उठोगे भी या सोते ही रहोगे। बाबूजी बोलते ही नहीं।

बेगम—क्या अच्छे आदमी थे बेचारे!

नवाब—मगर चल बसे। अभी बातें कर रहे थे।

बेगम—अब कुछ कफ़न-दफ़न की फ़िक्र करोगे या नहीं।

फीलवान ने कन्धा पकड़कर हिलाया तो बोस बाबू उठे। उठते ही शेरनी की लाश देखी, तो काँपकर बोले—नवाब, शाच-शाच बोलो कि यह मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है? हम समझ गया कि मिट्टी का है।

नवाब—आप तो हैं पागल।

घोष—आप लोग जान को कुछ नहीं समझता?

बोस—ये लोग गँवार हैं। हम लोग एम०ए०,बी०ए० पास करता है। हम लोग बहुतसा बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता।

नवाब—अच्छा, अब हाथी से तो उतरो।

फीलबान—बाबू साहब, शेरनी तो मर गई, अब क्या डर है।

दोनों बाबुओं ने हाथी से उतरकर शेरनी की तरफ़ देखना शुरू किया, मगर आगे कोई नहीं बढ़ता।

बोस—आगे बढ़ो महाशाई।

घोष—तुम्हीं बढो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े।

नवाब—बढ़ना नहीं खबरदार, बढ़े और शेर खा गया!

घोष—बा बा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास जरूर करके जायगा।

यह कहकर आप आगे बढ़े, मगर फिर उलटे पाँव भागे और पीछे फिरकर भी न देखा।

नब्बेवाँ परिच्छेद

जब रात को सब लोग खा-पीकर लेटे, तो नवाबसाहब ने, दोनों ज़ालियों को बुलाया और बोले—खुदा ने आप दोनों साहबों को बहुत बचाया, वरना शेरनी खा जाती।

बोस—हम डरता नहीं था, हम शाला इस फील का बान को मारना चाहता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदज़ाती से हिलाने माँगे। जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब लोग का हाथी, हिलने नहीं माँगता, तुम क्यों हिलने माँगता है और हमसे बोला कि बाबू शाब, अब तो मरेगा। हाथी का पाँव फिसलेगी और तुम मर जायँगे। हम बोला—अरे जो हाथी पाँव की फिसल जायगी तो तुम शाले का शाला कहाँ बच जायगा? तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा।

नवाब—अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जाइएगा या नहीं?

बोस—जायगा तो जरूर करके, मगर फील का बान बोदज़ाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा। हमारे हाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जायगा।

सुरैया—बेगमसाहब तो तुम-ऐसों को अपना साया तक न छूने दें। पहले मुँह तो बनवा!

बोस—अब हमारे को डर पास नहीं आते, हम खूब समझ गया कि मौत जानेवाला नहीं है।

नवाब—अच्छा जाइए, कल आइएगा।

जब नवाब और सुरैयाबेगम अकेले रह गए तो नवाब ने कहा—सुनो सुरैयाबेगम, इस ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं। अभी कल की

बात है कि शहज़ादा हुमायूँ फ़र के निकाह की तैयारियाँ हो रही थीं और आज उनकी क़ब्र बन रही है। इस लिये इंसान को चाहिए कि ज़िन्दगी के दिन हँसी खुशी से काट दे। यहाँ तो, सिर्फ़ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो। मुझे किसी से मतलब न सरोकार। अगर तुम साथ रहो तो खुदा गवाह है, बादशाही की हकीकत न समझूँ। अगर यकीन न आए तो आज़मा लो।

बेगम—आप साफ़-साफ़ अपना मंशा बतलाइए। मैं आपकी बात कुछ नहीं समझी।

नवाब—साफ़-साफ़ कहते हुए डर मालूम होता है।

बेगम—नहीं, यह क्या बात है, आप कहें तो।

नवाब—(दबी ज़बान से) निकाह !

बेगम—सुनिए, मुझे निकाह में कोई उज्र नहीं। आप अव्वल तो कमसिन, दूसरे रईसज़ादे, तीसरे खूबसूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज्र हो सकता है। लेकिन रफ्ता-रफ्ता अर्ज करूँगी कि किस सबब से मुझे मंज़ूर नहीं।

नवाब—हाय-हाय, तुमने यह क्या सितम ढाया !

बेगम—मैं मजबूर हूँ, इसकी वजह फिर बयान करूँगी।

नवाब—अगर मंज़ूर नहीं तो हमें क़त्ल कर डालो। बस छुट्टी हुई। अब ज़िन्दगी और मौत तुम्हारे हाथ है।

दूसरे दिन नवाबसाहब सो ही रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा—हुज़ूर और सब लोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है।

नवाबसाहब ने शिकारी लिबास पहना और सुरैयाबेगम के साथ हाथी पर सवार होकर चले।

बेगम—वह बाबू आज कहाँ हैं ? मारे डर के न आते होंगे।

बोस—हम तो आज शुरू से ही साथ-साथ हैगा। अब हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं।

बेगम—बाबू तुम्हारे को हाथी तो नहीं हिलती?

घोष—ना, आज हाथी नहीं हिलती। कल का बात कल के साथ गया।

हाथी चले। थोड़ी दूर जाने पर लोगों ने इत्तला दी कि शेर यहाँ से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवाबसाहब ने खुश होकर कहा—हाथियों को दौड़ा दो। बाबुओं के फीलवान ने जो हाथी तेज़ किया, तो घोष बाबू मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे।

घोष—अरे शाला, जमीन पर गिरा दिया!

फीलवान—चुप-चुप, गुल न मचाइए, मैं हाथी रोके लेता हूँ।

घोष—गूल न मचाएँ तो फिर क्या मचाएँ?

फीलवान—वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आई।

घोष—महाशाई लागे ने तो?

बोस—बड़ो ब्रोद लोग।

घोष—अपना समाचार बोलो।

बोस—अपना समाचार की बोलबो बाबा!

मिस्टर बोस झाड़ पोंछकर उठे और महावत को हज़ारों गालियाँ दीं।

बोस—महाशाई, तुम इसको मारो, मारो इस दुष्ट को।

घोष—ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़कर तुमको मार डालने माँगता।

फीलवान हँस दिया। इस पर बोस आग हो गए, और कई ढेले चलाए, मगर कोई ढेला फीलवान तक न पहुँच सका। फीलवान ने कहा—हुजूर, अब हाथी पर बैठ लें तो हम नवाबसाहब के हाथियों से

शिकार है। बोस बोले—हम डरपोक आदमी नहीं है। हम महाराजा बड़ौदा के यहाँ क़िसिम क़िसिम का जानवर देख चुका है।

खोजी—अब बातें कब तक करेगा! आके बैठ जा।

फीलवान—हुज़ूर, कुरान की कसम खाकर कहता हूँ, मेरा कुसूर नहीं। आप कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं। हौदे पर लटककर बैठे हुए थे। हाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े।

बोस—हमारा दिल में आई कि तुम्हारा कान नोच डाले। हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा! तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा।

जब शेर थोड़ी दूर पर रह गया और नवाबसाहब ने देखा कि बाबू वाला हाथी नहीं है तो डरे कि न-जाने उन बेचारों की क्या हालत होगी। हुक्म दिया कि सब हाथी रोक लिए जायँ और धरतीधमक को दौड़ा कर ले जाओ। देखो, उन बेचारों पर क्या तबाही आई!

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू साहबों का हाथी दूर से नजर आया। जब हाथी करीब आया तो नवाब साहब ने पूछा—बाबूसाहब, ख़ैरियत तो है? हाथी कहाँ रह गया था! बाबूसाहबों ने कुछ जवाब न दिया, मगर फीलवान बोला—हुज़ूर, ये दोनों बाबू लोग आपस में लड़ते थे इसी से देर हो गई।

अब बोस बाबू से न रहा गया। बिगड़कर बोले—ओ शाला, तुम हमारे मुँह पर झूठ बोलता है। तुम शाला बिला कहे हाथी को दौड़ा दिए, हम तो गाफ़िल पड़ा था।

इतने में आदमियों ने इत्तला दी कि शेर सामने की झील के किनारे बैठा हुआ है। लोग बन्दूकें सँभाल-सँभालकर आगे बढ़े तो देखा एक मर्द ऊँची-ऊँची घास में छिपा बैठा है। सबकी सलाह हुई कि चारों तरफ

नवाब—अरे भाई, देखते हो ! बरसों शिकार की नौबत नहीं आती; मगर लड़कपन से शिकार खेला है। वह बात कहाँ जा सकती है। ज़रा किसी सूरत से बेगमसाहब को यहाँ लाते और उनको दिखाते, कि हमने कैसा शिकार किया है !

बेगमसाहब का हाथी आया तो बनैले को देखकर डर गईं। अल्लाह जानता है, तुम लोगों को जान की ज़रा भी परवा नहीं। और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती !

नवाब—तारीफ़ न की, कितनी जवाँमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया। लाश तो देखो, कहाँ से कहाँ तक है !

एक मुसाहब—हुज़ूर ने वह काम किया जो सारी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता। दस-पाँच आदमी मिलकर तो जिसे चाहें मार लें; मगर एक आदमी का तलवार लेकर बनैले से भिड़ना ज़रा मुश्किल है।

बेगम—ऐ है, तुम अकेले शिकार करने गए थे ! कसम खुदा की, बड़े ढीठ हो। मेरे तो रोएँ खड़े हुए जाते हैं।

नवाब—अब तो हमारी बहादुरी का यक़ीन आया कि अब भी नहीं ?

यहाँ से फिर शिकार के लिये रवाना हुए। बनैले का शिकार तो घाते में था। झील के क़रीब पहुँचे, तो हाथी ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन पर पाँव पटकने लगा।

फीलवान—शेर कहीं पास ही है, नहीं तो हाथी पाँव न पटकता। अब होशियार रहना चाहिए।

शिकारी—शेर यहाँ से बीस क़दम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला अब निकला। काशीसिंह, हाथी पर आ जाओ। दिलाराम से भी कहो, बहुत आगे न बढ़े।

काशीसिंह—हुँह, सहर के मनई, नेवला देखे डर जायँ, हमका राह देखावत हैं। वह सेर तो हम सवा सेर !

नवाब—यह उजड्डपन अच्छा नहीं। काशीसिंह आ जाओ। दिलाराम तुम भी किसी और हाथी पर चले जाओ। मानो कहना।

दिलाराम—हुजूर, चार बरस की उमिर से बाघ मारता चला आवत हौं, खा जाई, ससुर खा जाय।

बेगम—ऐ है, बड़े ढीठ हैं। नवाब तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रक्खो। हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो।

अब सुनिए कि इत्तफ़ाक से एक शिकारी ने शेर देख लिया। एक दरख़्त के नीचे चित सो रहा था। उन्होंने किसी से न कुछ कहा न सुना, बन्दूक दाग ही तो दी। गोली पीठ पर पड़ी। शेर आग हो गया और गरजता हुआ लपका, तो खलबली मच गई। आते ही काशीसिंह को एक थप्पड़ दिया, दूसरा थप्पड़ देने ही को था, कि काशीसिंह सँभला और तलवार लगाई। तलवार हाथ पर पड़ी। तलवार खाते ही हाथी की तरफ़ झपटी, और नवाबसाहब के हाथी के दोनों कान पकड़ लिए। हाथी ने ठोकर दी तो शेर ५-६ कदम पर गिरा। इधर हाथी उधर शेर, दोनों गरजे। बाबूसाहबों ने दोहाई देनी शुरू की।

बोस—अरे हमारा नानी मर गया। अरे बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जायगा।

घोष—ओ भाई, तुम शेर को रोक लेगा जल्दी से।

बोस—हम नीचे होता तो ज़रूर करके रोक लेता।

दो हाथी तो शेर की गरज सुनकर भागे; मगर बाबू का हाथी डटा खड़ा था। इस पर बोस ने रोकर कहा—ओ शाला हमारा हाथी, अरे तुम किस माफ़िक भागता नहीं। तुम्हारा भाई लोग भागे जाता है, तुम क्यों खड़ा है ?

शेर ने झपटकर नवाबसाहब के हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोश्त खिंच आया। नवाबसाहब के हाथ-पाँव फूल गए। एक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था नीचे गिर पड़ा। शेर ने फिर थप्पड़ दिया। इतने में एक चौकीदार ने गोली चलाई। गोली सिर तोड़कर बाहर निकल गई और शेर गिर पड़ा, मगर नवाबसाहब ऐसे बदहवास थे कि अब तक गोली न चलाई। लोग समझे शेर मर गया। दो आदमी नज़दीक गए और देखकर बोले—हुज़ूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया। नवाबसाहब हाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरजकर उठा और एक चौकीदार को छाप बैठा। चारों तरफ़ हुल्लड़ मच गया। कोई बन्दूक छतियाता है, कोई ललकारता है। कोई कहता है—तलवार लेकर दस बारह आदमी पहुँच जाओ, अब शेर नहीं उठ सकता।

नवाब—क्या कोई गोली नहीं लगा सकता?

एक—हुज़ूर, शेर के साथ आदमी की भी जान जायगी।

नवाब—तुम तो अपनी बड़ी तारीफ़ करते थे। अब वह निशानेबाज़ी कहाँ गई? लगाओ गोली।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गई। शिकारी ने एक और गोली लगाई तो शेर का काम तमाम हो गया। मगर यह गोली इस उस्तादी से चलाई थी कि चौकीदार पर आँच न आने पाई। सब लोगों ने तारीफ़ की। शेर ऊपर था और चौकीदार नीचे। सात आदमी तलवारें लेकर झपटे और शेर पर वार करने लगे। जब खूब यकीन हो गया कि शेर मर गया तो लाश को हटाया। देखा कि चौकीदार मर रहा है।

नवाब—ग़ज़ब हो गया यारो, हा! अफ़सोस।

बेगम—हाथी यहाँ से हटा ले चलो। कहते थे कि शिकार को न चलो। तुमने मेरा कहा न माना।

नवाब—फीलवान, हाथी बिठा दे, हम उतरेंगे।

बेगम—उतरने का नाम भी न लेना। हम न जाने देंगे।

नवाब—बेगम, तुम तो हमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमारा आदमी मर रहा है, मुझे दूर से तमाशा देखना मुनासिब नहीं।

बेगम ने नवाब के गले में हाथ डालकर कहा—अच्छी बात है जाइए, अब या तो हम-तुम दोनों गिरेंगे या यहीं रहेंगे।

नवाब दिल में बहुत खुश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आदमियों से कहा—ज़रा देखो उसमें कुछ जान बाक़ी है? आदमियों ने कहा—हुज़ूर, इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक चापे बैठा रहा। बेचारा घुट-घुटके कभी मर गया होगा!

बेगम—अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे? एक आदमी की जान मुफ्त में ली!

नवाब—हमने क्यों जान ली, जो हमीं को शेर मार डालता!

बेगम—क्या मनहूस बातें ज़बान से निकालते हो, जब देखो अपने को कोसा करते हो।

खेमे में पहुँचकर नवाबसाहब ने वापसी की तैयारियाँ कीं और रातोरात घर पहुँच गए।

एक्यानवेवाँ परिच्छेद

आज तो क़लम की बाछें खिली जाती हैं। नौजवानों के मिज़ाज की तरह अठखेलियों पर है। सुरैयाबेगम खूब निखरके बैठी हैं। लौंडियाँ, महरियाँ बनाव-चुनाव किए घेरे खड़ी हैं। घर में जश्न हो रहा है। न-जाने सुरैयाबेगम इतनी दौलत कहाँ से लाईं। यह ठाट तो पहले भी नहीं था।

महरी—ए बी सैदानी, आज तो मिज़ाज ही नहीं मिलते। इस गुलाबी जोड़े पर इतना इतरा गईं ?

सैदानी—हाँ कभी बापराज काहे को पहना था ! आज पहले-पहल मिला है। तुम अपने जोड़े का हाल तो कहो।

महरी—तुम तो बिगड़ने लगीं। चलो तुम्हें सरकार याद करती हैं।

सैदानी—जाओ कह दो हम नहीं आते, आईं वहाँ से चौधराइन बनके। अब घूरती क्या हो, जाओ कह दो न !

महरी ने आकर सुरैयाबेगम से कहा—हुज़ूर वह तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं। मैंने इतना कहा कि सरकार ने याद किया है तो मुझे सैकड़ों बातें सुनाईं ?

सुरैयाबेगम ने आँख उठाकर देखा तो महरी के पीछे सैदानी खड़ी मुसकिरा रही थीं। महरी पर घड़ों पानी पड़ गया।

सैदानी—हाँ हाँ कहो, और क्या कहती हो ? मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, कोसा और भी कुछ ?

सुरैयाबेगम की माँ बैठी हुई शादी का इन्तज़ाम कर रही थीं। उनके सामने सुरैयाबेगम की बहन जाफ़रीबेगम भी बैठी थीं। मगर यह माँ और बहन आईं कहाँ से ? इन दोनों का तो कहीं पता ही न था। माँ तो कब की मर चुकी। बहनों का ज़िक्र ही नहीं सुना। मज़ा यह कि सुरैयाबेगम के अब्बाजान भी बाहर बैठे शादी का इन्तज़ाम कर रहे हैं। समझ में नहीं आता, यह माँ, बाप, बहन कहाँ से निकल पड़े। इसका क़िस्सा यों है कि नवाब वजाहत अली ने सुरैयाबेगम से कहा—अगर यों ही निकाह पढ़वा लिया गया तो हमारे रिश्तेदार लोग तुमको हक़ीर समझेंगे और कहेंगे कि किसी बेसवा को घर डाल लिया होगा। बेहतर है कि किसी भले आदमी को तुम्हें अपनी लड़की बनाने पर राज़ी कर लिया जाए।

सुरैयाबेगम को यह बात पसन्द आई। दूसरे दिन सुरैयाबेगम एक सैयद के मकान पर गईं। सैयदसाहब को मुफ्त के रुपए मिले, उन्हें नवाबसाहब के ससुर बनने में क्या इनकार होता। किस्मत खुल गई। पडोसी हैरत में थे कि यह सैयदसाहब अभी कल तक तो जूतियाँ चट-काते फिरते थे। आज इतना रुपया कहाँ से आया कि डोमिनियाँ भी हैं, नाच-रंग भी, नौकर-चाकर भी और सब-के-सब नए जोड़े पहने हुए। एक पडोसी ने सैयदसाहब से यों बात-चीत की—

पड़ोसी—आज तो आपके मिज़ाज ही नहीं मिलते। मगर आप चाहे आधी बात न करें, मै तो छेड़के बोलूँगा—

गो नहीं पूछते हरगिज वह मिजाज,
हम तो कहते हैं दुआ करते हैं।

सैयद—हज़रत बड़े फ़िक्र में हूँ। आप जानते है लडकी की शादी झंझट से खाली नहीं। खुदा करे खैरियत से काम पूरा हो जाय।

पडोसी—जनाब खुदा बड़ा कारसाज है। कहाँ शादी हो रही है?

सैयद—नवाब वजाहत अली के यहाँ, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंजूर किया। मेरी तो मंशा यही थी कि किसी शरीफ और गरीब के यहाँ ब्याहूँ।

पड़ोसी—क्यों? गरीब के यहाँ क्यों व्याहते? आपका खानदान मशहूर है। बाकी रहा रुपया। यह हाथ का मैल है। मगर अब यह फ़र्मा-इए कि सब बन्दोबस्त कर लिया है न, मैं आपका पड़ोसी हूँ मेरे लायक जो ख़िदमत हो उसके लिये हाज़िर हूँ।

सैयद—ऐ हजरत आपकी मिहरबानी काफ़ी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुवाफ़िक़ बन्दोबस्त कर लिया है।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवाब के दोस्त बैठे आपस में चुहल कर रहे थे।

एक दोस्त—हज़रत, इस बारे में तो आप क़िस्मत के धनी हैं!

नवाब—भाई खुदा की कसम आपने बहुत ठीक कहा, और सैयद साहब को तो बिलकुल फ़कीर ही समझिए। उनकी दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो दुआ माँगी फौरन क़बूल हो गई।

दोस्त—जभी तो आप-जैसे आली खानदान शरीफ़ज़ादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है। इस वक्त शहर में आपका-सा रईस और कौन है?

मीरसाहब—अजी शहज़ादों के यहाँ जो न निकले वह आपके यहाँ है।

लाला—इसमें क्या शक, लेकिन यहाँ एक-एक शहजादा ऐसा पड़ा है जिसके घर में दौलत लौंडी बनी हुई फिरती है।

मीरसाहब—कुछ बेधा होके तो नहीं आया है! आपसे बढ़कर दूसरा कौन रईस है शहर में, किसके यहाँ है यह साज़-सामान!

लाला—तुम खुशामद करते हो और बन्दा साफ़-साफ़ कहता हूँ।

मीरसाहब—आ पहले मुँह बनवा, चला वहाँ से बड़ा साफ़गो बन के।

दोस्त—ऐसे आदमी को तो धक्के देके निकलवा दे, तमीज़ तो छू ही नहीं गई। गीदीपन के सिवा और कोई बात ही नहीं।

नवाब—बदतमीज़ आदमी है, शरीफ़ों के सोहबत में नहीं बैठा।

मीरसाहब—बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा!

नवाब—अजी सख्त बदतमीज़ है।

घर में सुरैयाबेगम को हमजोलियाँ छेड़-छाड़ कर रही थीं। फ़ीरोज़ा बेगम ने छेड़ना शुरू किया—आज तो हुज़ूर का दिल दसगों पर है।

सुरैयाबेगम—बहन चुप भी रहो, कोई बड़ी-बूढ़ी आ जायँ तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ़ करो, फिर दिल खोलके हँस लेना। मगर तुम मानोगी काहे को !

फ़ीरोज़ा—अल्लाह जानता है ऐसा दूलहा पाया है कि जिसे देखकर भूख-प्यास बन्द हो जाय।

इतने में डोमिनियों ने यह ग़ज़ल गानी शुरू की—

दिल किसी तरह चैन पा जाये, ग़ैर की आई हमको आ जाये ;
दीदा व दिल हैं काम के दोनो, वक्त पर जो मज़ा दिखा जाये।
शेख़ साहब बुराइयाँ मय की, और जो कोई चपत जमा जाये ;
जान तो कुछ गुज़र गई उस पर, मुँह छिपा के जो कोसता जाये।
लाश उठेगी जभी कि नाज़ के साथ, फेरकर मुँह वह मुसकिरा जाये ;
फिर निशाने लेहद रहे न रहे, आके दुश्मन भी ख़ाक उड़ा जाये।
वह मिलेंगे गले से खिलवत में, मुझको डर है हया न आ जाये ;

फ़ीरोज़ाबेगम ने यह ग़ज़ल सुनकर कहा—कितना प्यारा गला है लेकिन लै अच्छा नहीं।

सुरैयाबेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढ़कर बातें कर रही हैं, ज़रा इनकी ख़बर लेना। इस पर एक डोमिनी बोली—अब हुज़ूर हम लोगों को लै सिखा दें।

दूसरी—यह तो मुजरे को जाया करें तो कुछ पैदा कर लाएँ।

तीसरी—बहन ऐसी कड़ी न कहो।

इतने में एक औरत ने आकर कहा—हुज़ूर कल बरात न आएगी। कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बरात निकलेगी।

बानवेवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम के यहाँ वही धमाचौकड़ी मची थी। परियों का झुरमुट, हसीनों का जमघट, आपस की चुहल और हँसी से मकान गुलज़ार बना हुआ था। मजे-मजे की बातें हो रही थीं कि महरी ने आकर कहा—हुजूर रामनगर से अमगुर मियाँ की बीबी आई हैं। अभी-अभी बहली से उतरी हैं। जानीबेगम ने पूछा—अमगुर मियाँ कौन हैं? कोई देहाती भाई हैं? इस पर हशमत बहू ने कहा, बहन वह कोई हों अब तो हमारे मेहमान हैं। फीरोजाबेगम बोलीं—हाँ हाँ तमीज से बात करो, मगर वह जो आई हैं उनका नाम क्या है? महरी ने आहिस्ता से कहा—फैजन। इस पर दो-तीन बेगमों ने एक दूसरे की तरफ देखा।

हशमत बहू—वाह क्या प्यारा नाम है। फैजन, कोई मीरासिन है क्या?

सुरैयाबेगम—तुम आज लड़वाओगी। जानीबेगम कौनसा अच्छा नाम है।

फ़ीरोज़ा—देहात के तो यही नाम हैं, कोई ज़ुबन है कोई जीनत, कोई फ़ैज़न।

सुरैयाबेगम—फैजन बड़ी अच्छी औरत है। न किसी के लेने में, न देने में।

इतने में बी फ़ैज़न तशरीफ़ लाईं और मुसकिराकर बोलीं—मुबारक हो। यहाँ जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुँह फेर-फेरकर मुसकिराईं। बी फैज़न के पहनावे से ही देहातीपन बरसता था।

फैज़न—बहन आज ही बरात आएगी न, कौन-कौन रस्म हुई। हम तो पहले ही आते मगर हमारे देवर की तबीयत अच्छी न थी।

फीरोज़ा—बहन, तुम्हारा नाम क्या है?

फज़न—फैज़न।

फ़ीरोज़ा—और तुम्हारे मियाँ का नाम ?

फैजन—हमारे हाँ मियाँ का नाम नहीं लेते। तुम अपने मियाँ का नाम बताओ!

फीरोजाबेगम ने तड़ से कहा—असग़र मियाँ। इस पर वह फ़र्माइशी कहकहा पड़ा कि दूर तक आवाज गई। फैज़न दंग हो गईं और दिल ही दिल में सोचने लगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी ढीठ हैं। मैं इनसे पेश न पाऊँगी।

हशमत बहू—तो असगर मियाँ वो फैज़न के मियाँ हैं या तुम्हारे मियाँ, पहले इसका फैसला हो जाय ?

फीरोज़ा—ऐ है, इतना भी न समझीं, पहले इनसे निकाह आहु था, फिर हमसे हुआ और अब असग़र मियाँ के दो महल हैं, एक तो ये बेगम दूसरे हम।

इस पर फिर क़हक़हा पड़ा, फैज़न के रहे सहे हवास भी गायब हो गए। अब इतनी हिम्मत भी न थी कि ज़बान खोल सकें। जानीबेगम ने कहा—क्यों फैज़न बहन, तुम्हारे यहाँ कौन-कौन रस्में होती हैं ? हमारे यहाँ तो दूल्हा लडकी के घर जाकर देख आता है, बस फिर बात तै हो जाती है।

फैजन—क्या यहाँ मियाँ पहले ही देख लेते हैं ? हमारे यहाँ तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फीरोजा—यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है ? नव बरस की कैद मुई कैसी !

फैजन—बहन हम मुई-दुई क्या जानें।

यह सुनकर हमजोलियाँ और भी हँसीं।

फीरोज़ा—यह महरी मुई-टुई कहाँ चली गई? एक भी मुई-टुई दिखाई नहीं देती।

हशमत बहू—हम का मालूम है, मगर हम न बताव।

फीरोज़ा—अरे मुई-टुई पखिया कहाँ गायब हो गई?

हशमतबहू—जिस मुई-टुई को गर्मी मालूम हो वह ढूँढ़ ले।

इतने में जलूस सजा और दुलहिन के हाथ से दूल्हा के लिये सेहरा गया। चाँदी की खुशनुमा किश्तियों में फूलों के हार, बद्धियाँ और जड़ाऊ सेहरा। इसके बाद डोमिनियों का गाना होने लगा। फैजन ने कहा—हमने तो यहाँ की डोमिनियों की बड़ी तारीफ़ सुनी है। इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुँह से कहा—ऐ हुज़ूर, अब तो नाम ही नाम है नहीं तो हमारे लड़कपन में डोमिनियों का महल्ला बड़ी रौनक पर था। यह महबूबन जो सामने बैठी हैं इनकी दादी का वह दौरदौरा था कि अच्छे अच्छे शहज़ादे सिर टेककर आते थे। एक बार बादशाह तक उनके यहाँ आए थे। हाथी वहाँ तक नहीं जा सकता था। हुक्म दिया कि मकान गिरा दिए जायँ और चौगुना रुपया मालिकों को दिया जाय। एक बूढ़ी औरत जिसकी भवें तक सफेद थीं हाथी की सूँड़ पकड़कर खड़ी हो गई और कहा—मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूँगी। मेरे बुजुर्गों की हड्डियाँ खोदके फेंक दी गईं। यह मकान मेरे बुजुर्गों की हड्डी है। बादशाह ने उसके बुजुर्गों के नाम से एक खैरातखाना जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़ा महबूबन की दादी के मकान पर पहुँचा, तो दसबारह हज़ार आदमी गली में खड़े थे। मगर वाह री ज़हूरन! इतना सब कुछ होते भी गुरूर छू न गया था। बरसात के दिन थे, बादशाह ने कहा—जहूरन जब जानें कि मेंह बरसा दो। मुसकिराकर कहा—हुज़ूर लौंडी एक अदना सी डोमिनी है, मगर खुदा के नजदीक कुछ मुशकिल नहीं है। यह कह कर तान ली—

'आयो बदरा कारे-कारे, रही बिजली चमक मोरे आँगन में'

बस, पच्छिम तरफ से झूमती हुई घटा उठी। स्याही छलकने लगी। जहूरन को खुदा बख्शे, फिर तान लगाई और मूसलाधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बढ़ गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नजर आता था। जब तो यहाँ की डोमिनियाँ मशहूर हैं। और अब तो खुदा का नाम है। इतनी डोमिनियाँ बैठी हैं कोई गाए तो ?

खुदारा जल्द ले आकर खबर तू ऐ मेरे ईसा;
तेरे बीमार का अब कोई दम में दम निकलता है।
नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ,
कहीं आया हुआ दिल भी सँभाले से सँभलता है।

महबूबन—बड़ी गलेबाज़ हैं आप, और क्यों न हो ,किनकी-किनकी आँखें देखी हैं। हम क्या जानें।

हैदरी—हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुँचेंगे तो खुदा जाने क्या हाल होगा।

बुढ़िया कब्र में एक पाँव लटकाए बैठी थी। सिर हिलता था, लठिया टेक के चलती थी, मगर तबीयत ऐसी रंगीन कि जवानों को मात करती थी। सबेरे उबटना न मलें तो चैन न आए। पट्टियाँ ज़रूर जमाती थीं, यों तो बहुत ही खुशमिज़ाज और हँस मुख थीं, मगर जहाँ किसी ने इनको बूढ़ी कहा, बस फिर अपने आपे में नहीं रहती थीं। फ़ीरोज़ा ने छेड़ने के लिये कहा—तुमने जो जमाना देखा है वह हम लोगों को कहाँ नसीब होगा। कोई सौ बरस का सिन होगा क्यों ?

बुढ़िया ने पोपले मुँह से कहा—अब इसका मैं क्या जवाब दूँ, बूढ़ी मैं काहे मे हो गई, बालों पर नजला गिरा, सफेद हो गए, इससे कोई बूढ़ा हो जाता है!

शाम से आधी रात तक यही कैफियत, यही मजाक, यही चहल-पहल रही। नई दुलहिन गोरी-गोरी गरदन झुकाए, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाए, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, हमजोलियाँ चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी रात के वक्त दुलहिन को बेसन मल-मलकर नहलाया गया। हिना का इत्र, सुहाग, केवड़ा और गुलाब बदन में मला गया। इसके बाद जोड़ा पहनाया गया। हरे बाफ्ते का पायजामा, सूहे की कुरती, सूहे की ओढनी, बसन्ती रंग का काश्मीरी दुशाला ओढ़ाया गया। मामाओं ने मेढ़ियाँ गूँधी थीं, अब ज़ेवर पहनाने बैठीं। सोने की पाज़ेब, छागल और कड़े, दसों पोरों में छल्ले हाथों में खूबदस्तियाँ, जड़ाऊ कंगन, सोने के कड़े, गले में मोतियों का हार, कानों में करनफूल और बाले, सिर पर छपका और सीसफूल, माँग में मोतियों की लड़ी देखकर नज़र का पाँव फिसला जाता था। जवाहिरात की चमक-दमक से गुमान होता था कि जमीन पर चाँद निकल आया।

जानी बेगम—चौथी के दिन और ठाट होंगे, आज क्या है।

फैज़न—आज कुछ इत्र नहीं। ऐसा महकौआ इत्र कभी नहीं सूँघा।

इस पर सब खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

करामत बहू—बी फैज़न की बातों से दिल की कली खिल जाती है।

फीरोज़ा—कैसी कुम, और चंचल कैसी हैं, रग-रग में शोखी भरी है।

जानी बेगम—बहन फैज़न, हम तुम्हारे मियाँ के साथ निकाह पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी।

फीरोज़ा—दो दिल राज़ी तो क्या करेगा काज़ी।

करामत बहू—बहन, तुम्हारी आँखों का पानी बिलकुल ढल गया। हया भून खाई।

महरी—हुज़ूर यही तो दिन हँसी-मज़ाक के हैं। जब हम इन सिनों थे तो हमारी भी यही कैफियत थी।

इतने में एक हमजोली ने आकर कहा—फीरोज़ा बेगम, वह आई हैं मुबारक महल। उनके सामने ज़री ऐसी बातें न करना, वह बड़ी नाजुक मिजाज हैं। इतनी बेलिहाज़ी अच्छी नहीं होती।

फीरोजा—तो तुम जाके अदब से बैठो। तुम्हारा वज़ीफ़ा आज से बँध जायगा।

मुबारक महल आईं और सबसे गले मिलकर सुरैयाबेगम के पास जा बैठीं।

मुबारक महल—हमने सुरैयाबेगम को आज ही देखा, खुदा मुबारक करे।

फीरोज़ा—ऐ सुरैयाबेगम, ज़री गरदन ऊँची करो, वाह यह तो और झुकी जाती हैं। हम तो सीना तानके बैठे थे, क्या किसी का डर पड़ा है।

इशमत—तुम तो अन्धेर करती हो, नई दुलहिन कहीं अकड़कर बैठती है?

महरी—ऐ हाँ हुज़ूर, दुलहिन कहीं तनके बैठती है? क्या कुछ नई रीति है!

फीरोजा—अच्छा साहब यों ही सही, ज़री और झुक जाओ।

एकाएक बाजे की आवाज आई। दूल्हा के यहाँ से दुलहिन का सेहरा बड़े ठाट से आ रहा था। जब सेहरा अन्दर आया तो सुरैयाबेगम की माँ ने कहा, अब इस वक्त कोई छींके-मींके नहीं। सेहरा अन्दर आता है।

सेहरा अन्दर आया। दूल्हा के बहनोई ने साली के सिर पर सेहरा बाँधा और सास से नेग माँगा।

सास—हाँ हाँ, बाँध लो, इस वक्त तुम्हारा हक़ है।

बहनोई—इन बातों में न आऊँगा। लाइए नेग लाइए।

हशमत—हाँ बेझगड़े न मानना दूल्हा भाई।

बहनोई—मान चुका, तोड़ों के मुँह खोलिए। अब देर न कीजिए।

सुरैयाबेगम की माँ ने पाँच अशर्फ़ियाँ दीं। वह तो लेकर बाहर गए। इधर दूल्हा के यहाँ की ओढ़नी दुलहिन को ओढ़ाई गई। पायजामे में नाड़े की इक्कीस गिरहें दी गईं। परदा डाला गया। दुलहिन एक पलँग पर बैठी। फूलों के तौक़ और बद्धियाँ पहनाई गईं। फूलों का तुर्रा बाँधा गया। अब बरात के आने का इन्तज़ार था।

फ़ीरोज़ा—क्यों बहन फैज़न, सच कहना इस वक्त दुलहिन पर कैसा जोबन है।

फैज़न—वह तो यों ही ख़ूबसूरत हैं।

फ़ीरोज़ा—बरात बड़े धूम से आएगी, हमने चाहा था कि मुन्ने मियाँ के यहाँ से बरात का ठाट देखें।

हशमत बहू—ऐ तो बरात यहाँ से क्यों न देखो। महरी जाके देखो, चिक्कें सब दुरुस्त हैं न।

महरी—हुज़ूर सब सामान लैस है।

फ़ीरोज़ा बेगम उस कमरे की तरफ़ चलीं जहाँ से बरात देखने का बन्दोबस्त था। लेकिन ज्यों कमरे में गईं और नीचे झाँकके देखा तो सहमकर बोलीं—ओफ़ ओह इतना ऊँचा कमरा, मैं तो मारे डर के गिर पड़ी होती। नानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गईं तो आड़े हाथों लिया—हमने सुना आप इस वक्त सहम गईं, वाह!

फ़ीरोज़ा—ख़ुदा गवाह है, झिलमिली न होती मेरे होश ठिकाने नहीं।

नानीबेगम—चलो बस ज़्यादा मुँह न खुलवाओ।

फीरोज़ा—अच्छा, जाके झाँको तो मालूम हो।

जानीबेगम—चलो झाँकें चलके, देखें क्या होता है।

हशमत बहू—हम भी चलते हैं, हम भी झाँकेंगे।

महरी—न बीवी, मैं झाँकने को न कहूँगी। एक बार का ज़िक्र सुनो मैं ताजबीबी का रौज़ा देखने गई। अल्लाह री तैयारी, रौज़ा क्या मुच बिहिश्त है। फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के टोपी उतार हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रौज़े के फाटक पर पहुँचे तो विर बाहर चले गए। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेरके काम ! गँवारों से परदा क्या।

फीरोज़ा—उहँ परदा दिल का।

हशमत—फिर मुजाविरों को क्यों हटाया ?

महरी—वह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मजदूरों से परदा करता है ? अच्छा यह तो बताओ कि दुलहिन को कहाँ से त दिखाओगी।

हशमत—हमारे यहाँ की दुलहिनें बरात नहीं देखा करतीं।

फीरोज़ा—वाह, क्या अनोखी दुलहिन है।

जानीबेगम—जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बरात होगी।

फीरोज़ा—हाँ-हाँ, न देखना क्या माने। हमने अम्माँजान से कहा हमको दूल्हा दिखा दो नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कहा, अच्छा से मे बरात देखो, हमने देखी। हमारे मियाँ घोड़े पर अकड़े बैठे थे। फूल उनके सिर पर मारा।

हशमत—क्यों नहीं, शाबाश क्या कहना !

जानीबेगम—फूल नाहक़ मारा, एक जूता खींच मारा होता।

फ़ीरोज़ा—खूब याद दिलाया, अब सही।

जानीबेगम—अच्छा महरी तुमने उन बेगम साहब का जिक्र था जिनके साथ ताजबीबी का रौज़ा देखने गई थीं। फिर क्या हुआ?

महरी—हाँ खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गए, क्या कहूँ हुज़ूर, कम से कम होंगे तो कोई सात-आठ सौ ज़ीने होंगे।

फ़ीरोज़ा—ओफ़्फ़ोह इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जा

महरी—खैर दम ले-लेके फिर चढ़े, जब धुर पर पहुँचे तो दम बाकी रहा कि ज़रा दिल भी सकें। बेगम साहब ने ऊपर से नीचे झाँका तो ग़श आ गया, धम से गिरीं।

हशमत बहू—हाय-हाय! मरी कि बचीं?

महरी—बच जाने की एक ही कही। हड्डी-पसली चूर हो गई।

फ़ीरोज़ा—मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया। अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी तो होश उड़ गए।

जानीबेगम—जाने दो भाई अब उसका ज़िक्र न करो, चलो दुलहिन के पास बैठो।

ख़बरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी। एक नई बात यह है कि गोरों का बाजा है। हज़ारों आदमी गोरों का बाजा सुनने आए हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फी किराए पर नहीं मिलता। सुना बरात के साथ नई रोशनी है जिसको गैस-लाइट बोलते हैं।

फ़ीरोज़ा—उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फर्क है?

महरी—ऐ हुज़ूर जमीन और आसमान का फ़र्क है। यह मालूम होता है कि दिन है।

फीरोज़ा—खूब याद दिलाया, अब सही।

जानीबेगम—अच्छा महरी तुमने उन बेगम साहब का जिक्र छेड़ा था जिनके साथ ताजबीबी का रौज़ा देखने गई थीं। फिर क्या हुआ?

महरी—हाँ खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गए, मैं क्या कहूँ हुज़ूर, कम से कम होंगे तो कोई सात-आठ सौ ज़ीने होंगे।

फ़ीरोज़ा—ओफ़्फ़ोह इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ।

महरी—खैर दम ले-लेके फिर चढ़े, जब धुर पर पहुँचे तो दम नहीं बाकी रहा कि ज़रा हिल भी सकें। बेगम साहब ने ऊपर से नीचे को झाँका तो ग़श आ गया, धम से गिरीं।

हशमत बहू—हाय-हाय! मरी कि बचीं?

महरी—बच जाने की एक ही कही। हड्डी-पसली चूर हो गई।

फ़ीरोज़ा—मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया। अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी तो होश उड़ गए।

जानीबेगम—जाने दो भाई अब उसका ज़िक्र न करो, चलो दुलहिन के पास बैठो।

खबरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी। एक नई बात यह है कि गोरों का बाजा है। हजारों आदमी गोरों का बाजा सुनने आए हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फी किराए पर नहीं मिलता। सुना कि बरात के साथ नई रोशनी है जिसको गैस-लाइट बोलते हैं।

फ़ीरोज़ा—उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फर्क है?

महरी—ऐ हुज़ूर जमीन और आसमान का फर्क है। यह मालूम होता है कि दिन है।

तिरानबेवाँ परिच्छेद

आजाद पोलैण्ड की शहजादी से रुखसत होकर रातोरात भागे। रास्ते में रूसियों की कई फ़ौजें मिलीं। आज़ाद को गिरफ्तार करने की जोरों से कोशिश हो रही थी, मगर आज़ाद के साथ शहज़ादी का जो आदमी था वह उन्हें सिपाहियों की नज़रें बचाकर ऐसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को खबर तक न हुई। दोनों आदमी रात को चलते थे और दिन को कहीं छिपकर पड़ रहते थे। एक हफ्ते तक भागाभाग चलने के बाद आज़ाद पिलौना पहुँच गए। इस मुकाम को रूसी फ़ौजों ने चारों तरफ़ से घेर लिया था। आज़ाद के आने की खबर सुनते ही पिलौना-वालों ने कई हज़ार सवार रवाना किए कि आजाद को रूसी फ़ौजों से बचा-कर निकाल लाएँ। शाम होते-होते आज़ाद पिलौनावालों से जा मिले।

पिलौना की हालत यह थी कि क़िले के चारों तरफ रूस की फ़ौज थी और इस फ़ौज के पीछे तुर्कों की फ़ौज थी। रात को क़िले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फ़ौज भी दोनों तरफ गोले उतार रही थी। क़िले-वाले चाहते थे कि रूसी फ़ौज दो तरफ़ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई। रूसियों की फ़ौज बहुत ज्यादा थी। गोलों से काम न चलते देखकर आज़ाद ने तुर्की जनरल से कहा—अब तो तलवार से लड़ने का वक्त आ पहुँचा, अगर आप इजाज़त दें तो मैं रूसियों पर हमला करूँ।

अफसर—ज़रा देर और ठहरिए, अब मार लिया है। दुश्मन के छक्के छूट गए हैं।

आजाद—मुझे खौफ़ है कि रूसी तोपों से क़िले की दीवारें न टूट जायँ।

अफसर—हाँ यह खौफ़ तो है, बेहतर है अब हम लोग तलवार लेकर बढ़ें।

हुक्म की देर थी। आज़ाद ने फ़ौरन् तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हज़ारों तलवारें म्यान से निकल पड़ीं। तुर्की

जवानों ने दाढ़ियाँ मुँह में दबाईं और अल्लाह-अकबर कहके रूसी फ़ौज पर टूट पड़े। रूसी भी नंगी तलवारें लेकर मुकाबिले के लिये निकल आए। पहले दो तुर्की कम्पनियाँ बढ़ीं, फिर कुछ फासिले पर ६ कम्पनियाँ और थीं। सबसे पीछे खास फ़ौज की चौदह कम्पनियाँ थीं। तुर्कों ने यह चालाकी की थी, कि सिर्फ़ फ़ौज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाकी कालमों को इस तरह आड़ में रक्खा कि रूसियों को खबर न हुई। क़रीब था कि रूसी भाग जायँ मगर उनके तोपखाने ने उनकी आबरू रख ली। इसके सिवा तुर्की फ़ौज मंज़िलें मारे चली आती थी और रूसी फ़ौज ताज़ा थी। इत्तिफ़ाक़ से रूसी फौज का सरदार एक गोली खाकर गिरा, उसके गिरते ही रूसी फ़ौज में खलबली मच गई, आखिर रूसियों को भागने के सिवा कुछ न बन पड़ी। तुर्कों ने ६ हजार रूसी गिरफ्तार कर लिए।

जिस वक़्त तुर्की फ़ौज पिलौना में दाखिल हुई, उस वक़्त की खुशी बयान नहीं की जा सकती। बूढ़े और जवान सभी फूले न समाते थे। लेकिन यह खुशी देर तक कायम न रही। तुर्कों के पास न रसद का सामान काफी था, न गोला-बारूद। रूसी फ़ौज ने फिर किले को घेर लिया। तुर्क हमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहाँ तक लड़ते। रूसी ग़ालिब आते जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुर्कों को पिलौना छोड़ना पड़ेगा। पच्चीस हज़ार रूसी तीन घण्टे तक किले की दीवारों पर गोले बरसाते रहे। आख़िर दीवार फट गई और तुर्कों के हाथ पाँव फूल गए। आपस में सलाह होने लगी।

फ़ौज का अफ़सर—अब हमारा क़दम नहीं ठहर सकता, अब भाग चलना मुनासिब है।

आज़ाद—अभी नहीं, ज़रा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है!

अफ़सर—कोई नतीजा नहीं।

क़िले की दीवार फटते ही रूसियों ने तुर्की फौज के पास पैग़ाम भेजा, अब हथियार रख दो, वरना मुफ्त में मारे जाओगे।

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया। सारी फौज किले से निकलकर रूसी फ़ौज पर टूट पड़ी। रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुर्क तो जान पर खेल गए थे। मगर मजबूर होकर तुर्कों को पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने तीन धावे किए और तीनों मरतबा, पीछे हटने पर मजबूर हुए। तुर्की जेनरल फिर धावा करने की तैयारियाँ कर रहा था कि बादशाही हुक्म मिला—फ़ौजें हटा लो, सुलह की बात-चीत हो रही है। दूसरे दिन तुर्की फौजें हट गईं और लड़ाई खतम हो गई।

चौरानबेवाँ परिच्छेद

जिस दिन आज़ाद कुस्तुन्तुनिया पहुँचे उनकी बड़ी इज्ज़त हुई। बादशाह ने उनकी दावत की और उन्हे पाशा का ख़िताब दिया। शाम को आज़ाद होटल में पहुँचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज कान में आई, भला मीदी जाता कहाँ है। आज़ाद ने कहा—अरे भाई जाने दो। आज़ाद की आवाज़ सुनकर खोजी बेक़रार हो गए। कमरे से बाहर आए और उनके कदमों पर टोपी रखकर कहा—आजाद, खुदा गवाह है, इस वक्त तुम्हें देखकर कलेजा ठण्डा हो गया, मुँह-मांगी मुराद पाई।

आजाद—ख़ैर यह तो बताओ, मिस मीडा कहाँ हैं?

खोजी—आ गईं, अपने घर पर हैं।

आज़ाद—और भी कोई उनके साथ है?

खोजी—हाँ, मगर उस पर नज़र न डालिएगा।

आजाद—अच्छा, यह कहिए।

खोजी—हम तो पहले ही समझ गए थे, कि आजाद भावज भी ठीक कर लाए, मगर अब यहाँ से चलना चाहिए।

आज़ाद—उस परी के साथ शादी तो कर लो।

ख़ोजी—अजी शादी जहाज़ पर होगी।

मिस मीडा और क्लारिसा को आज़ाद के आने की ज्यों ही खबर मिली, दोनों उनके पास आ पहुँचीं।

मीडा—खुदा का हजार शुक्र है, यह किसको उम्मेद थी कि तुम जीते-जागते लौटोगे। अब इस खुशी में हम तुम्हारे साथ नाचेंगे।

आज़ाद—मैं नाचना क्या जानूँ।

क्लारिसा—हम तुमको सिखा देंगे।

खोजी—तुम एक ही उस्ताद हो।

आजाद—मुझे भी वह गुर याद हैं कि चाहूँ तो परी को उतार लूँ।

ख़ोजी—भई, कहीं शरमिन्दा न करना।

तीन दिन तक आज़ाद कुस्तुन्तुनिया में रहे। चौथे दिन दोनों लेडियों के साथ जहाज़ पर सवार होकर हिन्दोस्तान चले।

पंचानबेवाँ परिच्छेद

आज़ाद, मीडा, क्लारिसा और खोजी जहाज़ पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिये लतीफे और चुटकुले कह रहे हैं। खोजी भी बीच बीच में—अपना ज़िक्र छेड़ देते हैं।

खोजी एक दिन का जिक्र है, मैं होली के दिन बाजार निकला। लोगों ने मना किया कि आज बाहर न निकलिए, वरना रंग पड़ जायगा। मैं उन दिनों बिलकुल गैंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो

हुमल न सका। कमर से खोलकर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल, जिसने देखा दाँतों उँगली दबाई कि वाह पट्ठे।

आज़ाद—एँ, तब तक आप पट्ठे ही थे?

खोजी—मैं आपसे नहीं बोलता, सुनो मिस मीडा, हम बाज़ार में आए तो देखा, छरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के क़रीब जमा थे, और रंग उछल रहा था। मेरे पास पेशक़ब्ज़ और तमंचा, बस क्या कहूँ।

आज़ाद—मगर करौली न थी?

खोजी—भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काटो। ललकारकर बोला, यारो देखभाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है। एक पठान ने आगे बढ़के कहा—खाँ साहब, आप सिपाही आदमी हैं, इतना गुस्सा न कीजिए, होली के दिन रंग खेलना माफ़ है। मैंने कहा, सुनो भाई, तुम मुसलमान होके ऐसी बात कहते हो। पठान बोला, हजरत हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है।

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने पीछे से तानके एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गई। फिरके जो देखता हूँ, तो डबल जूता, समझावन-बुझावन। मुसकिराकर आगे बढ़ा।

आज़ाद—एँ, जूता खाके आगे बढ़े!

मीडा—और उस ज़माने में सिपाही भी थे, तिस पर जूता खाके चुप रहे?

आजाद—चुप रहने में ख़ैरियत थी, मुसकिराए भी और बात भी दिल्लगी की थी, मुसकिराते न तो क्या रोते!

खोजी—मैं तो सिपाही हूँ, तलवार से बात करता हूँ, जूते से काम नहीं लेता। कहाँ तलवार कहाँ जूती पैज़ार!

क्लारिसा—एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुद्दई की माँ तुम्हारे सामने रोती थी या नहीं ? गवाह ने कहा, जी हाँ बाएँ आँख से रोती थी।

खोजी—यह तो कोई लतीफ़ा नहीं, मुझे रह रहके खयाल आता है जिस आदमी ने होली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊँ तो खूब मर म्मत करूँ।

आजाद—अच्छा अब घर पहुँचकर सबसे पहले उसकी मरम्मत कीजिएगा। यह लीजिए, स्वेज की नहर !

मिस मीडा ने कहा—हम जरा यहाँ की सैर करेंगे ! आजाद को भी यह बात पसन्द आई। इस्कन्दरिया के उसी होटल में ठहरे जहाँ पहले टिके थे। खोजी अकड़ते हुए उनके पास आए और कहा, अब यहाँ जरा हमारे ठाट देखिएगा। पहले तो लोगों से दरियाफ्त कर लो, कि हमने कुश्ती निकाली थी या नहीं ? मारा चारों शाने चित्त और किसको ? उस पहलवान को जो सारे मिस्र में गुरु था। जिसका नाम लेकर मिस्र के पहलवानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आँखें खुल जायँ। किसी का बदन चोर होता है। उसका कद चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाहर ले गया और मैं भी चुपचाप चला गया, बस भाई फिर तो मैंने कदम जमाके जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंच होने लगे, मगर वह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद ! उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया। उसने दस्ती खींची, मैं बगली हुआ। उसने टण्डा लगाया मैंने लपक के काट खाया।

आज़ाद—सुभान-अल्लाह, यह पेंच सबसे बढ़कर है। आपने इतनी तकलीफ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया।

दोनों लेडियाँ हँसने लगीं तो खोजी भी मुसकिराए, समझे कि मेरी

बहादुरी पर दोनों खुश हो रही हैं। बोले—बस जनाब, दो घण्टे तक बराबर की लड़ाई रही वह कड़ियल जवान, मोटा-ताजा, पँचहत्था। उसका कद क्या बताऊ बस जैसे हुसेनाबाद का सतखण्डा। उसमें कूवत और यहाँ उस्तादी करतब, मैंने उसे हँफा-हँफाके मारा। जब उसका दम टूट गया तो चुर-मुर कर डाला। बस जनाब, किला जङ्ग के पेंच पर मारा तो चारों शाने चित। कोई पचास हज़ार आदमी देख रहा था। तमाम शहर में मशहूर था कि हिन्द का पहलवान आया।

आजाद—भाई जान, सुनो, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की सनद नहीं जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहलवान को भी देख लें कि कैसा है। तुम्हारी उसकी जोड़ है या नहीं।

खोजी—कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूँ कि डांडील पँचहत्था जवान है, आपको यकीन ही नहीं आता, हम इसको क्या करें।

इतने में होटल के दो-एक आदमी खोजी को देखकर जमा हो गए। खोजी ने पूछा—क्यों भाई, हमने यहाँ एक कुश्ती निकाली थी या नहीं।

एक आदमी—वाह, हमारे होटल के बौने ने तो उठाके दे पटका था, चले यहाँ से कुश्ती निकालने!

खोजी—ओ गीदी झूठ बोलना और सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी—हाथ-पाँव तोड़के धर देगा। आप और कुश्ती!

खोजी—जी हाँ, हम और कुश्ती! कोई आए तब न (ताल ठोंक-कर) बुलवाओ उस पहलवान को।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते ही खोजी को चिढ़ाने लगा। ख्वाजा साहब ने कहा—यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत हँसे, बस! हाँय हाँय फिस्स। बौने ने

कुश्ती निकाली तो क्या। किसी बराबरवाले से कुश्ती निकालते तो जानते। इसी पर घमण्ड था।

ख़ोजी—साहब, कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है, अगर उससे हाथ मिलाएँ तो ज़ाहिर हो जाय।

बौना ताल ठोकके सामने आ खड़ा हुआ और खोजी भी पैंतरे बदल-कर पहुँचे। आज़ाद, मीडा और होटल के बहुतसे आदमी उन दोनों के गिर्द ठट लगाके खड़े हो गए।

खोजी—आओ, आओ बच्चा आज भी गुद्दा दूँगा।

बौना—आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता।

खोजी—ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र-भर याद रहे।

बौना—इनाम तो मिलेगा ही फिर हमारा क्या हर्ज है।

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गए। खोजी ने घूसा ताना, बौने ने मुँह चिढ़ाया। खोजी ने चपत जमाई, बौने ने धौल लगाई। दोनों की चाँद घुटीघुटाई, चिकनी थी। इस जोर की आवाज आती थी कि सुनने-वालों और देखनेवालों का जी खुश हो जाता था।

मीडा—खूब आवाज आई, तड़ाक ! एक और !

क्लारिसा—ओफ, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गए।

ख़ोजी—हँसी क्यों न आएगी। जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है।

आज़ाद—अरे यार जरा जोर से चपतबाजी हो।

ख़ोजी—देखिए तो दम के दम में बेदम किए देता हूँ कि नहीं।

आज़ाद—मगर यार यह तो बिलकुल बौना है।

खोजी—हाय अफ़सोस तुम अभी बिलकुल लौंडे हो। अरे कमबख्त इसका क़द चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े

में चिट और लँगोट बाँधकर खड़ा हुआ बस फिर देखिए बदन की क्या कैफ़ियत होती है। बिलकुल गैंडा मालूम होता है। कोई कहता है दुमकटा भैंसा है, कोई कहता है हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका ग़म नहीं। जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठाके दे मारा।

खोजी ने कई बार झल्ला-झल्लाकर चपतें लगाईं। एक बार इत्तिफ़ाक से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गई, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ जोर लगाए मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ ली और लटक गया। ख़ोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने ज़ोर से मुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगाके भागा। खोजी उसके पीछे दौड़े, अपने कमरे में जाकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। ख़ोजी ने चपतें खाईं तो लोग हँसे और मिस क्लरिसा ने तालियाँ बजाईं। तब तो आप बहुत ही झल्लाए, आसमान सिर पर उठा लिया। ओ गीदी, अगर शरीफ़ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ।

आजाद—अरे मियाँ यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ देख रहे थे। मालूम नहीं हुआ कि किसने दे मारा।

खोजी—ऐसी बात आप काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिए गीदी के। वल्लाह कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक्त ऐसी आवाज़ आई कि यह मालूम होता था जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा!

आज़ाद—वह है कहाँ? क्या खोदके ज़मीन में गाड़ दिया आपने?

खोजी—नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है पूरा

ज़ोर नहीं किया वरना मेरे मुकाबिले में क्या ठहरता। हाथ-पाँव तोड़के चर्र-मुर्र कर डालता। नानी ही तो मर गई कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा।

आज़ाद—मगर ख्वाजा साहब गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गर्द क्यों लगी है ?

ख़ोजी—भई, यहाँ पर हम भी कायल हो गए।

क्लारिसा—इसी तरह उस दफा भी तुमने कुश्ती निकाली थी ?

मीडा—बड़े शरम की बात है कि ज़रा-सा बौना तुमसे न गिराया गया।

खोजी—जी चाहता है दोनों हाथों से अपना सिर पीटूँ। कहता जाता हूँ कि उस गीदी का क़द चोर है। आखिर मेरा बदन चोर है या नहीं ? इस वक्त मेरे बदन पर अँगरखा नहीं है। खासा देव बना हुआ हूँ, अभी कपड़े पहन लूँ तो पिद्दी मालूम होने लगूँ। बस यही फर्क समझो। अव्वल तो मैं गिरा नहीं, अपने ही ज़ोर में आप आ गया। दूसरे उसका क़द चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि ज़रासा बौना था।

दूसरे दिन आजाद दोनों लेडियों को लेकर बाजार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि खोजी अफ़ीम के पीनक में ऊँघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुम्बे जाते थे। दुम्बेवाले ने पुकारा—हटो-हटो, बचो-बचो, वह आपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुम्बे से धक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते ही चौंकके गुल मचाया—कोई है लाना करौली। आज अपनी जान और इसकी जान एक करूँगा। खुदा जाने इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गई। अरे वाह वे बहुरूपिए, आज हमारे मुकाबिले के लिये साँड़िनियाँ लाया है। अबे यहाँ हर वक्त चौकन्ने रहते हैं। उस दफा बजाज की

दूकान पर आए तो मिठाई खाने में थाड़े, आज यह हाथ-पाँव तोड़ डालने में क्या मिला। घुटने लहू-लुहान हो गए। अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूँ अब को समझूँगा।

छानवेवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम का मकान परीखाना बना हुआ था। एक कमरे में बज़ीर डोमिनी नाच रही थी। दूसरे में शहजादी का मोजरा होता था।

फीरोजा—क्यों फैज़न बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा?

जानीबेगम—इनके लिये देहात की मीरासिनें बुलवा दो।

फैजन—हाँ फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या?

इस फिक़रे पर वह कहकहा पड़ा कि घर-भर गूँज उठा और फैज़न बहुत शरमाई। जानीबेगम ने कहा—बस यही बात तो हमें अच्छी नहीं लगती। एक तो बेचारी इतनी देर के बाद बोलीं उस पर भी सब ने मिलकर उनको बना डाला।

फहीमन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो औरतें सारंगी लिए थीं, एक तबला बजा रही थी और एक मजीरे की जोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी।

बन्दनवार बाँधो सब मिलके मालिनियाँ।

इसको उसने इस तरह अदा किया, कि जिसने सुना लट्टू हो गया।

जानीबेगम—चौथी के दिन तीस-चालीस तवायफों का नाच होगा।

नज़ीरबेगम—काश्मीरी नहीं आते, हमें उनकी बातों में बड़ा मजा आता है।

हशमत बहू—नवाब साहब को जनाने में नाच कराने की चिढ़ है।

फीरोज़ा—सुनो बहन ! जो औरत बदी पर आए तो उसकी बा ही और है, नहीं तो शरीफ़ज़ादी के लिये सबसे बड़ा परदा दिल का है

फ़ैज़न—फ़हीमन, यह गीत गाओ—

'डाल गयो कोऊ टोना रे।'

फीरोज़ा—क्या गाओ ? गीत ! गीत कण्डेवालियाँ गाती हैं !

जानी—और इनको ठुमरी, टप्पे, ग़ज़ल से क्या मतलब। नकटा गाओ।

फीरोज़ा, बेगम, और जानी की बातें सुनकर मुबारक महल बिगड़ गईं।

फ़ीरोज़ा—बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना।

मुबारक—बुरा मानकर कर ही क्या लूँगी !

जानी—ऐसी बातों से आपस में फ़साद हो जाता है।

फ़ीरोज़ा—यह लड़वाती हैं बहन, सच कहती हूँ।

मुबारक—तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह। न तुम कम न वह कम, शरीफ़ों में बैठने लायक नहीं हो। पढ-लिखकर भी यह बातें सीखीं !

जानी—देखिए तो सही, अब दिल में कट गई होंगी।

मुबारक—मैं ऐसों से बात तक नहीं करती।

फ़ीरोज़ा—(तिनककर) जितना दबो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करतीं, यहाँ कौन तुमसे बात करने के लिए बेक़रार है।

मुबारक—महरी हमारी पालकी मँगवाओ, हम जाएँगे।

बेगम साहब को खबर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुझाकर राज़ी कर दिया।

शाम हुई, रोशनी का इन्तज़ाम होने लगा। बेगम ने कहा—फ़र्राशों

को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड़-कँवल से सजाएँ, कमरे और दालानों में साफ़ चाँदनियाँ बिछें, उन पर ऊनी और चीनी ग़ालीचे हों। महरी ने बाहर जाकर आग़ासाहब से ये बातें कहीं—बोले, हाँ-हाँ साहब सुना। बेगम साहब से कहो कि या तो हमको इन्तज़ाम करने दें, या खुद ही बाहर चली आवें। आख़िर हमको कोई गँवार समझी हैं। कल से इन्त जाम करते-करते हम शल हो गए और जब बरात आने का वक्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यह करो, वह करो। जाकर कह दो कि बाहर का इन्तज़ाम हमारे ताल्लुक है आप क्यों दखल देती हैं। हम अपने बन्दो-बस्त कर लेंगे।

महरी ने अन्दर जाकर बेगम साहब से कहा—हुज़ूर बाहर का सब इन्तज़ाम ठीक है। बारहदरी के फाटक पर नौबतखाना है, उस पर कार-चोबी झोल पड़ी है, कहीं कँवल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हाँडियाँ। रंग-बिरंग के क़ुमक़ुमे बड़ी बहार दिखाते हैं।

इशमत बहू—दरवाज़े पर यह शोर कैसा हो रहा है?

महरी—हुज़ूर शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी भीड़ लगी हुई है कि शाने से शाना छिलता है। दूकानें भी बहुतसी आई हैं। तम्बोली लालकपड़े पहने दूकानों पर बैठे हैं। हाथों में चाँदी के कड़े, थालियों में सुफ़ेद पान, एक थाली में छोटी इलायचियाँ, एक में डलियाँ, कत्था इत्र में बसा हुआ, सफाई के साथ गिलौरियाँ बना रहा है। एक तरफ़ साक़िनों की दूकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं, बे-फ़िक्रे टूटे पड़ते हैं।

फ़ीरोज़ा—सुनती हो फ़ैशन बहन, चलो ज़रा बाहर की बहार देख आवें, यह नाक-भौं क्यों चढ़ाए बैठी हो। क्या घर से लड़कर आई हो?

फ़ैशन—हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, हम न किसी से बोलें न चालें।

हशमत—हाँ फीरोज़ा यह तुममें बड़ी बुरी आदत है।

फ़ीरोज़ा—लड़वाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भरों में आ जायँ।

जानी—फ़ीरोज़ा बेगम जिस महफ़िल में न हों वह बिलकुल सूनी मालूम हो।

फीरोज़ा—हमें अफ़सोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन खफ़ा हो गईं। अब कोई मेल करवा दे।

मुबारक—बहन तुम बड़ी मुँहफट हो।

फीरोज़ा—अब साफ़-साफ़ कहूँ तो बुरा मानो, ज़री ज़रीसी बात में चिटकती हो। आपस में हँसी-दिल्लगी हुआ ही करती है। इसमें बिगड़ना क्या। फैज़न बुरा मानें तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहाँ के राह-रस्म क्या जानें, मगर तुम शहर की होकर बात-बात में रोए देती हो। रहा मैं, मैं तो हाज़िर जवाब हूँ ही। हाँ जानी बेगम की तरह ज़बाँदराज़ नहीं।

जानी—अब मेरी तरफ़ झुकीं।

हशमत—चौमुखा लड़ती हैं, उफ़ री शोखी!

अब दूल्हा के यहाँ का ज़िक्र सुनिए, वहाँ इससे भी ज्यादा धूम धाम थी। नौजवान शहज़ादे और नवाबज़ादे जमा थे। दिल्लगी हो रही थी।

एक—यार आज तो बेसरूर जमाए जाना मुनासिब नहीं।

दूसरा—मालूम होता है आज पीके आए हो।

पहला—अरे मियाँ खुदा से डरो, पीनेवाले की ऐसी-तैसी!

दूल्हा—जरूर पीके आए हो। आप हमारी बरात के साथ न चलिए।

दीवानखाने में बुजुर्ग लोग बैठे पुराने जमाने की बातें कर रहे थे। एक मौलवी साहब बोले—न अब वह ज़माना है, न वह लोग हैं, अब किसके पास जायँ, कोई मिलने के काबिल ही नहीं। इल्म की तो अब क़दर ही नहीं। अब तो वह ज़माना है कि गाली खाए मगर जवाब न दे।

ख्वाजा साहब—अब आप देखें, कि उस जमाने में दस, बीस, तीस की नौकरियाँ थीं, मगर वाह रे बरकत। एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं।

रात के दस बजे नवाब साहब महल में नहाने गए। चारों तरफ बन्दनवारें बँधी हुई थीं। आम, अमरूद और नारंगियाँ लटक रही थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रखा था और बधने में जौ लगे हुए थे। दूल्हा की माँ ने कहा—कोई छींके-वींके नहीं, खबरदार कोई छींकने न पाये। घर-भर में बच्चों को मना कर दो कि जिसको छींक आए, जब्त करे। अब दिल्लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को अँगुली से दबाया, कोई लपकके बाहर चला गया। दूल्हा ने लुङ्गी बाँधी, बदन में उबटन मला गया। बहनें सिर पर पानी डालने लगीं।

दूल्हा—कितना सर्द पानी है। ठिठुरा जाता हूँ।

महरी—फिर हुजूर शादी करना कुछ दिल्लगी है।

बहन—दिल में तो खुश होंगे। आज तुम्हें भला सर्दी लगेगी।

नहाकर दूल्हा ने खड़ाऊँ पहनी, कमरे में आए कपड़े पहने। मशरू का पायजामा, जामदानी का अँगरखा, सिर पर पगड़ी कलगी के इर्द-गिर्द मोती टके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगड़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशमी रूमाल और कांधे पर हरा दुशाला, पैरों में फुँदनेदार बूट।

जब दूल्हा बाहर गया तो बेगम साहब ने लड़कियों से कहा—अब चलने की तैयारी करो। हमको बरात से पहले पहुँच जाना चाहिए। दूल्हा की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने लगीं। महरियों, लौंडियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो। जरा देर में सुखपाल और झप्पान दरवाजे पर लाकर लगा दिए गए। दोनों बहनें चलीं। दाएँ-बाएँ महरियाँ, मशालचियों के हाथ में मशालें, सिपाही और खिदमतगार लाल फुँदनेदार पगड़ियाँ बाँधे साथ चले। जिस तरफ़ से सवारी निकल गई गलियाँ इत्र की महक से बस गईं। यही मालूम होता था कि परियों का उड़नखटोला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुँच गइ, तो नवाब साहब की माँ भी चलीं। वहाँ दुलहिन की माँ ने इनकी पेशवाई की। इत्र, पान से खातिर हुई और डोमिनियों का नाच होने लगा।

थोड़ी देर के बाद दूल्हा के यहाँ से बरात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था। हाथी के सामने अनार और हजारे छूट रहे थे। हाथियों के पीछे अँगरेजी बाजेवालों की धूम थी। फिर सजे हुए घोड़े सिर से पाँव तक जेवर से लदे चले आते थे। साईस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर कदम बढाते चले जाते थे। दूल्हा के सामने शहनाई बज रही थी। तमाशा देखनेवाले यह ठाट बाट देखकर दंग हो रहे थे।

एक—भई अच्छी बरात सजाई, और खूब आतशबाजी बनाई। आतशबाजी क्या बनवाई है, यों कहिए कि चाँदी गलवाई है।

दूसरा—अनार तो आसमान की खबर लाता है, मगर धुआँ आसमान के भी पार हो जाता है।

तख्त ऐसे थे कि जो देखता दाँतों अँगुली दबाता। एक हाथी ऐसा

नादिर बना था कि नकल की अमक कर दिखाया था। बाज़-बाज़ तग्न आदमियों को मुगालता देते थे, खालकर चण्डूबाजों का तख्त तो ऐसा बनाया था कि चण्डूवालों को शर्माया। एक चण्डूबाज ने झल्लाकर कहा—इन कुम्हारों को हमसे अदावत है खुदा इनसे समझे। एक महफ़िल की तस्वीर बहुत ही खूबसूरत थी। फ़र्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद बिछी है, दूल्हा तकिया लगाए बैठा है और सामने नाच हो रहा है। सबके पीछे एक आदमी हाथी पर बैठा रुपए लुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे। एक एक रुपए पर दस-दस गिरे पड़ते थे। जान पर खेलकर पिले पड़ते थे।

यह वही सुरैयाबेगम हैं जो अभी कल तक मारी-मारी फिरती थीं। जिनको सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वही सुरैयाबेगम आज शान से दुलहिन बनी बैठी हैं और इस धूमधाम से उनकी बरात आती है। माँ, बाप, भाई, बहन, सभी मुफ्त में मिल गए। इस वक्त उनके दिल में तरह-तरह के खयाल आते थे—यहाँ किसी को मालूम न हो जाय कि यही सराय में रहती थीं, इसी का नाम अलारक्खी भठियारी था, फिर तो कहीं की न रहूँ। इस खयाल से उन्हें इतनी घबराहट हुई कि इधर दरवाजे पर बरात आई और उधर यह बेहोश हो गई। सबने दुल-हिन को घेर लिया। अरे खैर तो है! यह हुआ क्या, किसी ने पानी के छींटे दिए, किसी ने मिट्टी पर पानी डालकर सुँघाया। दुलहिन की माँ इधर-उधर दौड़ने लगी।

हशमत—ऐं, यह हुआ क्या अम्मीजान?

फीरोज़ा—अभी अच्छी खासी बैठी हुई थीं। बैठे-बैठे गश आ गया।

बाहर दूल्हा ने यह खबर सुनी तो अपनी महरी को बुलवाया और समझाया कि जाके पूछो अगर जरूरत हो तो डाक्टर को बुलवा दूँ।

महरी ने आकर कहा—हुज़ूर अब तबीयत बहाल है, मगर पसीना आ रहा है और पानी-पानी करती हैं। नवाब साहब की जान में जान आई। बार-बार तबीयत का हाल पूछते थे। जब दुलहिन की हालत दुरुस्त हो गई तो हमजोलियों ने दिक करना शुरू किया।

जानी—आखिर इस ग़श का सबब क्या था? हाँ अब समझी। अभी सूरत देखी नहीं और ग़श आने लगे।

फ़ीरोजा—ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद आ गई।

जानी—सूरत से तो खुशी बरसती है, वह हँसी आई, ऐ लो वह फिर गरदन झुका ली।

हशमत—यहाँ तो पाँव तले से मिट्टी निकल गई।

फ़ीरोजा—मजा तो जब आता कि निकाह के वक्त ग़श आता, मियाँ को बनाते तो, कि अच्छे सब्जकदम हो।

अब सुनिए कि महल से बराबर खबरें आ रही हैं कि तबीयत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चैन नहीं आता। आखिर डाक्टर साहब को बुलवा ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाजे कसने शुरू किए।

एक—मुआ सूँस है कि आदमी, अच्छे भदभद को बुलाया।

दूसरी—तोंद क्या चार आनेवाला फर्रुखाबादी तरबूज है।

तीसरी—तम्बाकू का पिण्डा है या आदमी है?

चौथी—कह दो कोई अच्छा हकीम बुलाएँ; इस जंगली हूश के समझ में क्या खाक आएगा।

पाँचवीं—खुदा की मार ऐसे मुए पर।

डाक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नए आदमी थे, उर्दू बाजिबी ही बाजिबी

समझते थे। बोले—दारोद होते कौन जगो ?

महरी—नहीं डाक्टर साहब, दारोद तो नहीं बताती, मगर देखते-देखते गश आ गया।

डाक्टर—गास कीस को बोलते ?

महरी—हुज़ूर मैं समझती नहीं। घास क्या ?

डाक्टर—गाम कीसको बोलते ? तुम लोग बड़ा गोल-माल करने मांगता, हम ज़ुबान देखे।

फ़ीरोज़ा—चौंच ऐसा हकीम हो। डाक्टर की दुम बना है।

जानी—कहो नब्ज़ देखें।

डाक्टर—नाबुज़ कैसा बात। हम लोग नाबुज देखना नहीं मांगता, ज़ुबान दिखाए ज़ुबान, इस माफ़िक।

डाक्टर साहब ने मुँह खोलकर ज़बान बाहर निकाली।

फ़ीरोज़ा—मुँह काहे को घण्टाबेग की गड़हिया है।

जानी—अरे महरी देखती क्या है, मुंह में धूल झोंक दे।

अमानत—एक दफ़ा फिर मुँह खोले तो मैं पंखे की डण्डी हलक़ से मार दूं।

डाक्टर—जिस माफ़िक हम ज़बान दिखाया, उस माफ़िक तुम देखना मांगता। सब माई लोग हँसी करता ज़ुबान दिखाने में क्या शान है।

फ़ीरोज़ा—नवाब साहब से कहो, पहले इसके दिमाग़ का इलाज करें।

सुरैयाबेगम जब किसी तरह ज़ुबान दिखाने पर राज़ी न हुई तो डाक्टर साहब ने नब्ज़ देखकर नुसख़ा लिखा और चलते हुए। सुरैया का जी कुछ हल्का हुआ। मगर इसी वक़्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे ख़ूब वाक़िफ़ थी, वह मैके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। दिल डर गए कि कहीं वह पूरा हाल कहने लगे तो बड़ी बे

न रहूँ। इस औरत का नाम ममोला था। वह एक ही शरीर, आवाजे कसने लगी। एक लड़के को गोद में लेकर उसके साथ खेलने लगी और बातों-बातों में सुरैयाबेगम सताने लगी। हम खूब पहचानते हैं। सराय में भी देखा था, महल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था। इन फ़िक़रों ने सुरैयाबेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर ज़र्दी छा गई। कमरे में जाकर लेट रहीं, उधर ममोला ने भी समझा कि अगर ज्यादा छेड़ती हूँ तो दुलहिन दुश्मन हो जायगी। चुप हो रही।

बाहर महफिल जमी हुई थी। दूल्हा ज्यों ही मसनद पर बैठा एक हसीना नजाकत के साथ कदम उठाती महफ़िल में आई। यारों ने मुँह-माँगी मुराद पाई। एक बूढ़े मियाँ ने पोपले मुँह से कहा—खुदा ख़ैर करे। इस पर महफ़िल-भर ने क़हकहा लगाया और वह परी भी मुसकिराकर बोली—बूढे मुँहसुँहासे, इस बुढ़ौती में भी छेड़छाड़ की सूझी। आपने हँसकर जवाब दिया—बीबी हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है।

यह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम ढाया कि सारी महफ़िल लोट-पोट हो गई। नौजवानों में आहिस्ता आहिस्ता बातें होने लगीं।

एक—बअख्तियार जी चाहता है कि इसके क़दमों पर सिर रख दूँ।

दूसरा—कल ही परसों हमारे घर न पड़ जाय तो अपना नाम बदल डालूँ, देख लेना।

तीसरा—क़सम ख़ुदा की, मैं तो इसकी गुलामी करने को हाज़िर हूँ, पूछो तो कहाँ से आई है।

चौथा—शीन क़ाफ़ से दुरुस्त है।

पाँचवाँ—हमसे पूछो, मुरादाबाद से आई है।

हसीना ने सुरीली आवाज में एक ग़जल गाई। इस गजल ने महफ़िल

को मस्त कर दिया। एक साहब की आँखों से आँसू बह चले, यह वही साहब थे जिन्होंने कहा था कि हम इसे मार डाल लेंगे। लोगों ने समझाया भई इस रोने-धोने से क्या मतलब निकलेगा। यह कोई शरीफ़ की बहू-बेटी तो है नहीं, हम कल ही शिप्पा लड़ा देंगे, मगर इस वक्त तो ख़ुदा के वास्ते आँसू न बहाओ, वरना लोग हँसेंगे। उन्होंने कहा—भाई दिल को क्या करूँ, मैं तो ख़ुद चाहता हूँ कि दिल का हाल जाहिर न हो, मगर वह मानता ही नहीं तो मेरा क्या कुसूर है।

यह हज़रत तो रो रहे थे। और लोग उसकी तारीफ़ कर रहे थे। एक ने कहा—यह हमारे शहर की नाक है। दूसरा बोला—इसमें क्या शक। आप बहुत ही मिलनसार, नेक, खुश-मिज़ाज हैं। तीसरे साहब बोले—ऐ हज़रत, दूर दूर तक शोहरत है इनकी। अब इस शहर में जो कुछ हैं यही हैं।

इस जलसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे। उनको यह बातें नागवार लगीं। बुद्धे मियाँ बोले—वाह अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने बिठा लिया।

छुट्टन—हमारे देहात में अगर पतुरिया को कोई बीच में बिठाए तो हुक्का-पानी बन्द हो जाय।

गजराज—पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय ?

नवाब—जी हाँ, शहरवाले बड़े ही बेशरम होते हैं।

आग़ा—देहातियों की लियाक़त हम बेचारे कहाँ से लाएँ ?

गजराज—हई है, हम लोग इज्ज़तदार हैं। कोई नंगे-लुच्चे नहीं हैं।

आग़ा—तो जनाब आप शहर की मजलिस में क्यों आए ?

गजराज—काहे को बुलाया, क्या हम लोग बिन बुलाए आए ?

आग़ा—अच्छा अब गुस्से को थूक दीजिए।

जब ये लोग ज़रा ठण्डे हुए, तो उस हसीना ने एक फ़ारसी ग़ज़ल गाई, इस पर एक कमसिन नवाबजादे ने जो पन्द्रह सोलह साल से ज्यादा न था ऊँची आवाज से कहा—वाह जान मन क्यों न हो! इस लड़के के बाप भी महफ़िल में बैठे थे, मगर इस लड़के को ज़रा भी शरम न आई।

इसके बाद तायफ़ा बदला गया। यह आकर महफ़िल में बैठ गई और इसके पीछे साज़िन्दे भी बैठ गए।

नवाब—एँ, ख़ैरियत तो है। ऐ साहब नाचिए गाइए।

हसीना—कल से तबीयत खराब है। दो-एक चीजें आपकी खातिर से कहिए तो गा दूँ।

नवाब—मज़ा किरकिरा कर दिया, तुम्हारे नाच की बड़ी तारीफ़ सुनी है।

हसीना—क्या अर्ज करूँ। आज तो नाचने के काबिल नहीं हूँ।

यह कहकर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी। इधर बड़े नवाब साहब महल में गए और जहाँ दुलहिन का पलंग था, वहाँ बैठे। खवास ने चिकनी डली, इलायची, गिलौरियाँ पेश कीं। इत्र की शीशियाँ सामने रक्खीं। बड़े नवाब साहब हुक्का पीने लगे।

सुरैया बेगम की माँ परदे की आड़ से बोलीं—आदाब अर्ज है।

बड़े नवाब—बन्दगी, ख़ुदा करे इसकी औलाद देखो।

बेगम—ख़ुदा आपकी दुआ क़बूल करें। शुक्र है कि इस शादी की बदौलत आपकी ज़ियारत हुई।

बड़े नवाब—दुलहिन से पूछूँ। क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाह होगा। तुम इसे मंजूर करती हो?

सुरैया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया। बड़े नवाब साहब ने कई मरतबा यही सवाल पूछा, मगर दुलहिन ने सिर ऊपर न उठाया। आख़िर जब हशमत बहू ने आकर कहा—क्यों सबको दिक़ करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नख़रों से बाज़ नहीं आती हो। तब सुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा—हूँ।

बड़ी बेगम—आपने सुना ?

बड़े नवाब—जी नहीं, ज़रा भी नहीं सुना।

बड़ी बेगम ने कहा—आप लोग ज़रा ख़ामोश हो जायँ तो नवाब साहब लड़की की आवाज़ सुन लें। जब सब ख़ामोश हो गईं तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कहा—हूँ।

इधर नौशा के दोस्त उससे मज़ाक कर रहे थे।

एक—आपसे जो पूछा जाय कि निकाह मंज़ूर है या नहीं, तो आप घण्टे भर तक जवाब न दीजिएगा।

दूसरा—और नहीं तो क्या, हाँ कह देंगे ?

तीसरा—जब लोग हाथ-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कहना मंज़ूर है।

चौथा—ऐसा न हो तुम फ़ौरन् मंज़ूर कर लो और उधरवाले हमारी हँसी उड़ाएँ।

दूल्हा—दूल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं। अगर आप लोगों की यही मरज़ी है तो मैं दो घण्टे में मंज़ूर करूँगा।

अब मेहर पर तकरार होने लगी। दुलहिन के भाई ने कहा—मेहर चार लाख से कम न होगा। बड़े नवाब साहब बोले—भाई और भी बढ़ा दो, चार लाख मेरी तरफ़ से, पूरे आठ लाख का मेहर बँधे।

निकाह के बाद किश्तियाँ आईं, किसी में दुशाला, किसी में भारी-

भारी हार, तश्तरियों में चिकनी डली, इलायची, पान, शीशियों में इत्र। किसी किश्ती में मिठाइयाँ और मिस्री के कूजे। जब काजी साहब रुखसत हो गए, तो दूल्हा ने पाँच अशर्फियाँ नजर दिखाईं। नवाबसाहब बाहर आए। थोड़ी देर के बाद महल से शरबत आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशर्फियाँ दीं। दुलहिन के खिदमतगार ने पाँच अशर्फियाँ पाईं। पहले तो दुशाला माँगता रहा, मगर लोगों के समझाने से इनाम ले लिया। दुलहिन के लिये जूठा शरबत भेजा गया। महफ़िलवालों ने शरबत पिया, हार गले में डाला; इत्र लगाया और पान खाकर गाना सुनने लगे। इतने में अन्दर से आदमी दूल्हा को बुलाने आया। दूल्हा यहाँ से खुश-खुश चला। जब ड्योढ़ी में पहुँचा तो उसकी बहनों ने आँचल डाला और ले जाकर दुलहिन के पास मसनद पर बिठा दिया। डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू किए। पहले आरसी की रस्म अदा की।

फ़ीरोजा—कहिए 'बीवी, मुँह खोलो! मैं तुम्हारा गुलाम हूँ'।

नवाब—बीवी मुँह खोलो, मैं तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूँ।

हशमत—जब तक हाथ न जोड़ोगे, मुँह न खोलेंगी।

मुबारक महल—ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आँखें खोल दें।

नवाब—या खुदा, अब और क्योंकर कहूँ, बीवी तुम्हारा गुलाम हूँ। खुदा के लिये जरा सूरत दिखा दो।

दूल्हा ने एक दफ़ा झूठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आँखें खोलीं, सालियों ने कहा—झूठ कहते हो, कौन कहता है आँख खोली।

डोमिनी—बेगम साहब अब आँखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गए। आप फ़क़त आँख खोल दें। वह आपको देखें, आप चाहे उन्हें न देखें।

फीरोजा—वाह, दूल्हा तो चाहे पीछे देखे, यह पहले ही घूर लेंगी।

आखिर सुरैया बेगम ने जरा सिर उठाया और नवाबसाहब से चार आँखें होते ही शरमाकर गर्दन नीची कर ली।

नवाब—अब कहिए आँखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं?

फीरोज़ा—अभी नाहक आँखें खोलीं, जब कदमों पर टोपी रखते तब आँखें खोलतीं।

दूल्हा ने हुक्कीम पान का बीड़ा खाया, पायजामें में एक हाथ मे इजारबन्द डाला और तब सास को सलाम किया। सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया। अब मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई। दुलहिन के कन्धे, घुटने, हाथ वगैरह पर मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े रक्खे गए और दूल्हा ने झुक-झुक-के खाये। सुरैया बेगम को गुद-गुदी मालूम हो रही थी। सालियाँ दूल्हा को छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर हाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देखकर रह जाते थे।

जानी—फीरोजा बेगम-जैसी चर्बांक साली भी न देखी होगी।

नवाब—एक चर्बांक हो तो कहूँ, यहाँ तो जो है आफत का पर-काला है और फीरोजा बेगम का तो कहना ही क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें।

फीरोजा—क्या तारीफ़ की है वाह-वाह!

जानी—क्या कुछ झूठ है? तुम्हारी जबान क्या कतरनी है!

फीरोजा—और तुम अपनी कहो, दूल्हा को इसी वक्त से घूर रही हो। इनकी नजर भी जब पड़ती है तुम्हीं पर।

जानी—फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो।

फीरोज़ा—सुरैया बेगम गाती खूब हैं और बताने में तो उस्ताद हैं,

कोई कथक इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुघुरू बोले, कहो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस कुछ न पूछो।

जानी—सुना, किसी कथक ने दिल लगाके नाचना सिखाया है नवाबसाहब की चाँदी है, रोज मुफ्त का नाच देखेंगे।

हशमत—भई इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, हँसी-दिल्लगी का भी एक मौक़ा होता है।

फीरोज़ा—हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कौनसा मौका होता है, बरात के दिन न हँसें-बोलें तो फिर किस दिन हँसें-बोलें?

इस तरह हँसी दिल्लगी में रात कट गई। सवेरे चलने की तैयारियाँ होने लगीं। दुलहिन की माँ-बहनें सब-की-सब रोने लगीं। माँ ने समधिन से कहा—बहन लौंडी देती हूँ इस पर मिहरबानी की निगाह रहे। वह बोली—क्या कहती हो? औलाद से ज्यादा है। जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूँ उसी तरह इसको भी समझूँगी। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन को गोद में उठाकर सुखपाल पर सवार किया। समधिनें गले मिलकर रुखसत हुईं।

जब बरात दूल्हा के घर पर आई, तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहारियाँ पालकी को उठाकर जनानी ड्योढ़ी पर ले गईं। तब दूल्हा की बहन ने आकर दुलहिन के पाँव दूध से धोए और तलवे में चाँदी के वरक़ लगाए। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन के दामन पर नमाज पढ़ी। फिर खीर आई, पहले दुलहिन के हाथ पर रखकर दूल्हा को खिलाई गई, फिर दूल्हा के हाथ पर खीर रक्खी गई और दुलहिन से कहा गया खाओ, वह शरमाने लगी। आखिर दूल्हा की बहनों ने दूल्हा का हाथ दुलहिन के मुँह की तरफ़ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुँह-दिखावे की रस्म पूरी हुई और दूल्हा बाहर आया।

सत्तानबेवाँ परिच्छेद

शहजादा हुमाँयू फ़र की मौत की ख़बर जिसने सुनी, कलेजा हाथों मे थाम लिया। लोगों का ख़याल था कि सिपहआरा यह सदमा बरदाश्त न कर सकेगी और सिसक-सिसककर शहज़ादे की याद में जान दे देगी। घर में किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि सिपहआरा को समझाए या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कहती—क्या अब तुम्हारी यह मर्ज़ी है कि मैं रोऊँ भी न, दिल ही में घुट-घुटकर मरूँ। दो-तीन दिन तक वह क़ब्र पर जाकर फूल चुनती रही, कभी क़ब्र को चूमती, कभी ख़ुदा से दुआ माँगती कि ऐ ख़ुदा, शहज़ादे बहादुर की सूरत दिखा दे, कभी आप-ही-आप मुसकिराती, कभी क़ब्र की चट-चट बलाएँ लेती। एक आँख से हँसती, एक आँख से रोती। चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहाँ गई। चमन मे टहलते-टहलते उसे आज़ाद की याद आ गई। हुस्नआरा से बोली—बहन अगर दूल्हा भाई आ जायँ तो हमारे दिल को तसकीन हो। ख़ुदा ने चाहा तो वह दो-चार दिन में आया ही चाहते हैं।

हुस्नआरा—अख़बारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई ख़तम हो गई।

सिपहआरा—कल मैं अम्माँजान को भी लाऊँगी।

एक उस्तानीजी भी उनके साथ थीं। उस्तानीजी से किसी फ़क़ीर ने कहा था कि जुमेरात के दिन शहज़ादा जी उठेगा। और किसी को तो इस बात का यक़ीन न आता था, मगर उस्तानीजी को इसका पूरा यक़ीन था। बोलीं—कल नहीं परसों बेगमसाहब को लाना।

सिपहआरा—उस्तानीजी, अगर मैं यहीं दस-पाँच दिन रहूँ तो कैसा हो?

उस्तानी—बेटा, तुम हो किस फ़िक्र में ? जुमेरात के दिन देखो तो अल्लाह क्या करता है, परसों ही तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं।

सिपह्रआरा—खुशी का तो एक महीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज की एक रात पहाड़ हो जाती है। खैर दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले।

हुस्नआरा—उस्तानीजी जो कहेंगी, समझ-बूझकर कहेंगी। शायद अल्लाह को इस ग़म के बाद खुशी दिखानी मंजूर हो।

सिपह्रआरा ने कब्र पर चढ़ाने के लिये फूल तोड़ते हुए कहा—फूल तो दो-एक दिन हँस भी लेते हैं मगर जो कलियाँ बिन खिले मुरझा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है।

उस्तानी—जो खिले वह भी मुरझा गये, जो नहीं खिले वह भी मुरझा गए। इंसान का भी यही हाल है, आदमी समझता है कि मौत कभी आएगी ही नहीं। मकान बनवाएगा तो सोचेगा कि हजार बरस तक इसकी बुनियाद ऐसी ही रहे लेकिन यह खबर ही नहीं कि 'सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।' सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खुशी से खुशी होती है न ग़म से ग़म।

हुस्नआरा—क्यों उस्तानीजी, आपको इस फ़क़ीर की बात का यक़ीन है ?

उस्तानी—अब साफ़-साफ़ कह दूँ, आज के दूसरे दिन हुमायूँ फ़र यहाँ न बैठे हों तो सही।

हुस्नआरा—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, कल भी कुछ दूर नहीं है, कल के बाद ही तो परसों आएगा।

सिपह्रआरा—बाजीजान मुझे तो ज़रा भी यकीन नहीं आता, भला

आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा क़ब्र से निकल आया।

यह बात होती ही थी कि क़ब्र के पास से हँसी की आवाज़ आई, सबको हैरत थी कि यह क़हक़हा किसने लगाया। किसी के समझ में यह बात न आई।

दस बजते बजते सब-की-सब घर लौट आई। यहाँ पहिले ही से एक शाह साहब बैठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आकर कहा-हुज़ूर, यह बडे पहुँचे हुए फ़कीर हैं, वह ऐसी बातें कहते हैं जिनसे मालूम होता है कि शहजादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था, वह मरे नहीं हैं बल्कि ज़िन्दा है। उस्तानीजी ने शाह साहब को अन्दर बुलाया और बोली—आपको इस वक्त बड़ी तकलीफ हुई, मगर हम ऐसी मुसीबत में गिरफ्तार है कि खुदा सातवें दुश्मन को भी न दिखाए।

शाह साहब—खुदा की कारसाजी में दखल देना छोटा मुँह बड़ी बात है। मगर मेरा दिल गवाही देता है कि शहज़ादा हुमायूँ फ़र ज़िन्दा हैं। यों तो यह बात मुहाल मालूम होती है लेकिन इंसान क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मालूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खुदा की बातों को क्या समझेगा?

उस्तानी—आप अभी तो यहीं रहेंगे?

शाह साहब—मैं उस वक्त यहाँ से जाऊँगा, जब दूल्हा के हाथ में दुलहिन का हाथ होगा।

उस्तानी—मगर दुलहिन को तो इस बात का यक़ीन ही नहीं आता। आप कुछ कमाल दिखाएँ तो यक़ीन आए।

शाह साहब—अच्छा तो देखिए।

शाह साहब ने थोड़ी सी गरद मँगवाई और उस पर कुछ पढ़कर ज़मीन पर फेंक दी। आध घण्टे भी न गुजरा था कि वहाँ की ज़मीन फट गई।

बड़ी बेगम—अब इससे बढ़कर क्या कमाल हो सकता है।

सिपहआरा—अम्मांजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शाय शाह साहब ठीक कहते हों (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फ़क़ीरों कमाल की कायल हुईं ?

उस्तानी—हाँ बेटा, इसमें शक क्या है। फक़ीरों का कोई आज त मुक़ाबिला कर सका है ? वह लोग बादशाही को क्या हक़ीक़ समझते हैं !

शाह साहब—फ़क़ीरों पर शक उन्हीं लोगों को होता है जो कामि फ़क़ीरों के हालत से वाक़िफ़ नहीं, वरना फ़क़ीरों ने मुर्दों को ज़िन्दा क दिया है। मंज़िलों से आपस में बातें की है और आगे का हाल बत दिया है।

बेगमसाहब ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया और यह खबर सुनाई इस पर लोग तरह-तरह के शुबहे करने लगे। उन्हें यक़ीन ही न था कि मुर्दा कभी ज़िन्दा हो सकता है।

दूसरे दिन बेगमसाहब ने खूब तैयारियाँ कीं। घर-भर में सिर्फ़ हुस्न आरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाकी सब खुश थे कि मुँह माँगी मुराद पाई। हुस्नआरा को खौफ था, कहीं सिपहआरा की जान के लाले न पड़ जायँ।

तमाम शहर में यह खबर मशहूर हो गई और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा। वह भीड़ हो गई कि कन्धे से कन्धा छिलता था। लोगों में ये बातें हो रही थीं—

एक—मुझे तो यक़ीन है कि शाहज़ादे आज ज़िन्दा हो जायँगे।

दूसरा—भला फ़क़ीरों की बात कहीं गलत होती है ?

तीसरा—और ऐसे कामिल फ़क़ीर की !

चौथा—विन्ध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरसों नीम की पत्तियाँ उबालकर नमक के साथ खाई है। कसम खुदा की, इसमें जरा झूठ नहीं।

पाँचवाँ—सुलतान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आए, हकीम भी आए, पर किसी से कुछ न हुआ, तब मै जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया। जाकर एक नजर उसको देखा और बोले, क्या ऐसा हो सकता है कि सब लोग यहाँ से हट जायँ, सिर्फ मैं और यह लड़की रहे। लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था। सब आदमियों को हटाने लगा। यह देखकर शाह साहब हँसे और कहा, इस लड़की को खून नहीं आता। यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कहकर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रक्खा, तब से आज तक उसे खून नहीं आया। फ़क़ीरों ही से दुनिया क़ायम है।

इतने में ख़बर हुई कि दुलहिन घर से रवाना हो गई हैं। तमाशा देखनेवालों की भीड़ और भी ज्यादा हो गई, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पाँव निकाला तो बड़ी बेगम ने कहा—खुदा ने चाहा तो आज फतह है, अब हमें ज़रा भी शक नहीं रहा।

सिपहआरा—अम्माँजान, बस अब इधर या उधर या तो शहज़ादा को लेके आऊँगी, या वहीं मेरी भी क़ब्र बनेगी।

बेगम—बेटी इस वक्त बदसगुनी की बातें न करो।

सिपहआरा—अम्माँजान दूध तो बख्श दो, यह आख़िरी दीदार है। बहन कहा सुना माफ करना, खुदा के लिये मेरा मातम न करना। मेरी तसवीर आबनूस के सन्दूक़ में है, जब तुम सब हँसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना। ऐ अम्माँजान तुम रोती क्यों हो?

बहार बेगम—कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह! रूहअफ़ज़ा बहन जो ऐसा ही है तो न जाओ।

बड़ी बेगम—हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बँध गई। मुशकिल से बोली—क्या समझाऊँ।

सिपहआरा—अम्माँजान, आपसे एक अर्ज़ है, मेरी क़ब्र भी शहज़ादे की क़ब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, मैं क़दम बाहर न रक्खूँगी।

बड़ी बेगम—भला बेटी, मेरे मुँह से यह बात निकलेगी! लोगो इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

दरदानी—आप अच्छा कह दें बस।

सिपहआरा—मैं अच्छा-उच्छा नहीं जनती, जो मैं कहूँ वह कहिए।

दरदानी—फिर दिल को मज़बूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम—ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा—बहन जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाए, बस अब हठ न करो।

सिपहआरा—मेरी क़ब्र पर कभी-कभी आँसू बहा लिया करना बाजी-जान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा।

यह कहकर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब-की-सब रवाना हुईं। जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया कि दुलहिन घोड़े पर सवार होकर अन्दर दाखिल हो। बेगमसाहब ने हुक्म दिया घोड़ा लाया जाय। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को बढ़ाती हुई क़ब्र के पास पहुँचकर बोली—अब क्या हुक्म होता है? खुद आओगे या हमको भी यहीं सुलाओगे। हम हर तरह राज़ी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नजर आई। ऐसी

तेज रोशनी थी कि सबकी नज़र झपक गई और एक लमहे में शहजादा हुमायूँ फिर घोड़े पर सवार आते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूँज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी क़ब्र बन गई हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुज़र गए हों वह क्योंकर जी उठा!

हुस्नआरा और शहज़ादा की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं —

हुस्नआरा—क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता।

खुरशेद—हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा—तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँ फर यही है?

खुरशेद—हाँ साहब यही है। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यकीन ही नहीं आता था कि यह शहज़ादा हैं।

एक आदमी—भई खुदा की ज़ात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

दूसरा—सुनते हैं, शाह साहब ने बरसों नीम की पत्तियाँ खा-खाकर बसर की है।

तीसरा—जभी तो दुआ में इतनी ताक़त है।

अट्ठानबेवाँ परिच्छेद

नवाब वजाहत हुसेन सुबह को जब दरबार में आए तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देखकर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसेन, बहुत बेतकल्लुफ थे। उन्होंने नवाब

साहब से कहा—भाई आज चौथी के दिन नाच न दिखाओगे? कुछ जरूरी है कि जब कोई तायफ़ा बुलाया जाय तो बदी ही दिल में हो। अरे साहब गाना सुनिए, नाच देखिए, हँसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुजूर मुल्ला बन बैठे। मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पाएगा। और दोस्तों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलाया। यहाँ तक कि मुबारक हुसेन जाकर कई तायफ़े बुला लाए, गाना होने लगा। रौनकदौला ने कहा—कोई फारसी ग़ज़ल कहिए तो खूब रङ्ग जमे।

हसीना—रंग जमाने की जिसको ज़रूरत हो वह यह फिक्र करे, यहां तो आके महफ़िल में बैठने-भर की देर है। रंग आप-ही-आप जम जायगा। गाकर रंग जमाया तो क्या जमाया?

रौनक—हुस्न का भी बड़ा ग़रूर होता है, क्या कहना!

हसीना—होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़कर कौन दौलत है?

बिगड़े दिल—अब आपस ही में ठाना बदलौवल होगा या किसी की सुनोगी भी, अब कुछ गाओ।

रौनक—यह ग़ज़ल शुरू करो।

> बहार आई है भर दे बादये गुलगूँ से पैमाना,
> रहै साकी तेरा लाखों बरस आबाद मैखाना।

इतने में महलसरा से दूल्हा की तलबी हुई। नवाबसाहब महल में गए तो दुलहिन और दूल्हा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तरख्वान बिछा, चाँदी की लगन रक्खी गई, डोमिनियाँ आईं और उन्होंने दुलहिन के दोनों हाथों में दूल्हा के हाथ से तरकारी दी, फिर दुलहिन के हाथों से दूल्हा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया।

अब तरकारियाँ उछलने लगीं। दूल्हा की साली ने नारंगी खींच मारी, हशमत बहू और जानीबेगम ने दूल्हा को बहुत दिक किया। आखिर दूल्हा ने भी झल्लाकर एक छोटी-सी नारङ्गी फीरोज़ा बेगम को तास्कर लगाई।

जानीबेगम—तो झेंप काहे की है। शरमाती क्या हो?

मुबारक महल—हाँ, शरमाने की क्या बात है, और है भी तो तुमको शर्म काहे की। शरमाए तो वह जिसको कुछ हया हो।

हशमत बहू—तुम भी फेंको फीरोजा बहन, तुम तो ऐसा शरमाईं कि अब हाथ ही नहीं उठता।

फीरोजा—शरमाता कौन है, क्योंजी फिर मैं भी हाथ चलाऊँ?

दूल्हा—शौक से हुजूर हाथ चलाएँ, अभी तक तो ज़बान ही चलती थी।

फीरोजा—अब क्या जवाब दूँ, जाओ छोड़ दिया तुमको।

अब चारों तरफ़ से मेवे उछलने लगे। सब-की-सब दूल्हे पर ताक-ताककर निशाना मारती थीं! मगर दूल्हा ने बस एक फीरोजा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया उन्हीं पर फेंका। नारङ्गी पर नारङ्गी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहल-पहल रही।

फीरोज़ा—ऐसे ढीठ दूल्हा भी नहीं देखे।

दूल्हा—और ऐसी चचल बेगम भी नहीं देखी। अच्छा यहाँ इतनी है, कोई कह दे कि तुम-जैसी शोख और चंचल औरत किसी ने आज तक देखी है?

फीरोज़ा—अरे, यह तुम हमारा नाम कहाँ से जान गए साहब?

दूल्हा—आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैसी। कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो?

फीरोज़ा—तुम्हे क़सम है बताओ, हमारा नाम कहाँ से जान गए?

मुबारक महल—बड़ी ढीठ हैं। इस तरह बातें करती हैं जैसे बरसों की बेतकल्लुफी हो।

फीरोजा—ऐ तो तुमको इससे क्या, इनकी फिक्र होगी तो हमारे मियाँ को होगी, तुम काहे को काँपती जाती हो।

दूल्हा—आपके मियाँ से और हमसे बड़ा याराना है।

फीरोज़ा—याराना नहीं वह है, वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है।

दूल्हा—भला बताओ तो उनका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतकल्लुफ हो।

फीरोज़ा—उनका नाम, उनका नाम है नवाब वजाहत हुसेन।

दूल्हा—बस, अब हम हार गए। खुदा की क़सम हार गया।

मुबारक महल—इनसे कोई जीत ही नहीं सकता। जब मर्दों में ऐसी बेतकल्लुफ हैं तो हम लोगों की बात ही क्या है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए।

फीरोज़ा—अपनी-अपनी तबीयत, इसमें भी किसी का इजारा है।

दूल्हा—हम तो आपसे बहुत खुश हुए, बड़ी हँस-मुख हो। खुदा करे रोज़ दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रुखसत हुई। सिर्फ दुल्हा और दुलहिन रह गए।

नवाब—फीरोज़ा बेगम तो बड़ी शोख मालूम होती हैं। बाज़ बाज़ मौकों पर मैं शरमा जाता था, पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीवी ऐसी होती तो मुझसे दम-भर न बनती। गज़ब खुदा का! ग़ैर मर्द से इस बेतकल्लुफी से बातें करना बुरा है। तुमने तो पहले इन्हें काहे को देखा होगा।

सुरैया—जैसे मुफ्त की माँ मिल गई और मुफ्त की बहनें बन बैठीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गईं।

नवाब—मुझे तो तुम्हारी मां पर हँसी आती थी कि बिलकुल इस तरह पेश आती थीं जैसे कोई खास अपने दामाद के साथ पेश आता है।

सुरैया—आप भी तो फीरोज़ा बेगम को खूब घूर रहे थे।

नवाब—क्यों मुफ्त में इलज़ाम लगाती हो, भला तुमने कैसे देख लिया?

सुरैया—क्यों? क्या मुझे कम सूझता है?

नवाब—गरदन झुकाए दुलहिन बनीं तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं है।

सुरैया—मुझसे खुद उसने कसमें खाकर यह बात कही। अब सुनिए अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिलाया, या इधर-उधर सैर-सपाटे करने लगे तो मुझसे दम-भर भी न बनेगी।

नवाब—क्या मजाल, ऐसी बात है भला।

सुरैया—हाँ खूब याद आया, भूल ही गई थी। क्यों साहब यह नारंगियाँ खींच मारना क्या हरकत थी? उनकी शोखी का जिक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते।

नवाब—जब उसने दिक़ किया तो मैं भी मजबूर हो गया।

सुरैया—किसने दिक़ किया? वह भला बेचारी क्या दिक़ करती तुमको! तुम मर्द और वह औरतज़ात।

नवाब—अजी वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

सुरैया—तुम भी छटे हुए हो।

उसी कमरे में कुछ अखबार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोली—इन अखबारों को पढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों ही रख छोड़े हैं।

नवाब—कभी-कभी देख लेता हूँ। यह देखो ताज़ा अख़बार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की ख़ूब तारीफ़ छपी है।

सुरैया—ज़रा मुझे तो देना, अभी दे दूँगी।

नवाब—पढ़ रहा हूँ, ज़रा ठहर जाओ।

सुरैया—और हम छीन लें तो, अच्छा ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो हम भी सुनें।

नवाब—उन्होंने तो लड़ाई में एक बड़ी फतह पाई है।

सुरैया—सुनाओ-सुनाओ। ख़ुदा करे वह सुर्ख़रू होकर आएं।

नवाब—तुम इनको कहाँ से जानती हो, क्या कभी देखा है?

सुरैया—वाह, देखने की अच्छी कही, हाँ इतना सुना है तुर्कों की मदद करने के लिये रूम गए थे।

निन्यानवेवाँ परिच्छेद

शहजादा हुमायूँ फर के जी उठने की ख़बर घर-घर मशहूर हो गई। अख़बारों में इसका ज़िक्र होने लगा। एक अख़बार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि ख़ुदा के लिए किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुशकिल बात नहीं। जब उनकी माँ और बहनों को पूरा यक़ीन है तो फिर शक की गुञ्जाइश नहीं रहती।

दूसरे अख़बार ने लिखा........ ....हम देखते हैं कि सारा ज़माना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कहना माने तो हम उसको सलाह देंगे कि सबको एक सिरे से पागलख़ाने भेज दे। ग़ज़ब ख़ुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यक़ीन है कि हुमायूँ फर जिन्दा हो गए। हम इनसे पूछते हैं, यारो, कुछ अक़्ल भी रखते हो, कहीं मुर्दे भी जिन्दा होते हैं? भला कोई अक़्ल रखनेवाला आदमी

शहज़ादी बेगम ने जब देखा कि हुक्काम टाले न टलेंगे तो उन्होंने शहज़ादा को एक कमरे में बैठा दिया। हुक्काम बरामदे में बैठाए गए। साहब ने पूछा—वेल शहज़ादा हुमायूँ फ़र, यह सब क्या बात है ?

शहज़ादा—खुदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं।

साहब—आप शहज़ादा हुमायूँ फ़र ही है या कोई और ?

शहजादा—क्या खूब, अब तक शक है ?

साहब—हमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं ?

शहज़ादा—मुझे याद नहीं। आखिर वह कौन चीज़ थी ?

साहब—याद कीजिए।

साहब ने हुमायूँ फ़र से और कई बातें पूछीं, मगर वह एक का भी ठीक जवाब न दे सके। तब तो साहब को यक़ीन हो गया कि यह हुमायूँ फर नहीं है।

सौवाँ परिच्छेद

आज़ाद पाशा को इस्कन्दरिया में कई दिन रहना पड़ा। हैज़े की वजह से जहाज़ों का आना-जाना बन्द था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा—भाई, अब तो यहाँ से रिहाई पाना मुश्किल है।

खोजी—खुदा का शुक्र करो कि बचके चले आए, इतनी जल्दी क्या है !

आज़ाद—मगर यार तुमने वहाँ नाम न किया, अफ़सोस की बात है।

खोजी—क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया ? आखिर आपने क्या किया, कुछ मालूम तो हो, कौन गढ़ फ़तह किया, कौन लड़ाई लड़े, यहाँ तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़के मारा। आप बस मिसों पर आशिक़ हुए, और तो कुछ नहीं किया !

आज़ाद—आप भी तो बुआ जाफ़रान पर आशिक़ हुए थे ?

मीडा—अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहाँ कैसे रईस हैं ?

ख़ोजी—बिलकुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक दुनिया से निराले हैं। पतंगबाज़ी पर मिटे हुए, तरह-तरह के पतंग बनते हैं, गोल, माही जाल, माँगदार, भेड़िया, तौक़िया, खरबूज़िया, लंगोटिया, तुक्कल, ललपत्ता, कलपत्ता। दस-दस अशर्फियों तक के पेंच होते है। तमाशाइयों की वह भीड़ होती ती है कि ख़ुदा की पनाह! पतंगबाज़ अपने फ़न के उस्ताद। कोई ढील लडाने का उस्ताद है, कोई खलीट लड़ाने में एकता। इधर पेंच पडा, उधर गोता देते ही कहा, वह काटा! लूटनेवालों की चाँदी है। एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर लूटते हैं।

आज़ाद—क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है ?

खोजी—तुम क्या जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो, सच कहना पतंग लडाया है कभी ?

आज़ाद—हमने पतंग की इतनी किस्में भी नहीं सुनी थीं।

खोजी—इसी से तो कहता हूँ, जाँगलू हो, भला पेटा जानते हो, किसे कहते हैं ?

आज़ाद—हाँ-हाँ जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कहते हैं न, कि किसी की डोर तोड़ ली जाय।

ख़ोजी—भाई निरे गावदी हो।

मीडा—अच्छा बोलो करते क्या हैं, क्या सारा दिन पतंग ही उडाया करते हैं ?

ख़ोजी—नहीं साहब, अफ़ीम और चण्डू कसरत से पीते हैं।

आज़ाद—और कबूतरबाज़ी का तो हाल बयान करो।

क्लारिसा - हमने सुना है कि हिन्दोस्तान की औरतें बिलकुल जाहिल होती हैं।

आज़ाद—मगर हुस्नआरा को देखो तो खुश हो जाओ।

क्लारिसा—हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुदा जाने, वह हमको देखकर खुश होती हैं या नहीं।

मीडा—नहीं, उम्मेद नहीं कि हम दोनों को देखकर खुश हों। जब हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा।

क्लारिसा—मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आज़ाद से मतलब। मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसल पड़नेवाली नहीं।

मीडा—ज़रा होश की बातें करो। जब उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंज़ूर किया। वरना इनमें है क्या? न हसीन, न जवान, न रँगीले।

खोजी—और हम! हमको क्या समझती हो आखिर?

मीडा—तुम बड़े तरहदार जवान हो। और तो और, डील-डौल में तो कोई तुम्हारा सानी नहीं।

आज़ाद—हम भी किसी ज़माने में ख्वाजा साहब ही की तरह शह-ज़ोर थे, मगर अब वह बात कहाँ, अब तो मरे बूढ़े आदमी हैं।

खोजी—अजी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा।

आज़ाद—आपकी जवानी शायद कब्र में आएगी।

खोजी—अजी क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई।

मीडा—तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा—आप ही को मुबारक रहे।

आज़ाद—भाई यहाँ तुम्हारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो लोगों को शक होगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा।

हिन्दोस्तान की औरतों से जाकर पूछ लो, आखिर कुछ देखकर ही तो पा सब मुझ पर आशिक हुई थीं।

इतने में मियाँ आज़ाद ने आकर पूछा—क्या बातें हो रही हैं? क्लारिसा तुम इनके फेर में न आना। यह बड़े चालाक आदमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं।

खोजी—खैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती। खैर आज नहीं कल सही, बिना शादी किए तो मैं मानता नहीं।

क्लारिसा—तो आप अपने को इस काबिल समझने लगे?

खोजी—काबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी ज़बान में जादू है।

आज़ाद—तुम्हारे लिये तो बुआ ज़ाफ़रान की-सी औरत चाहिए।

खोजी—अगर मिस क्लारिसा ने मंज़ूर न किया तो और कहीं शिप्पा लगाएँगे। मगर मुझे तो उम्मेद है कि मिस क्लारिसा आज कल में जरूर मंज़ूर कर लेंगी।

आज़ाद—अजी मैंने तुम्हारे लिये वह औरत तलाश कर रखी है कि देखकर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जायगी।

खोजी बहुत खुश हुए। दूसरे दिन आज़ाद ने एक गाड़ी मँगवाई। आप दोनों मिसों के साथ गाड़ी में बैठे, खोजी को कोच-बक्स पर बैठाया और शादी करने चले। खोजी ऊपर से हटो-बचो की हाँक लगाते जाते थे। एक जगह एक बहरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुल मचाते ही रहे और गाड़ी उसके कल्ले पर पहुँच गई। आप बहुत ही बिगड़े, भला बे गीदी, जब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया।

आज़ाद—क्या है भाई, खैरियत तो है।

खोजी—अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेष बदलकर आया, हम गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं। तब मैं समझा कि हो न हो बहुरूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था, कि हमें पकड़ा दे। वह तो दो-चार दिन में लोट-पोट के चंगा हो जाता मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती। अब पूछो कि तुमको क्या फ़िक्र है, हम लोग भी तो सवार हैं। इसका जवाब हमसे सुनिए। मिसें तो औरत बनकर छूट जातीं, रहे हम और तुम। तो जिसकी नज़र पड़ती हमीं पर पड़ती। तुमको लोग खिदमतगार समझते, हम रईस के धोखे में धर लिए जाते। बस हमारे माथे जाती।

इतने में दस-बारह दुम्बे सामने से आए। खोजी ने चरवाहे को उस तीखी चितवन से देखा कि खा ही जायँगे। उसे इनका कैंड़ा देखकर हँसी आ गई। बस आप आग ही तो हो गए। कोचमैन को डाट बताई—रोक ले, रोक ले।

आज़ाद—अब क्या मुसीबत पड़ी?

खोजी—इस बदमाश से कहो, बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सज़ा दे आऊँ तो बात करूँ। बदमाश मुझे देखकर हँस दिया, कोई मसखरा समझा है।

आज़ाद—कौन था कौन, ज़रा नाम तो सुनूँ।

खोजी—अब राह चलते का नाम मैं क्या जानूँ, कहिए अटकरपच्चू कोई नाम बता दूँ। मुझे देखा तो हँसे आप, मेरी आँखों में खून उतर आया।

आज़ाद—अरे यार, तुम्हें देखकर, मारे खुशी के हँस पड़ा होगा।

खोजी—भई तुमने सच कहा, यही बात है।

आज़ाद—अब बताओ हो गये कि नहीं, जो मैं न समझाता तो फिर ?

खोजी—फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गरदन पर होता।

एकाएक कोचवान ने गाड़ी रोक ली। खोजी घबराकर कोचबक्स से उतरे तो पायदान में दामन अटका और मुँह के बल गिरे, मगर जल्दी में झाड़-पोंछकर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हँसने लगीं।

आज़ाद—अजी गर्द-वर्द पोंछो, ज़रा आदमी बनो। जो दुलहिनवाले देख लें तो कैसी हो।

खोजी—अरे यार, गर्द-वर्द तो झाड़ चुका मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, मैं तो समझता हूँ वही बहुरूपिया मेरी आँखों में धूल झोंककर मुझे घसीट ले गया। खैर शादी हो ले फिर बीबी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊँगा।

आज़ाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और खोजी की ससुराल के दरवाजे पर आए। खोजी गाड़ी के अन्दर बैठे रहे। जब अन्दर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कहा—उनसे कह दो मेरी अगवानी करने के लिये किसी को भेज दें।

आज़ाद ने अन्दर जाकर एक पँचहत्थी मोटी-ताज़ी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठाकर अन्दर ले चली। खोजी अभी सँभलने भी न पाए थे कि उसने उन्हें ले जाकर आँगन में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। खोजी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—अम्माँजान माफ़ करो, ऐसी शादी पर खुदा की मार, मैं क्वाँरा ही रहूँगा।

आज़ाद—क्या है भई, यह रो क्यों रहे हो ?

खोजी—कुछ नहीं भाई जान, ज़रा दिल्लगी हो रही थी।

आज़ाद—अम्माँजान का लफ्ज़ किसी ने कहा था?

खोजी—तो यहाँ तुम्हारे सिवा हिन्दोस्तानी और कौन है?

आजाद—और आप कहाँ के रहनेवाले है?

खोजी—मैं तुर्की हूँ।

आज़ाद—अच्छा आकर दुलहिन के पास बैठो, वह कब से गरदन झुकाए बैठी है बेचारी, और आप सुनते ही नहो।

खोजी ऊपर गए तो देखा एक कोने में दुशाला ओढ़े दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जाकर बैठ गए। क्लारिसा और मीडा भी जरा फ़ासले पर बैठी थीं। ख्वाजा साहब दून की लेने लगे। हमारे अब्बाजान सैयद थे और अम्माँजान काबुल के एक अमीर की लड़की थीं। उनके हाथ-पाँव अगर आप देखतीं तो डर जातीं। अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुनकर कान पकड़ते थे। सीना शेर का-सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजम, आँखों से खून बरसता था। एक दफे रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खीचे पड़ा रहा, मगर वाह री अम्माँजान, चोर की आहट पाते ही उस बदमाश को जा पकड़ा। मैंने पुकारकर कहा, अम्माँजान जाने न पाए, मैं भी आ पहुँचा। इतने में अब्बाजान की आँख खुल गई, पूछा क्या है। मैंने कहा अम्माँजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है। अब्बाजान बोले तो फिर दबके पड़े रहो, उसने चोर को कत्ल कर डाला होगा। मै जो जाके देखता हूँ तो लाश फड़क रही है। जनाब हम ऐसो के लड़के हैं!

आज़ाद—तभी तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही होते है।

खोजी—(हँसकर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हँस रही हैं। अभी हम इनकी नज़रों में नहीं जँचते।

आज़ाद—दुलहिन आज बहुत हँसती हैं। बड़ी हँस-मुख बीबी पाई।

खोजी—उर्दू तो यह क्या समझती होंगी।

आज़ाद—आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे बेवकूफ इन्हें हिन्दी उर्दू से क्या ताल्लुक।

खोजी—बड़ी खराबी यह है कि यहाँ जिस गली-कूचे में निकल जायँ सबकी नज़र पड़ा चाहे और लोग मुझसे जला ही चाहें, इसको मैं क्या करूँ। अगर इनको सैर कराने साथ न ले चलूँ तो नहीं बनती, ले चलूँ तो नहीं बनती। कहीं मुझ पर किसी परीज़ाद की निगाह पड़े और वह घूर-घूरकर देखे, तो यह समझें कि कोई खास वजह है, अब कहिए क्या किया जाय?

आज़ाद—दुलहिन मुँह बन्द किए क्यों बैठी हैं, नाक की तो खैर है?

खोजी—क्या बकते हो मियाँ, मगर अब मुझे भी शक हो गया, तुम लोग जरा समझा दो भाई कि नाक तो दिखा दें।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपाकर जरा-सी नाक दिखा दी। खोजी ने जाकर नाक को छूना चाहा तो उसने इस जोर से चपत दी कि खोजी बिलबिला उठे।

आज़ाद—खुदा की क़सम बड़े बेअदब हो।

खोजी—अरे मियाँ जाओ भी, यहाँ होश बिगड़ गए, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार यह बुरा सगुन हुआ।

आज़ाद—अरे गावदी, यह नखरे हैं, समझा!

खोजी—(हँसकर) वाह रे नखरे!

आज़ाद—अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गए हो?

खोजी—हँह, कभी की एक ही कही, क्या नन्हें बने जाते हैं! अरे

आज़ाद—गरदन सिर और धड़ सब सपाट है।

खोजी—यह क्या, तो क्या छोटी गरदन की तारीफ़ है?

आज़ाद—और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गरदन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यही निशानी।' क्या महावरे भी भूल गए?

ख़ोजी—महावरे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर ख़ुदा के लिये ज़रा मुझसे अदब से बातें कीजिए वरना यहाँ मेरी किरकिरी होगी, और यह आप उनके क़रीब क्यों बैठे हैं, हट के बैठिए जरा।

आज़ाद—क्यों साहब, आप अपनी ससुराल में हमारी बेइज़्ज़ती करते हैं, अच्छा ख़ैर देखा जायगा।

ख़ोजी—आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत कमबख़्त ऐसी ख़राब है कि बेचुहल किए रहा नहीं जाता।

आज़ाद—ख़ैर चलो, होगा कुछ, मगर यार यहाँ एक अजीब रस्म है, दुलहिन अपने दूल्हा के दोस्तों से हँस हँसकर बातें करती है।

खोजी—यह तो बुरी बात है, क़सम ख़ुदा की अगर तुमने इनसे एक बात भी की होगी तो करौली लेकर अभी-अभी काम तमाम कर दूँगा।

आज़ाद—सुन तो लो, जरा सुनो तो सही।

खोजी—अजी बस सुन चुके। इस वक्त आँखों में ख़ून उतर आया, ऐसी दुल्हिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकाई बैठी हैं, गोया कुछ जानती ही नहीं।

आज़ाद—हर मुल्क की रस्म अलग-अलग है इसमें आप ख़्वाहमख़्वाह बिगड़ रहे हैं।

ख़ोजी—तो आप आँखें क्या दिखाते हैं। कुछ आपका मुहताज या गुलाम हूँ। लूट का रुपया मेरे पास भी है, यहाँ से हिन्दोस्तान तक अपने

बीवी के साथ जा सकता हूँ, अब आप तो जायँ, मैं जरा इनसे दो-दो बातें कर लूँ, फिर शादी की राय पीछे दी जायगी।

आजाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पाँव से दामन दबा लिया।

आज़ाद—अब बताओ उठने नहीं देतीं, मैं क्या करूँ।

खोजी—(डपटकर) छोड़ दो, छोड़ दो।

आज़ाद—छोड़ दो साहब, देखो तुम्हारे मियाँ खफा होते है।

खोजी—अभी मुझे मियाँ न कहिए, शादी-ब्याह नाजुक मामला है।

आजाद—पहले आपको इनसे शादी हो जाय, फिर अगर बन्दा आँख उठाके देखे तो गुनहगार।

खोजी—अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कड़े ख़ाँ है, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते। मगर आप क्यों समझाएँगे, मैं खुद ही क्यों न कह दूँ, सुनो बी साहब, हमारे साथ चलती हो तो दो शर्तें माननी होंगी। एक यह कि किसी ग़ैर आदमी को सूरत न दिखाओ। दूसरी यह कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी बँध जाती है। ऐसा न हो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे। भई आजाद, ज़रा इनको इनकी ज़बान में समझा दो।

आज़ाद—आप ज़रा एक मिनट के लिये बाहर चले जाइए तो मै सब बातें समझा दूँ।

खोजी—जी, दुरुस्त, यह भरें लौंडों को दीजिएगा, आप ऐसे छोकरे मेरी जेब में पड़े हैं। और सुनिए, क्या उल्लू समझा है! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आजाद बाहर चले गए तो खोजी पलंग पर दुलहिन के पास बैठे और बोले—भाई अब तो घूँघट उठा लो, जब हम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तरसाती हो।

जब दूल्हिन ने अब भी घूँघट न खोला तो खोजी ज़रा और आगे खिसक गए--जान मन इस वक्त शर्म को भूल जाओ, क्यों तरसाती हो, अरे कब लग तरसाए रखियो जी। कब लग तरसाए रखियो जी!

दो तीन मिनट तक खोजी ने गा-गाकर रिझाया, मगर जब यों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूँघट की तरफ हाथ बढ़ाया। एका-एक दुलहिन ने उनका हाथ पकड़ लिया। अब आप लाख जोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता। तब आप खुशामद की बातें करने लगे। छोड़ दो भाई, भला किसी ग़रीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें क्या मिलेगा? और यह तो तुम जानती ही हो कि मैं तुमसे जोर न करूँगा। फिर क्यों दिक करती हो, मेरा तो कुछ न बिगडेगा, मगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे।

यह कहकर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और टोपी उतारकर उसके क़दमों पर रख दी। उनकी हरकत पर दुलहिन को हँसी आ गई।

खोजी--वह हँसी आई, नाक पर आई, बस अब मार लिया है, बस इसी बात पर गले लग जाओ।

दुलहिन ने हाथ फैला दिए। ख़ोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने जोर से दबाया कि आप चीख पड़े। छोड़ दो छोड़ दो, देखो चोट आ जायगी। मगर अब की दुलहिन ने उन्हें उठाकर दे मारा और छाती पर सवार हो गई। मियाँ खोजी अपनी बदनसीबी पर रोने लगे। इनको रोते देखकर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिला अपनी जवाँ-मरदी दिखाए, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा मार डालेगी और क्या। आपने कपड़े उतारे, और पैंतरा बदलकर बोले--सुनो जी हम शाह-ज़ादे हैं। तलवार के धनी, बात के सूर, नाक पर मक्खी बैठ जाय तो तलवार से नाक उड़ा दें समझीं। अब तक मैं दिल्लगी करता था। तुम

आज़ाद—क्या सच मुच फ़ौजदारी ही पर आमादा हो, भाई करौली अपने साथ न ले जाना और जो हो सो हो।

खोजी—अजी यहाँ हाथ क्या कम हैं, करौली मर्द के लिये है औरत के लिये करौली की क्या जरूरत?

आज़ाद—बस अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो। हाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खुश होती हैं। अब देर होती है जाइए।

ख्वाजासाहब कमरे में गए और दुलहिन के पाँव दबाने लगे।

दुलहिन—हमको छोड़कर चले तो न जाओगे?

खोजी—अरे यह तो उर्दू बोल लेती हैं, यह क्या माजरा है!

दुलहिन—मियाँ कुछ न पूछो, हमको एक हबशी बहकाकर बेचने लिए जाता था। वारे खुदा खुदा करके यह दिन नसीब हुआ।

खोजी—अब तक तुम हमसे साफ़ साफ़ न बोलीं। ख्वाहमख्वाह किसी भले आदमी को दिक करने से फ़ायदा?

दुलहिन—तुम्हारे साथी आज़ाद ने हमें जैसा सिखाया, वैसा हमने किया।

खोजी—अच्छा आज़ाद, ठहर जाओ बचा, जाते कहाँ हो। देखो मैं कैसा बदला लेता हूँ।

यह कहकर खोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के क़दमों पर रख दी और बोले—बीबी, बस अब यह समझो कि मियाँ नहीं खिदमतगार है। मगर कब तक जब तक हमारी होकर रहो। इधर आपने तेवर बदले, इधर हम बिगड़ खड़े हुए। मुझसे बढ़कर मुरव्वतदार कोई नहीं, मगर मुझसे बढ़कर शरीर भी कोई नहीं, अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुलाम हो गया, और अगर किसी ने ऐंकड़ी जताई

तो मुझसे ज्यादा पाजी कोई नहीं। डण्डे से बात करता हूँ। देखने में दुबला हूँ, मगर आज तक किसी ने मुझे जेर नहीं किया। सैकड़ों पहलवानों से लड़ा, और हमेशा कुश्तियाँ निकालीं।

दुलहिन—तुम्हारे पहलवान होने में शक नहीं, वह तो डील-डौल ही से ज़ाहिर है।

खोजी—इसी बात पर अब घूँघट हटा दो।

दुलहिन—यह घूँघट नहीं है जी, कल से हमारे मूँछ में दर्द है।

खोजी—काहे में दर्द है, क्या कहा?

दुलहिन—ऐ, मूँछ तो कहा, कानों की ठेठियाँ निकाल!

खोजी—मूँछ क्या! बकती क्या हो? औरत हो या मर्द? खुदा जाने तुम मूँछ किसको कहती हो।

दुलहिन—(खोजी की मूँछ पकड़कर) इसे कहते हैं, यह मूँछ नहीं है?

खोजी—अल्लाह जानता है बड़ी दिल्लगीबाज़ हो, मैं भी सोचता था कि क्या कहती हैं।

दुलहिन—अल्लाह जानता है, मेरे मूँछों में दर्द है।

ख्वाजासाहब ने ग़ौर करके देखा तो जरा-ज़रा-सी मूँछें। पूछा—आखिर बताओ तो जान मन, यह मूँछ क्या है?

दुलहिन—देखता नहीं, आँखें फूट गई हैं क्या?

खोजी—ऐ तो बीबी, आख़िर यह मूछ कैसी? कहता तो कहता, सुनता सिड़ी हो जाता है। औरत हो या मर्द, खुदा जाने तुम मूँछ किसे कहती हो?

दुलहिन—तो तुम इतना घबराते क्यों हो? मैं मरदानी औरत हूँ।

खोजी—भला औरत और मूँछ से क्या वास्ता?

दुलहिन—ऐ है तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखीं कहाँ ?

खोजी—ऐसी औरतों से बाज आए।

एकाएक दुलहिन ने घूँघट उठा दिया तो खोजी की जान निकल गई, देखा तो वही बहुरूपिया। बोले—जी चाहता है कि करौली भोंक दूँ, कसम खुदा की इस वक्त यही जी चाहता है।

बहुरूपिया—पहले उस पारसल के रुपए लाइए जिसका लिफ़ाफ़ा आपने अपने नाम लिखवा लिया था। बस अब दाएँ हाथ से रुपए लाइए।

खोजी—ओ बीदी, बस अलग ही रहना, तुम अभी मेरे गुस्से से वाकिफ़ नहीं हो।

बहुरूपिया—खूब वाकिफ़ हूँ, कमजोर मार खाने की निशानी।

खोजी—हम कमज़ोर हैं, अभी चाहूँ तो गरदन तोड़के रख दूँ। जाकर होटलवालों से तो पूछो कि किस जवाँमरदी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठाके दे मारा।

बहुरूपिया—अच्छा अब तुम्हारी कज़ा आई है। ख्वाहमख्वाह हाथ पाँव के दुश्मन हुए हो।

खोजी—सच कहता हूँ, अभी तुमने मेरा गुस्सा नहीं देखा, मगर हम तुम परदेसी हैं, हमको-तुमको मिल-जुलकर रहना चाहिए। तुम न-जाने कैसे हिन्दोस्तानी हो कि हिन्दोस्तानी का साथ नहीं देते।

बहुरूपिया—पारसल का रुपया दाहने हाथ से दिलवाइए तो खैर।

खोजी—अजी तुम भी कैसी बातें करते हो 'हिसाबे दोस्ताँ दर दिल अगर वह बेवफ़ा समझे' पारसल का जिक्र कैसा, यजाज़ की दूकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ से कुछ पूछ आए थे, कुछ तुम समझे कुछ हम समझे।

इतने में आज़ाद दोनों लेडियों के साथ अन्दर आए।

आजाद—भाई शादी मुबारक हो, यार आज हमारी दावत करो।

ख़ोजी—ज़हर खिलाओ और दावत मांगो। यह जो हमने आपको लाखों ख़तरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला, अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापस जाएंगे। वहाँ के लोग क़द्रदाँ हैं, दो चार शेर भी कह लेंगे तो खाने भर को बहुत है। खैर आदमी कुछ खोकर सीखता है। हम भी खोकर सीखे, अब दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा।

क्लारिसा—यह मिठाइयां न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी और को देना, हम बेदावत लिए न रहेंगे।

खोजी—हाँ साहब, आपको क्या, खुदा करे जैसी बीबी हमने पाई, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा और क्या दुआ दूँ।

मीडा—हमने तो बहुत सोच-समझकर तुम्हारी शादी तजवीज़ की थी।

खोजी—अजी रहने भी दो। हमें आप लोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आजाद ने बड़ी दग़ा दी। हिन्दोस्तान से इतनी दूर आए। जब मौक़ा पड़ा इनके लिये जान लड़ा दी। पोलैण्ड की शहजादी के यहाँ हमीं काम आये, वरना पड़े-पड़े सड़ जाते। इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे। अब चाहे जो हो हम आज़ाद की सूरत न देखेंगे।

एक सौ एकवाँ परिच्छेद

चौथी के दिन रात को नवाबसाहब ने सुरैयाबेगम को छेड़ने के लिये, कई बार फ़ीरोजाबेगम की तारीफ़ की। सुरैयाबेगम बिगड़ने लगीं और

बोलीं—अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न-जाने किन लोगों में रहे हो कि ऐसी बातें ज़बान से निकलती हैं।

नवाब—तुम नाहक बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ़ उनके हुस्न की तारीफ़ करता हूँ।

सुरैया—ऐ तो, कोई ढूँढके वैसी ही की होती।

नवाब—तुम्हारे यहाँ कभी-कभी आया-जाया करती हैं?

सुरैया—मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही लच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज ही से ये बातें शुरू हो गईं। हाँ सच है घर की मुर्गी साग बराबर। खैर अब तो मैं आकर फँस ही गई, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी। हाँ, अब तुम्हारी मुह-ब्बत अलबत्ता जाती रही।

नवाब—तुम इतनी समझदार होकर ज़रा-सी बात पर इतनी रूठ गईं, भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ़ करता, मुझे कोई पागल समझा है? मतलब यह था कि दो घड़ी की दिल्लगी हो, मगर तुम कुछ और ही समझीं। खूब याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्हारी जिन्दगी है, किसी और औरत को बुरी नज़र से न देखूँगा। अगर देखूँ तो शरीफ़ नहीं।

सुरैया—वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नज़रों से देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीवी के सिवा पराई बहू-बेटी पर नज़र डाले।

नवाब—बस यही हमारी भी राय है और जो लोग दस दस शादियाँ करते हैं उनको मैं अहमक समझता हूँ।

सुरैया—देखना इन बातों को भूल न जाना।

सुबह को दुलहिन के मैके से महरी आई और अर्ज़ की कि आज साली ने दूल्हा और दुलहिन को बुलाया है, पहला चाला है।

बेगम—(नवाब साहब की माँ) तुम्हारे यहाँ वह लड़की तो बड़े ही ग़जब की है, फीरोज़ा, किसी से दबती ही नहीं।

महरी—हुज़ूर, अपना-अपना मिज़ाज है।

बेगम—अरे कुछ तो शर्म-हया का खयाल हो। बेचारी फैज़न को बात-बात पर बनाती थी, वह लाख गँवारों की-सी बातें करे, फिर इससे क्या, जो अपने यहाँ आए उसकी ख़ातिर करनी चाहिए, न कि ऐसा बनाए कि वह कभी फिर आने का नाम ही न ले।

खुरशेद—(नवाब की बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मालूम होता था कि (दबे दाँतों) नेक नहीं, आगे खुदा जाने।

बेगम—यह न कहो बेटा, अभी तुमने देखा क्या है।

नवाब—(इशारा करके) उनकी महरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो।

बेगमसाहब ने सुरैयाबेगम को उसी वक्त रुख़सत किया। शाम को दूल्हा भी चला। मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ करनी शुरू की—

अबरअली—हुज़ूर इस वक्त ईरान के शहजादे मालूम होते हैं।

नूरखाँ—इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शहज़ादा मसनद लगाए बैठा है।

अबरअली—हुज़ूर, आज जरा चौक की तरफ़ से चलिएगा। ज़रा इधर-उधर कमरों से तारीफ़ की आवाज़ तो निकले।

नवाब—क्या फ़ायदा, जिसकी बीबी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए।

नूरखाँ—ऐ हुज़ूर, यह तो रियासत का तमग़ा ही है।

ईदू—ऐ हुज़ूर, यह तो गरीब आदमियों के लिये है कि एक से ज्यादा

न हो, दूसरी बीवी को क्या खिलाएगा ख़ाक ! मगर अमीरों का तो यह जौहर है। बादशाहों के आठ-आठ नौ-नौ सौ से ज्यादा महल होते थे, एक-दो की कौन कहे। जिसे खुदा देता है वही इस काबिल समझा जाता है।

इन लोगों ने नवाबसाहब को ऐसा चंग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गए, मगर नवाबसाहब ने गरदन जो नीची की तो चौक-भर में किसी कमरे की तरफ़ देखा ही नहीं। इस पर मुसाहबों ने हाशिए चढ़ाए—ऐ हुज़ूर, एक नज़र तो देख लीजिए, कैसा कटाव हो रहा है। सारी खुदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान हुज़ूर के चेहरे मोहरे को नहीं पाता। अब यह मालूम होता है कि शेर कछार से चला आता है।

नवाबसाहब दिल में सोचते जाते थे कि इन खुशामदियों से बचना मुश्किल है। इनके फन्दे में फँसे और दाखिल जहन्नुम हुए। हमने ठान ली है कि अब किसी औरत को बुरी निगाह से न देखेंगे। यों हँसी-दिल्लगी की और बात है।

नवाबसाहब ससुराल में पहुँचे, तो बाहर दीवानख़ाने में बैठे। गाना शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफ़ों की तारीफ़ के पुल बाँध दिए। जनाब ऐसी गानेवाली अब दूसरी शहर में नहीं है, अगर शाही ज़माना होता, तो लाखों रुपए पैदा कर लेती और अब भी हमारे हुज़ूर ऐसे जौहर-शिनास बहुत हैं मगर फिर भी कम हैं। क्यों हुज़ूर, होली गाने को कहूँ ?

नवाब—जो जी चाहे गावें।

मुसाहब—हुज़ूर फ़रमाते हैं, यह जो गाएँगी अच्छा रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा।

नवाब—हमने यह नहीं कहा, तुम लोग हमें ज़लील करा दोगे।

मुसाहब—क्या मजाल हुज़ूर, हुज़ूर का नमक खाते हैं, हम गुलामों से यह उम्मीद! चाहे सिर जाता रहे मगर नमक का पास ज़रूर रहेगा और यह तो हुज़ूर दो घड़ी हँसने-बोलने का वक्त ही है।

गनीमत जान इस मिल बैठने को,
जुदाई की घड़ी सिर पर खड़ी है।

इसके बाद नवाबसाहब अन्दर गए और खाना खाया। साली ने एक भारी खिलअत बहनोई को और एक क़ीमती जोड़ा बहन को दिया। दूसरे दिन दूल्हा, दुलहिन रुखसत होकर घर गए।

एक सौ दोवाँ परिच्छेद

कुछ दिन तक तो मियाँ आज़ाद मिस्र में इस तरह रहे जैसे और मुसाफिर रहते हैं, मगर जब क्वांसल को इनके आने का हाल मालूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहाँ बुलाकर ठहराया और बातें होने लगीं।

क्वांसल—मुझे आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहाँ आए और हमसे न मिले। ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाकिफ़ न हो, जो अखबार आता है उसमें आपका जिक्र ज़रूर होता है। वह आपके साथ मसखरा कौन है? वह बौना खोजी?

आजाद ने मुसकिराकर खोजी की तरफ इशारा किया।

खोजी—जनाब वह मसखरे कोई और होंगे और खोजी खुदा जाने किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजासाहब हैं और बौने की एक ही कही, हाय मैं किससे कहूँ कि मेरा बदन चोर है!

आज़ाद—क्या अखबारों में ख्वाजासाहब का ज़िक्र भी रहता है?

क्वांसिल—जी हाँ, इनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुक़ाम पर तो सच मुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था। आपका दौलतख़ाना किस शहर में है जनाब? मुझे हैरत तो यह है कि इतने नन्हे-नन्हे तो आपके हाथ पाँव, लड़ाई में आप किस बिरते पर गए थे।

ख़ोजी—(मुसकिराकर) यही तो कहता हूँ हजरत कि मेरा बदन लोहा है देखिए ज़रा हाथ मिलाइए। हैं फ़ौलाद की उँगलियाँ या नहीं? अगर अभी जोर करूँ तो आपकी एकआध उँगली तोड़कर रख दूँ।

थोड़ी देर तक यहाँ बातचीत करके आज़ाद चले तो ख़ोजी ने कहा—यह आपकी अजीब आदत है कि ग़ैरों के सामने मुझे जलील करने लगते हैं। अगर मुझे गुस्सा आ जाता और मैं मियाँ क्वांसिल के हाथ पाँव तोड़ देता तो बताओ कैसी ठहरती। मैं मारे मुरव्वत के तरह दे जाता हूँ वरना मियाँ की मिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

आज़ाद—अजी ऐसी मुरव्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियाँ खानी पड़ें। कई जगह आप पिटे, मगर मुरव्वत न छोड़ी। एक दिन इस मुरव्वत की बदौलत आप कहीं काँजीहौस न भेजे जाइए। अच्छा अब यह पूछता हूँ कि जब सारे ज़माना ने मेरा हाल सुना तो क्या हुस्नआरा ने न सुना होगा?

ख़ोजी—जरूर सुना होगा भाई, अब आज के आठवें दिन शादी है, मगर उस्ताद दो-एक दिन बम्बई में ज़रूर रहना। जरा बेगम साहब से बातें होंगी।

आज़ाद—भाई अब तो बीच में कहीं ठहरने का जी नहीं चाहता।

ख़ोजी—यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफ़ाई करनी मुनासिब नहीं वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद—अच्छा तो यह सोच लो कि अगर उन्होंने पूछा ख़ोजी के साथ

आज़ाद क़लम-दावात लेकर बैठे। खोजी ने ख़त लिखवाया और जाकर उसे डाकख़ाने में छोड़ आए, तब मिस मीडा से जाकर बोले- अब हमारी खुशामद कीजिए। आज के आठवें दिन हमारे यहाँ आला दावत होगी। अच्छे से अच्छे किस्म की ब्राण्डी तय कर रखिए। सिताब-जान के हाथ पिलवाऊँगा।

मीडा—सिताबजान कौन! क्या तुम्हारी बहन का नाम है?

खोजी—अरे तोबा! सिताबजान से मेरी शादी होनेवाली है। उसने मुझे भेजा था कि रूम जाकर नाम करो तो फिर निकाह होगा। अब मैं वहाँ से नाम करके लौटा हूँ, पहुँचते पहुँचते शादी होगी।

मीडा—क्या सिन होगा? बेवा तो नहीं है?

खोजी—खुदा न करे, दूल्हा अभी जिन्दा है।

मीडा—क्या मियाँवाली है और आप उसके साथ निकाह करेंगे? सिन क्या है?

खोजी—अभी क्या सिन है, कल की लड़की है, कोई पैंतालीस बरस की हो शायद।

मीडा—बस पैंतालीस ही बरस की, तब तो उसे पालना पड़ेगा!

खोजी—हम तो क़िस्मत के धनी हैं।

मीडा—भला शक्ल-सूरत कैसी है?

खोजी—यह आज़ाद से पूछो। चाँद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आज़ाद को दुआएँ देता हूँ जिनकी बदौलत सिताबजान मिलीं।

यहाँ से खोजी होटलवालों के पास पहुँचे और उनसे भी यही बात की। अजी बिलकुल सोने की डली है, कोई देखे तो बेहोश हो जाय। आज़ाद के मांगने पर थोड़ा भी न बाँटूँगा, हरगिज़ नहीं।

खानसामा—तुमने बातचीत भी की है या दूर ही से देखा।

खोजी—जी हाँ, कई बार देख चुका हूँ, बातें क्या करती है मिश्री की डली घोलती है।

होटलवालों ने खोजी को खूब बनाया। इतनी देर में आज़ाद ने जहाज का बन्दोबस्त किया और एक रोज़ दोनों परियों और ख्वाजा-साहब के साथ जहाज़ पर सवार हुए। सवार होते ही खोजी ने गाना शुरू किया—

अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है,
शिताबो की तमन्ना में मुझे दिल लेके आता है।
मगर छोड़ा विदेशी होके ख्वाजा ने गये लड़ने,
शिताबो के लिये जी मेरा कल से तिलमिलाता है।

आज़ाद ने शह दे-देकर और चंग पर चढ़ाया। ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ़ करते थे वह और अकड़ते थे। जहाज थोड़ी ही दूर चला था कि एक मल्लाह ने कहा—लोगो होशियार! तूफान आ रहा है। यह ख़बर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गए और मियाँ खोजी तो दोहाई देने लगे—जहाज़ की दोहाई! बेड़े की दोहाई! समुद्र की दोहाई! हाय शिताबजान, अरे मेरी प्यारी शिताब दुआ माँग।

यह कहकर आपने अकड़कर आज़ाद की तरफ देखा। आज़ाद ताड़ गए कि इस फिकरे की दाद चाहते हैं। कहा—सुभान-अल्लाह, शिताब-जान के लिए शिताब, क्या खूब।

खोजी—इस फन में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा भला। उस्ताद हूँ उस्ताद।

आजाद—और लुत्फ यह कि ऐसे नाजुक वक्त में भी नहीं चूकते।

खोजी—या खुदा, मेरी सुन ले, यारो रो-रोकर उसकी दरगाह से दुआ माँगो कि ख्वाजा बच जायँ और शिताबजान से ब्याह हो। खूब रोओ।

आज़ाद—जनाब, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ अपने लिये दुआ माँगते हैं, और बेचारों का तो भी ख़याल रखिए।

इतने में आँधी आ गई। आजाद तो जहाज के कप्तान के साथ बातें कर रहे थे। ख़ोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताबजान क्या करेगी? फौरन् अफीम की डिबिया ली और खूब कसकर कमर में बाँधकर बोले—लो यारो हम तो तैयार हैं। अब चाहे आँधी आवे या बगूला। तूफान नहीं तूफ़ान का बाप आए तो क्या गम है।

जहाजवाले तो घबराए हुए थे कि नहीं मालूम तूफ़ान क्या गुल खिलाए, मगर ख्वाजासाहब तान लगा रहे थे—

शितावो की तमन्ना में मेरा दिल तिलमिलाता है

आज़ाद—ख्वाजासाहब, आप तो बेवक्त की शहनाई बजाते हैं। पहले तो रोए-चिल्लाए और अब तान लगाने लगे।

एक ठाकुर साहब भी जहाज़ पर सवार थे। ख़ोजी को गाते देखकर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं। क़दमों पर टोपी रख दी और बोले—साईंजी, हमारे हक़ में दुआ कीजिए।

ख़ोजी—खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है।

आज़ाद ने ख़ोजी के कान में कहा—यार यह तो अच्छा उल्लू फँसा। रास्ते में खूब दिल्लगी रहेगी।

ठाकुर साहब बार-बार ख्वोजी से सवाल करते थे और मियाँ ख्वोजी अनाप शनाप जवाब देते थे।

ठाकुर—साईंजी, जुमे के दिन सफर करना कैसा है?

ख़ोजी—बहुत अच्छा दिन है।

ठाकुर—और जुमेरात?

ख़ोजी—इससे भी अच्छा।

यों ही ठाकुर साहब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बम्बई सामने से नजर आने लगी। खोजी की बाँछें खिल गईं, चिल्लाकर कहा—यारो ज़रा देखना, शिताबजान की सवारी तो नहीं आई है। करीमबख्श नामी महरी साथ होगी। गतलस का लहँगा है, कहारों की पगड़ियाँ रँगी हुई हैं, मछलियाँ जरूर लटक रही होंगी। अरे महरी, महरी! क्या बहरी है?

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बन्दरगाह तो आने दो। शिताबजान यहाँ से क्योंकर सुन लेंगी? बोले—अजी हटो भी, तुम क्या जानो। कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो, अरे नादान इश्क के कान दो कोस तक की ख़बर लाते हैं, क्या शिताबजान ने आवाज न सुनी होगी। वाह भला कोई बात है! मगर जवाब क्यों न दिया। इसमें एक रिम है, वह यह कि अगर आवाज़ के साथ ही आवाज़ का जवाब दें तो हमारी नज़रों से गिर जायँ। मजा जब है कि हम बौखलाए हुए इधर-उधर ढूँढते और आवाज देते हों और वह हमें पीछे से एक धोल जमाएँ और तिनककर कहें—मुडीकाटा, आँखों का अंधा नाम नैनसुख, गुल मचाता फिरता है, और हम धौल खाकर कहें कि देखिए सरकार, अब की धौल लगाई तो ख़ैर, जो अब लगाई तो बिगड जायगी। इस पर वह झल्लाकर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातड दो-चार धौल जमा दें, तब मैं हँसकर कहूँ, तो फिर दो-एक जूते भी लगा दो, इनके बगैर तबीयत बेचैन है।

आज़ाद—बिलफेल कहिए तो मैं ही लगा दूँ।

ख़ोजी—अजी नहीं आपको तकलीफ़ होगी।

आज़ाद—वल्लाह किस भड़ुए को ज़रा भी तकलीफ़ हो।

खोजी—मियाँ पहले मुँह धो आओ, इन खोपड़ियों के सुहलाने के लिये परियों के हाथ चाहिए, तुम-जैसे देवों के नहीं।

इतने में समुद्र का किनारा नज़र आया तो ख़ोजी ने गुल मचाकर कहा—शिताबजान साहब,आपका यह गुलाम फ़र्ज़िन्दाना आदाब-अर्ज़ ..।

इतना कह चुके थे कि लोगों ने कहकहा लगाया और खोजी की समझ में कुछ न आया कि लोग क्यों हँस रहे है।

आजाद से पूछा कि इस बेमौक़ा हँसी का क्या सबब है? आज़ाद ने कहा—इसका सबब है आपकी हिमाकत। क्या आप शिताब के बेटे हैं जो उनको फ़र्जिन्दाना आदाब बजा लाते है, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है?

ख़ोजी—(गालों पर थप्पड़ लगाकर) अररर, ग़ज़ब हो गया, बड़ा बुरा हुआ। वल्लाह इतना जलील हुआ कि क्या कहूँ। भाई इश्क में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुँह से निकल ही जाती हैं, मगर ख़ैर अब तो पालकी साफ़-साफ़ नज़र आती है। वह देखिए, महरी सामने डटी खड़ी है। अल्लाह अब तो महरी भी बाढ़ पर है!

जहाज़ ने लंगर डाला और लोग उतरने लगे। ख्वाजासाहब दूर ही से शिताबजान को ढूँढ़ने लगे। आज़ाद दोनों लेडियों को लेकर ख़ुश्की पर आए तो बम्बई के मिरजासाहब ने दौड़कर उन्हें गले लगाया, फिर दोनों परियों को देखकर ताज्जुब से बोले—इन दोनों को कहाँ से लाए, क्या परिस्तान की परियाँ हैं?

आजाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि ख़ोजी कफ़न फाड़कर बोल उठे—इधर शिताबजान इधर, ओ करमनखश करमफोड, कमबख्ती के निशान, यहाँ क्यो नहीं आती! दूर ही से झुत्ते बताती है।

मिरजा—किसको पुकारते हो ख्वाजासाहब, मैं बुला दूँ। क्या ब्याह लाये हो कोई परी, मगर उस्ताद नाम तो हिन्दोस्तान का है, जरा दिखा तो दो।

आज़ाद ने खैर-चाफियत पूछी और दोनों आदमियों में शहज़ादा हुमायूँ फ़र की चरचा होने लगी। फिर लडाई का जिक्र छिड़ गया।

उधर ख्वाजासाहब ने अफ़ीम घोली और चुस्की लगाकर गुल मचाया—शितावजान प्यारी, मैं तेरे वारी, जल्दी से आ री, सूरत दिखा री, आँसू है जारी। जान मन जिस बिस्तर पर तुम सोई थीं उसको हर रोज़ सूँघ लिया करता हूँ और उसी की खुशबू पर जिन्दगी का दार मदार है।

तेरी-सी न बू किसी में पाई,
सारे फूलों को सूँघता हूँ।

मिरज़ासाहब ने कहा—आखिर यह माजरा क्या है जनाब ख्वाजा-साहब, क्या सफ़र में अक्ल भी खो आए, यह आपको क्या हो गया है? अगर सच्चे आशिक हो तो फरियाद कैसी?

खोजी—जनाब कहने और करने में जमीन आसमान का फ़र्क है।

मिरज़ा—कब अपने मुँह से आशिक शिकवए बेदाद करते हैं;
दहाने गै़र से वह मिस्ल नै फ़रियाद करते हैं।

खोजी—मुझसे कहिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ दूँ, आशिकी दूसरी चीज़ है, शायरी दूसरी चीज़।

मिरज़ा—दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पढे जायँगे आप दो ही चार शेर फरमाएँ।

खोजी—अच्छा तो सुनिए और गिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे—

यही कह-कहके हिजरे यार में फरियाद करते हैं;
वह भूले हमको बैठे हैं जिन्हें हम याद करते हैं।
असीराने कुहन पर ताज़ा वह बेदाद करते हैं,
रही ताकत न जब उड़ने की तब आजाद करते हैं।

रकम करता हूँ जिस दम काट तेरी तेग़ अब्रू की ;
गरीबाँ चाक अपना जामए फौलाद करते हैं।
सिफत होती है जानाँ जिस गजल में तेरे अब्रू की ;
तो हम हर बैत पर आँखों से अपनी साद करते हैं।

अब भी न कोई शरमाए तो अंधेर है, दो करोड़ शेर न पढ़कर सुनाऊ तो नाम बदल डालूँ, हाँ और सुनिए—

नहीं हम याद से रहते हैं गाफिल एकदम हमदम ;
जो बुत को भूल जाते हैं खुदा को याद करते हैं।

आजाद—इस वक्त तो मिरजासाहब को आपने खूब आड़े हाथों लिया।

खोजी—अजी यहाँ कोई एक शेर पढ़े तो हम दस करोड़ शेर पढते हैं। जानते हो कहाँ के रहनेवाले हैं हम ! बम्बईवालों को हम समझते क्या हैं।

इतने में एक औरत ने खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बाछें खिल गईं। बोले—क्या हुक्म है हुजूर ?

औरत—ऐ दुर हुजूर के बच्चे ! कुछ लाया भी है वहाँ से, या खाली हाथ झुलाता चला आता है ?

खोजी—पहले तुम अपना नाम तो बताओ ?

औरत—ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है नाम बता दो। (धप जमाकर) और नाम पूछेगा ?

खोजी—ऐं, तुमने तो धप लगानी शुरू की, जो कहीं अब की हाथ उठाया तो बहुत ही बेढब होगी।

आजाद—अरे यार, यह क्या माजरा है ? बेभाव की पड़ने लगी।

खोजी—अजी, मुहब्बत के यही मजे हैं भाई जान। तुम यह बातें क्या जानो।

मिरज़ा—यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ मुलाकाती है ?

शिताब—हमारे बुज़ुर्गों से यह रिश्ता चला आता है।

मिरज़ा—तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

खोजी—जनाब, ज़रा सँभलकर फरमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज़ करता हूँ।

शिताब—ऐ तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन ? मुफ्त में मियाँ बनने का शौक़ चर्राया है ?

खोजी—अरे तो निकाह तो हो ले। क़सम खुदा की लड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ रहता था।

आजाद—हमेशा याद करते थे बेचारे !

जब आजाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गए तब मिरज़ा ने खोजी से कहा—चलिए वह लोग जा रहे हैं।

खोजी—जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाकात हुई है, जरा बातें कर लूँ, आप चलिए मैं अभी हाजिर होता हूँ।

वह लोग तो इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने खोजी को दूसरी गाड़ी मे सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजासाहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक हाथ आया। घर पहुँचकर शिताबजान ने खोजी से कहा—अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

खोजी—भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है ? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब—कमाई करने गये थे वहाँ, या रास्ता नापने ? तमगे लेकर चाटूँ, तलवार से अपनी गरदन मार लूँ, छुरी भोंकके मर जाऊँ ! छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है ?

खोजी—अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किए वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हजार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फ़ौज ने शिकस्त पाई, इधर मैंने करौली उठाई और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठण्डा हो गया है उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बन्दा छिपा बैठा रहता था, कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में लुक गया। मुफ्त में जान देना कौनसी अक्लमन्दी है। मगर लड़ाई ख़तम होते ही मैदान में जा पहुँचता था। जिस शहर में जाता था, शहर-भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ आँख उठाकर भी न देखता था। गरज कि लड़ाई में मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आज़ाद पाशा बन बैठे। यह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब—मगर यह तो बताओ कि बन्दूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

खोजी—तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिरजासाहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समाईं। खिदमतगार ने आज़ाद को झुककर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जाकर बैठे। मिरजा साहब ने घर में जाकर देखा तो बेगमसाहब पलँग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो मालूम हुआ आज तबीयत कुछ खराब है। बाहर आकर आज़ाद से कहा—घर में सोती हैं और तबीयत भी अच्छी नहीं। मैंने जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज़ हैं।

इतने में एक चपरासी ने आकर मिरजा साहब को एक लिफ़ाफ़ा दिया। युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के लिये उन्हें बुलाया था। मिरजा साहब बोले—भाई इस वक्त तो जाने को जी नहीं चाहता। मुद्दत के बाद एक दोस्त आए हैं, उनकी खातिर-तवाजा में लगा हुआ हूँ। मगर जब आज़ाद ने कहा कि आप जाइए, शायद कोई जरूरी काम हो, तो मिरजा साहब ने गाड़ी तैयार कराई और रजिस्ट्रार से मिलने गए।

इधर आज़ाद के पास ज़ैबन ने आकर सलाम किया।

आज़ाद—कहो जैबन अच्छी रहीं?

ज़ैबन—हुज़ूर की जान-माल को दुआ देती हूँ। हुज़ूर तो अच्छे रहे?

आज़ाद—बेगमसाहब क्या अभी आराम ही में हैं अगर इजाज़त हो तो सलाम कर आऊँ।

ज़ैबन—हुज़ूर के लिये पूछने की ज़रूरत नहीं, चलिए!

आज़ाद जैबन के साथ अन्दर गए तो कमरे में क़दम रखते ही महरी ने कहा—वहीं बैठिए, कुर्सी आती है।

आज़ाद—सरकार कहाँ हैं? बेगमसाहब की ख़िदमत में आदाब-अर्ज है।

बेगम—बन्दगी। आपको जो कुछ कहना हो कहिए मुझे ज्यादा बातें करने की फ़ुरसत नहीं।

आज़ाद—खुदा ख़ैर करे, आख़िर किस जुर्म में यह ख़फ़गी है? कौनसा गुनाह हुआ?

बेगम—बस ज़बान न खुलवाइए, ग़ज़ब ख़ुदा का, एक ख़त तक भेजना क़सम था, कोई इस तरह अपने अज़ीज़ों को तड़पाता है।

आज़ाद—क़सूर माफ़ कीजिए बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंने

सोचा कि खत भेजकर मुफ्त में मुहब्बत बढाने से क्या फ़ायदा, न-जाने ज़िन्दा आऊँ या न आऊँ, इस लिये ऐसा फ़िक्र करूँ कि उनके दिल से भूल ही जाऊँ, अगर जिन्दगी बाक़ी है तो चुटकियों में गुनाह माफ़ करा लूँगा।

इस फ़िकरे ने बेगमसाहब के दिलपर बडा असर किया। सारा गुस्सा हवा हो गया। जैबन को नीचे भेजा कि हुक़ा भर लाओ, ख़वास को हुक्म दिया कि पान बनाओ। तब मैदान खाली पाकर चिक उठा दी और बोली—वह कहाँ गए हैं?

आजाद—किसी साहब ने बुलाया है, उनसे मिलने गए हैं। खुदा ने मुझे यह खूब मौक़ा दिया।

बेगम—क्या कहा, क्या कहा! जरा फिर तो कहिएगा, जरा सुनूँ तो किस चीज का मौक़ा मिला।

आज़ाद—यही हुजूर को सलाम करने का।

बेगम—हाँ यों बातें कीजिए, अदब के साथ। हुस्नआरा के नाम तुमने कोई खत भेजा था? मुझे लिखा है कि जिस दिन आएँ, फ़ौरन् तार से इत्तला देना।

आजाद—अब तो यही धुन है कि किसी तरह वहाँ पहुँचूँ और जिन्दगी के अरमान पूरे करूँ।

बेगम—जी नहीं, पहले आपका इम्तहान होगा, आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या?

आजाद—ओफ्फोह! बदगुमानी। खैर साहब अख्तियार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं?

बेगम—नहीं साहब, यह हमारे यहाँ का दस्तूर नहीं। बहनोई के साथ जवान सालियाँ सफ़र नहीं करतीं। वक्त पर उनके साथ आ जाऊँगी।

आज़ाद—ख़ैर, इतनी इनायत क्या कम है। अब आप जाकर परदे में बैठिए, वरना मैं दीवाना हो जाऊँगा।

बेगम—क्यों साहब यही आपका इश्क है ? इसी बूते पर इम्तहान दीजिएगा ?

बेगमसाहब ने वहाँ ज्यादा देर तक बैठना मुनासिब न समझा। आज़ाद भी बाहर चले गए। ख़िदमतगार ने हुक्का भर दिया। पलंग पर लेटे-लेटे हुक्का पीने लगे तो ख़याल आया कि आज मुझसे बड़ी ग़लती हुई, अगर मिरज़ा साहब मुझे घूरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कहते। अब यहाँ ज्यादा ठहरना गलती है। ख़ुदा करे, आज के चौथे दिन वहाँ पहुँच जाऊँ। बेगमसाहब ने मुझे हिकारत की निगाह से देखा होगा।

वह अभी यही सोच रहे थे कि ज़ैनब ने बेगमसाहब का एक ख़त लाकर उन्हें दिया। लिखा था—अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियाँ आई हैं। दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ क्या ? अगर वाक़ई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है तो बड़ा ग़ज़ब किया, फिर उम्मेद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुँह लगाएँगी। तुमने सारी की-कराई मिहनत ख़ाक में मिला दी। और अगर शादी नहीं की तो यहाँ लाए क्यों ? तुम्हें शर्म नहीं आती। हुस्नआरा ग़रीब तो तुम्हारी मुहब्बत की आग में जले और तुम दो सौतों को साथ लाओ—

क्या क़हर है क्योंकर न उठे दर्द जिगर में,
मेरी तो बग़ल ख़ाली और आपके बर में।
एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पहर में,
घर छोड़के अपना रहो यों और के घर में।

तुम और ग़ैरों को साथ लाओ, तुम्हारी तरह हुस्नआरा भी अब तक

शादी कर लेतीं तो तुम क्या बना लेते। तुमको इतना भी खयाल न रहा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा। तुम्हारे हजारों चाहनेवाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे अच्छे शहज़ादे हैं। मैंने ठान ली है कि हुस्नआरा को आपके हाल से इत्तला दूँ, और कह दूँ कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दो बगल में रहती हैं, उस पर बहू बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेरा इतमीनान न कर दिया तो पछताओगे।

यह खत पढ़कर आज़ाद ने ज़ैबन से कहा—क्यों तुम इधर की उधर लगा लगाकर आपस में लड़वाती हो। तुमने उनसे जाके क्या कह दिया, मुझसे भी पूछ लिया होता।

जैबन—ऐ हुजूर, तो मेरा इसमें क्या कुसूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान कर दिया। इसमें बन्दी ने क्या गुनाह किया?

आजाद—खैर जो हुआ सो हुआ, लाओ कलम दावात।

आज़ाद ने उसी वक्त इस खत का जवाब लिखा—बेगमसाहब की खिदमत में आदाब अर्ज करता हूँ। आप मुझ पर बेवफ़ाई का इलजाम लगाती हैं। आपको शायद यक़ीन न आएगा, मगर अकसर मुक़ामों पर ऐसी-ऐसी परियाँ मुझ पर रीझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क़ न होता तो मैं हिन्दोस्तान में आने का नाम न लेता, मगर अफ़सोस है कि मेरी कुल मिहनत बेकार गई। मेरा खुदा जानता है जिन-जिन जंगलों, पहाड़ों पर मैं गया, कोई कम गया होगा। हफ्तों एक अँधेरी कोठरी में कैद रहा, जहाँ किसी जानदार की सूरत नज़र न आती थी। और यह सब इस लिये कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इनकार करता था कि हुस्नआरा को क्या मुँह दिखाऊँगा। यह दोनों लेडियाँ जो मेरे साथ हैं उन्होंने मुझ पर बड़े बड़े एहसान किए हैं। गाढ़े वक्त में

काम आई हैं, वरना आज आज़ाद यहाँ न होता। मगर इतने पर भी आप नाराज़ हो रही हैं, इसे अपनी बदनसीबी के सिवा और क्या कहूँ। खुदा के लिये कहीं हुस्नआरा को न लिख भेजना और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूँ तो साफ़-साफ़ कह दो। हुस्नआरा को लिखने से क्या फ़ायदा। और क्या लिखूँ। तबीयत बेचैन है।

बेगमसाहब ने यह खत पढा तो गुस्सा ठण्डा हो गया, छमछम करती हुई परदे के पास आकर खड़ी हुईं तो देखा—आज़ाद सिर पर हाथ रख-कर रो रहे हैं। आहिस्ता से पुकारा—आजाद!

ज़ैबन—हुज़ूर देखिए कौन सामने खड़ा है। जरा उधर निगाह तो कीजिए

बेगम—आज़ाद, जो रोए तो हमीं को है है करे। ज़ैबन ज़रा सुराही तो उठा ला, मुँह पर छींटे दे।

ज़ैबन—हुज़ूर, क्या गजब कर रहे हैं, वह सामने कौन खड़ा है?

आज़ाद—(बेगमसाहब की तरफ़ रुख करके) क्या हुक्म है?

बेगम—मेरा तो कलेजा धकधक कर रहा है।

आज़ाद—कोई बात नहीं, खुदा जाने इस वक्त क्या याद आया। आपको तकलीफ़ होती है आप जायँ मैं बिलकुल अच्छा हूँ।

बेगम—अब चोंचले रहने दो, मुँह धो डालो। वाह, मर्द होकर आँसू बहाते हो, तुमसे तो छोकरियाँ अच्छी। यह तुम लड़ाई में क्या करते थे?

आजाद—जलाओ और उस पर ताने दो।

बेगम—क्या खूब, जलाने की एक ही कही! जलाते तुम हो या मैं? एक छोड़ दो-दो वहाँ से लाए, ऊपर से बातें बनाते हो, मुँह दिखाने काबिल नहीं रक्खा अपने को। हुस्नआरा ने उड़ती खबर पाई थी कि

आजाद ने किसी औरत को ब्याह लिया तो पछाड़ें खाने लगी। एक तुम हो कि जोड़ी की जोड़ी साथ लाए और ऊपर से कहते हो जलाओ। तुम्हे शर्म भी नहीं आती ?

आज़ाद—क्या टेढ़ी खीर है, न खाते बने न छोड़ते बने।

बेगम—तो फिर साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते।

आजाद—ब्याहता बीबी हैं दोनों, और क्या कहें।

बेगम—अच्छा साहब ब्याहता बीबी नहीं, दोनों आपकी बहनें सही, अब खुश हुए। बरसों बाद आए तो एक काँटा साथ लेके, भला सोचो मै चुपकी हो रहूँ तो हुस्नआरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं। लेकिन दो मे क्या फ़ायदा होगा तुम्हे।

आजाद—आप दिल्लगी करती है और मैं चुप हूँ। फिर मेरी भी जबान खुलेगी।

बेगम—तुम हमको सिर्फ इतना बतला दो कि यह दोनों यहाँ किस लिये आई हैं, तो मैं चुप हो रहूँ।

आजाद—तो उन दोनों को यहाँ बुला लाऊँ ?

बेगम—उनको आने दो, उनसे सलाह लेके जवाब दूँगी।

आज़ाद—तो क्या आप हममें और उनमें कोई फ़र्क समझती हैं। मैं तो तुमको और हुस्नआरा को एक नज़र से देखता हूँ।

बेगम—बस अब मैं कुछ कह बैठूँगी। बड़े बेशर्म हो, छटे हुए बेहया।

इतने में ज़ैबन ने आकर कहा—मिरजासाहब आ गए। बेगमसाहब झपटकर कोठे पर हो रहीं और आजाद बारादरी में आकर लेट रहे।

मिरजा—आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं ? बड़ी देर हो गई है। जिस तरफ जाता हूँ लोग गाड़ी रोक-रोककर आपका हाल पूछने लगते हैं। कल शाम को सब लोग आपसे टाउनहाल मे मिलना चाहते है। हाँ

यह तो फरमाइए, यह दोनों परियाँ कौन हैं? एक तो उनमें से किसी और मुल्क की मालूम होती है।

आज़ाद—एक तो रूस की हैं और दूसरी कोहकाफ की।

मिरजा—यार बुरा किया। हुस्नआरा सुनेगी तो क्या कहेगी।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर शिताबजान ने खोजी से कहा—ज़रा अकेले में चलिए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने कहा—खुदा की कुदरत है कि माशूक तक हमसे अकेले मे चलने को कहते हैं। जो हुक्म हो बजा लाऊँ। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अभी चला जाऊँ। यह तो कहो तुम्हारे सबब से चुप हूँ, नहीं अब तक दस-पाँच को क़त्ल कर चुका होता।

यह कहकर ख्वाजासाहब झपटकर बाहर निकले। इत्तिफ़ाक़ से गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाडी हाँकता चला जाता था। खोजी उसे गालियाँ देने लगे—भला वे गीदी भला, खबरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं हम कौन हैं, हमारे मकान की तरफ़ से गाता हुआ निकलता है। हमें भी रियाया समझ लिया है। भला बी शिताबजान गाड़ी की घडघड़ाहट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा। गाड़ीवाला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है? गाडी रोककर खोजी की तरफ़ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजासाहब झपटकेकर गाडी के पास पहुँचे, और चाहा कि लकड़ी जमाएँ कि उसने इनके दोनों हाथ पकड़ लिए। अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता ही नहीं।

खोजी—कह दिया, खैर इसी में है कि हमारा हाथ छोड़ दो, वरना बहुत पछताओगे। मैं जो बिगड़ूँगा तो एक पलटन के मनाए भी न मानूँगा।

गाड़ीवान—हाथ तो अब तुम्हारे छुडाए नहीं छूट सकता।

ख़ोजी—लाना तो मेरी करौली।

गाड़ीवान—लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा।

खोजी—शरीफ़ों में ऐसी बात नहीं होती।

गाड़ीवान—शरीफ़ कभी तुम्हारे बाप भी थे कि तुम्हीं शरीफ़ हुए?

खोजी—अच्छा, हाथ छोड़ दो। वरना इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र-भर याद करोगे।

गाड़ीवान ने इस पर झल्लाकर ख़ोजी का हाथ मरोड़ना शुरू किया। ख़ोजी की जान पर बन आई, मगर क्या करें! सबसे ज्यादा ख़याल इस बात का था कि कहीं शिताबजान न देख ले, नहीं तो बिलकुल नजरों से गिर जाऊँ।

खोजी—कहता हूँ हाथ छोड़ दे, मै कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ।

गाड़ीवान—मै तो अपना गाता हुआ चला जाता था। आपने गालियाँ क्यों दीं।

ख़ोजी—हमारे घर की तरफ से क्यों गाते जाते थे?

गाड़ीवान—आप मना करनेवाले कौन? क्या किसी की जबान बन्द कर दीजिएगा?

आखिर कई आदमियो ने गाड़ीवान को समझाकर ख़ोजी का हाथ छुड़ाया। ख़ोजी झाड़-पोंछकर अन्दर गए और शिताबजान से बोले—मैं बात पीछे करता हूँ, करौली पहले भोंकता हूँ। पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़कर इतनी चपतें लगाईं कि भुरता ही बना दिया। मेरे मुँह से आग बरसती है। अच्छा अब यह फ़रमाइए कि जिस नेकबख्त बदनसीब से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहाँ है और कैसा आदमी था?

शिताबजान—यह तो मैं पीछे बतलाऊँगी। पहले यह फ़रमाइए कि

उसको नेकबख्त कहा तो बदनसीब क्यों कहा। जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है?

खोजी—कसम खुदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौलने के काबिल है। नेकबख्त इस लिये कहा कि तुम-जैसी बीबी पाई। बदनसीब इस लिये कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया।

शिताबजान—अच्छा सुनिए पहले मेरी शादी एक खूबसूरत जवान के साथ हुई थी। जिसकी नज़र उस पर पड़ी रीझ गया।

खोजी—यहाँ भी तो वही हाल है। घर से निकलना मुशकिल है।

शिताबजान—हाज़िर-जवाब ऐसा था कि बात की बात में गजलें कह डालता था।

खोजी—यह बात तो मुझमें भी है। दस हजार शेर एक मिनट में कह दूँ, एक कम न एक ज्यादा!

शिताबजान—मैं यह कब कहती हूँ कि तुम उससे किसी बात में कम हो। अव्वल तो जवान गभरू, अभी मसें भींगती हैं। आदमी क्या शेर मालूम होते हो। फिर सिपाही आदमी हो, उस पर शायर भी हो। बस जरा झल्ले हो, इतनी खराबी है।

खोजी—अगर मेरा हुक्म मानती हो तो मोम हो जाऊँगा। हाँ लड़ोगी तो हमारा मिजाज बेशक झल्ला है।

शिताबजान—मियाँ मैं लौंडी बनके रहूँगी। मुझसे लड़ाई-झगड़े से वास्ता, मगर यह बताओ कि रहोगे कहाँ। मै बम्बई में रहूँगी। तुम्हारे साथ मारी-मारी न फिरूँगी।

खोजी—तुम जहाँ रहोगी, वहीं मैं भी रहूँगा मगर.....

शिताबजान—अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती। एक तो तुमको अफीम न खाने दूँगी। तुमने अफ़ीम खाई और मैंने किसी बहाने से ज़हर खिला दिया।

खोजी—अच्छा न खायँगे। कुछ जरूरी है कि अफीम खाएँ ही। न खाई पी ली, चलो छुट्टी हुई।

शिताबजान—पीने भी न दूँगी। दूसरी शर्त यह है कि नौकरी जरूर करो, बग़ैर नौकरी के गुजारा नहीं। तीसरी शर्त यह है कि मेरे दोस्त और रिश्तेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे।

खोजी—वाह कहीं आने न दूँ। इन बदमाशों को फटकने न दूँगा।

शिताबजान—अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह होगा।

दूसरे दिन खोजी शिताबजान के साथ उसके घर चले। बम्बई से कई स्टेशन के बाद शिताबजान गाड़ी से उतर पड़ी और खोजी से कहा—अब आपके पास जितने रुपए पैसे हों, चुपके से निकालकर रख दो। मेरे घरवाले बिना नजराना लिए शादी न करेंगे।

खोजी ने देखा कि यहां बुरे फँसे। अब अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपए नहीं हैं तो हेठी होती है। इन्होंने समझा था कि शादी का दो घड़ी मजाक रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमुच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए। बोले—मै तो दिल्लगी करता था जी। शादी कैसी और ब्याह कैसा? कुछ ऊपर साठ बरस का तो मेरा सिन है, अब भला मैं शादी क्या करूँगा। तुम अभी जवान हो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जायँगे।

शिताबजान—तुमको इससे मतलब क्या! इसकी मुझे फिक्र होनी चाहिए। जब मेरा तुम पर दिल आया और तुम भी निकाह करने पर राजी हुए तो अब इनकार करना क्या माने। अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे।

मियां खोजी घबराए, सिट्टी-पिट्टी भूल गई। अपनी अक्ल पर बहुत

पछताए और उसी वक्त आजाद के नाम यह खत लिखा—मेरे बड़े भाई साहब, सलामत। मेरी आँख से अब ग़फ़लत का परदा उठ गया। मैं कुछ ऊपर साठ बरस का हूँगा। इस सिन मे निकाह का खयाल सरासर गैर मुनासिब है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरह आशिक हो गई है। उसका सबब यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है उसी तरह मेरी सूरत भी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि हड्डियाँ तक गल गई हैं, मगर आप खूब जानते हैं कि इन्हीं हड्डियों के बल पर मैंने मिस्र के नामी पहलवान को लड़ा दिया और बुआ जाफरान-जैसी देउनी की लातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता, उसी तरह मेरी सूरत में भी यह बात है कि जो देखता है आशिक हो जाता है। मैं खुद सोचता हूँ कि यह क्या बात है मगर कुछ समझ में नहीं आता, खैर अब आपसे यह अर्ज है कि खत देखते मेरी मदद के लिये दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होगी तो लोग हँसेंगे कि आज़ाद तो दो दो साथ लाए और ख्वाजा साहब मोची के मोची रहे। लेकिन यह क्या मालूम था कि यह शादी मेरे लिये ज़हर होगी। जरा शर्तें तो सुनिए। अफ़ीम छोड़ दो और नौकरी कर लो। अब बताइए कि अफीम छोड़ दूँ तो जिन्दा कैसे रहूँ? अब रही नौकरी यहाँ लड़कपन से फिकरेबाज़ों की सोहबत में रहे। गप्प उड़ाना, बातें बनाना, अफीम की चुस्की लगाना हमारा काम है। भला हमसे नौकरी? क्या होगी, और करना भी चाहें तो किसकी नौकरी करें। सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहाँ तो आदमी पचपन साल का हुआ और निकाला गया और यहाँ पचपन और दस पैंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं कि किसी नवाबजादे की सोहबत में रहें और उसको ऐसा पक्का रईस बना दें कि वह भी याद करे। चण्डू का कमाम हमसे बनवा लो, अफीम ऐसी पिलाएँ कि उम्र-भर

याद करे, रहा यह कि हम जमाखर्च लिखें, यह हमसे न होगा, जिसको अपना काम ग़ारत करना हो वह हमें नौकर रक्खे। इस लिये अगर मेरा गला यहाँ से छुड़ा दो तो बड़ा एहसान हो। खुदा जाने तुम लोग मुझे क्यों खाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, तुम्हारी तरफ से लड़ा-भिड़ा, वक्त बेवक्त काम आया और अब तुम मुझे जवाब दिए देते हो।

यह ख़त लिखकर शिताबजान को दिया कि आज़ाद के पास जल्द पहुँचा दो। शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है।

शिताबजान—सलाह की क्या जरूरत है भला।

खोजी—शादी-ब्याह कोई ख़ालाजी का घर नहीं है, जरा आदमी को इस बारे में ऊँच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिर्फ़ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्तें मंजूर करूँ या नहीं।

शिताबजान—अच्छा जाओ मै कोई शर्त नहीं करती।

खोजी—तब मंजूर, दिल से मंजूर, मगर यह ख़त तो भेज दो।

अब सुनिए कि शिताबजान के साथ एक खाँसाहब भी थे। मालवे के रहनेवाले। उन्होंने खोजी को दो दिन में इतनी अफ़ीम पिला दी जितनी वह चार दिन में भी न पीते। सफ़र में सेहत भी कुछ बिगड़ गई थी। दो ही दिन में चुर्र-मुर्र हो गए। लेटे लेटे खाँसाहब से बोले—जनाब दूसरा इतनी अफीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई मेरा मुकाबिला कर सके, और इस शहर पर क्या मौकूफ़ है, जहाँ कहिए मुकाबिले के लिए तैयार हूँ, कोई तोले-भर पिए तो मैं सेर-भर पी जाऊँ।

खाँसाहब—मगर उस्ताद आज कुछ अंजर-पंजर ढीले नजर आते हैं शायद अफ़ीम ज्यादा हो गई।

खोजी—वाह, ऐसा कहीं कहिएगा भी नहीं, जब जी चाहे साथ बैठकर पी लीजिए।

शाम तक खोजी की हालत और भी खराब हो गई। शिताबजान ने इन्हें दिक करना शुरू किया। ऐ आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा।

खोजी—सोने दो, सोने दो।

शिताब—भला खैर, हम तो समझे थे खबर आ गई।

खाँ—कहती किससे हो, वह पहुँचे खुदागज।

शिताब—ऐ फिर पीनक आ गई, अभी तो ज़िन्दा हो गया था।

खाँ—(कान के पास जाकर) ख्वाजासाहब!

खोजी—ज़रा सोने दो भाई।

शिताब—मेरे यहाँ पीनकवालों का काम नहीं है।

खाँ—ख्वाजासाहब, अरे ख्वाजासाहब, ऐ बोलते ही नहीं! चल बसे।

ख्वाजासाहब की हालत जब बहुत खराब हो गई, तो एक हकीम साहब बुलाए गए। उन्होंने कहा—जहर का असर है। नुस्खा लिखा। बारे कुछ रात जाते-जाते नशा टूटा। खोजी की आँखें खुलीं।

शिताब—मैं तो समझी थी तुम चल बसे।

खोजी—ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है।

शिताब—मर मुडीकाटे, अभी जवान बना है!

खोजी—बस ज़बान सँभालो, हम समझ गए कि तुम कोई भठियारी हो। मैं अगर अपने हालात बयान करूँ तो आँखें खुल जायँ। हम अमीर-कबीर के लड़के हैं। लड़कपन में हमारे दरवाजे पर हाथी बँधता था, तुम-जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूँ।

यह कहकर आप मारे गुस्से के घर से निकल खड़े हुए। समझते थे कि शिताबजान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसे रहा जायगा, ज़रूर मुझे तलाश करने आएगी, लेकिन जब बहुत देर गुज़र गई और

शिताबजान ने खबर न ली तो आप लौटे। देखा तो शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोला, मगर शिताबजान वहाँ कहाँ? उसी महल्ले में एक हबशिन रहती थी। खोजी ने जाकर उससे अपना सारा क़िस्सा कहा, तो वह हँसकर बोली—तुम भी कितने अहमक हो। शिताबजान भला कौन है? तुमको मिरजा साहब और आजाद ने चकमा दिया है।

खोजी को आज़ाद की बेवफाई का बहुत मलाल हुआ। जिसके साथ इतने दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिन्दोस्तान में लाके उन्हें छोड़ दिया। खूब रोए तब हबशिन से बातें करने लगे—

खोजी—किस्मत कहाँ से हमें कहाँ लाई?

हबशिन—आपका घोंसला किस झाडी में है?

खोजी—हम खोजिस्तान के रहनेवाले हैं।

हबशिन—यह किस जगह का नाम लिया। खोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता।

खोजी—तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई है। खोजिस्तान एक सूबा है, शकरकन्द और जिलेबिस्तान के करीब। बताशा नदी उसे सैराब करती है।

हबशिन—भला शकरकन्द भी कोई देस है?

खोजी—है क्यों नहीं, समरकन्द का छोटा भाई है।

हबशिन—वहाँ आप किस मुहल्ले में रहते थे?

खोजी—हलुवापुर में।

हबशिन—तब तो आप बड़े मीठे आदमी हैं।

खोजी—मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीठी नजर के आशिक हैं—

ख्वाहिश न कन्द की है, न तालिब शकर के हैं,
चस्के पड़े हुए तेरी मीठी नजर के हैं।

हबशिन—तो आप भी मेरे आशिकों में हैं।

ख़ोजी—आशिक़ कोई और होंगे, हम माशूक़ों के माशूक़ हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहाँ गया, माशूक़ों के मारे नाक में दम हो गया। बुआ ज़ाफ़रान नामी एक औरत हम पर इतनी रीझी कि पट्टे पकड़के दे जूता दे जूता मारके उड़ा दिया। मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ़ तक न की।

हबशिन—हमको यक़ीन क्योंकर आए? हम तो जब जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार लगावें फिर देखें कैसे नहीं उफ् करते।

खोजी—हाँ, हम हाज़िर हैं, मगर आज अभी अफीम यों ही-सी पी है जब नशे जमें तब अलबत्ता आज़मा लो।

हबशिन—ऐ है, फिर निगोड़ी अफ़ीम का नाम लिया, मरते मरते बचे और अब तक अफ़ीम ही अफ़ीम कहते जाते हो।

ख़ोजी—तुम इसके मजे क्या जानो। अफ़ीम खाना फ़क़ीरी है। ग़रूर को तो यह खाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगह पिटा, कभी जूतियाँ खाईं, कभी कोई काँजीहौस ले गया, मगर हमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गई तो खोजीसाहब ने एक डोली मँगवाई और उसमें बैठकर चण्डूखाने पहुँचे। लोगों ने इन्हें देखा तो चकराए कि यह नया पंछी कौन फँसा।

ख़ोजी—सलाम आलेकुम भाइयो!

इमामी—आलेकुम भाई आलेकुम। कहाँ से आना हुआ?

खोजी—जरा टिकने दो, फिर कहूँ। दो बरस लड़ाई पर रहा, जब देखा मोरचाबन्दी। मर मिटा, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मशहूर हो गया।

इमामी—लड़ाई कैसी ? आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है।

खोजी—तुम घर में बैठे-बैठे दुनिया का क्या हाल जानो।

क़ादिर—क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते हो क्या ?

खोजी—ख़ैर इतना तो सुना।

इमामी—अजी यह न कहिए, इनको सारी दुनिया का हाल मालूम रहता है। कोई बात इनसे छिपी थोड़ी है।

क़ादिर—रूमवाले ने रूस के बादशाह से कहा कि जिस तरह तुम्हारा चचा हमको कौड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तकरार हुई, तो रूमवाले ने कहा, अच्छा अपने चचा की क़ब्र में चलो और पूछ देखो क्या आवाज़ आती है। बस जनाब सुनने की बात है कि रूसवाले ने न माना। रूम के बादशाह के पास हज़रत सुलेमान की अँगूठी थी। उन्होंने जो उसे हवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन्न हाज़िर हो गए। बादशाह ने कहा कि रूस में चारों तरफ़ आग लगा दो। चारों तरफ़ आग लग गई। तब रूस के बादशाह ने वज़ीरों को जमा करके कहा, आग बुझाओ, बस सवा करोड़ भिश्ती मशकें भर-भरके दौड़े। एक-एक मशक में दो-दो लाख मन पानी आता था।

खोजी—क्यों साहब, यह आपसे किसने कहा है ?

इमामी—अजी यह न पूछो, इनसे फ़रिश्ते सब कह जाते हैं।

क़ादिर—बस साहब सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशकें मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आग बढ़ती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि दो करोड़ लाख भिश्ते काम करें और मशकों में छब्बीस छब्बीस करोड़ मन पानी हो।

खोजी—ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है ?

शुबराती—मियाँ सुनने दो भाई, अजब आदमी हो।

ख़ोजी—अजी मैं तो सुनते-सुनते पागल हो गया।

क़ादिर—आप लखनऊ के महीन आदमी, उन मुल्कों का हाल क्या जानें। रूम, रूस, तूरान, अनूपशहर का हाल हमसे सुनिए।

इमामी—वहाँ के लोग भी देव होते हैं देव!

क़ादिर—रूस के बादशाह की खुराक का हाल सुनो तो चकरा जाओ। सवेरे मुँह-अँधेरे ६ बकरों की यख़नी, चार बकरों के कबाब, दस मुर्ग़ का पोलाव और दो मुरैले तरकीब से खाते हैं, और ९ बजे के वक्त सौ मुर्ग़ का शुरबा और दस सेर ठण्डा पानी, बारह बजे जवाहिरात का शरबत, कभी पचास मन कभी साठ मन, चार बजे दो कच्चे बकरे, दो कच्चे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गए गोश्त का एक छकड़ा।

इमामी—जब तो ताक़तें होती हैं कि सौ-सौ आदमियों को एक-एक आदमी मार डालता है। हिन्दोस्तान का आदमी क्या खाकर लड़ेगा।

शुबराती—हिन्दोस्तान में अगर हाज़मे की ताक़त कुछ है तो चण्ड के सबब से, नहीं तो सब-के-सब मर जाते।

इमामी—सुना रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं।

क़ादिर—हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डालेगा।

ख़ोजी—आप रूस कभी गए भी हैं?

क़ादिर—अजी हम घर बैठे सारी दुनिया की सैर कर रहे हैं।

ख़ोजी—हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, हमने तो वहाँ एक हाथी भी न देखा।

क़ादिर—रूसवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस ग्यारह महीने ग्यारह दिन ग्यारह घण्टे जला की। अब जाके ज़री-ज़री आग

बुझी है, नहीं तो अजब नक़शा था कि सारा मुल्क जल रहा है और पानी का छिड़काव हो रहा है। रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है।

खोजी—अरे यारो, इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

कादिर—आपकी तो सूरत ही कहे देती है कि आप रूम ज़रूर गए होंगे। खुदा झूठ न बुलवाए तो घर के बाहर क़दम नहीं रक्खा।

खोजी समझे थे कि चण्डूखाने में चलकर अपने सफर का हाल बयान करेंगे और सबको बन्द कर देंगे, चण्डूखाने में इनका तूती बोलने लगेगा, मगर यहाँ जो आए तो देखा कि उनके भी चचा मौजूद हैं। झल्लाकर पूछा, भला बतलाओ तो रूम के पायतख्त का क्या नाम है?

कादिर—वाह इसमें क्या रक्खा है, भला सा नाम तो है, हाँ मर्जबान।

खोजी—इस नाम का तो वहाँ कोई शहर ही नहीं।

क़ादिर—अजी तुम क्या जानो। मर्ज़बान वह शहर है जहाँ पहाड़ों पर परियाँ रहती हैं। वहाँ पहाड़ों पर बादल पानी पी-पीकर जाते हैं और सबको पानी पिलाते हैं।

ख़ोजी—तो वह कोई दूसरा रूम होगा। जिस रूम से मैं आता हूँ वह और है।

कादिर—अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है?

खोजी—सुलतान अब्दुलहमीदखाँ।

क़ादिर—बस-बस, रहने दीजिए, आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आते हैं। भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए?

ख़ोजी—पिलौना की लड़ाई में तुर्क हार गए और रूसियों ने फ़तह पाई।

क़ादिर—क्या बकता है बेहूदा। ख़बरदार जो ऐसा कहा होगा तो इतने जूते लगाऊँगा कि भुरकस ही निकल जायगा।

इमामी—हमारे बादशाह के हक़ में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का, बचा यहाँ ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

खोजी—सुनोजी हम फ़ौजी आदमी हैं।

क़ादिर—अब ज्यादा बोलोगे तो ठठकर कचूमर ही निकाल दूँगा।

शुबराती—यह हैं कहाँ के, ज़रा सूरत तो देखो, मालूम होता है कब्र से निकल भागा है।

ख़ोजी को सबने मिलकर ऐसा डपटा कि बेचारे करोली और तमंचा भूल गए। गए तो बड़े ज़ोम में थे कि चण्डूखाने में खूब डींग हाँकेंगे मगर वहाँ लेने के देने पड़ गए। चुपके से चण्डू के छींटे उड़ाए और लम्बे हुए। रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुतसे आदमी एक जगह खड़े हैं। आपने घुसकर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफ़ों के पुल बांध रहे हैं। खोजी ने समझा कि हमने भी तो मिस्र के पहलवान को पटका था, हम किसी से कम हैं? इस ज़ोम में आपने पहलवान को ललकारा—भाई पहलवान, हम इस वक्त इतने खुश हैं कि फूले नहीं समाते। मुद्दत के बाद आज अपना जोड़ीदार पाया।

पहलवान—तुम कहाँ के पहलवान हो भाई साहब?

ख़ोजी—यार क्या बताएँ अपने साथियों में अब कोई रहा ही नहीं। अब तो कोई पहलवान जँचता ही नहीं।

पहलवान—उस्ताद, कुछ हमको भी बताओ?

ख़ोजी—अजी तुम खुद उस्ताद हो।

पहलवान—आप किसके शागिर्द है ?

खोजी—शागिर्द तो भाई किसी के नहीं हुए। मगर हाँ अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया। हिन्दोस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया। तुम आजकल कहाँ रहते हो ?

पहलवान—आजकल एक नवाबसाहब के यहाँ हैं। तीन रुपया रोज़ देते हैं और एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बँधा है। नवाब अमजदअली नाम है।

ख़ोजी—भला वहाँ चण्डू का भी चरचा रहता है ?

पहलवान—कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन रात।

खोजी—भला वहाँ मस्तियाबेग भी हैं ?

पहलवान—जी हाँ है, आप कैसे जान गए ?

खोजी—अजी वह कौनसा नवाब है जिसकी हमने मुसाहबी न की हो। नवाब अमजदअली के यहाँ बरसों रहा हूँ। बटेरों का अब भी शौक है या नहीं ?

पहलवान—अजी अभी तक सफ़शिकन का मातम होता है।

ख़ोजी—तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है ?

पहलवान—मैं तो आज ही जा रहा हूँ।

खोजी—तो भाई हमको भी ज़रूर साथ लेते चलो। हम अपना किराया दे देंगे।

पहलवान—तो चलिए, मेरा इसमें हरज ही क्या है। हमको नवाब-साहब ने सिर्फ़ दो दिन की छुट्टी दी थी। कल यहाँ दाखिल हुए, आज दंगल में कुश्ती निकाली और शाम की रेल पर चल देंगे। हमारे साथ मस्तियाबेग भी हैं।

शाम को पहलवान के साथ ख़ोजी स्टेशन पर आए। पहलवान

ने कहा—वह देखिए मिरजा साहब खड़े हैं, जाकर मिल लीजिए। ख्वाजा आहिस्ता-आहिस्ता गए और पीछे से मिरजा साहब की आँखें बन्द कर लीं।

मिरजा—कौन है भाई, कोई मुसम्मात हैं क्या? हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान—भला बूझ जाइए तो जानें।

मिरज़ा—कुछ समझ में नहीं आता, मगर हैं कोई मुसम्मात।

ख़ोजी—भला गीदी भला, अभी से भूल गया क्यों?

मिरजा—अल्लाह ख्वाजा साहब हैं! कहो भाई खोजी, अच्छे तो रहे?

खोजी—खोजी कहीं और रहते होंगे। अब हमें ख्वाजा साहब कहा करो।

मिरजा—अरे कमवख्त गले तो मिल ले।

खोजी—सरकार कैसे हैं, घर में तो ख़ैर-आफ़ियत है?

मिरजा—हाँ सब खुदा का फ़ज़ल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था, मगर अब अच्छी हैं, कहो तुमने तो खूब नाम पैदा किया।

खोजी—नाम! अरे हम मेजर थे।

मिरजा—सरकार को इस लड़ाई के जमाने में अख़बार से बड़ा शौक़ था। आज़ाद को तो सब जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब से पढ़ा तब से सरकार को अखबारों का एतबार जाता रहा। कहते थे कि समुद्र की सूरत देखकर इसका जिगर क्यों न फट गया। भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता।

खोजी—अब इसका हाल तो उन लोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे। तुम मजे से बैठे बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किए, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर भाई नशों में नशा शराब का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कमर कसकर तैयार हो गए।

मिरजा—अब सरकार के सामने न कहना कि शराब पी थी, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

खोजी—अजी अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते।

मिरजा—एक बार तो अख़बार में लिखा था कि खोजी ने शादी कर ली है।

खोजी—अरे यार, इसका हाल न पूछो, अपनी शक्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जाकर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गये करोड़ों औरतें हम पर आशिक हो गईं। खासकर एक कमसिन नाज़नीन ने तो मुझे कहीं का न रक्खा।

मिरजा—तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं। क्या कहना है! तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किए।

खोजी—भाई जान, मोरचे पर मेरी बहादुरी देखते तो दंग हो जाते। खैर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तुर्की अफ़सर भी आशिक थे। यह राय तय पाई कि जिससे वह परी राजी हो उससे निकाह करे। एक रोज सब बन-ठनकर आए, मगर उस शोख की नज़र आपके खादिम ही पर पड़ती थी।

मिरजा—ऐ क्यों नहीं, हजार जान से आशिक हो गई होगी।

खोजी—आव देखा न ताव, अठलाती हुई आई और मेरा हाथ अपने सीने पर रख लिया। अब सुनिए, उन सबोंके दिल में हसद की आग भड़की, कहने लगे, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े। हमने कहा खैर! तलवार खींचकर जो चला, तो वह-वह चोटें लगाईं कि सब-के सब बिलबिलाने लगे। बस परी हमको मिल गई। अब दरबार के रंग ढंग बयान करो।

मिरजा—सब तुम्हारी याद किया करते हैं। झम्मन ने वह चुगुल खोरी पर कमर बाँधी है कि सैकड़ों खिदमतगार और कितने ही मुसा हबों को मौकूफ़ करा दिया।

खोजी—एक ही पाजी आदमी है, हम रूम गए, फ्रांस गए, सारी दुनिया के रईस देख डाले, मगर नवाब-सा भोला-भाला रईस कहीं न देखा। गजब खुदा का कि एक बदमाश ने जो कह दिया, उसका यकीन हो गया, अब कोई लाख समझाए वह किसी की सुनते ही नहीं।

मिरजा—मेरा तो अब वहाँ रहने को जी नहीं चाहता।

खोजी—अजी इस झगड़े को चूल्हे में डालो। अब हम-तुम चलकर अपना रंग जमाएँगे। तुम मेरी हवा बाँधना और हम दोनों एक जान दो कालिब होकर रहेंगे।

मिरजा—मैं कहूँगा, खुदावन्द, अब यह सब मुसाहबों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुज़ूर का नाम किया। मगर तुम जरा अपने को लिए रहना।

खोजी—अजी मैं तो ऐसा बनूँ कि लोग दंग हो जायँ।

जब घण्टी बजी और मुसाफिर चले तो खोजी भी पहलवान की तरह अकड़कर चलने लगे। रेल के दो-चार मुलाजिमों ने उन पर आवाजें कसना शुरू किया।

१—आदमी क्या गैंडा है, माशा-अल्लाह क्या हाथ-पाँव हैं!

२—क्यों साहब कितने दण्ड आप पेल सकते हैं?

खोजी—अजी बीमारी ने तोड़ दिया नहीं तो मैं एक पूरी रेल पर लदके जाता था।

२—इसमें क्या शक है, एक-एक रान दो-दो मन की है।

खोजी—कसम खाके अर्ज़ करता हूँ कि अब आधा नहीं रहा।

यह पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफा है, और बाकी सब शागिर्द हैं। सब मिलाके हमारे चालीस-बयालीस हज़ार शागिर्द होंगे।

एक मुसाफिर—दूर-दूर से लोग शागिर्दी करने आते होंगे!

खोजी—दूर-दूर से। अब आप मुलाहिजा फरमाएँ कि हिन्दोस्तान से लेकर रूस तक मेरे लाखों शागिर्द हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आई, एक मेले में हमको टोक बैठा। टोकना था कि बन्दा भी चट लँगोट कसके सामने आ खड़ा हुआ। लाखों ही आदमी जमा थे। उसका सामने आना ही था कि मैं उसी दम जुट गया, दाँव पेंच होने लगे। उसके मिस्री दाँव थे। हमारे हिन्दोस्तानी दाँव थे। बस दम की दम में मैंने उठाके दे पटका।

इतने में दूसरी घण्टी हुई। खोजी ऐसे बौखलाए कि जनाने दर्जे में घुस पड़े। वहाँ लेना-लेना का गुल मचा। भागे तो पहले दर्जे में घुस गए। वहाँ एक अँगरेज ने डाट बताई। वहाँ से निकलकर तीसरे दर्जे में आए। थके-माँदे बहुत थे, सोए तो सारी रात कट गई। आँख खुली तो लखनऊ आ गया था। शाम के वक्त नवाब साहब के यहाँ दाखिल हुए।

खोजी—आदाबअर्ज है हुजूर।

नवाब—अल्लाह खोजी हैं, आओ भाई आओ।

खोजी—हाजिर हूँ खुदावन्द, खुदा का शुक्र है कि आपकी जियारत हुई।

ग़फ़ूर—खोजी मियाँ सलाम।

खोजी—सलाम भाई सलाम, मगर हमको खोजी मियाँ न कहना, अब हम फौज के अफसर हैं।

झम्मन—आप बादशाह हों या वजीर, हमारे तो खोजी ही हो।

खोजी—हाँ भाई यह तो है ही। हुजूर के नमक की कसम, मुल्कों मुल्कों इस दरबार का नाम किया।

नवाब—शाबाश! हमने अखबारों में तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफें पढ़ीं।

खोजी—हुजूर गुलाम किस लायक है।

झम्मन—भला यार तुम समुद्र में जहाज पर कैसे सवार हुए?

खोजी—वाह, तुम जहाज को लिए फिरते हो। यहाँ मोरचों पर बड़े-बड़े मेजरों और जनरलों से भिड़-भिड़ पड़े हैं। हुजूर पिलौना की लड़ाई में कोई दस लाख आदमी एक तरफ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ था, फिर यह मुलाहिजा कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुकाबिला किया और सबके छक्के छुड़ा दिए।

झम्मन—इतना झूठ, उधर दस लाख, इधर सत्तर! भला कोई बात है।

खोजी—तुम क्या जानो, वहाँ होते तो होश उड़ जाते।

नवाब—भाई इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया, खबरदार आज से इनको कोई खोजी न कहे। पाशा के लक़ब से पुकारे जायँ।

खोजी—आदाब हुजूर। झम्मन गीदी ने मुँह की खाई न आखिर। रईसों की सोहबत में ऐसे पाजियों का रहना मुनासिब नहीं।

नवाब—क्यों साहब हिन्दोस्तान के बाहर भी हमको कोई जानता है? सच-सच बताना भाई!

खोजी—हुजूर जहाँ-जहाँ गुलाम गया, हुजूर का नाम बादशाहों से ज्यादा मशहूर हो गया।

एक सौ तीनवाँ परिच्छेद

आज़ाद बम्बई से चले तो सबसे पहले जीनत और अख्तर से मुलाकात करने की याद आई। उस कस्बे में पहुँचे तो एक जगह मियाँ खोजी की याद आ गई। आप ही आप हँसने लगे। इत्तिफाक से एक गाड़ी पर कुछ सवारियाँ चली जाती थीं। उनमें से एक ने हँसकर कहा— वाह रे भले मानस, क्या दिमाग़ पर गरमी चढ गई है क्या? आजाद रंगीन मिजाज आदमी तो थे ही। आहिस्ता से बोले—जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नजर आएँ तो आदमी के होश-हवास क्योंकर ठिकाने रहें। इस पर वह नाजनीन तिनककर बोली—अरे यह तो देखने ही को दीवाना मालूम होते थे, अपने मतलब के बडे पक्के निकले। क्यों मियाँ यह क्या सूरत बनाई है, आधा तीतर और आधा बटेर। खुदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख-दो लाख में एक हो। मगर इस शक्ल सूरत पर जो लम्बे-लम्बे बाल हों, बालों में सोलह रुपएवाला तेल पड़ा हो, बारीक शरबती का अँगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डण्ड नजर आएं, चुस्त घुटन्ना हो, पैरों में एक अशर्फ़ी का टाटबाफ़ी बूट हो, अँगरखे पर कामदानी की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसाहबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में काबुके और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अँगुलियाँ उठें कि वह रईस जा रहा है! तब लोग कहें इस सज-धज नख-सिख, कल्ले-ठल्ले का गभरू जवान देखने में नहीं आया। यह सब छोड पट्टे कतरवाके लँडूरे हो गए, ऐ वाह री आपकी अक्ल।

आज़ाद—ज़रा मैं भी तो जानूँ कि किसकी ज़बान से यह बातें सुन रहा हूँ। इंसान हम भी हैं फिर इंसान को इंसान से क्या परदा?

नाजनीन—अच्छा तो आप भी इंसान होने का दम भरते हैं। मेंढकी भी चली मदारों को।

आज़ाद—खैर साहब, इंसान न सही।

नाज़नीन—(परदा हटाकर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आँखें हुईं, अब कलेजे में ठण्डक पहुँची।

आजाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सूरत तो कहीं देखी है और अब खयाल आता है कि आवाज़ भी कहीं सुनी है। मगर इस वक्त याद नहीं आता कि कहाँ देखा था।

नाज़नीन—पहचाना? भला आप क्यों पहचानने लगे। रुतबा पाकर कौन किसे पहचानता है?

आज़ाद—इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है पर यह खयाल नहीं आता कि कहाँ देखा है।

नाजनीन—अच्छा एक पता देते हैं, अब भी न समझो तो खुदा तुमसे समझे, याद है किसने यह ग़ज़ल गाई थी—

कोई मुझसा दीवाना पैदा न होगा,
हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा।
न देखा हो जिसने कहे उसके आगे,
हमें लन्तरानी सुनाना न होगा।

आजाद—अब समझ गया! जहूरन, वहाँ की खैर-आफियत बयान करो। उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिये बम्बई से चला आ रहा हूँ।

ज़हूरन—सब खुदा का फ़ज़ल है। दोनों बहनें आराम से हैं, अख्तर के मियाँ तो उनका जेवर खा पीकर भाग गए, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। जीनत बेगम खुश हैं।

आजाद—तो अब हम उनके मैके जायँ या ससुराल?

जहूरन—ससुराल न जाइए मैके में चलिए और वहाँ से किसी महरी के जबानी पैगाम भेजिए। हमने तो हुज़ूर को देखते ही पहचान लिया।

आज़ाद—हमको इन दोनों बहनों का हाल बहुत दिनों से नहीं मालूम हुआ।

जहूरन—यह तो हुज़ूर आप ही का कुसूर है कभी आपने एक पुरजा तक न भेजा। जिस दिन जीनत बेगम के मियाँ ने उनसे कहा कि लो आज़ाद वापस आते हैं तो मारे खुशी के खिल उठीं। तो अब आना हो तो आइए शाम होती है।

थोड़ी देर में आज़ाद ज़ीनत बेगम के मकान पर जा पहुँचे। जहूरन ने जाकर उनकी चाची से आज़ाद के आने की इत्तला की। उसने आज़ाद को फौरन् बुला लिया।

आज़ाद—बन्दगी अर्ज करता हूँ। आप तो इतने ही दिनों में बूढी हो गईं।

चाची—बेटा अब हमारे जवानी के दिन थोड़े ही हैं। तुम तो खैर-आफियत के साथ आए। आँखें तुम्हें देखने को तरस गईं।

आजाद—जी हाँ, मैं खैरियत से आ गया। दोनों साहबज़ादियों को बुलवाइए, सुना जीनत की भी शादी हो गई है।

चाची—हाँ अब तो दोनों बहनें आराम से हैं। अख्तरी का पहला मियाँ तो बिलकुल नालायक निकला। जेवर, गहना-पाता, सब बेचकर खा गया और खुदा जाने किधर निकल गया। अब दूसरी शादी हुई है। डाक्टर हैं। साठ तनख्वाह है और ऊपर से कोई चार रुपया रोज मिलता है। जीनत के मियाँ स्कूल में पढ़ाते हैं। दो सौ की तलब है। तुम्हारे चाचाजान तो मुझे छोड़कर चल दिए।

इधर महरी ने जाकर दोनों बहनों को आज़ाद के आने की

ख़बर दी। ज़ीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मैके की तरफ़ चली। घर के अन्दर क़दम रखते ही आज़ाद से हाथ मिलाकर बोली—वाह रे बेमुरव्वतों के बादशाह ! क्यों साहब जब से गए, एक पुरजा तक भेजने की क़सम खा ली ?

आज़ाद—यह तो न कहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे ही दरवाजे पर आया। यह तो फरमाइए कि यह पोशाक कब से अख्तियार की ?

जीनत—जब से शादी हुई। उन्हें अँगरेजी पोशाक बहुत पसन्द है।

आज़ाद—जीनत, खुदा गवाह है कि इस वक्त जामे में फूला नहीं समाता। एक तो तुमको देखा और दूसरे यह खुशखबरी सुनी कि तुम्हारे मियाँ पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियाँ-बीबी में मुहब्बत न हो तो जिन्दगी का लुत्फ ही क्या।

इतने में अख्तरी भी आ गई और आते ही कहा—मुबारक !

आज़ाद—आपको बड़ी तकलीफ हुई, मुआफ़ करना।

अख्तर—मैंने तो सुना था कि तुमने वहाँ किसी माईसिन से शादी कर ली।

आज़ाद—और तुम्हें इसका यकीन भी आ गया ?

अख्तर—यकीन क्यों न आता ! मर्दों के लिये यह कोई नई बात थोड़ी ही है। जब लोग एक छोड़ चार-चार शादियाँ करते हैं तो यकीन क्यों न आता।

आज़ाद—वह पाजी है जो एक के सिवा दूसरी का खयाल भी दिल में लाए।

जीनत—ऐसे मियाँ-बीबी का क्या कहना, मगर यहाँ तो वही पाजी नज़र आते हैं जो बीबी के होते भी उसकी परवा नहीं करते।

आज़ाद—अगर बीबी समझदार हो तो मियाँ कभी उसके काबू से बाहर न हो।

अख्तर—यह तो हम मान चुके। खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाला शोहदे मियाँ से पड़े।

जीनत—जिसके मिजाज में पाजीपन हो उससे बीवी की कभी न पटेगी। मियाँ सुबह से जायँ तो रात के एक बजे घर में आएँ और वह भी किसी रोज आए किसी रोज़ न आए। बीवी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज़ तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीवी को मार बैठे।

आजाद—यह तो धुनियाँ-जुलाहों की बातें हैं।

जीनत—नहीं जनाब, जो लोग शरीफ़ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की कमी नहीं है।

अख्तर—ऐ चूल्हे में जायँ ऐसे मर्द, जभी तो बेचारियाँ कुएँ में कूद पड़ती हैं, ज़हर खाके सो रहती हैं।

जीनत—मुझे खूब याद है कि एक औरत अपने मियाँ को ज़रा-सी बात पर हाथ फैला-फैला कोस रही थी कि कोई दुश्मन को भी न कोसेगा।

आजाद—जहाँ ऐसे मर्द है वहाँ ऐसी औरतें भी हैं।

अख्तर—ऐसी बीवी का मुँह लेके झुलस दे।

जीनत—मेरे तो बदन के रोएँ खड़े हो गए।

आजाद—मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि ऐसे मियाँ और बीवी में मेल-जोल कैसे हो जाता है।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी। जीनत और अख्तर ने हिन्दोस्तानी औरतों की तरफ़दारी की और आज़ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज़ाद—जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहाँ की

औरतों को कहाँ नसीब। धूप में अगर मियाँ-बीबी साथ चलते हों तो मियाँ छतरी लगाएगा।

अख्तर—यहाँ भी महाजनों को देखो। औरतें दस दस हजार का जेवर पहनकर निकलती है और मियाँ लँगोटा लगाए, दूकान पर मक्खियाँ मारा करते हैं।

आज़ाद—यहाँ की औरतों को तालीम से चिढ़ है।

जीनत—इसका इलज़ाम भी मर्दों ही की गरदन पर है। वह खुद औरतों को पढ़ाते डरते हैं कि कहीं यह उनकी बराबरी न करने लगें।

आजाद—हमारे मकान के पास एक महाजन रहते थे। मैं लड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था। जैसे ही मियाँ बाहर से आता, बीबी चारपाई से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाती। अगर तुमसे कोई कहे कि मियाँ के सामने घूँघट करके जाओ तो मंजूर करो या नहीं?

अख्तर—आह, यहाँ तो घर में कैद न रहा जाय, घूँघट कैसा?

आजाद—यूरोपियन लेडियों को घर के इन्तज़ाम का जो सलीका होता है, वह हमारी औरतों को कहाँ?

जीनत—हिन्दोस्तानी औरतों में जितनी वफ़ा होती है वह यूरोपियन लेडियों में तलाश करने से भी न मिलेगी। यहाँ एक के पीछे सती हो जाती है वहाँ मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं।

एक सौ चारवाँ परिच्छेद

वहाँ दो दिन और रहकर आजाद दोनों लेडियों के साथ लखनऊ पहुँचे और उन्हें होटल में छोड़कर नवाबसाहब के मकान पर आए। इधर वह गाड़ी से उतरे, उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि खुदावन्द, मुहम्मद आज़ाद पाशा आ गए। नवाबसाहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े

हुए तो देखा कि आज़ाद खट-खट करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं। नवाबसाहब झपटकर उनके गले लिपट गए और बोले—भाई जान, आँखें तुम्हें ढूँढ़ती थीं।

आजाद—शुक्र है कि आपकी जियारत नसीब हुई।

नवाब—अजी अब यह बातें न करो, बड़े-बड़े अँगरेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं।

मुसाहब—बड़ा नाम किया। वल्लाह करोड़ों आदमी एक तरफ़ और हुज़ूर एक तरफ़।

खोजी—गुलाम भी आदाबअर्ज़ करता है।

आज़ाद—तुम यहाँ कब आ गए ख्वाजासाहब?

नवाब—सुना आपने तीन तीन करोड़ आदमियों से अकेले मुकाबिला किया!

ग़फ़ूर—अल्लाह की देन है हुज़ूर!

नवाब—अरे भाई गंगा-जमुनी हुक्का भर लाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैसा न समझना। इनकी तारीफ़ कमिश्नर तक की जबान से सुनी। सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुलाकात हुई। भाई तुमने वह दरजा हासिल किया है कि हम अगर हुज़ूर कहे तो बजा है। कहाँ रूस के बादशाह और कहाँ हम!

खोजी—खुदावन्द, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रह जाते। जैसे शेर कछार में डँकारता है।

नवाब—क्यों भाई आजाद, इन्होंने वहाँ कोई कुश्ती निकाली थी?

आजाद—मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाए गए और एक बौने तक ने इनको उठाके दे मारा।

मुसाहब—भाई, इस वक्त तो भण्डाफोड़ फूट गया।

आज़ाद—क्या यह गप उड़ाते थे कि मैंने कुश्तियाँ निकालीं ?

मस्तियाबेग—ऐ हुज़ूर, जब से आए हैं, नाक में दम कर दिया बात हुई और करौली निकाली।

ग़फ़ूर—परसों तो कहते थे कि मिस्र में हमने आजाद के बराबर पहलवान को दम-भर में आसमान दिखा दिया।

आज़ाद—क्या खूब ! एक बौने तक ने तो उठाके दे मारा, चले वहां से दून की लेने।

इतने में नवाबसाहब के यहाँ एक मुंशी साहब आए और आज़ाद को देखकर बोले—अल्लाह आज़ाद पाशा साहब हैं, आपने तो बड़ा नाम पैदा किया, सुभान-अल्लाह।

नवाब—अजी, कमिश्नर साहब इनकी तारीफ़ करते हैं, इससे ज्यादा इज्जत और क्या होगी।

खोजी—साहब लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठहरता ही न था।

मुंशी—आपने भी बड़ा साथ दिया ख्वाजासाहब, मगर आपकी बहादुरी का जिक्र कहीं सुनने में नहीं आया।

खोजी—आप ऐसे शीदियों को मैं क्या समझता हूँ, मैंने वह-वह काम किए हैं कि कोई क्या करेगा। करौली हाथ में ली और सफ़ों की सफ़ें साफ़ कर दीं।

मुंशी—आप तो नवाबसाहब के यहाँ बने हैं न ?

खोजी—बने होंगे आप, बनना कैसा ! क्या मैं कोई परकटा हूँ। क़सम है हुज़ूर के कदमों की, सारी दुनिया छान डाली मगर आज तक ऐसा बदतमीज देखने में नहीं आया।

आज़ाद—जनाब ख्वाजासाहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को

कहाँ नसीब हुई। आप जिस जगह जाते थे वहाँ की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले बुआ ज़ाफ़रान आशिक हुई।

खोजी—तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है ? आप क्यों जलते हैं ?

नवाब—भई आज़ाद, यह क़िस्सा ज़रूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रक्खा तो वल्लाह मुझे बड़ा रंज होगा, अब फरमाइए आपको मेरा ज्यादा ख़याल है या इस गीदी का ?

खोजी—हुज़ूर मुझसे सुनिए। जिस रोज आज़ाद पाशा और हम पिलौना के किले में थे, उस रोज की काररवाई देखने के लायक थी। किला पाँचों तरफ से घिरा हुआ था।

मुसाहब—यह पाँचवाँ कौन तरफ़ है साहब ? यह नई तरफ़ कहाँ से लाए, जो बात कहोगे वही अनोखी।

खोजी—तुम हो गधे, किसी ने बात की और तुमने काट दी, यों नहीं वो, वों नहीं यों। एक तरफ़ दरिया था और खुश्की भी थी। अब हुई पाँच तरफें या नहीं, मगर तुम ऐसे गौखों को इसका हाल क्या मालूम। कभी लड़ाई पर गए हो ? कभी तोप की सूरत देखी है ? कभी धुआँ तक तो देखा न होगा और चले हैं वहाँ से बड़े सिपाही बनकर ! तो बस जनाब अब करें तो क्या करें। हाथ-पाँव फूले हुए कि अब जायँ तो किधर जायँ और भागें तो किधर भागें।

नवाब—सचमुच वक्त बड़ा नाज़ुक था।

खोजी—और रूसियों की यह कैफियत कि गोले बरसा रहे थे। सब आज़ाद पाशा ने मुझसे कहा कि भाईजान अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे। मेरे बदन मे आग लग गई। बोला, निकलना किसे कहते हैं जी ! इतने में क़िले की दीवारें चलनी हो गईं। जब मैंने देखा कि अब फौज के बचने की कोई उम्मेद नहीं रही, तो तलवार

हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठकर निकल पड़ा और उसी वक्त दो लाख रूसियों को काटकर रख दिया।

मुसाहब—इस झूठ पर खुदा की मार।

खोजी—अच्छा आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने।

नवाब—हज़रत सच-सच कहिएगा। बस फ़क़त इतना बता दीजिए, यह बातें कहाँ तक सच हैं?

आज़ाद—जनाब पिलौना का जो कुछ हाल बयान किया वह तो सब ठीक है मगर दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज़ गप है। लुत्फ यह है कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी। उन दिनों तो यह खास कुस्तुन्तुनियाँ में थे।

इस पर बडे जोर का कहकहा पड़ा। बेगम साहब ने क़हक़हे की आवाज सुनी तो महरी से कहा—जा देख यह कैसी हँसी हो रही है।

महरी—हुजूर वह आए हैं मियाँ आज़ाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही हँसी हो रही है।

बेगम—अल्लाह आज़ाद आ गए, जाके खैर-आफियत तो पूछ! हमारी तरफ से न पूछना। वहाँ कहीं ऐसी बात न करना।

महरी—वाह हुजूर, कोई दीवानी हूँ क्या? सुनती हूँ उस मुल्क में बड़ा नाम किया। तुमने कभी तोप देखी है गफ़ूरन।

गफ़ूरन—ऐ खुदा न करे हुजूर!

महरी—हमने तो देखी है, बल्कि रोज ही देखती हूँ।

बेगम—तोप देखी है! तुम्हारे मियाँ सवारों के साईस होंगे। तोप नहीं वह देखी है।

महरी—हुजूर यह सामने तोप ही लगी है या कुछ और?

महल में रहीमन नाम की एक महरी और मर्दों से मोटी-ताजी थी।

महरी ने जो उसकी तरफ इशारा किया तो बेगम साहब खिल-खिलाकर हँस पड़ीं।

रहीमन—क्या पड़ा पाया है बहन गफूरन ?

गफूरन—आज एक नई बात देखने में आई है बहन।

रहीमन—हमको भी दिखाओ। देखें कोई मिठाई है या खिलौना है क्या।

गफूरन—तोप की तोप और औरत की औरत।

रहीमन—(बात समझकर) तुम्हीं लोगों ने तो मिलकर हमें नज़र लगा दी।

बेगम—ऐ आग लगे, अब और क्या मोटी होती, फूल के कुप्पा तो हो गई है!

उधर खोजी ने देखा कि यार लोग रंग नहीं जमने देते तो मौक़ा पाकर आजाद के कदमों पर टोपी रख दी और कहा—भई आज़ाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे लिये जान तक देने को तैयार रहा हूँ। मेरी दो-दो बातें सुन लो।

आज़ाद—मै आपका मतलब समझ गया, मगर कहाँ तक जब्त करूँ ?

खोजी—इस दरबार में मेरे जलील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अख्तियार है।

आज़ाद—जनाब आप मेरे बुजुर्ग हैं, भला मैं आपको ज़लील करूँगा।

ख़ोजी—हाय अफसोस, तुम्हारे लिये जान लड़ा दी और अब इस दरबार में जहाँ रोटियों का सहारा है आप हमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से भी जायँ।

आज़ाद—भई माफ करना, अब तुम्हारी ही-सी कहेंगे।

खोजी—मुझे रंग तो बाँधने दो ज़रा।

आज़ाद—आप रंग जमाएँ, मैं आपकी ताईद करूँगा।

ख्वाजासाहब का चेहरा खिल गया कि अब गप के पुल बाँध दूँगा और जब आजाद मेरा कलमा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना।

नवाब—ख्वाजासाहब यह क्या बातें हो रही हैं हमसे छिप छिपकर!

खोजी—खुदावन्द एक मामले पर बहस हो रही थी।

नवाब—कैसी बहस, किस मामले पर?

खोजी—हुजूर मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिएँ और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी मगर मुल्क की आब-हवा खराब हो जायगी।

मसिनयाबेग—अल्लाह तो यह कहिए कि आप शहर के अन्देशे में दुबले हैं।

खोजी—तुम गौखे हो यह बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाट्री में कितनी तोपें होती हैं? चले वहाँ से बुक़रात की दुम बन के।

नवाब—खोजी है तो सिड़ी मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है।

आज़ाद—इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरबा है।

गफ़ूर—हुज़ूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मालूम हुई हैं।

आज़ाद—साहब सफ़र भी तो इतना दूर-दराज का किया था, कहाँ हिन्दोस्तान कहाँ रूम। खयाल तो कीजिए।

मीरसाहब—क्यों ख्वाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे?

खोजी—एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बातें करनेवाले।

नवाब—भला आसमान वहाँ से कितनी दूर रह जाता है?

खोजी—हुज़ूर बस एक दिन की राह, मगर ज़ीना कहाँ?

नवाब—और क्यों साहब वहाँ से तो खूब मालूम होता होगा कि मेंह कस जगह से आता है ?

खोजी—जनाब पहाड़ की चोटी पर मैं था और मेंह नीचे बरस रहा था।

नवाब—क्यों साहब यह सच है ? अजीब बात है भाई।

आज़ाद—जी हाँ, यह तो होता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ़ दिखाई देता है।

मस्तियाबेग—और जो यह मशहूर है कि बादल तालाबों में पानी पीते हैं।

खोजी—यह तुम-जैसे गधों में मशहूर होगा।

नवाब—भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है।

खोजी—हुजूर ने दरिया डैन्यूब का नाम तो सुना ही होगा, इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज़ नहीं। इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है।

मीरसाहब—एँ, हमें तो यकीन नहीं आता !

खोजी—आप लोग कुएँ के मेढक हैं।

नवाब—मकान के हाते से ! जैसे हमारे मकान का यह हाता ?

खोजी—बल्कि इससे भी छोटा, हुजूर खुदा की खुदाई है, इसमें बन्दे को क्या दखल। और खुदावन्द हमने इस्तम्बोल में एक अजायबखाना देखा।

मीरसाहब—तुमको तो किसी ने धोखे से बन्द नहीं कर दिया।

खोजी—बस इन जांगलुओं को और कुछ नहीं आता।

नवाब—अजी तुम अपना मतलब कहो, उस अजायबखाने में कोई नई बात थी ?

ख़ोजी—हुज़ूर एक तो हमने भैंसा देखा, भैंसा क्या हाथी का पाठा था और नाक के ऊपर एक सींग। इत्तिफ़ाक़ से जिस मकान में वह बन्द था उसकी तीन छड़ें टूट गई थीं। उसे रास्ता मिला तो सिमट सिमटाकर निकला, बस जनाब कुछ न पूछिए, दो हजार आदमी गड़-बड़ एक के ऊपर एक इस तरह गिरे कि बेहोश। कोई चार पाँच सौ आदमी जख्मी हुए। मैंने यह कैफियत देखी तो सोचा अगर तुम भी भागते हो तो बड़ी हँसी होगी। लोग कहेंगे कि यह फ़ौज में क्या करते थे। ज़रा-से भैंसे को देखकर डर गए। बस एक दफा झपटके जो जाता हूँ तो गरदन हाथ आई, बस आ हाथ से गरदन दबाई और दबोचके बैठ गया, फिर लाख लाख जोर उस मारे मगर मैंने हुमसने न दिया। ज़रा गरदन हिलाई और मैंने दबोचा जितने आदमी खड़े थे सब दंग हो गए कि वाह रे पहलवान! आखिर जब मैं देखा कि उसका दम टूट गया तो गरदन छोड़ दी। फिर उसने बहुत चाहा कि उठे मगर हुमस न सका। मुझसे लोग मिन्नतें करने लगे कि उसे कठघरे में डाल दो, ऐसा न हो कि वफरे तो सितम ही कर डाले। इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधियाकर तड़ से गिरा।

मझियावेग—इससे क्या मतलब? आपके खौफ़ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-लेटे क्यों गिर पड़ा?

ख़ोजी—वाही हो, बस हुजूर मैंने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी। उसी कठघरे में फिर बन्द कर दिया।

नवाब—क्यों साहब, यह किस्सा सच है?

आज़ाद—मैं उस वक्त मौजूद न था, शायद सच हो।

मीरसाहब—बस-बस क़लई खुल गई, ग़ज़ब खुदा का, झूठ भी तो कितना! इस वक्त जी चाहता है उठके ऐसा गुद्दा दूँ कि दस गज ज़मीन में धँस जाय।

खोजी—क़सम है खुदा की, जो अब की कोई बात मुँह से निकली तो इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करेगा। तू अपने दिल में समझा क्या है! यह सूखी हड्डियाँ लोहे की हैं।

नवाब—इतने बड़े जानवर से इंसान क्या मुकाबिला कर सकता है।

आज़ाद—हुजूर, बात यह है कि बाज आदमियों को यह कुदरत होती है कि इधर जानवर को देखा उधर उसकी गरदन पकड़ी। ख्वाजासाहब को भी यह तरकीब मालूम है।

नवाब—बस हमको यक़ीन आ गया।

मस्तियाबेग—हाँ खुदावन्द, शायद ऐसा ही हो।

मुसाहब—जब हुजूर की समझ में एक बात आ गई तो आप किस खेत की मूली हैं।

मीरसाहब—और जब एक बात की लिम भी दरियाफ्त हो गई तो फिर उसमें इनकार करने की क्या ज़रूरत?

नवाब—क्यों साहब लड़ाई में तो आपने खूब नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदमियों का खून हुआ होगा?

खोजी—गुलाम से पूछिए, इन्होंने कुल मिलाकर दो करोड़ आदमियों को मारा होगा।

नवाब—दो करोड़!

खोजी—जभी तो रूम और शाम, तूरान और मुलतान, आस्ट्रिया और इँगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ है।

नवाब—ओफ्फोह, खोजी को कितने मुल्कों का नाम याद है!

आजाद—हुजूर, अब इन्हें वह खोजी न समझिए।

खोजी—खुदावन्द मैंने एक दरिया पर अकेले एक हजार आदमियों का मुकाबिला किया।

नवाब—भाई मुझे तो यक़ीन नहीं आता।

मस्तियाबेग—हुज़ूर तीन हिस्से झूठ और एक हिस्सा सच।

मीरसाहब—हम तो कहते हैं सब डींग है।

आज़ाद—नवाब साहब, इस बात की तो हम भी गवाही देते हैं, इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने अख़बार में इनकी तारीफ़ देखी थी और वह अख़बार मेरे पास मौजूद है।

नवाब—तो अब हमको यक़ीन आ गया, जब जनरल आजाद पाशा ने गवाही दी तो फिर सही है।

खोजी—वह मौका ही ऐसा था।

आजाद—नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े जनरलों ने दाँतों अँगुली दबाई है। वहाँ तो सफशिकन भी तुम्हें नज़र आए थे।

खोजी—हुज़ूर यह कहना तो मैं भूल ही गया। जिस वक़्त मैं दुश्मनों का सुथराव कर रहा था, उसी वक़्त सफ़शिकन को एक दरख़्त पर बैठे देखा।

नवाब—लो साहबो सुनो, मेरे सफ़शिकन रूम की फ़ौज में भी जा पहुँचे।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! वाह रे सफ़शिकन, बहादुर हो तो ऐसा हो।

खोजी—खुदावन्द इस डाँट डाट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब—देखा ही नहीं, कम कैसा? अरे मियाँ गफ़ूर ज़रा घर में इत्तला करो कि सफ़शिकन खैरियत से है।

गफ़ूर ड्योढ़ी पर आया। वहाँ खिदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवाब की सादगी पर खिलखिला कर हँस रहे थे।

खिदमतगार—ऐसा उल्लू का पट्ठा भी कहीं न देखा होगा।

बयान किया फिर शहर का जिक्र करने लगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं, बस हुजूर फिर तो यह कैफियत हुई कि दुश्मन किसी लड़ाई में जम ही न सके। उधर रूमियों ने तोपों पर बत्ती लगाई, इधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह, कुछ सुनते हो यारो!

मस्तियाबेग—खुदावन्द जानवर क्या जादू है!

खोजी—भला उसको कोई बटेर कह सकता है! और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनकी शान में इतना सख्त और बेहूदा लफ्ज मुँह से निकालते हैं।

नवाब—मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना है तो अच्छी तरह रहो, वरना अपने घर का रास्ता लो। आज तो लफ़शिकन को जानवर बनाया कल को मुझे जानवर बनाओगे।

मुसाहब—खुदावन्द यह निरे फूहड़ हैं। बात करने की तमीज नहीं।

गफूर—अच्छा तो अब खामोश ही रहिए साहब, कुसूर हुआ।

खोजी—नहीं, सारा हाल तो सुन चुके, मगर तब भी अपनी ही-सी कहे जायँगे, दूसरा अगर इस वक्त जानवर कहता तो गलफड़े चीरकर धर देता, न हुई करौली!

नवाब—जाने भी दो, बेशऊर है।

खोजी—खुदावन्द, खुश्की में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुशकिल है, सो हुजूर तरी की लड़ाई में सफशिकन सबसे बढ़कर रहे। एक दफ़ा का ज़िक्र है कि एक छोटासा दरिया था। इस तरफ़ हम, उस तरफ दुश्मन। मोरचे बन्दी हो गई, गोलियाँ चलने लगीं, बस क्या देखता हूँ कि सफ़शिकन ने एक कंकरी ली और उस पर कुछ पढ़कर इस जोर से फेंकी कि एक तोप के हजार टुकड़े हो गए।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह।

मुसाहब—क्या पूछना है, एक ज़रा-सी कंकरी की यह करामात!

खोजी—अब सुनिए कि दूसरी कंकरी जो पढ़कर फेंकी तो एक और तोप फटी और बहत्तर टुकड़े हो गए। कोई तीन-चार हज़ार आदमी काम आए।

नवाब—इस कंकरी को देखिएगा। अल्लाह-अल्लाह एक हज़ार टुकड़े तोप के और तीन-चार हज़ार आदमी ग़ायब। वाह रे मेरे सफ़शिकन!

खोजी—इस तरह कोई चौदह तोपें उड़ा दीं और जितने आदमी थे सब भुन गए। कुछ न पूछिए हुज़ूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ। अगर एक गोला भी पड़ा होता तो लोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम भी नहीं हुई।

नवाब—बला की कंकरी थी कि तोप के हज़ारों टुकडे कर डाले और हजारों आदमियों की जान ली। भाई ज़रा कोई जाकर सफ़शिकन की काबुक तो लाओ।

इतने में महरी ने फिर आकर कहा—हुज़ूर बड़ा ज़रूरी काम है, ज़रा चलकर सुन लें। नवाबसाहब खोजी को लेकर ज़नानख़ाने में चले। खोजी की आँखों में दोहरी पट्टी बाँधी गई और वह ड्योढ़ी में खड़े किए गए।

बेगम—क्या सफ़शिकन का कोई ज़िक्र था, कहाँ हैं आजकल?

नवाब—यह कुछ न पूछो, रूम जा पहुँचे। वहाँ कई लड़ाइयों में शरीक हुए और दुश्मनों का काफ़िया तंग कर दिया। ख़ुदा जाने यह सब किससे सीखा है?

बेगम—ख़ुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं?

नवाब—वल्लाह, सच कहती हो बेगमसाहब ! इस वक़ तुमसे तो खुश हो गया । कहाँ तोप, कहाँ सफ़शिकन, ज़रा ख़याल तो करो ।

बेगम—अगर पहले से मालूम होता तो सफ़शिकन को हज़ार परदों में छिपाके रखती । हाँ खूब याद आया, वह तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी क़ब्र बनवा दी ।

नवाब—वल्लाह खूब याद दिलाया । सुभान-अल्लाह !

बेगम—यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को ।

नवाब—अगर कहीं यहाँ आ जायँ, और पढ़े-लिखे तो हैं ही, कहीं क़ब्र पर नज़र पड़ गई, बस वक्त यही कहेंगे कि यह लोग मेरी मौत मना रहे हैं, क्या लपाके से क़ब्र बनवा दी । इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालूँ ।

बेगम—जहन्नुम में जाय । इस अफ़ीमची को घर के अन्दर लाने की क्या ज़रूरत थी ।

नवाब—अजी यह वही हैं जिनको हम लोग ख़ोजी-ख़ोजी कहते थे। लड़ाई के मैदान में सफ़शिकन इन्हीं से मिले थे। अगर कहो तो यहाँ बुला लूँ ।

बेगम—ऐ जहन्नुम में जाय मुआ, और सुनो इस अफ़ीमची को घर के अन्दर लाएँगे ।

नवाब—सुन तो लो । पहले तो बूढ़ा, पेट में आँतें न मुँह में दाँत, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बँधी है ।

बेगम—हाँ इसका मुज़ायक़ा नहीं, मगर मैं उन मुए लुङ्गाड़ों के नाम से जलती हूँ, उन्हीं की सोहबत में तुम्हारा यह हाल हुआ ।

नवाब—एँ, क्या खूब !

ख़ोजी—खुदावन्द गुलाम हाज़िर है ।

महरी—मैं तो समझी कि कुएँ में से कोई बोला।

बेगम—क्या यह हरदम पीनक में रहता है ?

नवाब—ख्वाजासाहब क्या सो गए ?

दरबान—ख्वाजासाहब, देखो सरकार क्या फ़रमाते हैं ?

खोजी—क्या हुक्म है खुदावन्द !

बेगम—देखा, खुदा जानता है ऊँघ रहा था। मैं तो कहती ही थी।

नवाब—भाई जरा सफ़शिकन का हाल तो कह चलो ?

खोजी—खुदावन्द तो अब आँखें तो खुलवा दीजिए।

बेगम—क्या कुतिया के पिल्ले की आँखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं।

नवाब—पहले हाल तो बयान करो। ज़रा तोपवाला जिक्र फिर करना, यहाँ किसी को यक़ीन ही नहीं आता।

खोजी—हुज़ूर क्योंकर यक़ीन आए, जब तक अपनी आँखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब—तो भाई हमने क्योंकर मान लिया, इतना तो सोचो।

खोजी—खुदा ने सरकार को देखनेवाली आँखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे, हुज़ूर यह कैफ़ियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ़ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफ़शिकन ने एक ककरी उठाकर, खुदा जाने क्या जादू फूँक दिया कि इधर ककरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और हर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान ली।

बेगम—इस झूठ को आग लगे, अफ़ीम पी-पीके निगोड़ों को क्या-क्या सूझती है। बैठे-बैठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गए। खुदा का डर ही नहीं।

नवाब—तुम्हे यक़ीन ही न आए तो कोई क्या करे।

बेगम—चलो बस खामोश रहो, ज़रा-सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले। खुदा जानता है, तुम अपनी फ़स्द खुलवाओ।

नवाब—अब खुदा जाने हमें जनून है या तुम्हें।

खोजी—खुदावन्द बहस से क्या फ़ायदा! औरतों की समझ में यह बातें नहीं आ सकतीं।

बेगम—महरी, ज़रा दरबान से कह इस निगोड़े अफ़ीमची को जूते मारके निकाल दे। ख़बरदार जो इसको कभी ड्योढ़ी में आने दिया।

खोजी—सरकार तो नाहक ख़फ़ा होती हैं।

बेगम—मालूम होता है आज मेरे हाथों तुम पिटोगे, अरे महरी खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसेनी दरबान ने आकर खोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला।

खोजी—बस-बस, देखो कान-वान की दिल्लगी अच्छी नहीं।

महबूबन—अब चलता है या मचलता है?

खोजी—(टोपी ज़मीन से उठाकर) अच्छा अगर आज जीते बच जाओ तो कहना। अभी एक थप्पड़ दूँ तो दम निकल जाय।

इतना कहना था कि दूसरी महरी आ पहुँची और कान पकड़कर चपतियाने लगी। खोजी बहुत बिगड़े मगर सोचे कि अगर सब लोगों को मालूम हो जायगा कि महरियों की जूतियाँ खाईं तो बेढब होगी। झाड़-पोंछकर बाहर आए और एक पलंग पर लेट रहे।

खोजी के जाने के बाद बेगमसाहब ने नवाब को खूब ही आड़े हाथों लिया। जरा सोचो तो कि तुम्हें हो क्या गया है। कहाँ बटेर और कहाँ तोप, खुदा झूठ न बोलाए तो बिल्ली खा गई हो, या इन्हीं मुसाहबों में से

किसी ने निकालकर बेच लिया होगा और तुम्हें पट्टी पढ़ा दी कि वह तो सफ़शिकन थे। आखिर तुम किसी अपने दोस्त से तो पूछो। देखो और लोगों की क्या राय है?

नवाब—खुदा के लिये मेरे मुसाहबों को न कोसो, चाहे मुझे बुरा-ला कह लो।

बेगम—इन मुफ्तख़ोरों से खुदा समझे।

नवाब—ज़रा आहिस्ता आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन न लें, ो सबके सब चलते हों और मैं अकेला मक्खियाँ मारा करूँ।

बेगम—ऐ है, ऐसे बड़े खरे हैं, ऐ तुम जूतियाँ मारके निकालो तो ी चूँ न करें। जो सब निकल जायँ तो होगा क्या? वह कल जाते हों ो आज ही जायँ।

महरी—हुज़ूर तो चूक गईं, ज़री इस मुए ख़ोजी की कहानी तो ुनी होतीं। हँसते-हँसते लोट जातीं।

बेगम—सच, अच्छा तो उसको बुलाओ ज़री, मगर कह देना कि झूठ ोला और मैंने खबर ली।

नवाब—या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही ोलेगा। इतने दिनों से दरबार में रहता है, कभी झूठ नहीं बोला तो अब यों झूठ बोलने लगा और आखिर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से सको मिल क्या जायगा।

बेगम—अच्छा बुलाओ मैं भी ज़रा सफ़शिकन का हाल सुनूँ।

महरी ने जाकर खोजी को बुलाया। ख्वाजासाहब झल्लाए हुए ालंग पर पड़े थे। बोले—जाकर कह दो अब हम वह ख़ोजी नहीं हैं जो हले थे, आनेवाले और जानेवाले, बुलानेवाले और बुलवानेवाले, बको कुछ कहता हूँ।

आखिर लोगों ने समझाया तो ख्वाजासाहब ड्योढ़ी में आए और बोले—आदाब-अर्ज करता हूँ सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नज़र ग़रीब के हाल पर होगी। अभी कुछ इनाम बाकी हो तो अब मिल जाय।

बेगम—सफ़शिकन का कुछ हाल मालूम हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे।

खोजी—वाह री किस्मत, हिन्दोस्तान से बम्बई गए वहाँ सब-के-सब 'हुज़ूर हुज़ूर' करते थे। तुर्की और रूस में कोहकाफ की परियाँ हाथ बाँधे हाज़िर रहती थीं। मिस रोज़ एक एक बात पर जान देती थी, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात-भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूँ।

ख्वाब में एक नूर आता है नज़र,
याद में तेरी जो सो जाते हैं हम।

बेगम—अब बताओ, है पक्का अफ़ीमी या नहीं, मतलब की बात एक न कही, वाही-तबाही बकने लगा।

ख़ोजी—हुज़ूर एक दफे का जिक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फौज। हमको मालूम नहीं कि रूसी मौजूद हैं। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फौज तो खाने-पीने का इन्तज़ाम करने लगी और मैं अफीम घोलने लगा कि एकाएक पहाड़ पर से तालियों की आवाज़ आई। मैं प्याली ओठों तक ले गया था कि ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी। हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गए। मगर वाह रे मैं खुदा गवाह है प्याली हाथ से न छूटी। एकाएक देखता हूँ कि सफ़शिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बैठकर चोंच अफीम से तर की, और उसके दो क़तरे पहाड़ पर गिरा दिए। बस धमाके की आवाज हुई और

पहाड़ फट गया। रूस की सारी फ़ौज उसमें समा गई, मगर हमारी तरफ का एक आदमी भी न मरा। मैंने सफ़शिकन का मुँह चूम लिया।

बेगम—भला सफ़शिकन बातें किस जबान में करते हैं?

खोजी—हुज़ूर एक ज़बान हो तो कहूँ। उर्दू, फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी।

बेगम—क्या और ज़बानों के नाम नहीं याद हैं?

खोजी—अब हुज़ूर से कौन कहे।

नवाब—अब यक़ीन आया कि अब भी नहीं? और जो कुछ पूछना हो पूछ लो।

बेगम—चलो बस चुपके बैठे रहो। मुझे रंज होता है कि इन हराम-खोरों के पास बैठ-बैठ तुम कहीं के न रहे।

नवाब—हाय अफ़सोस, तुम्हें यक़ीन ही नहीं आता, भला सोचो तो यह सब-के-सब मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे। खोजी को मैं कुछ इनाम दे देता हूँ या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम?

खोजी—खुदावन्द, अगर इसमें ज़रा भी शक हो तो आसमान फट पड़े। झूठ बात तो ज़बान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले।

बेगम—अच्छा ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गए या झूठ-मूठ के फिकरे ही बनाया करते हो।

खोजी—हुज़ूर मालिक हैं, जो चाहे कह दें, मगर गुलाम ने जो बात अपनी आँखों देखी, वह बयान की। अगर फ़र्क़ हो तो फाँसी का हुक्म दे दीजिए।

एक बूढ़ी महरी ने खोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा—हुज़ूर इसमें ताज्जुब की कौन बात है, हमारे महल्ले में एक बड़ा काला कुत्ता रहा करता था। महल्ले के लड़के उसे मारते, कान पकड़कर खींचते

मगर वह चूँ भी नहीं करता था। एक दिन महल्ले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका। ढेला उसके कान में लगा और कान से खून बहने लगा। चौकीदार दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा। यह कुत्ता नहीं है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया और अपना घाव दिखाकर कहा या तो हमीं नहीं, या तुम्हीं नहीं। सवेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोसवालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अब देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ही नहीं। दोपहर को चौकीदार कुएँ पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूँकने लगा।

बेगम—सच ?

महरी—हुजूर अल्लाह बचाए इस बला से, कुत्ते के भेस में क्या जाने कौन था।

नवाब—अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफ़शिकन के कमाल को न मानोगी ?

बेगम—हाँ ऐसी बातें तो हमने भी सुनी हैं मगर...

ख़ोजी—अगर-मगर की गुंजायश नहीं, ग़ुलाम आँखों देखी कहता है। एक किस्सा और सुनिए, आपको शायद इसका भी यकीन न आए। सफ़शिकन मेरे सिर पर आकर बैठ गए और कहा, रूसियों की फौज में धँस पड़ो। मेरे होश उड़ गए। बोला, साहब आप हैं कहाँ ? मेरी जान जाएगी आपके नज़दीक दिल्लगी है मगर वह सुनते किसकी हैं, कहा चलो तो तुम ! आधी रात थी, घटा छाई हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा। बस रूसी फौज में जा पहुँचा, देखा कोई गाता है, कोई सोता है। हम सबको देखते हैं मगर हमें कोई नहीं देखता। सफ़शिकन अस्तबल की तरफ चले और फुदक्के एक घोड़े की गरदन पर जा बैठे।

घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गरदन पर बैठते हैं, जमीन पर लोटने लगता है। इस तरह कोई सात हज़ार घोड़े उसी दम धम-धम करके लोट गए। फौज से निकले तो आपने पूछा, कहो आज की दिल्लगी देखी, कितने सवार वेकार हुए!

मैं—हुज़ूर पूरे सात हज़ार!

सफ़शिकन—आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जायगी, चलो अपने पड़ाव पर चलें। चलते-चलते जब थक जाओ तो हमसे कह दो।

मैं—क्यों आपसे क्यों कह दूँ?

सफ़शिकन—इस लिये कि हम उतर जायँ।

मैं—वाह मुट्ठी-भर के आप, भला आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊँगा। आप क्या और आपका बोझ क्या?

इतना सुनना था कि खुदा जाने ऐसा कौनसा जादू कर दिया कि मेरा क़दम उठाना मुहाल हो गया। मालूम होता था सिर पर पहाड़ का बोझा लदा हुआ है। बोला हुज़ूर अब तो बहुत ही थक गया, पैर ही नहीं उठते, बस फुर्र से उड़ गए। ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस बीस करोड़ मन बोझा उतर गया।

नवाब—यह तो भाई नई नई बातें मालूम होती जाती हैं। वाह रे सफ़शिकन!

ख़ोजी—हुज़ूर खुदा जाने किस औलिया ने यह भेस बदला है।

बेगमसाहब ने इस वक्त तो कुछ न कहा मगर ठान ली कि आज रात को नवाबसाहब को खूब आड़े हाथों लूँगी। नवाबसाहब ने समझा कि बेगमसाहब को सफशिकन के कमाल का यकीन आ गया। बाहर आकर बोले—वल्लाह तुमने तो ऐसा समा बाँध दिया कि अब बेगमसाहब को उम्र-भर शक न होगा।

खोजी—हुज़ूर सब आँखों देखी बात बयान की है।

नवाब—यही तो मुशकिल है कि वह सच्ची बातों को भी बनावट समझती हैं।

ख़ोजी—समझ मे नहीं आता मुझसे क्यों इतनी नाराज हैं।

नवाब—नाराज़ नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पढे-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है, और भई मैं सोचता हूँ कि आखिर कोई झूठ क्यो बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फायदा ही क्या है।

खोजी—ऐ सुभान-अल्लाह, क्या बात हुज़ूरने पैदा की है! सच मुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा। एक तो झूठा कहलाए, दूसरे बेआबरू हो।

नवाब—भई हम इसान को खूब पहचानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे। मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको दूसरे सफ़शिकन को।

ख़ोजी—खुदावन्द मैं यह न मानूँगा, हुज़ूर की नज़र बड़ी बारीक है।

नवाबसाहब खोजो की बातों से इतने खुश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिए बाहर आए। मुसाहबों ने जो इतनी बेतकल्लुफी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे—

मस्तियाबेग—एँ, मियाँ खोजी ने तो जादू कर दिया यारो!

गफ़ूर—ज़रूर किसी मुल्क से जादू सीख आए हैं।

मस्तियाबेग—तजरबाकार हो गया न, अब इसका रंग जम गया।

गफ़ूर—कैसा कुछ, अब तो सोलहों आने के मालिक हैं।

मिरज़ा—अरे मियाँ दोनों हाथ में हाथ देकर निकले, वाह री किस्मत! मगर यह खुश किस बात पर हुए?

गफ़ूर—इनको अभी तक यही नहीं मालूम, बताइए साहब ?

मस्तियाबेग—मियाँ अजब कोढ़मग़ज़ हो, कहने लगे खुश किस बात
हुए। सफ़शिकन की तारीफ़ों के पुल बाँध दिए। सूझ ही तो है, अब
ास चाहें कि उसका रंग फीका कर दें मुमकिन नहीं।

मिरज़ा—इस वक्त तो ख़ोजी का दिमाग़ चौथे आसमान पर होगा।

मस्तियाबेग—अजी, बल्कि और उसके भी पार, सातवें आसमान पर।

गफ़ूर—मैं बाग़ में गया था, देखा नवाबसाहब मोढ़े पर बैठे हैं और
ोजी तिपाई पर बैठा हुआ, ख़ास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है।

मिरज़ा—सच, तुम्हें ख़ुदा की कसम!

गफ़ूर—चलकर देख लीजिए न, बस जादू कर दिया। यह वही ख़ोजी
जो चिलमें भरा करते थे मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए। हैं

मिरज़ा—खोजी को सब-के-सब मिलकर मुबारकबाद दो और उनसे
देया दावत लो, अब इससे बढ़कर कौन दरजा है ?

इतने में नवाबसाहब खोजी को लिए हुए दरबार में आए, मुसाहब
खड़े हुए। ख्वाजासाहब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाद
बोले—हज़रत, आपकी सोहबत में तो ख्वाजासाहब पारस हो गए।

आज़ाद—जनाब यह सब आपकी ख़िदमत का असर है। मेरी
हबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिर्दी करते बरसों
ुर गए।

नवाब—वाह, अब तो ख्वाजासाहब मेरे उस्ताद है जनाब!

मस्तियाबेग—खुदावन्द यह क्या फ़रमाते हैं। हुज़ूर के सामने खोजी
ी क्या हस्ती है ?

नवाब—क्या बकता है ? खोजी की तारीफ से तुम सब क्यों जले
रते हो ?

मिरजा—खुदावन्द यह मस्तियावेग तो दूसरों को देखकर हमेशा जलते रहते हैं।

ग़फ़ूर—यह परलेसिरे के गुस्ताख हैं, बात तो समझे नहीं, जो कुछ मुँह में आया बक दिए। आखिर ख्वाजासाहब बेचारे ने इनका क्या बिगाड़ा है।

नवाब—मुझसे सुनो साहब, दिल में पुरानी कुदूरत है।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! हुजूर, बस यही बात है।

खोजी—हुजूर इसका खयाल न करें, यह लोग जो चाहे कहें, भाई ग़फ़ूर ज़रा-सा पानी पिएँगे।

नवाब—ठण्डा पानी लाओ ख्वाजासाहब के वास्ते।

खिदमतगार सुराही का झला ठण्डा पानी लाया, चाँदी के कटोरे में पानी दिया। जब ख्वाजासाहब पानी पी चुके तो नवाबसाहब ने पानदान से दो गिलौरियाँ निकालकर खास अपने हाथ से खोजी को दीं।

मिरज़ा—मैंने मस्तियाबेग से हजार बार कहा कि भाई तुम किसी को देखके जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख्वाहमख्वाह के लिये अपने को क्यों हलकान करते हो।

नवाब—मुझे इस वक्त उसकी बातें बहुत नागवार मालूम हुईं।

मुसाहब—जानते हैं कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपने हरकत से बाज नहीं आते।

मुसाहब लोग तो बाहर बैठे सलाहें कर रहे थे, इधर दरबार में नवाबसाहब आजाद और खोजी में यूरोप के रईसों का जिक्र होने लगा। आजाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ़ की।

नवाब—क्यों साहब हम लोग भी उन रईसों की तरह रह सकते हैं?

आज़ाद—बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए। आपकी सोहबत

चण्डूबाज़, मदकिए-चरसिए इस कसरत से है कि शायद ही कोई इनसे
ाली हो। यूरोप के रईसों के यहाँ ऐसे आदमी फटकने भी न पाएँ।

नवाब—कहिए तो ख्वाजासाहब के सिवा और सबको निकाल दूँ।

खोजी—निकालिए चाहे रहने दीजिए मगर इतना हुक्म ज़रूर दे
ीजिए कि आपके सामने दरबार में न कोई चण्डू के छींटे उड़ाए, न
दक के दम लगाए और न अफ़ीम घोले।

आजाद—दूसरी बात यह है कि यह खुशामदी लोग आपकी झूठी
ारीफ़ें कर-करके खुश करते हैं। इनको झिड़क दीजिए और इनकी ख़ुशामद
र खुश न हूजिए।

नवाब—आप ठीक कहते हैं। वल्लाह आपकी बात मेरे दिल में बैठ
ाई। यह सब भरें दे-देकर मुझे बिलटाए देते हैं।

आज़ाद—आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं
कि आप खुशामदियों पर लुटाएँ। इसको इस तरह काम में लाएँ कि सारी
दुनिया में नहीं तो हिन्दोस्तान-भर में आपका नाम हो जाय। खैरात
खाना कायम कीजिए, अस्पताल बनवाइए, आलिमों की क़द्र कीजिए,
मैंने आपके दरबार में किसी आलिम-फ़ाज़िल को नहीं देखा।

नवाब—बस आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूँ

आज़ाद—अपनी आदतें भी बदल डालिए, आप दिन को ग्यारह बजे
सोकर उठते हैं और हाथ-मुँह धोकर चण्डू के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद
इन फ़िकरेबाज़ों से चुहल होती है। सुबह का खाना आपको तीन बजे
नसीब होता है। आप फिर आराम करते हैं तो शाम से पहले नहीं उठते।
फिर वही चण्डू और मदक का बाजार गर्म होता है। कोई दो बजे रात
को आप खाना खाते हैं, अब आप ही इंसाफ़ कीजिए कि दुनिया में
आप कौनसा काम करते हैं।

नवाब—इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया।

आजाद—सवेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अखबार पढ़िए, भले आद मियों की सोहबत में बैठिए, अच्छी अच्छी किताबें पढ़िए, ज़रूरी कागज़ों को समझिए फिर देखिए कि आपकी जिन्दगी कितनी सुधर जाती है।

नवाब—खुदा की कसम आज मे ऐसा ही करूँगा, एक-एक हर्फ़ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा, बड़ा झूठा आदमी है।

खोजी—हुज़ूर मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गए, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फिर चाहे जमीन और आसमान एक तरफ हो जाय आप उसके खिलाफ़ कभी न करेंगे। बरसों से यही देखता आता हूँ।

आज़ाद—एक इश्तहार दे दीजिए कि लोग अच्छी-अच्छी किताबें लिखें, उन्हें इनाम दिया जायगा, फिर देखिए आपका कैसा नाम होता है।

नवाब—मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहबों में और ही बातें हो रही थीं—

मस्तियावेग—वल्लाह आज तो अपना खून पीकर रह गया यारो!

मिरज़ा—देखते हो किस तरह झिडक दिया?

मस्तियावेग—झिड़क क्या दिया, बस कुछ न पूछो, मैं जान-बूझकर चुप हो रहा, नहीं वेढब हो जाती। किसी ने अपनी इज्जत नहीं वेची है। और अब आपस में सलाहें हो रही हैं। खोजी ने सबको बिलटाया।

मस्तियावेग—कोई लाख कहे, हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल है।

गफ़ूर—मियाँ इसमें क्या शक है, यह जादू नहीं तो है क्या?

मिरज़ा—अजी उल्लू का गोश्त नवाबसाहब को न खिला दिया हो तो नाक कटवा डालूँ। इन लोगों ने मिलकर उल्लू का गोश्त खिलवा दिया है जभी तो उल्लू बन गए, अब उनसे कहे कौन ?

मस्तियाबेग—कहके बहुत खुश हुए कि अब किसी दूसरे को हिम्मत होगी।

गफ़ूर—अब तो कुछ दिन खोजी की खुशामद करनी पड़ेगी।

मस्तियाबेग—हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है।

मिरजा—फिर निकाले जाओगे, यहाँ रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से वैर ?

मस्तियाबेग—दो-चार दिन रहके यहाँ का रंग-ढंग देखते हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारा इस्तीफा है, ऐसी नौकरी से बाज़ आए। बराबर-वालों की खुशामद हमसे न हो सकेगी।

मीरसाहब—बराबरवाले कौन ? तुम्हारे बराबरवाले होंगे। हम तो खोजी को ज़लील समझते हैं।

गफ़ूर—अरे साहब अब तो वह सबके अफ़सर हैं और हम तो उन्हें गुड़गुड़ी पिला चुके। आप लोग उन्हें मानें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं।

मिरजा—सौ बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं भाई जान किसी को इसका गुमान भी था कि खोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठाएँगे, मगर अब आँखों देख रहे हैं।

नवाब साहब बाहर आए तो इस ढंग से कि उनके हाथ में एक छोटीसी गुड़गुड़ी और ख्वाजासाहब पी रहे हैं। मुसाहबों के रहे-सहे होश भी उड़ गए। ओफ्फोह, सरकार के हाथ में गुड़गुड़ी और यह टुकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को

भी अपने बराबर बिठाया। मुसाहब सन्नाटे में आ गए। कोई चूँ तक नहीं करता, सबकी निगाह ख़ोजी पर है। वारे मीरसाहब ने हिम्मत करके बातचीत शुरू की—

मीरसाहब—ख़ुदावन्द, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी ख़ुशबू आ रही है।

नवाब—हाँ आज का दिन इसी लायक़ है कि कोई इल्मी बहस हो।

मीरसाहब—ख़ुदावन्द, आज का दिन तो गाना सुनने के लिये बहुत अच्छा है।

नवाब—नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए, ख़्वाजासाहब आप कोई बहस शुरू कीजिए।

मस्तियाबेग—(दिल में) इनके बाप ने भी कभी इल्मी बहस की थी?

मिरजा—हुज़ूर ख्वाजासाहब की लियाकत में क्या शक है, मगर...।

नवाब—अगर-मगर के क्या मानी, क्या ख़्वाजासाहब के आलिम होने में आप लोगों को कुछ शक है?

मिरजा—किस इल्म की बहस कीजिएगा ख़्वाजासाहब? इल्म का नाम तो मालूम हो।

खोजी—हम इल्म जालोजी में बहस करते हैं, बतलाइए इस इल्म का क्या मतलब है?

मिरज़ा—किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी, यह जालोजी क्या बला है?

नवाब—जब आपको इस इल्म का नाम तक नहीं मालूम तो बहस क्या ख़ाक कीजिएगा। क्यों ख़्वाजासाहब सुना है कि दरिया में जहाजों के डुबो देने के औजार भी अँगरेज़ों ने निकाले हैं। यह तो ख़ुदाई करने लगे।

खोजी—इस औजार का नाम तारपेडो है। दो जहाज हमारे सामने डुबो दिए गए। पानी के अन्दर ही अन्दर तारपेडो छोड़ा जाता है, वस जैसे ही जहाज़ के नीचे पहुँचा वैसे ही फटा, फिर तो जनाब जहाज के करोड़ों टुकडे हो जाते हैं।

मस्तियाबेग—और क्यों साहब, यह बम का गोला कितनी दूर का मोड करता है?

खोजी—बम के गोले कई क़िस्म के होते हैं, आप किस क़िस्म का हाल दरियाफ्त करते हैं?

मस्तियाबेग—अजी यही बम के गोले।

खोजी—आप तो यही-यही करते हैं, उसका नाम तो बतलाइए?

नवाब—क्यों जनाब लड़ाई के वक्त आदमी के दिल का क्या हाल होता होगा? चारों तरफ़ मौत ही मौत नजर आती होगी?

मिरजा—मै अर्ज करूँ हुजूर, लड़ाई के मैदान में आकर जरा...।

नवाब—चुप रहो साहब तुमसे कौन पूछता है, कभी बन्दूक की सूरत भी देखी है या लडाई का हाल ही बयान करने चले!

खोजी—जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का ज़रा भी खौफ नहीं मालूम होता, आपको यकीन न आएगा, मगर मैं सही कहता हूँ कि इधर फौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमडने लगा। कैसा ही बुज दिल हो मुमकिन नहीं कि तलवार खींचकर फौज के बीच में धँस न जाय। नगी तलवार हाथ में ली और दिल बढ़ा। फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आएँ तो क्या मजाल कि आदमी हट जाय।

खोजी यही बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा—हुजूर बाहर एक साहब आए हैं और कहते हैं नवाबसाहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाबसाहब ने कहा—लाजासाहेन आप

जरा जाकर दरियाफ्त कीजिए कि कौन साहब है। खोजी बड़े गुरूर के साथ उठे और बाहर जाकर साहब को सलाम किया। मालूम हुआ कि यह पुलीस का अफ़सर है, जिले के हाकिम ने उसे आजाद का हाल दरियाफ्त करने के लिये भेजा है।

खोजी—आप साहब से जाकर कह दीजिए, आज़ाद पाशा नवाब साहब के मेहमान हैं और उनके साथ ख्वाजा साहब भी हैं।

अफ़सर—तो साहब उससे मिलने वाला है। अगर आज उसको फ़ुरसत हो तो अच्छा नहीं तो जब उसका जी चाहे।

खोजी—मैं उनसे पूछकर आपको लिख भेजूँगा।

इंस्पेक्टर साहब चले गए तो मस्तियाबेग ने कहा—क्यों साहब यह बात हमारी समझ में नहीं आई कि आपने आज़ाद पाशा से इसी वक्त क्यों न पूछ लिया। एक ओहदेदार को दिक करने से क्या फ़ायदा। खोजी ने त्योरियाँ बदलकर कहा—तुमसे हजार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो। मगर तुम सुनते ही नहीं, तुम तो हो अक्ल के दुश्मन, हम चाहते हैं कि आज़ाद पाशा जब किसी हाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाकात हो। इस वक्त यह वरदी नहीं पहने हैं। कल जब यह फ़ौजी वरदी पहनकर और तमगे लगाकर हाकिम-जिला से मिलेंगे तो वह खड़ा होकर ताजीम करेगा।

नवाब—अब समझे या अब भी गधे ही बने हो। ख्वाजा साहब को तौलने चले हैं! वल्लाह ख्वाजासाहब आपने खूब सोची। अगर इस वक्त कह देते कि आज़ाद यह क्या बैठे हैं तो कितनी किरकिरी होती।

इतने में खाने का वक्त आ पहुँचा। खासा चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक्त खोजी ने एक किस्सा छेड़ दिया—हुजूर एक बार जब

अँगरेजों की डच लोगों से मुठभेड हुई तो अँगरेजी अफसर ने कहा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ के जहाजों को ले आए तो हमारी फतह हो सकती है, नहीं तो हमारा बेड़ा तबाह हो जायगा। इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पडे। उनके साथ पन्द्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूदा।

नवाब—समुद्र में, ओफ्फ़ोह!

खोजी—खुदावन्द उनसे बढकर दिलेर और कौन हो सकता है? जब अफसर ने मल्लाहों से कहा, इस लडके को रोक लो। लड़के ने कहा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान कुरबान हो जाय तो क्या मुज़ायका? यह कहकर वह लड़का तैरता हुआ निकल गया।

नवाब—ख्वाजासाहब कोई ऐसी फ़िक्र कीजिए कि हमारी आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह क़ायम रहे।

खोजी—भाई सुनो, हमें खुशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साहब-सलामत रखना है तो रखिए वरना आप अपने घर खुश और मैं अपने घर खुश।

नवाब—यार तुम तो बेवजह बिगड़ खडे होते हो।

खोजी—साफ तो यह है कि जो तजरबा हमको हासिल हुआ है उस पर हम जितना गरूर करें बजा है।

नवाब—इसमें क्या शक है जनाब।

खोजी—आप खूब जानते हैं कि आलिम लोग किसी का परवा नहीं करते। मुझे दुनिया में किसी से दबके चलना नागवार है, और हम क्यों किसी से दबें। लालच हमें छू नहीं गई, हमारे नजदीक बादशाह और फकीर दोनों बराबर। जहां कहीं गया, लोगों ने सिर और आंखों पर बिठाया। रूम, मिस्र, रूस वगैरह मुल्कों में मेरी जो कदर हुई वह सारा

जमाना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की कदर नहीं। वह देखिए, नालायक मस्तियावेग आपके सामने चण्डू का दम लगा रहा है। ऐसे बदमाशों से मुझे नफ़रत है।

नवाब—कोई है, इस नालायक को निकाल दो यहाँ से।

मुसाहिब—हुजूर वो आज नाहक ख़फ़ा होते हैं, इस दरबार में तो रोज़ ही चण्डू के दम लगा करते हैं। इसने किया तो क्या गुनाह किया!

नवाब—क्या बकते हो, हमारे यहाँ चण्डू का दम कोई नहीं लगाता।

खोजी—हमें यहाँ आते इतने दिन हुए, हमने कभी नहीं देखा। चण्डू पीना शरीफ़ों का काम ही नहीं।

मिरजा—तुम तो ग़जब करते हो खोजी, जमाना-भर के चण्डूबाज, अफीमची, अब आए हो वहाँ से बढ़-बढ़के बातें बनाने। जरा सरकार ने मुँह लगाया तो ज़मीन पर पाँव ही नहीं रखते।

नवाब—गफ़ूर इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो। ख़बरदार जो आज से कोई यहाँ आने पाया।

मीरसाहब—खुदावन्द बस, अब कुछ न कहिएगा, हम लोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची है।

नवाब—निकालो इन सबों को, अभी-अभी निकाल दो।

ख्वाजा साहब शह पाकर उठे और एक कतारा लेकर मस्तियावेग पर जमाया। वह तो झल्लाया था ही, खोजी को एक चाँटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गए, उन्होंने मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाकी सब भाग खड़े हुए। खोजी झाड़-पोंछकर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को एक दरख्त में बाँधकर दो सौ कोड़े लगाए जायँ, नमकहराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है। बदन में कीड़े न पड़ें तो सही।

आज़ाद—हाँ, और इस वक्त तो बग़ैर आईने के देख रहा हूँ आपका नाम ?

आदमी—मुझे आज़ाद मिरज़ा कहते हैं।

आज़ाद—तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पहचाना ?

मिरज़ा—मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अखबारों मे आपका हाल पढ़ता रहा हूँ।

आज़ाद—इस वक्त आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

मिरज़ा—और अभी और भी खुशी होगी। सुरैयाबेगम को तो आप जानते हैं ?

आज़ाद—हाँ-हाँ, आपको उनका कुछ हाल मालूम है ?

मिरज़ा—जी हाँ, आपके धोखे में मैं उनके यहाँ पहुँचा था, और अब तो वह बेगम हैं। एक नवाबसाहब के साथ उनका निकाह हो गया है।

आज़ाद—क्या अब दूर से भी मुलाकात न होगी ?

मिरज़ा—हरगिज़ नहीं।

आज़ाद—बे अख्तियार जी चाहता है कि मिलकर बातें करूँ।

मिरज़ा—कोशिश कीजिए, शायद मुलाकात हो जाय, मगर उम्मेद नहीं।

एकसौ पाँचवाँ परिच्छेद

आज़ाद सुरैयाबेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते हैं कि एक बाग़ में कुछ लोग एक रईस की सोहबत में बैठे गपें उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैयाबेगम के नवाबसाहब का कुछ पता

चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके करीब गए। आजाद को देखते ही वह रईस चौंककर खडा हो गया और उनकी तरफ़ देखकर बोला—वल्लाह आपसे मिलने का बहुत शौक था। शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई। फर्माइए आपकी क्या ख़िदमत करूँ ?

मुसाहब—हुजूर जण्डैलसाहब को कोई ऐसी चीज पिलाइए कि रूह तक ताज़ा हो जाय।

खाँसाहब—मुझे पारसाल सबलबायु का मरज हो गया था। दो महीने डाक्टर का इलाज हुआ। खाक फायदा न हुआ। बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाए, मरज और भी बढ़ गया। पडोस में एक वैदराज रहते हैं, उन्होंने कहा, मैं दो दिन में अच्छा कर दूँगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आखिर एक दोस्त ने कहा—भाई तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो। बस हुजूर दो बार बराण्डी पिलाई। दो छटाँक शाम को, दो छटाँक सुबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन मै बिलकुल चङ्गा हो गया।

रईस—बराण्डी के बडे-बडे फ़ायदे लिखे हैं।

दीवान—सरकार, पेशाब के मरज़ में तो बराण्डी अकसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फ़ायदा करती है !

खाँसाहब—हुजूर आँखों देखी कहता हूँ। एक सवार को मिर्गी आती थी, सैकड़ों इलाज किए कुछ असर न हुआ, आखिर एक आदमी ने कहा, हुजूर हुक्म दें तो एक दवा बताऊँ। दावा करके कहता हूँ कि कल ही मिर्गी न रहे। खुदावन्द दो छटाँक शराब दीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिलाइए अगर एक दिन मे फ़ायदा न हो तो जो-चोर की सजा वह मेरी सज़ा।

नवाब—यह सिफ़त है इसमें !

मुसाहब—हुजूर गँवारों ने इसे झूठ-मूठ बदनाम कर दिया है। क्या जण्डैलसाहब आपको कभी इत्तफ़ाक़ हुआ है ?

आजाद—वाह, क्या मैं मुसलमान नहीं हूँ।

नवाब—क्या खूब जवाब दिया है सुभान-अल्लाह !

इतने में एक मुसाहब जिनको औरों ने सिखा-पढ़ाकर भेजा था, जुग़ा पहने और अमामा बाँधे आ पहुँचे। लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताज़ीम की और बुलाकर बैठाया।

नवाब—कैसे मिजाज हैं मौलाना साहब ?

मौलाना—खुदा का शुक्र है।

मुसाहब—क्यों मौलानासाहब आपके खयाल में शराब हलाल है या हराम ?

मौलाना—अगर तुम्हारा दिल साफ़ नहीं तो हजार बार हज करो कोई फ़ायदा नहीं। हरएक चीज़ नीयत के लिहाज़ से हलाल या हराम होती है।

आज़ाद—जनाब हमने हर क़िस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परहेज नहीं किया, आप लोग शौक से पिएँ, मेरा कुछ ख़याल न करें।

नवाब—नीयत की सफ़ाई इसी को कहते हैं। हज़रत आजाद, आपकी जितनी तारीफ़ सुनी थी, उससे कहीं बढ़कर पाया।

एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बर्फ़ लाए और दौर चलने लगे। जब सरूर जमा तो गप्पें उड़ने लगीं—

खाँसाहब—खुदावन्द एक बार नैपाल की तराई में जाने का इत्तफ़ाक़ हुआ। चौदह आदमी साथ थे, वहाँ जंगल में शहद कसरत से है और शहद की मक्खियों की अजब ख़ासियत है कि बदन पर जहाँ कहीं बैठतीं

हैं दर्द होने लगता है। मैंने वहाँ के वाशिन्दों से पूछा, क्यों भाई इसकी कुछ दवा भी है? कहा, इसकी दवा शराब है। हमारे साथियों में कई ब्राह्मण भी थे। वह शराब को छू न सकते थे। हमने दवा के तौर पर पी, हमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी तक झींक रहे हैं।

नवाब—वल्लाह इसके फ़ायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर हलाल होती तो क्या कहना था।

मुसाहब—ख़ुदावन्द अब तो सब हलाल है।

ख़ाँसाहब—ख़ुदावन्द, हैजे की दवा, पेचिश की दवा, बवासीर की दवा, दमे की दवा यहाँ तक कि मौत की भी दवा।

दीवान—ओ हो हो मौत की दवा!

नवाब—ख़बरदार, सब-के-सब ख़ामोश, बस कह दिया।

दीवान—ख़ामोश! ख़ामोश!

ख़ाँसाहब—तप की दवा, सिर-दर्द की दवा, बुढ़ापे की दवा।

नवाब—यह तुम लोग बहकते क्यों हो? हमने भी तो पी है। हजरत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी। तब से क्या मजाल कि मेरी जबान से एक बेहूदा बात भी निकले (चपरासी को बुलाकर) रमज़ानी तुम ख़ाँसाहब और दीवानजी को यहाँ से ले जाओ।

दीवान—इल्म की क़सम अगर इतनी गुस्ताख़ी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूती-पैजार हो जायगी।

नवाब—कोई है? जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकाल दो और फिर भूलके भी न आने देना।

लाला—अभी निकाल दो सबको!

यह कहकर लालासाहब ने रमज़ानख़ाँ पर टीप जमाई। वह पठान आदमी, टीप पड़ते ही आग हो गया। लालासाहब के पट्टे पकड़ कर दो-

चार धपें ज़ोर-जोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर उधर से उठे। लप्पा-डुग्गी होने लगी। आज़ाद ने नवाबसाहब से कहा—मैं तो रुखसत होता हूँ। नवाबसाहब ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग़ में लाकर बोले—हजरत मैं बहुत शरमिन्दा हूँ कि इन पाजियों की वजह से आपको तकलीफ़ हुई। क्या कहूँ उस औरत ने हमें वह नसीहत की थी कि अगर हम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते। मगर इन मुसाहबों से ख़ुदा समझे, हमें फिर घेर-घारके फन्दे में फांस लिया।

आज़ाद—तो जनाब ऐसे अदना नौकरों को इतना मुँह चढ़ाना हरगिज मुनासिब नहीं।

नवाब—भाई साहब यही बातें उस औरत ने भी समझाई थी।

आज़ाद—आखिर वह औरत कौन थी और आपसे उससे क्या ताल्लुक़ था ?

नवाब—हजरत अर्ज किया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाग में बैठा था कि एक औरत सफेद दुलाई ओढे निकली। दो-चार बिगडे-दिलों ने उसे चकमा देकर बुलाया। वह बेतकल्लुफी के साथ आकर बैठी तो मुझसे बात-चीत होने लगी। उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आज़ाद ने ऐसा मुँह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहाँ जाओ उसके जाननेवाले निकल ही आते है। कुछ देर बाद नवाब साहब नशे में चूर हो गए और आज़ाद बाहर निकले तो एक पुराने जान पहचान के आदमी से मुलाकात हो गई। आज़ाद ने पूछा—कहिए हज़रत आजकल आप कहाँ हैं ?

आदमी—आजकल तो नवाब वाजिद हुसेन की ख़िदमत में हूँ।

हुज़ूर तो ख़ैरियत से रहे। हुज़ूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन हो गया।

आज़ाद—भाई जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो ?

आदमी—कोशिश करूँगा हुज़ूर, किसी न किसी हीले से वहाँ तक आपका पैग़ाम पहुँचा दूँगा।

यह मामला ठीक-ठाक करके आज़ाद होटल में गए तो देखा कि ख़ोजी बड़ी शान से बैठे गपें उड़ा रहे हैं और दोनों परियाँ उनकी बातें सुन-सुनकर खिलखिला रही हैं।

क्लारिसा—तुम अपनी बीबी से मिले, बड़ी खुश हुई होंगी।

ख़ोजी—जी हाँ, महल्ले में पहुँचते ही मारे ख़ुशी के लोगों ने तालियाँ बजाईं। लौंडों ने ढेले मार-मारकर गुल मचाया कि आए-आए। अब कोई गले मिलता है। कोई मारे मुहब्बत के धक्के दे मारता है। सारा महल्ला कह रहा है तुमने तो रूम में वह काम किया कि झण्डे गाड़ दिए। घर में जो ख़बर हुई तो लौंडी ने आकर सलाम किया। हुज़ूर आइए, बेगमसाहब बड़ी देर से इन्तज़ार कर रही हैं। मैंने कहा क्योंकर चलूँ ? जब यह इतने भूत छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है कोई उधर और यहाँ जान अज़ाब में है।

मीडा—घर का हाल बयान करो। वहाँ क्या बातें हुईं ?

ख़ोजी—दालान तक बीबी नंगे पाँव इस तरह दौड़ी आईं कि हाँफ गईं।

मीडा—नंगे पाँव क्यों ? क्या तुम लोगों में जूता नहीं पहनते ?

ख़ोजी—पहनते क्यों नहीं, मगर जूता तो हाथ में था।

मीडा—हाथ से और जूते से क्या वास्ता ?

खोजी—आप इन बातों को क्या समझें।

मीडा—तो आखिर कुछ कहोगे भी ?

खोजी—इसका मतलब यह है कि मियाँ अन्दर कदम रक्खें और हम खोपड़ी सुहला दें।

मीडा—क्या यह भी कोई रस्म है ?

खोजी—यह सब अदाएँ हमने सिखाई हैं। इधर हम घर में घुसे उधर बेगम साहब ने जूतियाँ लगाईं। अब हम छिपें तो कहाँ छिपें, कोई छोटा-मोटा आदमी हो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल लेके कहाँ जायँ ?

क्लारिसा—सच तो है, कद क्या है ताड़ है !

मीडा—क्या तुम्हारी बीबी भी तुम्हारी ही तरह ऊँचे कद की है ?

खोजी—जनाब मुझसे पूरे दो हाथ ऊँची हैं। आकर बोलीं, इतने दिनों के बाद आए तो क्या लाए हो ? मैंने तमगा दिखा दिया तो खिल गईं। कहा, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तौला करूँगी।

मीडा—क्या पत्थर का तमगा है ? क्या खूब कदर की है।

क्लारिसा—और तुम्हें तमगा कब मिला ?

खोजी—कहीं ऐसा कहना भी नहीं।

इतने में आज़ाद पाशा चुपके से आगे बढ़े और कहा—आदाब अर्ज है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं ?

खोजी—भाई जान, वह रंग जमाया कि अब खोजी ही खोजी हैं।

आज़ाद—भई इस वक्त एक बड़ी फिक्र में हूँ। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल वह नवाब वाजिद हुसेन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है। बतलाओ क्या तदबीर करूँ।

खोजी—अजी यह लटके हमसे पूछो। यहाँ सारी जिन्दगी यही किया किए हैं। किसी चूड़ीवाली को कुछ दे-दिलाकर राजी कर लो।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गई। जाकर एक चूड़ीवाली को बुला लाए।

आज़ाद—क्यों भलेमानस तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी? अगर कोई काम निकले तो कहें, वरना बेकार है।

चूड़ीवाली—अरे तो कुछ मुँह से कहिएगा भी? आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है।

आजाद—नवाब वाजिद हुसेन को जानती हो?

चूड़ीवाली—अपना मतलब कहिए।

आज़ाद—बस उन्हीं के महल में एक पैग़ाम भेजना है।

चूड़ीवाली—आपका तो वहाँ गुजर नहीं हो सकता, हाँ आपका पैगाम वहाँ तक पहुँचा दूँगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके खातिर कर दूँगी।

आजाद—तुम सुरैयाबेगम से इतना कह दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कहा है।

चूड़ीवाली—आज़ाद आपका नाम है या किसी और का?

आज़ाद—किसी और के नाम या पैग़ाम से हमें क्या वास्ता। मेरी यह तसवीर ले लो, मौका मिले तो दिखा देना।

चूड़ीवाली ने तसवीर टोकरे में रखी और नवाब वाजिद हुसेन के घर चली। सुरैयाबेगम कोठे पर बैठी दरिया की सैर कर रही थीं। चूड़ीवाली ने जाकर सलाम किया।

सुरैया—कोई अच्छी चीज़ लाई हो या खाली-पूली आई हो?

चूड़ीवाली—हुजूर वह चीज लाई हूँ कि देखकर खुश हो जाइएगा मगर इनाम भरपूर लूँगी।

सुरैया—क्या है जरा देखूँ तो?

चूड़ीवाली ने बेगम साहब के हाथों में तसवीर रख दी। देखते ही चौंक के बोलीं, सच बताना कहाँ पाई?

चूड़ीवाली—पहले यह बतलाइए कि यह कौन साहब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं?

सुरैया—बस यह न पूछो, यह बतलाओ तुमने तसवीर कहाँ पाई?

चूड़ीवाली—जिनकी यह तसवीर है, उनको आपके सामने लाऊँ तो क्या इनाम पाऊँ?

सुरैया—इस बारे में मैं कोई बातचीत करना नहीं चाहती। अगर वह खैरियत से लौट आए हैं तो खुदा उन्हें खुश रक्खे और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ीवाली—हुजूर यह तसवीर उन्होंने मुझको दी। कहा, अगर मौका हो तो हम भी एक नजर देख लें।

सुरैया—कह देना कि आज़ाद तुम्हारे लिये दिल से दुआ निकलती है, मगर पिछली बातों को अब जाने दो, हम पराए बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा दिल कितना ही साफ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मालूम है। नवाब साहब को मालूम हो गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा।

चूड़ीवाली—हुजूर एक दफ़ा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आँखों की कसम बहुत तरस रहे हैं।

सुरैया—चाहे जो हो, जो बात खुदा को मंजूर थी वह हुई और इसी में अब हमारी बेहतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, मैं इसे छिपाकर रक्खूँगी।

चूड़ीवाली—तो हुजूर क्या कह दूँ। साफ़ टका-सा जवाब ?

सुरैया—नहीं तुम समझाकर कह देना कि तुम्हारे आने से जितनी खुशी हुई, उसका हाल खुदा ही जानता है। मगर अब तुम यहाँ नहीं आ सकते और न मैं ही कहीं जा सकती हूँ, और फिर अगर चोरी-छिपे एक दूसरे को देख भी लिया तो क्या फ़ायदा। पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासिब है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्ज़त है। पहले मैं तुमसे गरज की मुहब्बत करती थी अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूँ। खुदा ने चाहा तो शादी के दिन हुस्नआरा बेगम के हाँ मुलाक़ात होगी।

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उन्हें परदे और हया का इतना खयाल है। चूड़ीवाली ने जाकर यहाँ की सारी दास्तान आज़ाद को सुनाई। आजाद बेगम की पाकदामनी की घण्टों तारीफ़ करते रहे। यह सुनकर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहाँ जरूर आएँगी।

एक सौ छवाँ परिच्छेद

मिर्याँ आजाद सैलानी तो थे ही, हुस्नआरा से मुलाकात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरगश्त करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही। एक दिन सैर करते-करते वह एक बाग़ में पहुँचे और एक कुर्सी पर जा बैठे। एकाएक उनके कान में आवाज आई—

चले हम ऐ जुनूँ जब फस्ले गुल में सैर गुलशन को,
एवज़ फूलों के पत्थर से भरा गुलचीं ने दामन को।
समझकर चाँद हमने यार तेरे रूए रौशन को;
कहा हाले को हालो और मह्वे नौ ताके गरदन को।

जो वह तलवार खींचें तो मुक़ाबिल कर दूँ मैं दिल को;
लड़ाऊँ दोस्त से अपने मैं उस पहलू के दुश्मन को।
करूँ आहें तो मुँह को ढाँपकर वह शोख़ कहता है—
हवा से कुछ नहीं है डर चिराग़े ज़ेर दामन को।
तवाज़ा चाहते हो ज़ाहिदो क्या बादःख्वारों से,
कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गर्दन को।

आज़ाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है। इतने में एक खिड़की खुली और एक चाँद-सी सूरत उनके सामने खड़ी नजर आई। मगर इत्तिफ़ाक से उसकी नजर इन पर नहीं पड़ी। उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रखकर किसी हमजोली को पुकारा, तो आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौंहों पर इस तरह;
जैसे मेहराब पर अल्लाह लिखा होता है।

उस नाज़नीन ने आवाज सुनते ही उन पर नज़र डाली और दरीचा बन्द कर लिया। दुपट्टे को जो हवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर। इस पर उस शोख ने झुँझलाकर कहा, यह निगोड़ा दुपट्टा भी मेरा दुश्मन हुआ है।

आज़ाद—अल्लाह रे गजब, दुपट्टे पर भी गुस्सा आता है!

सनम—ऐ यह कौन बोला? लोगो देखो तो इस बाग में मरघट का मुर्दा कहाँ से आ गया?

सहेली—ऐ कहाँ बहन, हाँ हाँ वह बैठा है, मैं तो डर गई।

सनम—अल्लाह, यह तो कोई सिड़ी-सा मालूम होता है।

आज़ाद—या खुदा यह आदमज़ाद हैं या कोहकाफ़ की परियाँ।

सनम—तुम यहाँ कहाँ से भटक के आ गए?

आज़ाद—भटकते कोई और होंगे, हम तो अपनी मंजिल पर पहुँच गए।

सनम—मंज़िल पर पहुँचना दिल्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है।

आजाद—यह कहाँ का दस्तूर है कि कोई जमीन पर हो, कोई आसमान पर। आप सवार मैं पैदल, भला क्योंकर बने।

सनम—और सुनो, आप तो पेट से पाँव निकालने लगे, अब यहाँ से बोरिया-बधना उठाओ और चलता धन्धा करो।

आज़ाद—इतना हुक्म दो कि क़रीब से दो-दो बातें तो कर लें।

सनम—वह काम क्यों करें जिसमें फ़साद का डर है।

सहेली—ऐ बुला लो, भले आदमी मालूम होते हैं (आज़ाद से) चले आइए साहब, चले आइए।

आजाद ख़ुश-ख़ुश उठे और कोठे पर जा पहुँचे।

सनम—वाह बहन वाह, एक अजनबी को बुला लिया! तुम्हारी भी क्या बातें हैं।

आज़ाद—भई हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए।

सनम—हज़रत आपके भले ही के लिये कहती हूँ, यह बड़े जोखिम की जगह है, हाँ अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खुद ताड़ लोगे।

आजाद ने जो यह बातें सुनीं तो चक्कर में आए कि हिन्दोस्तान से रूम तक हो आए और किसी ने चूँ तक न की, और यहाँ इस तरह की धमकी दी जाती है। सोचे कि अगर यह सुनकर यहाँ से भाग जाते हैं तो यह दोनों दिल में हँसेंगी और अगर ठहर जाएँ तो आसार बुरे नजर आते हैं। बातों-बातों में उस नाज़नीन से पूछा—यह क्या भेद है?

सनम—यह न पूछो भई, हमारा हाल बयान करने के काबिल नहीं।

आज़ाद—आखिर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहाँ क्या तकलीफ है। मुझे तो कुछ दाल में काला ज़रूर मालूम होता है।

सनम—जनाब यह जहन्नुम है और हमारे-जैसी कितनी ही औरतें इस जहन्नुम में रहती हैं। यों कहिए कि हमीं से यह जहन्नुम आबाद है। एक बुढ़िया कुन्दन नामी बरसों से यही पेशा करती है। खुदा जाने इसने कितने घर तबाह किए। अगर मुझसे पूछो कि तेरे माँ बाप कहाँ हैं, तो मैं क्या जवाब दूँ, मुझे इतना ही मालूम है कि यह बुढ़िया मुझे किसी गाँव से पकड़ लाई थी। मेरे माँ-बाप ने बहुत तलाश की, मगर इसने मुझे घर से निकलने न दिया। उस वक्त मेरा सिन चार-पाँच साल से ज्यादा न था।

आज़ाद—तो क्या यहाँ सब ऐसी ही जमा हैं?

सनम—यह जो मेरी सहेली हैं किसी बड़े आदमी की बेटी हैं। कुन्दन उनके यहाँ आने-जाने लगी और उन सबों से इस तरह की साँठ गाँठ की कि औरतें इसे बुलाने लगीं। उनको क्या मालूम था कि कुन्दन के यह हथकण्डे हैं।

आज़ाद—भला कुन्दन से मेरी मुलाक़ात हो तो उससे कैसी बातें करूँ?

सनम—वह इसका मौक़ा ही न देगी कि तुम कुछ कहो, जो कुछ कहना होगा वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहाँ क्योंकर आए?

आज़ाद—मैं कह दूँगा कि तुम्हारा नाम सुनकर आया।

सनम—हाँ इस तरकीब से बच जाओगे। जो हमें देखता है, समझता है, कि यह बड़ी खुशनसीब हैं। पहनने के लिये अच्छे से अच्छे

नूर—मियाँ हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें अपना हाल खुद ही नहीं मालूम। खुदा जाने हिन्दू के घर जन्म लिया या मुसलमान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुढ़िया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसलाकर ले आए। सारा ज़माना उसके हथकण्डों को जानता है, मगर किसी से आज तक बन्दोबस्त नहीं हो सका। अच्छे-अच्छे महाजन और व्यापारी उसके मकान पर माथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरीफ़ज़ादे उसका दम भरते हैं। शहज़ादों तक के पास इसकी पहुँच है, सुनते थे कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है, मगर खुदा जाने बुढ़िया को इन बुरे कामों की सज़ा क्यों नहीं मिलती? इस चुड़ैल ने खूब रुपए जमा किए हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गई है।

आजाद—तुम सब-की-सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातीं?

सनम—भाग जायँ तो फिर खायँ क्या, यह तो सोचो।

आज़ाद—इसने अपनी मक्कारी से इस क़दर तुम सबको बेवक़ूफ़ बना रक्खा है।

सनम—बेवक़ूफ़ नहीं, बनाया है यह बात सही है, खाने-भर का सहारा तो हो जाय।

आज़ाद—तुम्हारी आँख पर ग़फ़लत की पट्टी बाँध दी है तुम इतना नहीं सोचतीं कि तुम्हारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मुहताज रहोगी। जो पसन्द हो उसके साथ शादी कर लो और आराम से जिन्दगी बसर करो।

सनम—यह सच है, मगर उसका रोब मारे डालता है।

आज़ाद—उफ़ रे रोब यह बुढ़िया भी देखने के क़ाबिल है।

सनम—इस तरह की मीठी-मीठी बातें करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढ़ने लगोगे।

आजाद—अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करूँ।

सनम—वाह नेकी और पूछ पूछ, आपका हमारे ऊपर बड़ा एहसान होगा। हमारी जिन्दगी बरबाद हो रही है। हमें हर रोज़ गालियाँ देती है और हमारे माँ बाप को कोसा करती है। गो उन्हें आँखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहाँ जाय?

इस फ़िकरे से आज़ाद की आँखें भी डबडबा आईं, उन्होंने ठान ली कि इस बुढ़िया को जरूर सजा कराएँगे।

इतने में सहेली ने आकर कहा—बुढ़िया आ गई है, धीरे-धीरे बातें करो। आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दो की दोनों चली गईं।

कुन्दन—बेटा आज एक और शिकार किया मगर अभी बताएँगे नहीं, यह दरवाज़े पर कौन खड़ा था।

सनम—कोई बहुत बड़े रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

कुन्दन ने फौरन् आजाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आए हो बेटा! क्या काम है?

आज़ाद—मैं ख़ास आपके पास आया हूँ।

कुन्दन—अच्छा बैठो। आजकल बे-फ़सल की बारिश से बड़ी तकलीफ़ होती है, अच्छी वह फसल कि हर चीज़ वक्त पर हो, बरसात हो तो मेंह बरसे, सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में लू चले, मगर जहाँ कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी पैदा हो गई।

आजाद—जी हाँ, क़ायदे की बात है।

कुन्दन—और बेटा हज़ारबात की एक बात यह है कि आदमी बुराई से बचे। आदमी को याद रखना चाहिए कि एक दिन उसको मुँह दिखाना

है जिसने हमे पैदा किया। बुरा आदमी किस मुँह से मुँह दिखाएगा।

आज़ाद—क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात!

कुन्दन—मैंने तमाम उम्र इसी में गुज़ारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूँ, उनको खिलाऊँ-पिलाऊँ और अच्छी अच्छी बातें सिखाऊँ। खुदा मुझे इसका बदला दे तो वाह वाह, वरना और कुछ फ़ायदा न सही, तो इतना फायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी ज़ात से परवरिश हुई।

आज़ाद—खुदा ज़रूर इसका सवाब देगा।

कुन्दन—तुमने मेरा नाम किससे सुना?

आज़ाद—आपके नाम की खुशबू दूर-दूर तक फैली हुई है।

कुन्दन—वाह मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ़ ही नहीं करती। जो लड़कियाँ मैं पालती हूँ उनको बिलकुल अपने खास बेटों की तरह समझती हूँ। क्या मजाल की ज़रा भी फ़र्क हो। जब देखा कि वह सयानी हुईं तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देख-भाल के। शादी मर्द और औरत की रजामन्दी से होनी चाहिए।

आज़ाद—यही शादी के माने हैं।

कुन्दन—तुम्हारी उम्र दराज़ हो बेटा, आदमी जो काम करे सलाह से, हर पहलू को देख-भालके।

आज़ाद—बगैर इसके मियाँ-बीवी में मुहब्बत नहीं हो सकती और यों ज़बरदस्ती की तो बात ही और है।

कुन्दन—मेरा क़ायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूँ उसके सिवा और किसी से नहीं ब्याहती और लड़की से पूछ लेती हूँ कि बेटा अगर तुमको पसन्द हो तो अच्छा, नहीं कुछ ज़बरदस्ती नहीं है।

यह कहकर उसने महरी को इशारा किया। आज़ाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं।

महरी फौरन् कोठे पर गई और थोड़ी ही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुन्दन—मैंने इन सबको गाना भी सिखाया है, गो यहाँ इसका रिवाज नहीं।

आज़ाद—तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाता है।

कुन्दन—हाँ बस एक इस मुल्क में नहीं है।

आज़ाद—यह तो तीन की आवाज मालूम होती है, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ़ है।

कुन्दन—एक तो उनका दिल बहलता है, दूसरे जो सुनता है उसका भी दिल बहलता है।

आज़ाद—मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं?

कुन्दन—देखो बुलवाती हूँ, मगर बेटा नीयत साफ़ रहनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया। वह लजाती हुई आई और बुढिया के पास इस तरह गरदन झुका के बैठी जैसे कोई शर-मीली दुलहिन।

आज़ाद—ऐ साहब सिर ऊँचा करके बैठो, यह क्या बात है?

कुन्दन—बेटा अच्छी तरह बैठो सिर उठाकर (आज़ाद से) हमारी सब लड़कियाँ शरमीली और हयादार हैं।

आज़ाद—यह आप ऊपर क्या गा रही थीं? हम भी कुछ सुनें।

कुन्दन—बेटी नूर वही ग़ज़ल गाओ।

नूर—अम्माँजान हमें शर्म आती है।

कुन्दन—कहती है हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी खातिर से गाओ।

नूर—(कुन्दन के कान में) अम्माँजान हमसे न गाया जायगा।

आज़ाद—यह नई बात है—

अकड़ता है क्या देख-देख आईना,
हसीं गरचे है तू पर इतना घमण्ड !

कुन्दन—लो इन्होंने गाके सुना दिया।

महरी—कहिए हुज़ूर दिल का परदा क्या कम है जो आप मारे शर्म के मुँह छिपाए लेती हैं। ऐ बीवी गरदन ऊँची करो, जिस दिन दुलहिन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं है।

कुन्दन—हाँ बात तो यही है और क्या?

आज़ाद—शुक्र है आपने ज़रा गरदन तो उठाई—

बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी
कुछ सवालोजवाब बाकी है।

कुन्दन—(हँसकर) अब तुम जानो, यह जाने।

आज़ाद—ऐ साहब इधर देखिए।

नूर—अम्माँजान अब हम यहाँ से जाते हैं।

कुन्दन ने चुटकी लेकर कहा—कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल खुश हो, कुछ जवाब दो यह क्या बात है?

नूर—अम्माँजान किसको जवाब दूँ न जान न पहचान।

कुन्दन इन कामों में आठों गाँठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गई। नूर ने भी बनावट के साथ चाहा कि चली जाय, इस पर कुन्दन ने आड़े हाथों लिया—ईं ईं यह क्या, भले मानस हैं या कोई नीच क़ौम? शरीफ़ों में इतना डर! आख़िर नूर शर्माकर बैठ गई। उधर कुन्दन नज़र से गायब हुई, इधर महरी भी चम्पत।

आज़ाद—यह बुढ़िया तो एक ही काइयाँ है।

नूर—अभी देखते जाओ, यह अपने नजदीक तुमको उम्र-भर के लिये गुलाम बनाए लेती है, जो हमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया होता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते।

आजाद—भला यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शरमाती रहीं।

नूर—हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें?

आज़ाद—अच्छा उन दोनों को क्यों न बुलाया?

नूर—देखते जाओ, सबको बुलाएगी।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आई।

आजाद—महरी साहब यह क्या अन्धेर है। आदमी आदमी से बोलता है या नहीं?

महरी—ऐ बीबी, तुमने क्या बोलने की क़सम खा ली है। ले अब हमसे तो बहुत न उड़ो। खुदा झूठ न बोलाए तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूँघट की लेती हैं।

आज़ाद—गरदन तक तो ऊँची नहीं करतीं, बोलना-चालना कैसा, या तो बनती हैं या अम्माँजान से डरती हैं।

महरी—वाह वाह हुज़ूर वाह, भला यह काहे से जान पड़ा कि बनती है? क्या यह नहीं हो सकता कि आँखों की हया के सबब से लजाती हों।

आज़ाद—वाह, आँखें कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर—खुदा की सँवार झूठे पर।

महरी—शाबाश, बस यह इसी बात की मुन्तज़िर थीं। मैं तो समझी ही बैठी थी कि जब यह ज़बान खोलेंगी, फिर बन्द ही कर छोड़ेंगी।

नूर—हमें भी कोई गँवार समझा है क्या?

आजाद—वल्लाह इस वक्त इनका त्योरी चढ़ाना अजब लुत्फ देता है। इनके जौहर तो अब खुले। इनकी अम्माँजान कहाँ चली गईं? ज़रा उनको बुलवाइए तो?

महरी—हुज़ूर उनका क़ायदा है कि अगर दो दिल मिल जाते हैं तो फिर निकाह पढ़वा देती हैं, मगर मर्द भलामानस हो, चार पैसे पैदा करता हो। आप पर तो कुछ बहुत ही मिहरबान नजर आती हैं, कि दो बातें होते ही उठ गईं, वरना महीनों जाँच हुआ करती है, आपकी शक्ल-सूरत से रियासत बरसती है।

नूर—वाह अच्छी कहनी कही, बेशक रियासत बरसती है!

यह कह नूर ने आहिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया—

आज़ाद—मैं तो इनकी आवाज पर आशिक हूँ।

नूर—खुदा की शान, आप क्या और आपकी क़द्रदानी क्या।

आज़ाद—दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों महरी?

महरी—अब यह आप जानें और यह जानें, हमसे क्या?

एकाएक नूर उठकर चली गई। आजाद और महरी के सिवा वहाँ कोई न रहा, तब महरी ने आज़ाद से कहा—हुज़ूर ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं हुज़ूर को देखते ही पहचान गई, आप सुरैयाबेगम के यहाँ आया-जाया करते थे।

आजाद—हाँ अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहाँ देखा था, कहो मालूम है कि अब वह कहाँ हैं?

महरी—हुज़ूर अब वह वहाँ हैं जहाँ चिड़िया भी नहीं आ सकती मगर कुछ इनाम दीजिए तो दिखा दूँ। दूर ही से बात-चीत होगी। एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क में जोगिन हो गईं। जब मालूम हुआ कि आज़ाद ने हुस्नआरा से शादी कर ली तो मजबूर होकर एक

नवाब से निकाह पढ़वा लिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया। जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफ़ाई न करनी चाहिए।

आज़ाद—हमने सुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझकर निकल भागे।

महरी—अगर आप कुछ दिलवाएँ तो मैं बीड़ा उठाती हूँ कि एक नज़र अच्छी तरह दिखा दूँगी।

आज़ाद—मंजूर, मगर बेईमानी की सनद नहीं।

महरी—क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी न लूँगी।

महरी ने आजाद से यहाँ का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया—मियाँ, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मन्त्र नहीं। पर आज़ाद को तो सुरैयाबेगम की धुन थी पूछा—भला उनका मकान हम देख सकते हैं?

महरी—जी हाँ, यह क्या सामने है।

आजाद—और यह जितनी यहाँ हैं, सब इसी फ़िशन की होंगी।

महरी—किसी को चुरा लाई हैं, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न!

इतने में किसी ने सीटी बजाई और महरी फ़ौरन् उधर चली गई। थोड़ी ही देर में कुन्दन आई और कहा—ऐं यहाँ तुम बैठे हो, तोबा तोबा, मगर लड़कियों को क्या करूँ, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई हद ही नहीं. (महरी को पुकारकर) ऐ उनको बुलाओ, कहो यहाँ आकर बैठें। यह क्या बात है? जैसे कोई काटे खाता है!

यह सुनते ही सनम छम-छम करती हुई आई। आजाद ने देखा तो दंग रह गए, इस मरतबा ग़ज़ब का निखार था। आज़ाद अपने दिल में

सोचे कि यह सूरत और यह पेशा, ठान लो कि किसी मौके पर ज़िले के हाकिम को ज़रूर लाएँगे और उनसे कहेंगे कि ख़ुदा के लिये इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुन्दन ने मनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली—अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बयान कर दो?

आज़ाद—इस वक्त दिल वह मज़े लूट रहा है जो बयान से बाहर है।

कुन्दन—मेरे यहाँ सफ़ाई का बहुत इन्तज़ाम है।

आज़ाद—आपके कहने की ज़रूरत नहीं।

कुन्दन—यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद—इनके शौहर भी इन्हीं के-से हों तो बात है।

कुन्दन—इसमें किसी के सिखाने की ज़रूरत नहीं। मैं इनके लिये ऐसे लोगों को चुनूँगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको खिलाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर ज़ुल्म कैसे बरदाश्त करूँगी।

आज़ाद—और तो और मगर इनको तो आपने ख़ूब ही सिखाया।

कुन्दन—अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंज़ूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो ख़ुश हुए।

महरी—वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुन्दन—ख़बरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझीं।

महरी—हाँ हुज़ूर ख़ता हुई।

आज़ाद—फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुन्दन—इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आज़ाद—(मनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम भी बना लिया।

सनम ने कुछ जवाब न दिया।

आज़ाद—अब इनसे क्या कोई बात करे—

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुन्दन—ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा!

सनम—अम्माँजान कोई बात हो तो क्या मुजायका और यों ख्वाहमख्वाह एक अजनबी से बातें करना कौनसी दानाई है।

कुन्दन—खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सब-की-सब बड़ी शरमीली है।

आज़ाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इस लिये कुन्दन से रुखसत माँगी और कहा कि आज माफ़ कीजिए, कल हाज़िर हूँगा, मगर अकेले आऊँ, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊँ?

कुन्दन ने खाना खाने के लिये बहुत ज़िद की, मगर आज़ाद ने न माना।

आज़ाद ने अभी बाग़ के बाहर भी कदम नहीं रक्खा था कि महरी दौड़ी आई और कहा—हुज़ूर को बीबी बुलाती हैं। आज़ाद अन्दर गए तो क्या देखते हैं कि कुन्दन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ़कर है।

कुन्दन—यह एक जगह गई हुई थीं अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको ज़रा दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद—बेशक, बदी का यहाँ जिक्र ही क्या है?

कुन्दन—सबसे मिल-जुलके चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा सलूक है, मुझे आज तक किसी ने किसी से लड़ते न देखा होगा।

आज़ाद—यह तो सबोंसे बढ़-चढ़कर हैं।

कुन्दन—बेटा सभी घर-गृहस्थ की बहू-बेटियाँ हैं, कहीं आएँ, न जाएँ न किसी से हँसी न दिल्लगी।

आज़ाद—बेशक, हमें आपके यहाँ का करीना बहुत पसन्द आया।

कुन्दन—बोलो बेटा मुँह से कुछ बोलो, देखो एक शरीफ़ आदमी बैठे हैं और तुम न बोलती हो न चालती हो।

परी—क्या करूँ आप ही आप बकूँ?

कुन्दन—हाँ यह भी ठीक है, यह तुम्हारी तरफ़ मुँह करके बात चीत करें तब बोलो। लीजिए साहब अब तो आप ही का कुसूर ठहरा।

आज़ाद—भला सुनिए तो मेहमानों की ख़ातिरदारी भी कोई चीज़ है या नहीं।

कुन्दन—हाँ यह भी ठीक है अब बताओ बेटा?

परी—अम्माँजान हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सबके दिल में है, हम भला किसी की ख़ातिरदारी क्यों करें?

कुन्दन—अब फ़रमाइए हज़रत, जवाब पाया?

आज़ाद—वह जवाब पाया कि लाजवाब हो गया। और साहब ख़ातिरदारी न सही, कुछ गुस्सा ही कीजिए।

परी—इसके लिये भी क़िस्मत चाहिए।

मियाँ आज़ाद बड़े बोलक्कड़ थे मगर इस वक़्त सिट्टी पिट्टी भूल गए।

कुन्दन—अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं?

परी—अम्माँजान आपकी तालीम ऐसी-वैसी नहीं है कि हम बन्द रहें।

कुन्दन—मगर मियाँसाहब की कलई खुल गई, अरे कुछ तो फ़र्माइए हज़रत—

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं—
आज "ग़ालिब" ग़ज़लसरा न हुआ।

आज़ाद—आप शेर भी कहती हैं ?

नूर—ऐ वाह, ऐसे घबड़ाए कि 'ग़ालिब' का तख़ल्लुस मौजूद है और आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं ?

परी—आदमी में हवास ही हवास तो हैं, और है क्या ?

सनम—हम जो गरदन झुकाए बैठे थे तो आप बहुत शेर थे मगर अब होश उड़े हुए हैं।

सहेली—तुम पर रीझे हुए हैं बहन, देखती हो किन आँखों से घूर रहे हैं।

परी—ऐ हटो भी, एँड़ी चोटी पर कुरबान कर दूँ।

आज़ाद—या ख़ुदा अब हम ऐसे गए-गुज़रे हो गए।

परी—और आप अपने को समझे क्या हैं !

कुन्दन—यह हम न मानेंगे, हँसी-दिल्लगी और बात है, मगर यह भी लाख-दो लाख में एक हैं।

परी—अब अम्मांजान कल तक तारीफ़ किया करेंगी।

आज़ाद—फिर जो तारीफ़ के काबिल होता है उसकी तारीफ़ होती ही है।

नूर—उँह-उँह घर की पुटकी बासी साग।

आज़ाद—जलन होगी कि इनकी तारीफ़ क्यों की।

नूर—यहाँ तारीफ़ की परवा नहीं।

कुन्दन—यह तो ख़ूब कही, अब इसका जवाब दीजिए।

आज़ाद—हसीनों को किसी की तारीफ़ कब पसन्द आती है।

नूर—भला ख़ैर आप इस काबिल तो हुए कि आपके हुस्न से लोगों के दिल में जलन होने लगी।

कुन्दन—(सनम से) तुमने इनको कुछ सुनाया नहीं बेटा ?

सनम—हम क्या कुछ इनके नौकर हैं ?

आज़ाद—खुदा के लिये कोई फड़कती हुई ग़ज़ल गाओ बल्कि अगर कुन्दनसाहब का हुक्म हो तो सब मिलकर गाएँ।

सनम—हुक्म, हुक्म तो हम बादशाह वजीर का न मानेंगे।

परी—अब इसी बात पर जो कोई गाए।

कुन्दन—अच्छा हुक्म कहा तो क्या गुनाह किया, कितनी ढीठ लड़कियाँ हैं कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं।

सनम—अच्छा बहन आओ मिल मिलकर गाएँ—

ऐ रश्के कमर दिल का जलाना नही अच्छा।

परी—यह कहाँ से बूढ़ी गज़ल निकाली, यह ग़जल गाओ—

गया यार आफत पड़ी इस सहर पर;
उदासी बरसने लगी बाम व दर पर।
सबा ने भरी दिन को एक आह ठण्डी,
कयामत हुई या दिले नौहागर पर।
मेरे आवें गुलशन को आतश लगी है;
नजर क्या पड़े खाक गुलहाय तर पर।
कोई देव था या कि जिन था वह काफ़िर;
मुझे गुस्सा आता है पिछले पहर पर।

एकाएक किसी ने बाहर से आवाज दी। कुन्दन ने दरवाजे पर जाकर कहा—कौन साहब हैं ?

सिपाही—दारोगाजी आए हैं दरवाजा खोल दो।

कुन्दन—ऐ तो यहाँ किसके पास तशरीफ लाए हैं ?

सिपाही—कुन्दन कुटनी के यहाँ आए हैं। यही मकान है या और ?

दूसरा सिपाही—हाँ हाँ जी यही है, इनसे पूछो।

इधर कुन्दन पुलीसवालों से बातें करती थी उधर आज़ाद तीनों औरतों के साथ बाग़ में चले गए और दरवाजा बन्द कर दिया।

आजाद—यह माजरा क्या है भई?

सनम—दौड़ आई है मियाँ, दरवाजा बन्द करने से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि हम घर से निकल भागें।

परी—हमें यहाँ एकदम का रहना पसन्द नहीं।

आज़ाद—किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेतीं?

नूर—ऐ है! यह क्या गज़ब करते हो, आहिस्ता से बोलो।

आज़ाद—आखिर यह दौड क्यों आई है हम भी तो सुनें।

सनम—कल एक भलेमानस आए थे। उनके पास एक सोने की घड़ी, सोने की जंजीर, एक बेग, पाँच अशर्फियाँ और कुछ रुपए थे। यह भाँप गई। उनको शराब पिलाकर सारी चीजें उड़ा दीं। सुबह को जब उसने अपनी चीज़ों की तलाश की तो धमकाया कि टर्राओगे तो पुलीस को इत्तला कर दूँगी। वह बेचारा सीधा-सादा आदमी चुपचाप चला गया और दारोगा से शिकायत की, अब वही दौड़ आई है।

आजाद—अच्छा! यह हथकंडे हैं।

सनम—कुछ पूछो न, जान अज़ाब में है।

नूर—अब खुदा ही जाने, किस-किस का नाम वह करेगी, क्या आग लगाएगी।

सनम—अजी वह किसी से दबनेवाली नहीं हैं।

परी—वह न दबेंगी साहब तक से, यह दारोगा लिए फिरती हैं!

सनम—ज़रा सुनो तो क्या हो रहा है।

आजाद ने दरवाजे के पास से कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि

बीबी कुन्दन पुलीसवालों से बहस कर रही हैं कि तुम मेरी घर-भर का तलाशी लो। मगर याद रखना, कल ही तो नालिश करूँगी। मुझे अकेली औरत समझके धमका लिया है। मैं अदालत चढ़ूँगी। लेना एक न देना दो उस पर यह अंधेर! मैं साहब से कहूँगी कि इसकी नीयत खराब है, यह रिआया को दिक़ करता है और पराई बहू बेटी को ताकता है।

सनन—सुनती हो कैसा डाट रही हैं पुलीसवालों को।

परी—चुप-चुप ऐसा न हो सब इधर आ जायँ।

उधर कुन्दन ने मुसाफिर को कोसना शुरू किया—अल्लाह करे इस अठवारे में इसका जनाज़ा निकले। मुए ने आके मेरी जान अज़ाब में कर दी। मैंने तो गरीब मुसाफिर समझकर टिका लिया था। मुआ उलटा लिए पड़ता है।

मुसाफिर—दारोगाजी इस औरत ने सैकड़ों का माल मारा है।

सिपाही—हुज़ूर यह पहले गुलाम हुसेन के पुल पर रहती थी। वहाँ एक अहीरिन की लड़की को फुसलाकर घर लाई और उसी दिन मकान बदल दिया। अहीर ने थाने पर रपट लिखवाई। हम जो जाते हैं तो मकान में ताला पड़ा हुआ, बहुत तलाश की पता न मिला, खुदा जाने लड़की किसी के हाथ बेच डाली या मर गई।

कुन्दन—हाँ-हाँ बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है।

दारोगा—(मुसाफ़िर से) क्यों हजरत, जब आपको मालूम था कि यह कुटनी है तो आप इसके यहाँ टिके क्यों?

मुसाफिर—बेधा था और क्या, दो-ढाई सौ पर पानी फिर गया, मगर शुक्र है कि मार नहीं डाला।

कुन्दन—जी हाँ, साफ़ बच गए।

दारोगा—(कुन्दन से) तू ज़रा भी नहीं शरमाती।

आज़ाद—मैं तो इतने ही में ऊब उठा।

सनम—अभी यह न समझना कि बला टल गई, हम सब भ जायँगे।

आज़ाद—जरा इस शरारत को तो देखो कि मुझे थानेदार से र वाए देती थी।

सनम—खुश तो न होगे कि दामाद बना दिया।

आजाद—हम ऐसी सास से बाज आए।

सनम—इस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता। ए औरत को तो इसने जहर दिलवा दिया था।

नूर—पडोसिन से कोई जाकर इतना कह दे कि तुम अपनी लड़ को क्यों सत्यानास करती हो। जो कुछ रूखा-सूखा अल्लाह दे ख खाओ और पड़ी रहो।

महरी—हाँ और क्या, ऐसे पोलाव से दाल दलिया ही अच्छी।

सनम—तुम जाके बुला लाओ तो यह समझा दें हीले से।

महरी जाकर पडोसिन को बुला लाई। आज़ाद ने कहा—तुम्हा पडोसिन को तो सिपाही ले गए। अब यह मकान हमें सौंप गई हैं पडोसिन ने हँसकर कहा—मियाँ उनको सिपाही ले जाकर क्या करेंगे आज गई हैं कल छूट आएँगी।

इतने में एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा। महरी ने दरवाज खोला तो एक बूढ़े मियाँ दिखाई दिए। पूछा—श्री कुन्दन कहाँ हैं? महर ने कहा उनको थाने के लोग ले गए।

सनम—एक सिरे से इतने मुकदमे, एक-दो-तीन।

नूर—हर रोज एक नया पंछी फाँसती है।

बूढ़े मियाँ—बस अब प्याला भर गया।

सनम—रोज़ तो यही सुनती हूँ कि प्याला भर गया।

बूढ़े मियाँ—अब मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो? ब इस वक्त तो वह नहीं है।

सनम—जायँ तो कहाँ जायँ, बे सोचे-समझे कहाँ जाय।

आज़ाद—बस इसी इत्तिफाक को हम लोग किस्मत कहते हैं और सी का नाम अक़बाल है।

बूढ़े मियाँ—जी हाँ आप तो नए आए हैं, यह औरत खुदा जाने कितने घर तबाह कर चुकी है। पुलीस में भी गिरफ्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी ई, सब कुछ हुआ, सजा पाई, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि इनमें से जिसका जी चाहे मेरे साथ चली चले। किसी शरीफ के साथ निकाह पढ़वा दूँगा, मगर कोई राजी नहीं होती।

एकाएक किसी ने फिर दरवाज़े पर आवाज दी, महरी ने दरवाजा खोला तो मम्मन और गुलबाज़ अंदर दाखिल हुए। दोनों ढाटे बाँधे हुए थे। महरी उन्हें इशारे से बुलाकर बाग़ में ले गई।

मम्मन—कुंदन कहाँ है?

महरी—वह तो आज बड़ी मुसीबत में फँस गई। पुलीसवाले पकड़ ले गए।

मम्मन—हम तो आज और ही मनसूबे बाँधकर आए थे। वह जो [illegible] गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आई है।

महरी—हाँ, मेरा जाना हुआ है। बहुत से रुपए लाई है।

गुलबाज़—महाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जायगा। हमने कई आदमियों से कह दिया था। सब-के-सब आते होंगे।

मम्मन—कुन्दन नहीं है, न सही। हम अपने काम से क्यों ग़ाफ़िल हैं। आओ एक हाथ चक्कर लगाएँ।

इतने में बाग़ के दरवाज़े की तरफ़ सीटी की आवाज़ आई। गुलबाज़ ने दरवाज़ा खोल दिया और बोला—कौन है दिलबर ?

दिलबर—बस अब देर न करो। वक्त जाता है भाई।

गुलबाज़—अरे यार, आज तो मामला हुच गया।

दिलबर—एँ! ऐसा न कहो। दो लाख नकद रक्खा हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो, दूँ।

मम्मन—अच्छा, तो कहीं भागा जाता है।

दिलबर—यह क्या ज़रूरी है कि कुंदन ज़रूर ही हो।

मम्मन—भाई जान, एक कुंदन के न होने से कहीं यार लोग चूकते हैं। और भी कई सबब हैं।

दिलबर—ऐसे मामले में इतनी सुस्ती!

मम्मन—यह सारा कुसूर गुलबाज़ का है। चण्डूख़ाने में पड़े छींटे उड़ाया किए, और सारा खेल बिगाड़ दिया।

दिलबर—आज तक इस मामले में ऐसे औंदे नहीं बने थे। वह दिन याद है कि जब ज़हूरन की गली में छुरी चली थी?

गुलबाज़—मैं उस दिन कहाँ था?

दिलबर—हाँ, तुम तो मुर्शिदाबाद चले गए थे। और यहाँ ज़हूरन ने हमें इत्तला दी कि सुल्तान मिरज़ा चल बसे। सुल्तान मिरज़ा के महल्ले में सब मोटे रुपएवाले, मगर उनके मारे किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि उनके महल्ले में जाय।

मम्मन—वह तो इस फ़न का उस्ताद था।

दिलबर—बस जनाब, इधर सुल्तान मिरज़ा मरे, उधर ज़हूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग आ पहुँचे। अब सुनिए कि जिस तरफ़ जाते हैं, कोई गा रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जहाँ रोशनी और आग न हो।

मम्मन—किसी ने पहले से महल्लेवालों को होशियार कर दिया होगा।

दिलवर—जी हाँ, सुनते तो जाइए। पीछे खुला न। हुआ यह कि जिस वक्त हम लोगों ने ज़हूरन के दरवाजे पर आवाज़ दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में कंकरी फेंकी। उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में। इस तरह महल्ले-भर में खबर हो गई।

यहाँ तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियाँ और आजाद में कुंदन को सजा दिलाने के लिये सलाहें होती थीं—

आज़ाद—जिन जिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सबों का पता लगाइए।

बूढ़े मियाँ—अजी एक-दो हों, तो पता लगाऊँ। यहाँ तो शुमार ही नहीं।

आज़ाद—मैं आज ही हाकिमजिला से इसका ज़िक्र करूँगा।

इन लोगों से रुखसत होकर आज़ाद मजिस्ट्रेट के बँगले पर आए। पहले अपने कमरे में जाकर मुँह हाथ धोया, और कपड़े बदलकर उस कमरे में गए, जहाँ साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बैठे थे। अभी खाना चुना ही जा रहा था कि आजाद कमरे में दाखिल हुए। आप शाम को आने का वादा करके गए थे। ९ बजे पहुँचे तो सबने मिलकर क़हक़हा लगाया।

मेम—क्यों साहब, आपके यहाँ अब शाम हुई?

साहब—बड़ी देर से आपका इन्तज़ार था।

मीडा—कहीं शादी तो नहीं तय कर आए?

साहब—हाँ देर होने से तो हम सबको यही शक हुआ था।

मेम—जब तक आप देर की वजह न बताएँगे, यह शक न दूर होगा। आप लोगों में तो चार शादियाँ हो सकती हैं।

क्लारिसा—आप चुप क्यों हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं ?

आज़ाद—अब मैं क्या बयान करूँ। यहाँ तो सब लाल-बुझक्कड़ ही बैठे हैं। कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आँखों से पहचान लेता है मगर इस वक्त मैं जहाँ था, वहाँ खुदा किसी को न ले जाय।

साहब—जुवारियों का अड्डा तो नहीं था ?

आजाद—नहीं, वह और ही मामला था। इतमीनान से कहूँगा।

लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत जोर देने पर भी आज़ाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेडियों ने गाना शुरू किया और साहब भी शरीक हुए। इसके बाद उन्होंने आज़ाद से कुछ गाने को कहा।

आज़ाद—आपको इसमें क्या लुत्फ आएगा ?

मेम—नहीं, हम हिन्दोस्तानी गाना पसन्द करते हैं, मगर जो समझ में आए।

आजाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना। आखिर मजबूर होकर यह ग़ज़ल गाई—

जान से जाती हैं क्या-क्या हसरतें;
काश वह भी दिल में आना छोड़ दे।
'दाग़' से मेरे जहन्नुम को मिसाल;
तू भी वायज़ दिल जलाना छोड़ दे।
परदे की कुछ हद भी है परदानशीं;
खुलके मिल बस मुँह छिपाना छोड़ दे।
हूँ वह मजनूँ गर मैं ज़िन्दाँ में रहूँ;
फ़स्ले गुल गुलशन में आना छोड़ दे।

मेम—हम कुछ-कुछ समझे। वह जहन्नुम का शेर अच्छा है।

साहब—हम तो कुछ नहीं समझे, मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ।

दूसरे दिन आज़ाद तड़के कुन्दन के मकान पर पहुँचे और महरी से बोले—क्यों भाई, तुम सुरैयाबेगम को किसी तरह दिखा सकती हो ?

महरी—भला मैं कैसे दिखा दूँ। अब तो मेरी वहाँ पहुँच ही नहीं !

आज़ाद—खुदा गवाह है, फ़क़त एक नज़र-भर देखना चाहता हूँ।

महरी—खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करूँगी। और आज ही शाम को यहीं चले आइएगा।

आज़ाद—खुदा तुमको सलामत रक्खे, बड़ा काम निकलेगा।

महरी—ऐ मियाँ, मैं लौंडी हूँ। तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी।

आज़ाद—अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूँगा ?

महरी—यहाँ एक शाह साहब रहते हैं। सुरैयाबेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियाँ ने भी हुक्म दे दिया है कि जब उनका जी चाहे शाह साहब के यहाँ जायँ। शाहजी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुज़ूर जो कह देते हैं, वही होता है। क्या मजाल जो फ़रक़ पड़े।

आज़ाद—हाँ साहब, फ़क़ीर हैं नहीं, तो दुनिया क़ायम कैसे है।

महरी—मैं शाहजी को एक और जगह भेज दूँगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा। शाह साहब की तरफ़ कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता। इसलिये आपको यह ख़ौफ़ भी नहीं है कि सुरैयाबेगम पहचान जायँगी।

आज़ाद—बड़ा एहसान होगा। उम्र-भर न भूलूँगा। अच्छा, तो शाम को आऊँगा।

शाम को आज़ाद कुन्दन के घर पहुँच गए। महरी ने कहा—लीजिए, मुबारक हो। सब मामला चौकस है।

आज़ाद—जहाँ तुम हो, वहाँ किस बात की कमी। तुमसे आज

मुलाक़ात हुई थी ? हमारा ज़िक्र तो नहीं आया ? हम से नाराज़ तो नहीं हैं ?

महरी—ऐ हुजूर, अब तक रोती हैं। अक्सर फ़रमाती हैं कि जब आजाद सुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेंगे।

शाहसाहब शहर के बाहर एक इमली के पेड़ के नीचे रहते थे। महरी आजाद को वहाँ ले गई और दरख्त के नीचेवाली कोठरी में बैठाकर बोली—आप यहीं बैठिए, बेगमसाहब अब आती ही होंगी। जब वह आँख बन्द करके नज़र दिखाएँ, तो ले लीजिएगा। फिर आपमें और उनमें खुद ही बातें होंगी।

आजाद—ऐसा न हो कि मुझे देखकर डर जायँ।

महरी—जी नहीं, दिल की मज़बूत हैं। बनों-जङ्गलों में फिर आई हैं।

इतने में किसी आदमी के गाने की आवाज आई—

> बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की;
> गरीबों का ख़ुदा फरियाद-रस है।

आजाद—यह इस वक़्त इस वीराने में कौन गा रहा है ?

महरी—सिड़ी है। ख़बर पाई होगी कि आज यहाँ आनेवाली हैं।

आज़ाद—नवाबसाहब को इसका हाल मालूम है या नहीं ?

महरी—सभी जानते हैं। दिन रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं।

आजाद—भला यह तो बताओ कि हुस्नआरा के साथ कौन-कौन होगा।

महरी—दो-एक महरियाँ होंगी, सोलाईबेगम होंगी और दस बारह सिपाही।

आजाद—महरियाँ अन्दर साथ आयँगी या बाहर ही रहेंगी ?

महरी—इस कमरे में कोई नहीं आ सकता।

इतने में सुरैयाबेगम की सवारी दरवाजे पर आ पहुँची। आजाद का दिल धक-धक करता था। कुछ तो इस बात की खुशी थी कि मुद्दत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का खयाल कि कहीं परदा न खुल जाय।

आज़ाद—ज़रा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं।

महरी—बाग़ में टहल रही हैं। मीलाई बेगम भी हैं। चलके दीवार के पास खड़े होकर आड़ से देखिए।

आज़ाद—डर मालूम होता है कि कहीं देख न लें।

आखिर आज़ाद से न रहा गया। महरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बाग़ में कई औरतें चमन की सैर कर रही हैं।

महरी—जो ज़रा भी इनको मालूम हो जाय कि आज़ाद खड़े देख रहे हैं तो खुदा जाने दिल का क्या हाल हो।

आज़ाद—पुकारूँ ? बेअख्तियार जी चाहता है कि पुकारूँ।

इतने में बेगम दीवार के पास आईं और बैठकर बातें करने लगीं।

सुरैया—इस वक्त तो गाना सुनने को जी चाहता है।

मीलाई—देखिए, यह सौदाई क्या गा रहा है।

सुरैया—अरे ! इस मुए को अब तक मौत न आई। इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता है। शाहजी से कहूँगी कि इसको मौत आए।

मीलाई—ऐ नहीं, काहे को मौत आए बेचारे को। मगर आवाज़ अच्छी है।

सुरैया—आग लगे इसकी आवाज़ को।

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सब-की-सब इधर-उधर दौड़ने लगीं। आखिर एक माली ने कहा कि हुज़ूर सामने का बँगला खाली कर दिया है, इसमें बैठिए। सब-की-सब उस बँगले में गईं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा—भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी इनके साथ थी। बोली—शाहजी के यहाँ से कुछ लाऊँ? मगर फ़क़ीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया—जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो।

महरी ने दुपट्टे को लपेटकर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियाँ दरवाजे पर आईं और आवाज़ दी। आज़ाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गईं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियाँ हैं।

महरी—आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग ही में हैं?

ममोला—जी हाँ। मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है?

महरी ने शाहजी के बावरचीखाने से चार मोटी मोटी रोटियाँ और एक प्याला मसूर की दाल का लाकर दिया। दोनों महरियाँ खाना लेकर बँगले में पहुँचीं तो सुरैया बेगम ने पूछा—कहो, बेटा कि बेटी?

ममोला—हुज़ूर, फ़क़ीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है। लीजिए, यह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

सीलाई—इस वक्त यही गनीमत है।

ममोला—बेगमसाहब आपसे एक अरज़ है।

सुरैया—क्या है, कहो। तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती है।

ममोला—हुज़ूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग़ के दरवाजे पर एक बेकस बेगुनाह बेचारा दबका-दबकाया खड़ा भीग रहा है।

सुरैया—फिर तुमने वही पाजीपने की ली न। चलो हटो सामने से।

मीलाई—बहन, ख़ुदा के लिये इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बैठे हैं, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया—फिर मुझसे क्या कहती हो?

सिपाहियों ने दीवाने को बुलाकर बैठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगाई।

> पसे फ़िना हमें गरदूँ सताएगा फिर क्या,
> मिटे हुए को यह ज़ालिम मिटाएगा फिर क्या।
> ज़ईफ़ नाला दिल उसका हिला नहीं सकता,
> यह जाके अर्श का पाया हिलाएगा फिर क्या।
> शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
> वह फूल आके लेहद के उठाएगा फिर क्या।
> ख़ुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जबह करो,
> तड़प के सैर वह तुमको दिखाएगा फिर क्या।

सुरैया—देखा न। यह कम्बख्त ये गुल मचाए कभी न रहेगा।

मीलाई—बस यही तो इसमें ऐब है। मगर ग़ज़ल भी ढूँढ़ के अपने ही मतलब की कही है।

सुरैया—कम्बख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक्त वहाँ मटर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैरी की चटनी

तैयार कराके महरी के हाथ भेजवा दी। इस वक्त इन मटनी ने वह मज़ा दिया कि कोई सुरैया बेगम की ज़बान से सुने।

मोलाई—माली ने इनाम का काम किया है इस वक्त।

सुरैया—इसमें क्या शक। पाँच रुपये इनाम दे दो।

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चाँदनी निकली तो सुरैया बेगम ने महरी भेजी कि शाहजी का हुक्म हो तो हम हाज़िर हों। वहाँ महरी ने कहा—हाँ, शौक से आएँ। पूछने की क्या जरूरत है।

सुरैया बेगम ने आँखें बन्द कीं और शाहजी के पास गईं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब हाल हुआ। एक ठंडी साँस निकल आई। सुरैया बेगम घबराईं कि आज शाह साहब ठंडी साँसें क्यों ले रहे हैं। आँखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा। पहले तो समझीं कि आँखों ने धोखा दिया, मगर करीब से गौर करके देखा तो शक दूर हो गया।

उधर आज़ाद की ज़बान भी बंद हो गई। लाख चाहा कि दिल का हाल कह सुनाएँ, मगर ज़बान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक दूसरे को प्यार और हसरत की नज़र से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी। हाँ आँखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आँखों से टप टप आँसू गिर रहे थे। एकाएक सुरैया बेगम वहाँ से उठकर बाहर चली आईं।

अब्बासी ने पूछा—बेगम साहब, आज इतनी जल्दी क्यों की?

सुरैया—यों ही।

मोलाई—आँखों में आँसू क्यों हैं। शाह साहब से क्या बातें हुईं?

सुरैया—कुछ नहीं बहन, शाह साहब क्या कहते, जी ही तो है।

मोलाई—हाँ, मगर खुशी और रंज के लिये कोई सबब भी तो होता है।

सुरैया—बहन, हमसे इस वक्त सबब न पूछो। बड़ी लम्बी कहानी है।

मौलाई—अच्छा, कुछ मुख्तसर तौर करके कह दो।

सुरैया—बहन, बात सारी यह है कि इस वक्त शाहजी तक ने हम से चाल की। जो कुछ हमने इस वक्त देखा, उसके देखने की तमन्ना बरसों से थी, मगर अब आँखें फेर-फेरके देखने के सिवा और क्या है।

मौलाई—(सुरैया के गले में हाथ डालकर) क्या आज़ाद मिल गए क्या?

सुरैया—चुप-चुप! कोई सुन न ले।

मौलाई—आजाद इस वक्त कहाँ से आ गए! हमें भी दिखला दो।

सुरैया—रोकता कौन है। जाके देख लो।

मौलाई बेगम चलीं तो सुरैया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा—खबरदार, मेरी तरफ़ से कोई पैग़ाम न कहना।

मौलाई बेगम कुछ हिचकती, कुछ झिझकती आकर आजाद से बोलीं—शाहजी, कभी और भी इस तरफ आए थे?

आज़ाद—हम फ़कीरों को कहीं आने-जाने से क्या सरोकार। जिधर मौज हुई, चल दिए। दिन को सफर, रात को खुदा की याद। हाँ गम है तो यह कि खुदा को पाएँ।

मौलाई—सुनो शाहजी, आपकी फ़कीरी को हम खूब जानते हैं। यह सब काँटे आप ही के बोए हुए हैं। और अब आप फ़कीर बन कर यहाँ आए हैं। यह बताइए कि आपने उन्हें जो इतना परेशान किया तो किस लिए। इससे आपका क्या मतलब था?

आजाद—साफ़-साफ़ तो यह है कि हम उनसे फ़कत दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई—वाह, जब आँखें चार हुईं तब तो कुछ बोले नहीं और यह बातें हुईं भी तो नतीजा क्या। इनके मिज़ाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी हो गई, उसकी हो गई।

आज़ाद—अच्छा, एक नज़र तो दिखा दो।

मौलाई—अब यह मुमकिन नहीं। क्यों मुफ्त में अपनी जान को हलकान करोगे।

आज़ाद—तो बिलकुल हाथ धो डालें। अच्छा, चलिए बाग में ज़रा दूर ही से दिल के फफोले फोड़ें।

मौलाई—वाह-वाह! जब बाग में हों भी।

आज़ाद—अच्छा साहब, लीजिए सब्र कर के बैठे जाते हैं।

मौलाई—मैं जाकर कहती हूँ मगर उम्मेद नहीं कि मानें।

यह कहकर मौलाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आकर बोलीं—बहन, वल्लाह जानता हूँ, कितना ख़ूबसूरत जवान है।

सुरैया—हमारा ज़िक्र भी आया था? कुछ कहते थे?

मौलाई—तुम्हारे सिवा और ज़िक्र ही किसका था। बेचारे बहुत रोते थे। हमारी एक बात इस वक्त मानोगी। कहूँ।

सुरैया—कुछ मालूम तो हो क्या कहोगी?

मौलाई—पहले क़ौल दो फिर कहूँगी, यों नहीं।

सुरैया—वाह! बेसमझे-बूझे क़ौल कैसे दे दूँ।

मौलाई—हमारी इतनी ख़ातिर भी न करोगी बहन।

सुरैया—अब क्या जानें तुम क्या ऊल-जलूल बात कहो।

मौलाई—हम कोई ऐसी बात न कहेंगे, जिससे नुक़सान हो।

सुरैया—जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे मालूम में है।

मौलाई—क्या कहना है। आप ऐसी ही हैं।

सुरैया—अच्छा, और सब बातें मानेंगे सिवा एक बात के।

मोलाई—वह एक बात कौनसी है, हम सुन तो लें।

सुरैया—जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं।

मोलाई—अल्लाह को गवाह करके कहती हूँ, रो रहा है। मुझसे हाथ जोड़कर कहा है कि जिस तरह मुमकिन हो, मुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि नज़र भरकर देख लूँ।

सुरैया—क्या मजाल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊँ।

मोलाई—मुझे बड़ा तरस आता है।

सुरैया—दुनिया का भी तो खयाल है।

मोलाई—दुनिया से हमें क्या काम। यहाँ ऐसा कौन आता-जाता है। डर काहे का है, चलके ज़रा देख लो, उसका अरमान तो निकल जाय।

सुरैया—नः, मुमकिन नहीं! अब यहाँ से चलोगी भी या नहीं?

मोलाई—हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक तुम हमारा कहना न मानोगी।

सुरैया—सुनो मोलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है। इसका नतीजा तुम क्या सोची हो?

मोलाई—उसका दिल खुश होगा।

सुरैया—खुशी से ज्यादा अफ़सोस होगा। इस वक्त वह आपे में नहीं हैं, मगर जब इस मामले पर गौर करेंगे तो उन्हें ज़रूर रंज होगा।

दोनों बेगमें पालकियों पर बैठकर रवाना हुईं। आज़ाद ने मकान की दीवार से सुरैया बेगम को देखा और ठंढी साँस ली।

एक सौ सातवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन आज़ाद वहाँ से रुखसत होकर हुस्नआरा से मिलने चले। बात-बात पर बाछें खिली जाती थीं। दिमाग़ सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंज़िलें पूरी करके यार के कूचे में पहुँचे। कहाँ रूम, कहाँ हिन्दोस्तान! कहाँ लड़ाई का मैदान और कहाँ हुस्नआरा का मकान! दोनों लेडियों ने चहकना शुरू किया—

क्लारिसा—आज भला आज़ाद के दिमाग़ काहे को मिलेंगे।

मीडा—इस वक्त मारे खुशी के इनसे बात करना भी मुश्किल है।

आज़ाद—बड़ी मुश्किल है। बोलूँ तो हँसवाऊँ, न बोलूँ तो आवाज़ें कसे जायँ।

क्लारिसा—क्या इसमें कुछ झूठ भी है। जिसके लिये दुनिया भर की ख़ाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ ही चाहे।

एकाएक कमरे के बाहर से आवाज़ आई—भला रे गीदी, भला! और ज़रा देर में मियाँ खोजी कमरे में दाखिल हुए।

क्लारिसा—आप इतने दिन तक कहाँ थे ख्वाजा साहब?

खोजी—था कहाँ, जहाँ जाता हूँ वहाँ लोग पीछे पड़ जाते हैं। इतनी दावतें खाईं कि क्या किसी ने खाई होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं, अगर न आऊँ तो लोग कहें, गुरूर करता है। यहाँ तो इतना वक्त कहाँ! इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

आज़ाद—अब कुछ हमारे भी काम आओ।

खोजी—और दौड़ा आया किस लिये हूँ। कहो, हुस्नआरा को भी खबर हुई या नहीं। न हुई हो तो पहुँचूँ। मुझसे ज्यादा इस काम के लायक और किसी को न पाओगे। मैं बड़े काम का आदमी हूँ।

आजाद—इसमें क्या शक है भाईजान! बेशक हो।

ख़ोजी—तो फिर मैं चलूँ।

आज़ाद—नेकी और पूछ-पूछ।

खोजी जानेवाले ही थे कि एक आदमी होटल की तरफ़ आता दिखाई दिया। उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल खोजी से मिलती थी। वही नाटा क़द, वही काला रंग, वही नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव। खोजी का बड़ा भाई मालूम होता था।

आजाद—वल्लाह, बिलकुल ख़ोजी ही हैं।

मीडा—बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ। उनको छिपाओ इनको दिखाओ। जरा फ़र्क नहीं।

खोजी—तू कौन है बे? कहाँ चला आता है। कुछ बेधा तो नहीं है। तुम-जैसे मसख़रों का यहाँ क्या काम?

मसख़रा—कोई हमसे बढ़के देख ले। बड़ा मर्द हो तो आ जाय।

ख़ोजी—क्या कहता है? बरस पड़ूँ।

मसख़रा—जा अपना काम कर। जो गरजता है, वह बरसता नहीं।

खोजी—बचा, तुम्हारी कजा मेरे ही हाथ से है।

मसख़रा—माशे-भर का आदमी, बौनों के बराबर क़द और चला है मुझे ललकारने।

खोजी—कोई है? लाना तो चण्डू की निगाली। ले आइए!

मसख़रा—हम तो जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े हैं शेर कहीं हटा करते हैं। थमे, सो जमे।

ख़ोजी—क़ज़ा खेल रही है तेरी। मैं इसको क्या करूँ। अब जो कुछ कहना सुनना हो, कह सुन लो थोड़ी देर में जान फड़कती होगी।

मसख़रा—ज़री ज़बान सँभाले हुए हज़रत ! ऐसा न हो, मैं गरदन पर सवार हो जाऊँ।

होटल में जितने आदमी थे, उनको शिगूफ़ा हाथ आया। सभी इन दोनों बौनों की कुश्ती देखने के लिये बेकरार थे। दोनों को बढ़ाने लगे।

एक—भई हम सब तो ख्वाजा साहब की तरफ़ हैं।

दूसरा—हम भी। यह उससे कहीं तगड़े हैं।

तीसरा—कौन ? कहीं हो न ! इनमें और उसमें बीस और सोलह का फ़र्क़ है। बोलो, क्या-क्या बदते हो।

ख़ोजी—जिसका रुपया फ़ालतू हो, वह इसके हाथ पर बदे। जो कुछ बनाकर घर ले जाना चाहे वह हमारे हाथ पर बदे।

मसख़रा—एक चपाटे में बोल जाइए तो सही। बात करते करते पकड़ लाऊँ और चुटकी बजाते चित करूं (चुटकी बजाकर) यों-यों !

ख़ोजी—मैं इतनी देर नहीं लगाने का।

मसख़रा—अरे चुप भी रह ! यह मुँह पान खाई ! एक उँगली में वह पेंच बाँधूँ कि तड़पने लगो।

लिया जिसने हमारा नाम, मारा बेगुनाह उसको,
निशाँ जिसने बताया, बस, वह तीरों का निशाना था।

आज़ाद—बढ़ गए ख्वाजा साहब, यह आपसे बढ़ गए। अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज़्ज़त रहे।

ख़ोजी—अजी इससे अच्छा शेर लीजिए।

तड़पा न ज़रा ख़ंजर के तले सिर अपना दिया शिकवा न किया,
था पासे अदब जो क़ातिल का यह भी न हुआ वह भी न हुआ।

मसख़रा—ले अब आ।

ख़ोजी—ठैर, तेरी क़ज़ा आ गई है।

मसखरा—ज़रा सामने आ। ज़मीन में सिर खोंस दूँगा।

ख़ोजी—(ताल ठोंककर) अब भी कहा मान, न लड़।

मसखरा—या अली मदद कर।

क़ब्र में जिनको न सोना था, सुलाया उनको,

पर मुझे चर्ख़ सितमगर ने सोने न दिया।

आज़ाद—भई ख़ोजी, शायरी में तुम बिलकुल दब गए।

ख़ोजी कुछ जवाब देने ही वाले थे कि इतने में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया। क़रीब था कि ज़मीन पर दे पटके कि मियाँ ख़ोजी सँभले और झल्लाके मसखरे की गरदन में दोनों हाथ डालकर बोले—बस अब तुम मरे!

मसख़रा—आज तुझे जीता न छोड़ूँगा

ख़ोजी—देखो, हाथ टूटा तो नालिश कर दूँगा। कुश्ती में हाथा-पाई कैसी?

मसख़रा—अपनी बुढ़िया को बुला लाओ। कोई लाश को रोनेवाला तो हो तुम्हारी!

ख़ोजी—या तो क़त्ल ही करेंगे या तो क़त्ल होंगे।

मसख़रा—और हम क़त्ल ही करके छोड़ेंगे।

ख़्वाजा साहब ने एक अंटी बताई तो मसखरा गिरा। ख़ोजी भी मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे। अब न वह उठते हैं न वह। न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं।

मसख़रा—मार डाल, मगर गरदन न छोड़ूँगा।

ख़ोजी—तू गरदन मरोड़ डाल, मगर मैं अधमरा करके छोड़ूँगा। हाय-हाय! गरदन गई! पसलियाँ चर चर बोल रही हैं!

मसख़रा—जो कुछ हो सो हो, कुछ परवा नहीं है।

ख़ोजी—यहाँ किसको परवा है, कोई रोनेवाला भी नहीं है।

अब की ख़ोजी ने गरदन छुड़ा ली। उधर मसख़रा भी निकल भागा दोनों अपनी-अपनी गरदन सुहलाने लगे। यार लोगों ने फिर फ़िकरे चुस्त किए। भई हम तो ख़ोजी के दम के क़ायल हैं।

दूसरा बोला—वाह! अगर कसी आध घड़ी और कुश्ती रहती तो वह मार लेता!

तीसरे ने कहा—अच्छा, फिर अब की सही। किसी का दम थोड़े टूटा है।

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आध घंटे तक दोनों हाँफा किए, मगर ज़बान चली जाती थी।

ख़ोजी—ज़रा और देर होती तो फिर दिल्लगी देखते।

मसख़रा—हाँ, बेशक।

ख़ोजी—तकदीर थी, बच गए, वरना मुँह बिगाड देता।

मसख़रा—अब तुम इस फ़िक्र में हो कि मैं फिर उठूँ।

आज़ाद—भई अब ज्यादा बखेड़ा न बढ़ाओ। बहुत हो चुकी।

मसख़रा—हुज़ूर, मैं बे न चा दिखाए न मानूँगा।

ख़ोजी—(मसख़रे की गरदन पकड़कर) आओ, दिखाओ नीचा।

मसख़रा—अबे तू गरदन तो छोड़। गरदन छोड़ दे हमारी।

ख़ोजी—अब की हमारा दाँव है!

मसख़रा—(थप्पड़ लगाकर) एक-दो।

ख़ोजी—(चपत देकर) तीन।

मसख़रा—(गुद्दा जमाकर) चार-पाँच।

फ़िक़रेबाज़—सौ तक गिन जाओ यों ही। हाँ पाँच हुई।

दूसरा—ऐसे-ऐसे जवान और पाँच ही तक गिन के रह गए!

खोजी—(चपत देकर) छः- छः और नहीं तो। लोग बड़ी देर से छः का इन्तजार कर रहे थे।

अब की वह घमासान लड़ाई हुई कि दोनों बेदम होकर गिर पड़े और रोने लगे।

खोजी—अब मौत करीब है। भई आजाद, हमारी क़ब्र किसी पोस्ते के खेत के करीब बनवाना।

मसखरा—और हमारी कब्र शाहफसीह के तकिए में बनवाई जाय जहाँ हमारे वालिद ख्वाजा बलीग दफन है।

खोजी—कौन-कौन? इनके वालिद का क्या नाम था?

आजाद—ख्वाजा बलीग़ कहते हैं

खोजी-(रोकर) अरे भाई हमें पहचाना? मगर हमारी तुम्हारी चोंच ही बदी थी।

मसखरे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया—भई, यह क्या गजब हुआ! सगा भाई सगे भाई को मारे!

दोनों भाई गले मिलकर रोए। बड़े भाई ने अपना नाम मियाँ रईस बतलाया। बोले—बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरह से नहीं देखा था। बड़ी खूबियों के आदमी थे। हमको रोज दूकान पर ले जाया करते थे।

आज़ाद—काहे की दूकान थी हज़रत?

रईस—जी टाल थी। लकड़ियाँ बेचते थे।

खोजी ने भाई की तरफ़ घूरकर देखा।

रईस -कुछ दिन कलू में साहब लोगों के यहाँ खानसामा रहे थे।

खोजी ने भाई की तरफ़ देखकर दाँत पीसा।

आज़ाद—बस हज़रत, क़लई खुल गई। अच्छा जान खानसामा थे और आप रईस बनते हैं।

आज़ाद चले गए तो दोनों भाइयों में ख़ूब तकरार हुई। मगर थोड़े ही देर में मेल हो गया, और दोनों भाई साथ साथ शहर की सैर को गए। इधर-उधर मटरगश्त करके मियाँ रईस तो अपने अड्डे पर गए और खोजी हुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुँचे। बूढ़े मियाँ बैठे हुक्का पी रहे थे।

ख़ोजी—आदाब-अर्ज़ है। पहचाना या भूल गए?

बूढ़े मियाँ—बंदगी अर्ज। मैंने आपको नहीं पहचाना।

ख़ोजी—तुम भला हमें क्यों पहचानोगे। तुम्हारी आँख में तो चर्बी छाई हुई है।

बूढ़े मियाँ—आप तो कुछ अजीब पागल मालूम होते हैं। जान न पहचान, त्योरियाँ बदलने लगे।

ख़ोजी—अजी हम तो सुनाएँ बादशाह को तुम क्या माल हो।

बूढ़े मियाँ—अपने होश में हो या नहीं।

ख़ोजी—कोई महलसरा में हुस्नआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफिर आए हैं।

बूढ़े मियाँ—(खड़े होकर) अख़्ख़ाह! ख्वाजा साहब तो नहीं हैं आप! माफ़ कीजिएगा। आइए गले मिल लें।

बूढ़े मियाँ ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक्का भर दो, और अंदर जाकर बोले—लो साहब, खोजी दाखिल हो गए।

चारों बहनें बाग़ में गईं और चिक की आड़ से ख़ोजी को देखने लगीं।

नाज़ुक अदा—ओ हो हो! कैसा ग्रांडील जवान है।

नानी—अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊँट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी हो, इसकी कोई कल दुरुस्त नहीं। हँसी आती है।

खोजी इधर-उधर देखने लगे कि यह आवाज कहाँ से आती है। इतने में बूढ़े मियाँ आ गए।

ख़ोजी—हजरत, इस मकान की अजब खासियत है।

बूढ़े मियाँ—क्या-क्या ? इस मकान में कोई नई बात आपने देखी है

खोजी—आवाजें आती हैं। मैं बैठा हुआ था, एक आवाज आई फिर दूसरी आवाज आई।

बूढ़े मियाँ—आप क्या फरमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी।

जानी बेगम की रग-रग में शोखी भरी हुई थी। ख़ोजी को बनाने की उन्हें एक नई तरकीब सूझी। बोलीं—एक बात हमें सूझी है। अभी हम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम—हमसे तो कह दो।

जानी ने बहार बेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा।

बहार—क्या हरज है, बूढ़ा ही तो है।

सिपहआरा—आखिर कुछ कहो तो बाजी जान! हमसे कहने में कुछ हरज है।

बहार—जानी बेगम कह दें तो बता दूँ।

जानी—नहीं, किसी से न कहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठकर दूसरे कमरे में चली गईं। यहाँ इन सबको हैरत हो रही थी कि या खुदा! इन दोनों को कौन तरकीब सूझी है, जो इतना छिपा रही हैं। अपनी-अपनी समझ दौड़ाने लगीं।

नाजुक—हम समझ गए। अफ़ीमी आदमी हैं। उसकी डिबिया चुराने की फ़िक्र होगी।

हुस्नआरा—यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी?

इतने में बहार बेगम ने आकर कहा—चलो बाग में चलकर बैठें।

ख्वाजा साहब पहले ही से बाग में बैठे हुए थे। एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता अकड़ता चला आता है। अभी मसें भी नहीं भीगीं। जाली लोट का कुरता, उस पर शरबती का कटारदार अँगरखा, सिर पर बाँकी पगिया और हाथ में कटार।

हुस्नआरा—यह कौन है अल्लाह ? जरा पूछना तो।

सिपहआरा—ओफ्फोह ! बाजी जान, पहचानो तो भला।

हुस्नआरा—अरे ! बड़ा धोखा दिया।

नाज़ुक—सचमुच ! बेशक, बड़ा धोखा दिया ! ओफ्फोह !

सिपहआरा—मैं तो पहले समझी ही न थी कुछ।

इतने में वह जवान खोजी के करीब आया तो यह चकराए कि इस बाग में इसका गुजर कैसे हुआ। उसकी तरफ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचाकर कहा—ऐ ! यह कौन मरदुआ बाग में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह लौंडा भीतर चला आता है। इसे निकाल क्यों नहीं देते ?

खोजी—अजी हजरत, आखिर आप कौन साहब हैं ? पराए जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है।

जवान—कुछ तुम्हारी शामत तो नहीं आई है। चुपचाप बैठे रहो।

खोजी—सुनिए साहब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं।

जवान—(बात काटकर) हमने कह दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूँगा। हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आए हैं, और हुस्नआरा के पास निकाह का पैगाम भेजनेवाले हैं। बस, अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय।

खोजी—आज़ाद का मुकाबिला तुम क्या खाकर करोगे। उसने लड़ाइयाँ सर की हैं। तुम अभी लौंडे हो।

जवान— तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम कर दूँ।

ख़ोजी—(पैंतरे बदलकर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं।

जवान—आज ही का दिन तेरी मौत का था।

ख़ोजी—(पीछे हटकर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान—क्यों नाहक़ ग़ुस्सा दिलाता है। अच्छा, ले सँभल।

जवान ने तलवार घुमाई तो घबराकर पीछे हटे, और गिर पड़े। बस करौली की याद करने लगे। औरतें तालियाँ बजा-बजाकर हँसने लगीं।

जवान—बस, इसी बिरते पर भूला था।

ख़ोजी—पत्री मैं अपने जोम में आप आ रहा। अभी चाहूँ तो क़यामत बरपा कर दूँ।

जवान—जाकर आज़ाद से कहना कि होशियार रहें।

ख़ोजी—बहुतों का अरमान निकल गया। उनकी सूरत देख लो, तो बुख़ार आ जाय।

जवान—अच्छा, कल देखूँगा।

यह कहकर उसने सदर बेगम का हाथ पकड़ा और बेधड़क कोठे पर चढ़ गया। चारों बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गईं।

ख़ोजी वहाँ से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आज़ाद से चलकर कहता हूँ, हुस्नआरा के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। क़दम-क़दम पर डींग लगाते थे, घड़ी दो में सुरम्मिया चालेगी। इत्तफ़ाक़ से रास्ते में वही होटल का ख़ानसामा मिल गया, जहाँ आज़ाद ठहरे थे। बोला—अरे भाई! इस वक़्त कहाँ लपके हुए जाते हो? ख़ैर तो है? आज तो आप ग़रीबों से बात ही नहीं करते।

ख़ोजी—घड़ी दो में सुरम्मिया चालेगी।

ख़ानसामा—भई वाह ! सारी दुनिया घूम आए मगर कौंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बनकर आए होंगे।

ख़ोजी—तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है।

खानसामा—हम देखते हैं वहाँ से तुम और भी गाउदी होकर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आजाद को देखते ही मुँह बनाकर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद—क्या खबर लाए ?

ख़ोजी—(करौली को दाएँ हाथ से बाएँ हाथ में लेकर) हुँः !

आज़ाद—अरे भाई गए थे वहाँ।

ख़ोजी—(करौली को बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर) हुँः !!

आज़ाद—अरे कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ !

ख़ोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—क्या ? कुछ सनक तो नहीं गए ! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गए थे ? किसी से मुलाकात हुई ? क्या रंग-ढंग है ?

खोजी—वहाँ नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे, मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद—भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई ? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी—अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद—क्या ? कैसी दाल ? यह बकते क्या हो ?

ख़ोजी—बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आजाद—खोजी, अगर साफ़ साफ़ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

खोजी—उलटे मुझी को डाटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा !

आज़ाद—वहाँ का मुफ़स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते ?

ख़ोजी—तो जनाब, साफ़-साफ़ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बाग़ के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा, और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद—कोई खूबसूरत आदमी है ?

खोजी—निहायत हसीन, और कमसिन।

आजाद—इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

खोजी—यकीन तो हमें भी मरते दम तक न आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही कहकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा—अब दिल्लगी हो कि वह जाकर आज़ाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा—आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा—खुदा जाने वह सिड़ी वहाँ जाकर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खाकर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा—हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेजकर ख़ोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-हँसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले—वह आपके मियाँ ख़ोजी कहाँ हैं ? जरा उनको बुलवाइए।

खानसामा—भई वाह ! सारी दुनिया घूम आए मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बनकर आए होंगे।

ख़ोजी—तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है।

खानसामा—हम देखते हैं वहाँ से तुम और भी गाउदी होकर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आजाद को देखते ही मुँह बनाकर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद—क्या खबर लाए ?

ख़ोजी—(करौली को दाएँ हाथ से बाएँ हाथ में लेकर) हुँः !

आज़ाद—अरे भाई गए थे वहाँ।

ख़ोजी—(करौली को बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर) हुँः !!

आज़ाद—अरे कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ !

ख़ोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—क्या ? कुछ सनक तो नहीं गए ! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गए थे ? किसी से मुलाकात हुई ? क्या रंग-ढंग है ?

ख़ोजी—वहाँ नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे, मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद—भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ़ साफ़ कहो, क्या बात हुई ? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी—अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद—क्या ? कैसी दाल ? यह बकते क्या हो ?

ख़ोजी—बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आज़ाद—ख़ोजी, अगर साफ़ साफ़ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

ख़ोजी—उलटे मुझी को डाटते हो। मैने क्या बिगाड़ा !

आज़ाद—वहाँ का मुफ़स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते ?

खोजी—तो जनाब, साफ़-साफ़ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बाग़ के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा, और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद—कोई ख़ूबसूरत आदमी है ?

खोजी—निहायत हसीन और कमसिन।

आजाद—इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

ख़ोजी—यकीन तो हमें भी मरते दम तक न आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही क़हकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा—अब दिल्लगी हो कि वह जाकर आजाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा—आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा—खुदा जाने वह सिड़ी वहाँ जाकर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खाकर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा—हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेजकर ख़ोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-हँसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले—वह आपके मियाँ ख़ोजी कहाँ हैं ? ज़रा उनको बुलवाइए।

आज़ाद—आपके यहाँ से जो आए तो गुस्से में भरे हुए। अब मुझसे बात ही नहीं करते।

बूढ़े मियाँ—वह तो आज खूब ही बनाए गए।

बूढ़े मियाँ ने सारा किस्सा बयान कर दिया। आजाद सुनकर खूब हँसे और खोजी को बुलाकर उनके सामने ही बूढ़े मियाँ से बोले—क्यो साहब, आपके यहाँ यह क्या दस्तूर है कि कटारबाजों को बुला-बुलाकर शरीफों से भिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ—ख्वाजा साहब को आज खुदा ही ने बचाया।

आज़ाद—मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला पतला आदमी है। इनसे उससे अगर चलती तो यह उसको जरूर नीचा दिखाते।

खोजी—अजी कैसा नीचा दिखाना? वह तलवार चलाना क्या जाने!

आज़ाद—आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाय।

खोजी—हमारे नज़दीक उसको बुलवाना फ़ज़ूल है। मुफ्त की ठाँय-ठाँय से क्या फायदा। हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं, तो बुलवा लीजिए।

यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने आकर कहा—हुजूर, एक गाड़ी पर औरतें आई हैं। एक खिदमतगार ने, जो गाड़ी के साथ है, हुजूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आएँ।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गईं! खोजी को भेजा कि जाकर देखो। ख़ोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस क़दम अलग।

खिदमतगार—हज़रत, ज़रा सामने यहाँ तक आइए।

खोजी—ओ गीदी, खबरदार जो बोला!

खिदमतगार—ऐं ! कुछ सनक गए हो क्या ।

बैरा—गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई । दूर क्यों खड़े हो ?

खोजी—(करौली तौलकर) बस खबरदार !

बैरा—ऐं ! तुमको हुआ क्या है । जाते क्यों नहीं सामने ?

खोजी—चुप रहो जी । जानो न बूझो, आए वहाँ से । क्या मेरी जान फालतू है, जो गाड़ी के सामने जायँ ।

इत्तफ़ाक से आज़ाद ने उनकी बेतुकी हाँक सुन ली । फौरन् बाहर आए कि कहीं किसी से लड न पड़े । खोजी से पूछा—क्यों साहब, यह आप किस पर बिगड़ रहे हैं ? जवाब नदारद । वहाँ से झपटकर आज़ाद के पास आए और करौली घुमाते हुए पैतरे बदलने लगे ।

आज़ाद—कुछ मुँह से तो कहो । । खुद भी ज़लील होते हो और मुझे भी ज़लील करते हो ।

खोजी—(गाड़ी की तरफ इशारा करके) अब क्या होगा ।

खिदमतगार—हुज़ूर, इन्होंने आते ही पैतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया । न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं ।

खोजी—(आज़ाद के कान में) मियाँ, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं । वहीं लौंडा तुमसे लडने आया होगा ।

आज़ाद—यह कहिए, आपके दिल में यह बात जमी हुई थी । आप मेरे साथ बहुत हमदर्दी न कीजिए अलग जाके बैठिए ।

मगर ख़ोजी के दिल में खुप गई थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिपके आया है । उन्होंने रोना शुरू किया । अब आजाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो होटल के और मुसाफिरों को बुरा मालूम होगा, मगर खोजी चुप ही नहीं होते । आखिर आपने कहा—जो लोग गाड़ी पर सवार हों, वह उतर आएँ । पहले मैं देख लूँ, फिर आप जायँ ।

आज़ाद ने ख़िदमतगार से कहा—भाई अगर वह लोग मंजूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झाँककर देख ले। इस सिड़ी को शक हुआ है कि इसमें कोई और बैठा है। ख़िदमतगार ने जाकर पूछा, और बोला—सरकार कहती हैं, हाँ, मंजूर है। चलिए, मगर दूर ही से झाँकिएगा।

ख़ोजी—(सबसे रुख़सत होकर) लो यारो, अब आख़िरी सलाम है। आज़ाद, ख़ुदा तुमको दोनों जहान में सुर्ख़रू रक्खे।

छुटता है मुकाम, कूच करता हूँ मैं,
रुख़सत ऐ ज़िन्दगी कि मरता हूँ मैं।
अल्लाह से लौ लगी हुई है मेरी,
ऊपर के दम इस वास्ते भरता हूँ मैं।

ख़िदमतगार—अब आख़िर मरने तो जाते ही हो, ज़रा कदम बढ़ाते न चलो। जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद।

आज़ाद—क्यों मुरदे को छेड़ते हो जी।

बग्गी से हँसी की आवाज़ें आ रही थीं। ख़ोजी आँखों में आँसू भरे चले जा रहे थे कि उनके भाई नज़र पड़े। उनको देखते ही ख़ोजी ने हाँक लगाई—आइए भाई साहब! आख़िरी वक़्त आपसे ख़ूब मुलाक़ात हुई।

रईस—ख़ैर तो है भाई! क्या अकेले ही चले जाओगे! मुझे किसके भरोसे छोड़े जाते हो।

ख़ोजी भाई के गले मिलकर रोने लगे। जब दोनों गले मिलकर ख़ूब रो चुके तो ख़ोजी ने गाड़ी के पास जाकर ख़िदमतगार से कहा—खोल दें। ज्यों ही गरदन अंदर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं। इनका सिर ज्योंही अंदर पहुँचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतारकर दो चपतें लगा दीं। ख़ोजी की जान में जान आई। हँस दिए। आकर आज़ाद से बोले—अब

आप जायँ, कुछ मुजायका नहीं है। आजाद ने होटल के आदमियों को वहाँ से हटा दिया, और उन औरतों से बातें करने लगे।

आज़ाद—आप कौन साहब हैं?

बग्गी में से आवाज आई—आदमी हैं साहब! सुना कि आप आए हैं, तो देखने चले आए। इस तरह मिलना बुरा तो जरूर है, मगर दिल ने न माना।

आज़ाद—जब इतनी इनायत की है तो अब नक़ाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए।

आवाज—अच्छा, पेट से पाँव निकाले! हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया।

आज़ाद—अगर आप न आयँगी तो मेरी दिलशिकनी होगी। इतना समझ लीजिए।

आवाज़—ऐ, हाँ! खूब याद आया। वह जो दो लेडियाँ आपके साथ आई हैं, वह कहाँ हैं? परदा करा दो तो हम उनसे मिल लें।

आज़ाद—बहुत अच्छा, लेकिन मैं रहूँ या न रहूँ?

आवाज़—आपसे क्या परदा है।

आजाद ने परदा करा दिया। दोनों औरतें गाड़ी से उतर पड़ीं और कमरे में आईं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया, मगर बातें क्या होतीं। मिसें उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी ज़बान से क्या मतलब। कुछ देर तक वहाँ बैठे रहने के बाद उनमें से एक ने, जो बहुत ही हसीन और शोख़ थी, आज़ाद से कहा—भई यहाँ बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो, चलिए बाग़ की सैर करें।

आज़ाद—यहाँ तो ऐसा कोई बाग़ नहीं। मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाक़ात हुई।

हसीना ने आँखों में आँसू भरकर कहा—हाँ साहब, आपको क्यों याद आएगा। आप हम ग़रीबों को क्यों याद करने लगे। क्या यहाँ कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहाँ कोई गैर न हो। यहाँ तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता। चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें।

आज़ाद को एक अजनबी औरत के साथ दूसरे कमरे में जाते शर्म तो आती थी मगर यह समझकर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ले गए और पूछा—मुझे आपका हाल सुनने की बड़ी तमन्ना है। जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहाँ देखा था?

औरत—खुदा की कसम बड़े बेवफ़ा हो। (आजाद के गले में हाथ डालकर) अब भी याद नहीं आता! वाह रे हम!

आज़ाद—तुम मुझे बेवफ़ा चाहे कह लो, पर मेरी याद इस वक्त धोखा दे रही है।

औरत—हाय अफ़सोस! ऐसा ज़ालिम नहीं देखा।

नक्यों कर दम निकल जाए कि याद आता है रह-रहकर;
वह तेरा मुसकिराना कुछ मुझे ओठों में कह-कहकर।

आज़ाद—मेरी समझ ही में नहीं आता कि यह क्या माजरा है।

औरत—दिल छीनके बातें बनाते हो। इतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो।

आज़ाद—यह मेरा आदत नहीं।

औरत—हाय! दिल-सा घर तूने गारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं।

आज़ाद—अब मुझे फुरसत नहीं है, फिर किसी रोज आइएगा।

औरत—अच्छा, अब कब मिलोगे?

आजाद—अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

यह कहते हुए आज़ाद उस कमरे से निकल आए। उनके पीछे-पीछे वह औरत भी बाहर निकली। दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गईं। उसके बाल बिखरे हुए थे, चोली मसकी हुई। उस औरत ने आते ही आते आजाद को कोसना शुरू किया—तुम लोग गवाह रहना। यह मुझे अलग कमरे में ले गए और एक घंटे के बाद मुझे छोड़ा। मेरी जो हालत है, आप लोग देख रही हैं।

आजाद—खैरियत इसी में है कि अब आप जाइए।

औरत—अब मैं जाऊं! अब किसी की होके रहूँ?

क्लारिसा—(फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आज़ाद?

आजाद—कोई छटी हुई औरत है।

आजाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और वह मकर यही कहती थी—अच्छा, तुम्हीं क़सम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं?

आजाद—अब ज़लील होकर यहाँ से जाओगी तुम। अजब मुसीबत में जान पड़ी है।

औरत—ऐ है, अब मुसीबत याद आई! पहले क्या समझे थे?

आजाद—बस, अब ज्यादा न बढ़ना।

औरत—गाड़ीवान से कहो, गाड़ी बरामदे में लाए।

आजाद—हाँ खुदा के लिये तुम यहाँ से जाओ।

औरत—जाती तो हूँ, मगर देखो तो क्या होता है!

जब गाड़ी रवाना हुई तो खोजी ने अंदर आकर पूछा—इनसे तुम्हारी कब की जान-पहचान थी?

आजाद—अरे भाई, आज तो ग़जब हो गया।

ख़ोजी—मना तो करता था कि इनसे दूर रहो मगर आप सुन किसकी हैं।

आजाद—झूठ बकते हो। तुमने तो कहा था कि आप जायँ, कु मुजायका नहीं है। और अब निकले जाते हो।

ख़ोजी—अच्छा साहब, मुझी से गलती हुई। मैंने गाड़ीवान चकमा देकर सारा हाल मालूम कर लिया। यह दोनों कुंदन की छो रियाँ हैं। अब यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आजाद का इस निकाह होनेवाला है।

आज़ाद—इस वक्त हमें बड़ी उलझन है भाई! कोई तदबीर सोचो

ख़ोजी—तदबीर तो यही है कि मैं कुंदन के पास जाऊँ और उ समझा-बुझाकर ढर्रे पर ले आऊँ।

आज़ाद—तो फिर देर न कीजिए। उम्र-भर आपका एहसा मानूँगा।

खोजी तो इधर रवाना हुए, अब आजाद ने दोनों लेडियों की तरफ़ देखा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाए हुए थे। क्लारिसा एक नाविल पढ़ रही थी और मीडा सिर झुकाए हुए थी। उन दोनों को यक़ीन हो गया था कि औरत या तो आजाद की ब्याहता बीबी है या आशना। अगर जान-पहचान न होती तो इस कमरे में जाकर बैठने की दोनों में से एक को भी हिम्मत न होती। थोड़ी देर तक बिलकुल सन्नाटा रहा, आखिर आजाद ने खुद ही अपनी सफाई देनी शुरू की। बोले—किसी ने सच कहा है, "कर तो डर, न कर तो डर" मैंने इस औरत की आज तक सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफजादी मुझसे मिलने आई होगी; मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नजर से नहीं गुजरी।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न दिया। उन्होंने समझा कि आजाद हमें चकमा दे रहे हैं। अब तो आजाद के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। कुछ देर तक तो ज़ब्त किया मगर न रहा गया। बोले—मिस मीडा, तुमने इस मुल्क की मक्कार औरतें अभी नहीं देखीं।

मीडा—मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आज़ाद—उसकी शरारत देखी?

मीडा—मेरा ध्यान उस वक्त उधर न था।

आज़ाद—मिस क्लारिसा, तुम कुछ समझीं या नहीं?

क्लारिसा—मैंने कुछ ख़याल नहीं किया।

आज़ाद—मुझसा अहमक भी कम होगा। सारी दुनिया से आकर यहाँ चरका खा गया।

मीडा—अपने किए का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो।

आज़ाद—हाँ, यही तो मैं चाहता था कि कुछ कहो तो सही। मीडा, सच कहता हूँ, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो। मगर इसने यह दाँव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक बन गए।

मीडा—अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गए?

आज़ाद—इसी गलती का तो रोना है। मैं क्या जानता था कि वह यह रंग लाएगी।

मीडा—वह तो जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिये क्या फिक्र की है। उसकी बात-चीत से तो मालूम होता था कि वह ज़रूर नालिश करेगी।

आज़ाद—इसी का तो मुझे भी ख़ौफ है। खोजी को भेजा है कि जाकर उसे धमकाएँ। देखो, क्या करके आते हैं।

उधर खोजी गिरते-पड़ते कुंदन के घर पहुँचे, तो दो तीन औरतों को कुछ बातें करते सुना। कान लगाकर सुनने लगे।

"बेटा तुम तो समझती ही नहीं हो, बदनामी कितनी बड़ी है।"

"तो अम्माँजान बदनामी का ऐसा ही डर हो तो सभी न दब जाया करें।"

"दबते ही हैं। इस फ़ौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिए।"

"अच्छा अम्माँजान, तुम्हें अख्तियार है, मगर नतीजा अच्छा न होगा।"

ख़ोजी से अब न रहा गया। झल्लाकर बोले—ओ गीदी, निकल तो आ। देख तो कितनी करौलियाँ भोंकता हूँ। बढ़-बढ़के बातें बनाती है! नालिश करेगी, और बदनाम करेगी।

कुन्दन ने यह आवाज़ सुनी तो खिड़की से झाँका। देखा, तो एक ठेगना-सा आदमी पैंतरे बदल रहा है। महरी से कहा कि दरवाज़ा खोलकर बुला लो। महरी ने आकर कहा—कौन साहब हैं; आइए।

ख़ोजी अकड़ते हुए अन्दर गए और एक मोढ़े पर बैठे। बैठना ही था कि सिर नीचे और टाँगें ऊपर! औरतें हँसने लगीं। ख़ैर आप सँभलकर दूसरे मोढ़े पर बैठे और कुछ बोलना ही चाहते थे कि कुन्दन सामने आई और आते ही ख़ोजी को एक धक्का देकर बोली—चूल्हे में जाय ऐसा मियाँ। बरसों के बाद आज सूरत भी दिखाई तो भेस बदलकर आया। निगोड़े, तेरा जनाज़ा निकले। तू अब तक था कहाँ?

ख़ोजी—यह दिल्लगी हमको पसन्द नहीं।

कुंदन—(धप लगाकर) तो शादी क्या समझकर की थी?

शादी का नाम सुनकर ख़ोजी की बाछें खिल गईं। समझे कि मुफ्त में औरत हाथ आई। बोले—तो शादी इस लिये की थी कि जूतियाँ खायँ?

कुंदन—आखिर, तू इतने दिन था कहाँ? ला, क्या कमाकर लाया है।

यह कहकर कुन्दन ने उनकी जेब टटोली, तो तीन रुपए, और कुछ पैसे निकले। वह निकाल लिए। वह बेचारे हाँ-हाँ करते ही रहे कि सबों ने उन्हें घर से निकालकर दरवाजा बंद कर दिया। ख़ोजी वहाँ से भागे और रोनी सूरत बनाए हुए होटल में दाखिल हुए।

आजाद ने पूछा—कहो भाई, क्या कर आए? ऐं! तुम तो पिटे हुए-से जान पड़ते हो।

खोजी—ज़रा दम लेने दो। मामला बहुत नाज़ुक है। तुम तो फँसे ही थे, मैं भी फँस गया। इस सूरत का बुरा हो, जहाँ जाता हूँ वहीं चाहनेवाले निकल आते हैं। एक पण्डित ने कहा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है। उस वक्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जँची, मगर अब देखता हूँ तो उसने बिलकुल सच कहा था।

आज़ाद—तुम तो हो सिड़ी। ऐसे ही तो बड़े हसीन हो। मेरी बाबत भी कुन्दन से कुछ बातचीत हुई या आँखें ही सेंकते रहे।

खोजी—बड़े घर की तैयारी कर रक्खो। बंदा वहाँ भी तुम्हारे साथ होगा।

आज़ाद—बाज़ आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिलाना सब अकारथ गया। बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ।

इस पर खोजी बहुत बिगड़े, बोले—हाँ साहब, काम निकला गया न। अब तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

खानसामा—क्या है ख्वाजाजी, क्यों बिगड़ गए?

खोजी—तू चुप रह कुली, ख्वाजाजी! और सुनिएगा।

खानसामा—मैंने तो आपकी इज्जत की थी।

खोजी—नहीं, आप माफ कीजिए। क्या खूब। टके का आदमी और हमसे इस तरह पर पेश आए। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा

नसीबा ही फिरा हुआ है। खैर, जो चाहो सुनाओ। अब हम यहाँ से कूच करते हैं। जहाँ हमारे क़द्रदाँ हैं, वहाँ जायँगे।

खानसामा—यहाँ से बढ़के आपका कौन क़द्रदाँ होगा? खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बनाकर रक्खें, फिर अब और क्या चाहिए।

खोजी—सच है भाई, सच है। हम आज़ाद के गुलाम तो हैं ही। इन्हीं से क़सम लो कि उनके बाप-दादा हमारे बुज़ुर्गों के टुकड़े खाकर पले थे या नहीं।

आजाद—आपकी बातें सुन रहा हूँ। जरा इधर देखिएगा।

खोजी—सौ सोनार की, तो एक लोहार की।

आज़ाद—हमारे बाप-दादा आपके टुकड़खोरे थे?

खोजी—जी हाँ, क्या इसमें कुछ शक भी है?

इतने में खानसामा ने दूर से कहा—ख्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अण्डे बेचा करते थे।

इतना सुनना था कि खोजी आग हो गए और एक तवा उठाकर खानसामा की तरफ़ दौड़े। तवा बहुत गर्म था। अच्छी तरह उठा भी न पाए थे कि हाथ जल गया। झिझककर तवे को जो फेंका तो गुर से मुँह के बल गिर पड़े।

खानसामा—या अली, बचाइयो।

बैरा—तवा तो जल रहा था, हाथ जल गया होगा।

भीस्ती—डाक्टर को फौरन् बुलाओ।

खानसामा—उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान हो!

आज़ाद—खुदा ने बचा लिया वरन् जान हो गई थी।

ख्वाजा साहब चुपचाप पड़े हुए थे। खानसामा ने बरामदे में एक

पलङ्ग बिछाया और दो आदमियों ने मिलकर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले जायँ। उसी वक्त एक आदमी ने कहा—अब बचना मुशकिल है! खोजी अक्ल के दुश्मन तो थे ही। उनको यकीन हो गया कि अब आखिरी वक्त है। रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। खानसामा और होटल के और नौकर चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा—भाई, दुनिया इसी का नाम है। जिन्दगी का एतबार क्या।

बैरा—इसी बहाने मौत लिखी थी।

मुहर्रिर—और अभी नौजवान आदमी हैं। इनकी उम्र ही क्या है!

आजाद—क्या, हाल क्या है? नब्ज़ का कुछ पता है?

खानसामा—हुजूर, अब आखिरी वक्त है। अब कफ़न-दफ़न की फिक्र कीजिए।

यह सुनकर खोजी जल-भुन गए। मगर आखिरी वक्त था, कुछ बोल न सके।

आजाद—किसी मौलवी को बुलाओ।

मुहर्रिर—हुजूर, यह न होगा। हमने कभी इनको नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

आज़ाद—भई, इस वक्त यह जिक्र न करो।

मुहर्रिर—हुजूर मालिक हैं, मगर यह मुसलमान नहीं है।

खोजी का बस चलता तो मुहर्रिर की बोटियाँ नोच लेते मगर इस वक्त वह मर रहे थे।

खानसामा—क़ब्र खुदवाइए, अब इनमें क्या है?

बैरा—इसी सामनेवाले मैदान में इनको तोप दो।

खोजी का चेहरा सुर्ख हो गया। कम्बख्त कहता है तोप दो! यह नहीं कहता है कि आपको दफ़न कर दो।

आज़ाद—बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा।

खानसामा—ख़ब्ती सिड़ी थे, मगर थे नेक।

बैरा—नेक क्या थे! हाँ, यह कहो कि किसी तरह निभ गई।

खोजी अपना ख़ून पीके रह गए, मगर मजबूर थे।

मुहर्रिर—अब इनको मिलके तोप ही दीजिए।

आज़ाद—बड़ी देर में मुरलिया बाजेगी।

बैरा—ख्वाजा साहब, कहिए अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—अब इस वक़्त क्या बताएँ बेचारे, अफ़सोस है!

खानसामा—अफ़सोस क्यों हुज़ूर, अब मरने के तो दिन ही थे। जवान-जवान मरते जाते हैं। यह तो अपनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आकबत के बोरिए बटोरेंगे?

आज़ाद—हाँ, है तो ऐसा ही, मगर जान बड़ी प्यारी शर्य है। आदमी चाहे दो सौ बरस का होके मरे, मगर मरते वक़्त यही जी चाहता है कि दस बरस और जिन्दा रहता।

खानसामा—तो हुज़ूर, यह तमन्ना तो उसको हो, जिसका कोई रोनेवाला हो। इनके कौन बैठा है।

इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बनाकर लाया।

आज़ाद—कुर्सी पर बैठिए हकीम साहब।

हकीम—यह गुस्ताख़ी मुझसे न होगी। हुज़ूर बैठें।

आज़ाद—इस वक़्त सब माफ़ है।

हकीम—यह बेअदबी मुझसे न होगी।

आज़ाद—हकीम साहब, मरीज़ की जान जाती है और आप तकल्लुफ़ करते हैं।

हकीम—चाहे मरीज़ मर जाय मगर मैं अदब को हाथ से न दूँगा।

खोजी को हकीम की सूरत से नफ़रत हो गई।

आज़ाद—आप तकल्लुफ़-तकल्लुफ़ में मरीज की जान लेंगे।

हकीम—अगर मौत है तो मरेगा ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ूँ।

आज़ाद ने खोजी के कान में जोर से कहा—हकीम साहब आए हैं।

खोजी ने हकीम साहब को सलाम किया और हाथ बढ़ाया।

हकीम—(नब्ज पर हाथ रखकर) अब क्या बाकी है, अभी तीन-
ार दिन की नब्ज है मगर इस वक्त इनको ठडे पानी से नहलाया जाय तो
़तर है, बल्कि अगर पानी में बर्फ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है।

आजाद—बहुत अच्छा। अभी लीजिए।

हकीम—बस, एक दो मन बर्फ काफ़ी होगी।

इतने में मिस मीडा ने आज़ाद से कहा—तुम भी अजीब आदमी
़। दो-चार होटलवालों को लेकर एक गरीब का खून अपनी गरदन
र लेते हो। खोजी की चारपाई हमारे कमरे के सामने बिछवा दो और
त आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के करीब न आए।

इस तरह खोजी की जान बची। आराम से सोए। दूसरे दिन घूमते-
ामते एक चण्डूखाने में जा पहुँचे और छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्न-
ारा का ज़िक्र सुनकर उनके कान खड़े हुए। कोई कह रहा था कि हुस्न-
ारा पर एक शहजादे आशिक हुए हैं, जिसका नाम 'कमरदौला' है।
ोजी बिगड़कर बोले—खबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम
ार लिया। शरीफजादियों का नाम बद करता है ये!

एक चण्डूबाज़—हम तो सुनी-सुनाई कहते हैं साहब। शहर-भर में
ाह खबर मशहूर है आप किस-किसकी जबान रोकिएगा।

खोजी—झूठ है, बिलकुल झूठ।

चण्डूबाज़ - अच्छा, हम झूठ कहते हैं तो ईदू से पूछ लीजिए।

ईदू—हमने तो यह सुना था कि बेगम साहब ने अखबार में कुछ लिखा था तो वह शहज़ादे ने पढ़ा और आशिक हो गए। फौरन बेगम साहब के नाम से ख़त लिखा और शायद किसी बाँके को मुकर्रर किया है कि आज़ाद को मार डाले। खुदा जाने, सच है या झूठ।

खोजी—तुमने किससे सुनी है यह बात? इस धोखे में न रहना। थाने पर चलकर गवाही देनी होगी।

ईदू—हुज़ूर क्या आज़ाद के दोस्त हैं?

ख़ोजी—दोस्त नहीं हूँ, उस्ताद हूँ। मेरा शागिर्द है।

ईदू—आपके कितने शागिर्द होंगे?

ख़ोजी—यहाँ से लेकर रूम और शाम तक।

ख़ोजी शहज़ादे का पता पूछते हुए लाल कुएँ पर पहुँचे। देखा तो सैकड़ों आदमी पानी भर रहे हैं।

ख़ोजी—क्यों भाई, यह कुआँ तो आज तक देखने में नहीं आया था!

भिश्ती—क्या कहीं बाहर गए थे आप?

खोजी—हाँ भई, बड़ा लंबा सफ़र करके लौटा हूँ।

भिश्ती—इसे बने तो चार महीने हो गए।

ख़ोजी—अहा हा! यह कहो, भला किसने बनवाया है?

भिश्ती—शहज़ादा कमरुद्दौला ने।

खोजी—शहज़ादा साहब रहते कहाँ हैं?

भिश्ती—तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज ही आए हो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है।

ख़ोजी यहाँ से महल के चोबदार के पास पहुँचे और अलेक-सलेक

करके बोले—भाई, कोई नौकरी दिलवाते हो।

दरबान—दारोगा साहब से कहिए, शायद मतलब निकले।

खोजी—उनसे कब मुलाकात होगी?

दरबान—उनके मकान पर जाइए, और कुछ चढ़ाइए।

खोजी—भला शहज़ादे तक रसाई हो सकती है या नहीं?

दरबान—अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ-बारह हैं।

इतने में अंदर से एक आदमी निकला। दरबान ने पूछा—किधर चले शेखजी?

शेख़—हुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जल्द हाज़िर करो।

खोजी—तो हमको ले चलिए। इस फ़न में हम अपना सानी नहीं रखते।

शेख—ऐसा न हो, आप वहाँ चलकर बेवक़ूफ़ बनें।

खोजी—अजी ले तो चलिए। खुदा ने चाहा तो सुर्खरू ही रहूँगा।

शेख साहब उनको लेकर बारादरी में पहुँचे। शहज़ादा साहब मसनद लगाए पेचवान पी रहे थे और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे। खोजी ने अदब से सलाम किया और फ़र्श पर जा बैठे।

आग़ा—हुजूर, अगर हुक्म दो तो तारे आसमान से उतार लूँ।

मुन्ने—हक़ है। ऐसा ही रोब है हमारे सरकार का।

मिरजा—खुदावंद, अब हुजूर की तबीयत का क्या हाल है?

आग़ा—खुदा का फज़ल है। खुदा ने चाहा तो सुबह-शाम शिप्पा लड़ा ही चाहता है। हुजूर का नाम सुनकर कोई निकाह से इनकार करेगा भला।

मुन्ने—अजी परिस्तान की हूर हो तो लौंडी बन जाय।

खोजी—खुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मालूम होता है कि खुदा ने अपने हाथ से बनाया है।

मिरज़ा—सुभान-अल्लाह ! वाह ! खाँसाहब, वाह ! सच है।

शेख़—खाँसाहब नहीं, ख्वाजा साहब कहिए।

मिरज़ा—अजी वह कोई हों, हम तो इंसाफ के लोग हैं। खुदा को मुँह दिखाना है। क्या बात कही है ! ख्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं। रफ्ता-रफ्ता देखिएगा कि हुजूर ने कैसा मिजाज पाया है।

शेख़ - बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान।

खोजी—मुझसे कहते हो ? शहर में कौन रईस है, जिससे मैं वाक़िफ़ नहीं ?

आग़ा—भई मिरजा, अब फ़तह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही झुकी हुई हैं।

मिरजा—वल्लाह ! हाथ लाइएगा। मरदों का वार खाली जाय ?

आग़ा—यह सब हुजूर का अकबाल है।

कमरुद्दौला—मैं तो तड़प रहा था, ज़िन्दगी से बेज़ार था ! आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया।

खोजी हैरान थे कि यह क्या माजरा है ! हुस्नआरा को यह क्या हो गया कि कमरुद्दौला पर रीझीं ! कभी यकीन आता था, कभी शक होता था।

आग़ा—हुजूर का दूर-दूर तक नाम है।

मिरज़ा—क्यों नहीं, लंदन तक।

खोजी—कह दिया न भाई जान कि दूसरा नज़र नहीं आता।

शाहजादा—(आग़ा से) यह कहाँ रहते हैं और कौन हैं ?

खोजी—जी, ग़रीब का मकान मुर्गी-बाजार में है।

आग़ा—अभी आप कुड़क रहे थे।

मिरजा—हाँ, अडे बेचते तो हमने भी देखा था।

खोजी—जभी आप सदर-बाज़ार में टापा करते हैं।

शहज़ादा—ख्वाजा साहब, ज़िले में ताक़ हैं।

खोजी—आपकी क़द्रदानी है।

बातों-बातों में यहाँ का टोह लेकर खोजी घर चले। होटल में पहुँचे तो आज़ाद को बूढ़े मियाँ से बातें करते देखा। ललकारकर बोले—लो, मैं भी आ पहुँचा।

आज़ाद—गुल न मचाओ। हम लोग न-जाने कैसी सलाह कर रहे हैं, तुमको क्या, बे-फ़िक्रे हो। कुछ बसत की भी खबर है? यहाँ एक नया गुल खिला है!

खोजी—अजी, हमें सब मालूम है। हमें क्या सिखाते हो।

आज़ाद—तुमसे किसने कहा?

खोजी—अजी हमसे बढ़कर टोहिया कोई हो तो ले। अभी उन्हीं कमरुद्दौला के यहाँ से आता हूँ। जैसे ही खबर पाई कि हुस्नआरा के एक और आशिक पैदा हुए, फ़ौरन् कमरुद्दौला के यहाँ जा पहुँचा। पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बात-चीत रही। आदमी तो खब्ती-सा है और बिलकुल जाहिल। मगर उसने हुस्नआरा को कहाँ से देख लिया? छोकरी है चुलबुली। कोठे पर गई होगी, बस उसकी नज़र पड़ गई होगी।

बूढ़े मियाँ—ज़रा ज़बान सँभालकर!

खोजी—आप जब देखो, तिरछे ही होकर बातें करते हैं? क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है? बड़े अक़्लमंद आप ही तो हैं एक!

इतने में फ़िटन पर एक अँगरेज आज़ाद को पूछता हुआ आ पहुँचा। आज़ाद ने बढ़कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मालूम

हुआ कि वह फौजी अफ़सर है। आज़ाद को एक जलसे का चेयरमै
बनने के लिए कहने आया है।

आज़ाद—इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ की ? एक ख
काफ़ी था।

साहब—मैं चाहता हूँ कि आप इसी वक्त मेरे साथ चलें। लेक्च
का वक्त बहुत करीब है।

आज़ाद साहब के साथ चल दिए। टाउन-हाल में बहुत-से आद
जमा थे। आज़ाद के पहुँचते ही लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। मैं
जब वह बोलने के लिए मेज़ के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ़ स
बँध गया। जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मचाते थे, अभी कु
और फरमाइए। यहाँ तक कि आज़ाद ही के बोलते बोलते वक्त पूरा
गया और साहब बहादुर के बोलने की नौबत न आई। शहजादा कम
दौला भी मुसाहबों के साथ जलसे में मौजूद थे। ज्यों ही आज़ाद बै
उन्होंने आगा से कहा—सच कहना, ऐसा खूबसूरत आदमी कभी देखा है

आगा—बिलकुल शेर मालूम होता है।

शहज़ादा—ऐसा जवान दुनिया में न होगा।

आग़ा—और तकरीर कितनी प्यारी है!

शहज़ादा—क्यों साहब, जब हम मरदों का यह हाल है, तो औरत
का क्या हाल होता होगा।

आग़ा—औरत क्या, परी आशिक हो जाय।

शहजादा साहब जब वहाँ से चले तो दिल में सोचा—भला आज़ा
के सामने मेरी दाल क्या गलेगी ? मेरा और आज़ाद का मुकाबिला क्या
अपनी हिमाक़त पर बहुत शर्मिन्दा हुई। ज्यों ही मकान पर पहुँचे, मुसा
हबों ने बेपर की उड़ानी शुरू की—

मिरज़ा—ख़ुदावन्द, आज तो मुँह मीठा कराइए। वह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि फड़क जाइए। हुज़ूर उनके यहाँ एक महरी नौकर है। वह मुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार की तसवीर का आज़ाद की तसवीर से मुक़ाबिला किया और बोलीं—मेरी तो शहज़ादे पर जान जाती है।

और मुसाहबों ने भी ख़ुशामद करनी शुरू की। मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कहा। थोड़ी देर तक बैठे रहे फिर अंदर से चले गए। उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आग़ा से पूछा—अरे मियाँ! बताओ तो, क्या माजरा है? क्या सबब है कि सरकार आज इतने उदास हैं?

आग़ा—भई, कुछ न पूछिए बस, यही समझ लो कि सरकार की आँखें खुल गईं।

एक सौ आठवाँ परिच्छेद

आज़ाद के आने के बाद ही बड़ी बेगम ने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बरात ख़ूब धूम-धाम से आए। आज़ाद धूम-धाम के ख़िलाफ़ थे। इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं—

बहार बेगम—यह सब दिखाने की बातें हैं। किसी से दो हाथी माँगा, किसी से दो-चार घोड़े, कहीं से सिपाही आए, कहीं से बरछी-बरदार! लो साहब, बरात आई है। माँगे-ताँगे की बरात से फ़ायदा!

बड़ी बेगम—हमको तो यह तमन्ना नहीं है कि बरात धूम ही से दरवाज़े पर आए। मगर कम-से-कम इतना तो ज़रूर होना चाहिए कि जग-हँसाई न हो।

जानी बेगम—एक काम कीजिए, एक ख़त लिख भेजिए।

गेती—हमारे खानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं। हमने तो आज तक नहीं सुना। धुनिए-जुलाहों के यहाँ तक तो अँगरेजी बाजा बरात के साथ होता है।

बहार—हाँ साहब, बरात तो वही है, जिसमें ५० हाथी, बल्कि फीलखाने-का-फीलखाना हो, साँड़िनियों की क़तार दो महल्ले तक जाय। शहर-भर के घोड़े और हवादार और तामदान हों और कई रिसाले बल्कि तोपखाना भी जरूर हो। कदम-कदम पर आतशबाज़ी छूटती हो और गोले दगते हों। मालूम हो कि बरात क्या किला फतह किया जाता है।

नाजुक—यह सब बुरी बातें हैं क्यों?

बहार—जी नहीं, इन्हें बुरी कौन कहेगा भला।

नाजुक—अच्छा, वह जानें उनका काम जाने।

हुस्नआरा ने जब देखा कि आज़ाद की जिद से बड़ी बेगम नाराज हुई जाती हैं तो आज़ाद के नाम एक खत लिखा—

प्यारे आजाद,

माना कि तुम्हारे खयालात बहुत ऊँचे हैं, मगर राह-रस्म में दखल देने से क्या नतीजा निकलेगा। अम्माँजान जिद करती हैं, और तुम इन्कार, खुदा ही खैर करे। हमारी खातिर से मान लो, और जो वह कहें सो करो।

आज़ाद ने इसका जवाब लिखा—जैसी तुम्हारी मर्जी। मुझे कोई उज्र नहीं है।

हुस्नआरा ने यह खत पढ़ा तो तस्कीन हुई। नाजुक अदा से बोली—लो बहन, जवाब आ गया।

नाजुक—मान गए या नहीं?

हुस्नआरा—न कैसे मानते।

नाजुक—चलो, अब अम्माँजान को भी तस्कीन हो गई।

बहार—मिठाइयाँ बाँटो। अब इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात होगी?

नाजुक—आखिर, फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिये दिया है?

बहार—वाह री अक्ल! बस, रुपया इसी लिये है कि आतशबाजी में फूँके या सजावट में लुटाए। और कोई काम ही नहीं?

नाजुक—और आखिर क्या काम है? क्या परचून की दूकान करे? चने बेचे? कुछ मालूम तो हो कि रुपया किस काम में खर्च किया जाय। दिल का हौसला और कैसे निकाले!

बहार—अपनी-अपनी समझ है।

नाजुक—खुदा न करे किसी की ऐसी उलटी समझ हो। लो साहब, अब बरात भी गुनाह है। हाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल। जो बरात निकालते है सब गधे हैं। एक तुम और दूसरे मियाँ आज़ाद दो आदमियों पर अक्ल खतम हो गई। जरा आने तो दो मियाँ को सारी शेखी निकल जायगी।

दूसरे दिन बडी धूम-धाम से माझे की तैयारी हुई। आज़ाद की तरफ खोजी मुहतमिम थे। आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी, जिसमें कीमती बेल टँकी हुई थी। सिर पर एक बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कशमीर का हरा दुशाला। इस ठाट से आप बाहर आए तो लोगों ने तालियाँ बजाईं। इस पर आप बहुत ही खफा होकर बोले—यह तालियाँ हम पर नहीं बजाते हो। यह अपने बाप-दादों पर तालियाँ बजाते हो। यह खास उनका लिबास है। कई लौंडों ने उनके

मुँह पर हँसना शुरू किया, मगर इन्तज़ाम की धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़ककर बोले—हाथियों को उसी तरफ रहने दो। बस, उसी लाइन में ला-लाकर हाथी लगाओ।

एक फीलवान—यहाँ कहाँ जगह भी है? सबका भुरता बनाएँगे आप?

खोजी—चुप रह, बदमाश!

मिरजा साहब भी खड़े तमाशा देख रहे थे। बोले—भई इस फ़न में तो तुम उस्ताद हो।

खोजी—(मुसकिराकर) आपकी क़द्रदानी है।

मिरजा—आपका रोब सब मानते हैं।

खोजी—हम किस लायक़ हैं भाई जान। दोस्तों का इक़बाल है।

गरज़ इस धूम-धाम से मांझा दुलहिन के मकान पर पहुँचा कि सारे शहर में शोर मच गया। सवारियाँ उतरीं। मीरासिनों ने समधिनों को गालियाँ दीं। मियाँ आज़ाद बाहर से बुलवाए गए और उनसे कहा गया कि मढे के नीचे बैठिए। आज़ाद बहुत इनकार करते रहे मगर औरतों ने एक न सुनी। नाजुक बेगम ने कहा—आप तो अभी से बिचकने लगे। अभी तो मांझे का जोड़ा पहनना पड़ेगा।

आज़ाद—यह मुझसे नहीं होने का।

जानी बेगम—अब चुपचाप पहन लो, बस!

आज़ाद—क्या फ़ुज़ूल रस्म है!

जानी—ले अब पहनते हो कि तकरार करते हो? हमसे जनरैली न चलेगी।

बेगम—भला, यह भी कोई बात है कि मांझे का जोड़ा न पहनोगे?

आज़ाद—अगर आपकी ख़ातिर इसी है तो लाइए, टोपी दे मैं दूँ।

नाज़ुक बेगम—जब तक माझे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहाँ से उठने न पाओगे।

आज़ाद ने बहुत हाथ जोड़े. गिड़गिड़ाकर कहा कि खुदा के लिये मुझे इस पीले जोड़े से बचाओ। मगर कुछ बस न चला। सालियों ने अँगरखा पहनाया, कंगन बाँधा, सारी बातें रस्म के मुताबिक पूरी हुईं।

जब आज़ाद बाहर गए तो सब बेगमें मिलकर बाग़ की सैर करने चलीं। गेतीआरा ने एक फूल तोड़कर जानी बेगम की तरफ फेंका। उसने वह फूल रोककर उन पर ताक के मारा तो अचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बाग में चारों तरफ फूलों की मार होने लगी। इसके बाद नाज़ुकअदा ने यह ग़ज़ल गाई—

वाकिफ नहीं है कासिद मेरे गमे निहाँ से,
वह काश हाल मेरा सुनते मेरी जबाँ से।
क्यों त्योरियों पर बल है, माथे पर क्यों शिकन है?
क्यों इस कदर हो बरहम! कुछ तो कहो जबाँ से।
कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया,
काली घटाएँ रोकर पलटी हैं बोस्ताँ से।
जाने को जाओ लेकिन, यह तो बताते जाओ,
किस तरह बारे फुरकत उठेगा नातवाँ से।

बहार—जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम लूँ।

नाज़ुक—और मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ चूम लूँ।

बहार—हम तुम्हारी आवाज के आशिक हैं।

नाज़ुक—आपकी मेहरबानी। मगर कोई खूबसूरत मर्द आशिक हो तो बात है। तुम हम पर रीझीं तो क्या? कुछ बात नहीं।

बहार—बस, इन्हीं बातों से लोग उँगलियाँ उठाते हैं। और तुम नहीं छोड़तीं।

जानी—सच्ची आवाज भी कितनी प्यारी होती है।

नाजुक—क्या कहना है! अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न। अगर हमको अल्लाह ने ऐसा हुस्न न दिया होता, तो हमारे मियाँ हम पर क्यों रीझते?

बहार—तुम्हारा हुस्न तुम्हारे मियाँ को मुबारक हो! हम तो तुम्हारी आवाज पर मिटे हुए हैं।

नाजुक—और मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूँ। अब मैं भी बनाव-चुनाव करना तुमसे सीखूँगी।

बहार—तुमने मुझे बनाव-चुनाव करते कब देखा है?

नाजुक—बहन, अब तुम झेंपती हो। जब कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा। मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। है तुम्हारे मियाँ किस्मत के धनी।

बहार—सुनो बहन, हमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताकत नहीं कि उसे बाहर का चस्का पड़े।

साचिक के दिन जब चाँदी का पिटारा बाहर आया तो खोजी बार-बार पिटारे का ढकना उठाकर देखने लगे कि कहीं शीशियाँ न गिरने लगें। मोतिए का इत्र खुदा जाने किन दिक्कतों से लाया हूँ। यह वह इत्र है, जो आसफुद्दौला के यहाँ से बादशाह की बेगम के लिये गया था।

एक आदमी ने हँसकर कहा—इतना पुराना इत्र हुजूर को कहाँ से मिल गया?

खोजी—हुँ! कहाँ से मिल गया! मिल कहाँ से जाता? महीनों दौड़ा हूँ, तब जाके यह चीज हाथ लगी है।

आदमी—क्यों साहब, यह बरसों का इत्र चिकट न गया होगा ?

खोजी—वाह ! अक्ल बड़ी कि भैंस ? बादशाही कोठों के इत्र कहीं चेकटा करते हैं ? यह भी उन गंधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं ?

आदमी—और क्यों साहब, केवड़ा कहाँ का है ?

खोजी—केवड़िस्तान एक मुक़ाम है, कजलीवन के पास। वहाँ के केवड़ों से खींचा गया है।

आदमी—केवड़िस्तान ! यह नाम तो आज ही सुना।

खोजी—अभी तुमने सुना ही क्या है ? केवड़िस्तान का नाम ही सुनकर घबड़ा गए ?

आदमी—क्यों हुज़ूर, यह कजलीवन कौन-सा है ? वही न, जहाँ घोड़े बहुत होते हैं ?

खोजी—(हँसकर) अब बनाते हैं आप। कजलीवन में घोड़े नहीं, खास हाथियों का जंगल है।

आदमी—क्यों जनाब, केवड़िस्तान से तो केवड़ा आया, और गुलाब कहाँ का है ? शायद गुलाबिस्तान का होगा ?

खोजी—शाबाश ! यह हमारी सोहबत का असर है कि अपने परों आप उड़ने लगे। गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहाँ का जादू मशहूर है।

रात को जब मांझे का जलूस निकला तो खोजी ने एक पनशाखे-वाली का हाथ पकड़ा, और कहा—जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा।

वह बिगड़कर बोली—दुर मुए ! दाढ़ी झुलस दूँगी हाँ। आया वहाँ से बरात का दरोगा बनके, सिवा मुरहेपन के दूसरी बात नहीं।

खोजी—निकाल दो इस हरामजादी को यहां से।

औरत—निकाल दो इस मूड़ीकाटे को।

ख़ोजी—अब मैं छुरी भोंक दूँगा, बस!

औरत—अपने पनशाखे से मुँह झुलस दूंगी। मुआ, दोदाना औरतों को रास्ते में छेड़ता चलता है।

खोजी—अरे मियां कांस्टेबिल, निकाल दो इस औरत को।

औरत—तू खुद निकल दे, पहले।

जलूस के साथ कई दिगड़े-दिल भी थे। उन्होंने ख़ोजी को चकमा दिया—जनाब, अगर इसने मजा न पाई तो आपकी बड़ी किरकरी होगी। बदनामी हो जायगी। आखिर, यह फैसला हुआ, आप कमर कसकर बड़े जोश के साथ पनशाखेवाली की तरफ झपटे। झपटते ही उसने पनशाखा सीधा किया और कहा—अल्लाह की कसम! न झुलस दूँ, तो अपने बाप की नहीं।

लोगों ने खोजी पर फबतियाँ कहनी शुरू की।

एक—क्यों मेजर साहब, अब तो हारी मानी।

दूसरा—हूँ! करौली और छुरी क्या हुई!

तीसरा—एक पनशाखेवाली से नहीं जीत पाते, बड़े सिपाही की दुम बने हैं!

औरत—क्या दिल्लगी है! जरा जगह से बढ़ा, और मैंने दाढ़ी और मूँछ दोनों झुलस दिया।

खोजी—देखो, सब-के-सब देख रहे हैं कि औरत समझकर इसको छोड़ दिया। वरना कोई देव भी होता तो हम बे कत्ल किए न छोड़ते इस वक्त।

जब सालिक दुलहिन के घर पहुँचा, तो दुलहिन की बहनों ने चन्दन

से समधिन की माँग भरी। हुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फड़क गई। दुलहिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इसके बाद छड़ियों की मार होने लगी। नाजुक अदा और जानी बेगम के हाथ में फूलों की छड़ियाँ थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियाँ पड़ीं कि बेचारी घबड़ा गईं।

जब मांझे और साचिक की रस्म अदा हो चुकी तो मेहँदी का जलूस निकला। दुलहिन के यहाँ महफिल सजी हुई थी। डोमिनियाँ गा रही थीं। कमरे की दीवारें इस तरह रँगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहरती थी। छतगीर की जगह सुर्ख जरबफ्त लगाया गया था। उस पर सुनहरी कलाबत्तू की झालर थी। फर्श भी सुर्ख मखमल का था। झाड़ और कँवल, मृदंग और हाँडियाँ सब सुर्ख। कमरा शीशमहल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती फिरती थीं। इतने में एक सुखपाल लेकर महरियाँ सहन में आईं। उस पर से एक बेगम साहब उतरीं, जिनका नाम परीबानू था।

सिपहआरा बोलीं—हाँ, अब नाजुकअदा बहन की जवाब देनेवाली आ गईं। बराबर की जोड़ है। यह कम न वह कम।

रूहअफजा—नाम बड़ा प्यारा है।

नाजुक—प्यारा क्यों न हो! इनके मियाँ ने यह नाम रक्खा है।

परीबानू—और तुम्हारे मियाँ ने तुम्हारा नाम क्या रक्खा है चरचाँकमहल?

इस पर बड़ी हँसी उड़ी। बारह बजे रात को मेंहदी रवाना हुई। जब जलूस सज गया तो ख्वाजा साहब आ पहुँचे और आते ही गुल मचाना शुरू किया—सब चीजें करीने के साथ लगाओ और मेरे हुकुम के बगैर कोई एक कदम भी आगे न रक्खे। वरना बुरा होगा।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाए गए थे। जिसने देखा, दंग हो गया।

एक—यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सब से बढ़-चढ़कर हैं।

दूसरा—बड़ा रुपिया इन्होंने सर्फ किया है साहब।

तीसरा—ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं।

चौथा—जरा चण्डूबाजों के तख्त को देखिए। ओ-हो हो! सब के सब औंधे पड़े हुए हैं! आँखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मालूम होता है, सचमुच चंडूखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पौंडा छील रहा है।

इसके बाद तुर्क-सवारों का तख्त आया। जवान लाल बानात की कुर्तियाँ पहने, सिर पर बाँकी टोपियाँ दिए, बूट चढ़ाए, हाथ में नंगी तलवारें लिए, बस यही मालूम होता था कि रिसाले ने धावा किया।

जब जुलूस दुलहिन के यहाँ पहुँचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं। दुलहा की बहनें और भावजें दरवाजे तक इन्हें लेने आईं। जब समधिनें बैठीं तो डोमिनियों ने मुबारकबाद गाई। फिर गालियों की बौछार होने लगी? आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के हाथों में मेंहदी लगाने की बारी आई। उनका इरादा था कि एक ही उँगली में मेंहदी लगाएँ, मगर जब एक तरफ सिपहआरा और दूसरी तरफ हुस्नआरा बेगम ने दोनों हाथों में मेंहदी लगाना शुरू किया तो उनकी हिम्मत न पड़ी कि हाथ खींच लें।

हँसी हँसी में उन्होंने कहा—हिंदुओं की देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है। नहीं तो अरब में कौन मेंहदी लगाता है।

सिपहआरा—जिन हाथों ने तलवार चलाई, उन हाथों को कोई हँस नहीं सकता। सिपाही को कौन हँसेगा भला?

रूहअफ्जा—क्या बात कही है ! जवाब दो तो जानें ।

दो बजे रात को रूहअफ्जा बेगम को शरारत जो सूझी तो गेरू घोलकर सोते में महरियों को रँग दिया और लगे हाथ कई बेगमों के मुँह भी रँग दिए । सुबह को जानी बेगम उठीं तो उनको देखकर सब-की-सब हँसने लगीं । चकराई कि आज माजरा क्या है ! पूछा—हमें देखकर हँस रही हो क्या ?

रूहअफ्जा—घबराओ नहीं, अभी मालूम हो जायगा ।

नाजुक—कुछ अपने चेहरे की भी खबर है !

जानी—तुम अपनी चेहरे को तो खबर लो ।

दोनों आईने के पास जाके देखती हैं, तो मुँह रँगा हुआ । बहुत शर्मिन्दा हुईं ।

रूहअफ्जा—क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है ?

जानी—अच्छा, क्या मुजायका है मगर अच्छे घर बयाना दिया । आज रात होने दो । ऐसा बदला लूँ कि याद ही करो ।

रूहअफ्जा—हम दरवाजे बंद करके सो रहेंगे । फिर कोई क्या करेगा !

जानी—चाहे दरवाजा बन्द कर लो, चाहे दस मन का ताला डाल दो, हम उस स्याही से मुँह रँगेंगी, जिससे जूते साफ किए जाते हैं ।

रूहअफ़्ज़ा—बहन, अब तो माफ करो । और यों हम हाजिर हैं । जूतों का हार गले में डाल दो ।

इस तरह चहल-पहल के साथ मेंहदी की रस्म अदा हुई ।

एक सौ नवाँ परिच्छेद

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ तारीफ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बहुत झल्लाए और कुछ शहर के अफीम-चियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी—भाइयो ! लोगों का ख्याल है कि अफीम खाकर आदमी किसी काम का नहीं रहता। मैं कहता हूँ, बिलकुल ग़लत। मैंने रूस की लड़ाई में जैसे जैसे काम किए, उस पर बड़े-से-बड़ा सिपाही भी नाज़ कर सकता है। मैंने अकेले दो दो लाख आदमियों का मुकाबिला किया है। तोपों के सामने बेधड़क चला गया हूँ। बड़े-बड़े पहलवानों को नीचा दिखा दिया है। और मैं वह आदमी हूँ, जिसके यहाँ सत्तर पुश्तों से लोग अफ़ीम खाते आए हैं।

लोग—सुभान-अल्लाह ! सुभान-अल्लाह !!

खोजी—रही अक्ल की बात, तो मैं दुनिया के बड़े-से-बड़े शायर, बड़े-से-बड़े फ़िलासफ़र को चुनौती देता हूँ कि वह आकर मेरे सामने खड़ा हो जाय। अगर एक डपट में भगा न दूँ तो अपना नाम बदल डालूँ।

लोग—क्यों न हो।

खोजी—मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफ़ीम की तारीफ करके इसे और गिराँ कर दोगे, क्योंकि जिस चीज की माँग ज्यादा होती है, वह महँगी बिकती है। मैं कहता हूँ कि इस शक को दिल में न आने दीजिए, क्योंकि सबसे ज्यादा ज़रूरत दुनिया में गल्ले की है। अगर माँग के ज्यादा होने से चीजें महँगी हो जायँ तो गल्ला अब तक देखने को भी न मिलता। मगर इतना सस्ता है कि कोरी-चमार, धुनिए-जुलाहे सब खरीदते और खाते हैं। वजह यह कि जब लोगों ने देखा कि गल्ले

की जरूरत ज्यादा है, तो गल्ला ज्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफीम की माँग होगी, तो गल्ले की तरह बोई जायगी और सस्ती बिकेगी। इस-लिए हरएक सच्चे अफीमची का फ़र्ज है कि वह इसके फायदों को दुनिया पर रोशन कर दे।

एक—क्या कहना है! क्या बात पैदा की!

दूसरा—कमाल है, कमाल!

तीसरा—आप इस फ़न के खुदा हैं।

चौथा—मेरी तसल्ली नहीं हुई। आख़िर, अफ़ीम दिन-दिन क्यों महँगी होती जाती है?

पाँचवाँ—चुप रह! नामाकूल! ख्वाजा साहब की बात पर एतराज करता है! जाकर ख्वाजा साहब के पैरों पर गिरो और कहो कि कुसूर माफ़ कीजिए।

खोजी—भाइयो! किसी भाई को ज़लील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खुदा ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है मगर आदमी नहीं आदमी का जौहर है। मैं अपनी ज़बान से किसी को कुछ न कहूँगा। मुझे यही कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा नालायक, सबसे ज्यादा बदनसीब और सबसे ज्यादा जलील हूँ। मैंने मिस्र के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठाके मुझे दे मारा था। जहाँ गया, पिटके आया। गो दुनिया जानती है कि ख्वाजा साहब का जोड़ नहीं मगर अपनी ज़बान से मैं क्यों कहूँ। मैं तो यही कहूँगा कि बुआ ज़ाफ़रान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ़ तक न की।

एक—खुदा बख्शे, आपको। क्या कहना है उस्ताद!

दूसरा—पिट गए और उफ़ तक न की?

खोजी—भाइयो! गोकि मैं अपनी शान में इज्जत के बड़े-बड़े

खिताब पेश कर सकता हूँ मगर जब मुझे कुछ कहना होगा तो यही कहूँगा कि मैं झक मारता हूँ। अगर अपना जिक्र करूँगा तो यही कहूँगा कि मैं पाजी हूँ। मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे जलील समझें ताकि मुझे गुरूर न हो।

लोग—वाह-वाह ! कितनी आजिजी है ! जभी तो खुदा ने आपको यह रुतबा दिया।

खोजी—आजकल ज़माना नाजुक है। किसी ने ज़रा टेढी बात की और धर लिए गए। किसी को एक धौल लगाई और चालान हो गया। हाकिम ने १०) रुपया जुर्माना कर दिया या दो महीने की कैद। अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस जमाने में अगर निवाह है, तो आजिज़ी में। और अफ़ीम से बढ़कर आजिज़ी का सबक देनेवाली दूसरी चीज नहीं।

लोग—क्या दलीलें हैं ! सुभान-अल्लाह !

खोजी—भाइयो ! मेरी इतनी तारीफ़ न कीजिए वरना मुझे गुरूर हो जायगा। मैं वह शेर हूँ, जिसने रण के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया। मगर अब तो आपका गुलाम हूँ।

एक—आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बंद कर दें।

दूसरा—आपके कदमों की खाक लेकर तावीज़ बनानी चाहिए।

तीसरा—इस आदमी की ज़बान चूमने के काबिल है।

चौथा—भाई, यह सब अफ़ीम के दम का ज़हूरा है।

खोजी—बहुत ठीक। जिसने यह बात कही, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं। यह मेरी खानदानी सिफ़त है। एक नकल सुनिए—एक दिन बाज़ार में किसी ने चिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे। उसने कहा, आठ आने। उसी के बगल में एक और छोटा उल्लू भी था। पूछा, इसका क्या क़ीमत है ? कहा, एक रुपया। तब तो गाहक ने कान खड़े किए

और कहा—इतने बडे उल्लू के दाम आठ आने और इस ज़रा-से जानवर का मोल एक रुपया! चिड़ीमार ने कहा—आप तो हैं उल्लू। इतना नहीं समझते कि इस बड़े उल्लू में सिर्फ यह सिफत है कि यह उल्लू है और इस छोटे में दो सिफतें हैं, एक यह कि खुद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पट्ठा है। तो भाइयो! आपका यह गुलाम सिर्फ़ उल्लू नहीं, बल्कि उल्लू का पट्ठा है।

एक—हम आज से अपने को उल्लू की दुम फाख्ता लिखा करेंगे।

दूसरा—हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर जब अपना नाम लिखेंगे तो गधे का नाम बढ़ा देंगे। आज से हम आजिजी सीख गए।

खोजी—सुनिए, इस उल्लू के पट्ठे ने जो जो काम किया, कोई करे तो जानें, उसकी टाँग की राह निकल जायँ। पहाड़ों को हमने काटा और बड़े-बडे पत्थर उठाकर दुश्मन पर फेंके। एक दिन ४४ मनका एक पत्थर हाथ से उठाकर रूसियों पर मारा तो दो लाख पचीस हजार सात सौ उन-सठ आदमी कुचलके मर गए।

एक—ओफ्फोह! इन दुबले हाथ-पाँवों पर यह ताकत!

खोजी—क्या कहा! दुबले-पतले हाथ-पाँव! यह हाथ-पाँव दुबले-पतले नहीं। मगर बदन चोर हैं। देखने में तो मालूम होता है कि मरा हुआ आदमी है, मगर कपडे उतारे और देव मालूम होने लगा। इसी तरह मेरे कद का भी हाल है। गँवार आदमी देखे तो कहे कि बौना है। मगर जाननेवाले जानते हैं कि मेरा कद कितना ऊँचा है। रूस में जब दो-एक गँवारों ने मुझे बौना कहा, तो बेअख्तियार हँसी आ गई। यह खुदा की देन है कि हूँ तो मैं इतना ऊँचा मगर कोई कलियुग की खूँटा कहता है, कोई बौना बताता है। हूँ तो शरीफ़ज़ादा, मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाजी है। असल इस कदर फूट फूटकर भरी है कि अगर फलातून

जिन्दा होता, तो शागिर्दी करता। मगर जो देखता है, कहता है कि यह गधा है। यह दरजा अफीम के बदौलत ही हासिल हुआ है। अब तो यह हाल है कि अगर कोई आदमी मेरे सिर को जूतों से पीटे, तो उफ न करूँ। अगर किसी ने गालियाँ दीं, तो खुश हो गए। अगर किसी ने कहा कि ख्वाजा गधा है, तो हँसकर जवाब दिया कि मैं ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे।

एक—दुनिया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं।

खोजी—मगर इस आजिजी के साथ दिलेर भी ऐसा हूँ कि किसी ने बात कही और मैंने चाँटा जड़ा। मिस्र के नामी पहलवान को मारा, यह बात किसी अफ़ीमची में नहीं देखी। मेरे वालिद भी तोलों अफीम पीते थे और दिन-भर दूकानों पर चिलमें भरा करते थे। मगर यह बात उनमें भी न थी।

लोग—आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया।

ख़ोजी—अब मैं आप लोगों से चडू की सिफत बयान करना चाहता हूँ। बगैर चडू पिए आदमी में इंसानियत आ ही नहीं सकती। आप लोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे, सुनिए—बगैर लेटे हुए कोई चण्डू पी ही नहीं सकता और लेटना अपने को खाक में मिलाना है। बाबा सादी ने कहा है।

खाक शो पेश अजाँ कि खाक शवी।

(मरने से पहले खाक हो जा)

चण्डू की दूसरी सिफ़त यह है कि हरदम लौ लगी रहती है। इससे आदमी का दिल रोशन हो जाता है। तीसरी सिफत यह है कि इसकी पीनक में फ़िक्र करीब नहीं आने पाती। चुस्की लगाई और गोते में आए। चौथी सिफत यह है कि अफीमचीको रात-भर नींद नहीं आती।

और यह बात पहुँचे हुए फक़ीर ही को हासिल होती है। पाँचवीं सिफ़त यह है कि अफ़ीमची तड़के ही उठ बैठता है। सवेरा हुआ और आग लेने दौड़े। और जमाना जानता है कि सवेरे उठने से बीमारी करीब नहीं आती।

इस पर एक पुराने खुर्रांट अफीमची ने कहा—हजरत, यहाँ मुझे एक शक है। जो लोग चीन गए हैं, वह कहते हैं कि वहाँ तीस बरस से ज्यादा उम्र का आदमी ही नहीं। इससे तो यही साबित होता है कि अफीमियों की उम्र कम होती है।

खोजी—यह आपसे किसने कहा ? चीनवाले किसी को अपने मुल्क में नहीं जाने देते। असल बात यह है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है।

लोग—क्या, तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है ! इसका तो यकीन नहीं आता।

एक हाँ-हाँ, होगा। इसमें यक़ीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब औरत तीस बरस की हो जाती है, तब कहीं लड़का पैदा होता है।

खोजी—नहीं नहीं, यह मतलब नहीं है। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता है।

लोग—बिलकुल झूठ ! खुदा की मार इस झूठ पर !

खोजी—क्या कहा ? यह आवाज किधर से आई ? अरे, यह कौन बोला था ? यह किसने कहा कि झूठ है ?

एक—हुजूर, उस कोने से आवाज आई थी।

दूसरा—हुजूर, यह गलत कहते हैं। इन्हीं की तरफ से आवाज आई थी।

खोजी—उन बदमाशों को कत्ल कर डालो। आग लगा दो। हम

और झूठ! मगर नहीं, हमीं चूके। मुझे इतना गुस्सा न चाहिए। अच्छा साहब, हम झूठे, हम गप्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जालसाज और ज़माने-भर के दगाबाज। आप लोग बतलाएँ, मेरी क्या उम्र होगी?

एक—आप कोई पचास के पेटे में होंगे।

दूसरा—नहीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे।

खोजी—एक हुई, याद रखिएगा हजरत। हमारा सिन न पचास का, न साठ का। हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यकीन न आए वह काफिर।

लोग—उफ्फोह, दो ऊपर सौ बरस का सिन है!

खोजी—जी हाँ, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

एक—अगर यह सही है तो वह एतराज उठ गया कि अफीमियों की उम्र कम होती है। अब भी अगर कोई अफीम न पिए, तो बदनसीब है।

खोजी—दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ और अब तक वही खम दम है। कहो हज़ार से लड़ूँ, कहो लाख से। अच्छा, अब आप लोग भी अपने-अपने, तजरबे बयान करें। मेरी तो बहुत सुन चुके अब कुछ अपनी भी कहिए।

इस पर गुट्टू नाम का एक अफीमची उठकर बोला—भाई पंचो! मैं कलवार हूँ। मुल सराब हमारे यहाँ नहीं बिकती। हम जब लड़के-से थे, तब से हम अफीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले। ऐ बस! एक जगह कोई पचास हों, पैंतालिस हों, इतने आदमी खड़े थे। किसी के हाथ में लोटा, किसी के हाथ में पिचकारी। हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से जूता दिया, तो खोपड़ी भन्ना गई। अगर चाहता तो उन सबको डपट लेता, मगर चुप हो रहा।

खोजी—शाबाश! हम तुमसे बहुत खुश हुए गुट्टू।

गुट्टू—हुज़ूर की दुआ से यह सब है।

इसके बाद नूरखाँ नाम का एक अफीमची उठा। कहा—पंचो! हम हाथ जोड़कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफीम, चंडू पीना शुरू किया है। एक दिन हम एक चने के खेत में बैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबाज। आया और मेरा हाथ पकड़कर कानीहौज ले चला। मैं कान दबाए हुए उसके साथ चला गया।

इसके बाद कई अफीमियों ने अपने-अपने हाल बयान किए। आखिर में एक बुड्ढे जोगादरी अफीमी ने खड़े होकर कहा—भाइयो! आज तक अफीमियों में किसी ने ऐसा नाम नहीं किया था। इस लिये हमारा फ़र्ज है कि हम अपने सर्दार को कोई खिताब दें। इस पर सब लोगों ने मिलकर खुशी से तालियाँ बजाईं। और खोजी को गीदी का खिताब दिया। खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई।

एक सौ दसवाँ परिच्छेद

आज बड़ी बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बहार है। बेगमें धमा-चौकड़ी मचा रही हैं।

जानी—दूल्हा के यहाँ तो आज मीरासिनों की धूम है। कहाँ तो मियाँ आज़ाद को नाच-गाने से इतनी चिढ़ थी कि मजाल क्या कोई डोमिनी घर के अंदर क़दम रखने पाए। और आज सुनती हूँ कि तबले पर थाप पड़ रही है। और ग़ज़लें, ठुमरियाँ, टप्पे गाए जाते हैं।

नाज़ुक—सुना है, आज सुरैयाबेगम भी आनेवाली हैं।

बहार—उस मालज़ादी का हमारे सामने ज़िक्र न किया करो।

नाज़ुक—(दाँतों तले उँगली दबाकर) ऐसा न कहो, बहन।

जानी—ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका-सा होना मुशकिल है।

नाज़ुक—यह लोग खुदा जाने क्या समझती हैं सुरैया बेगम को।

बहार—ऐ हैं ! सच कहना, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहब उतरीं। जानी बेगम और नाज़ुकअदा में इशारे होने लगे। यह सुरैया बेगम थीं।

सुरैया—हमने कहा, चलके जरी दुलहिन को देख आएँ।

रूहअफ़ज़ा—अच्छी तरह आराम से बैठिए।

सुरैया—मैं बहुत अच्छी बैठी हूँ। तकल्लुफ़ क्या है।

नाज़ुक—यहाँ तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया—मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूँ।

सिपहआरा—और हमसे भी ?

सुरैया—हाँ, तुमसे भी मिले थे, मगर बताएँगे नहीं।

सिपहआरा—कब मिले थे, अल्लाह ! किस मकान में थे ?

सुरैया—अजी मैं मज़ाक करती थी। हुस्नआरा बेगम को देखकर दिल शाद हो गया।

नाज़ुक—क्या हमसे ज्यादा खूबसूरत हैं ?

सुरैया—तुम्हारा तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाज़ुक—भला दूल्हा से आपसे बातचीत हुई थी ?

सुरैया—बातचीत आपसे हुई होगी। मैंने तो एक दफ़ा राह में देखा था।

नाज़ुक—भला दूसरा निकाह भी मंज़ूर करते हैं वह।

सुरैया—यह तो उनसे कोई जाके पूछे।

नाज़ुक—तुम्हीं पूछ लो बहन, खुदा के वास्ते।

सुरैया—अगर मंजूर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या।

नाजुक—फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब ?

रूहअफ़ज़ा—आखिर, दूसरे निकाह के लिये किसे तजवीजा है ?

नाजुक—हम खुद अपना पैग़ाम करेंगे।

रूहअफ़ज़ा—बस, हद हो गई नाजुकअदा बहन। ओफ्फ़ोह !

नाजुक—(आहिस्ता से) सुरैया बेगम तुमने ग़लती की। धीरज न रख सकीं।

सुरैया—

हम जान फ़िदा करते, गर वादा वफ़ा होता,
मरना ही मुक़द्दर था, वह आते तो क्या होता !

नाजुक—हाँ, है तो यही बात। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ। मसलहत भी यही थी।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाजुक बेगम की बातों क तौला, तो समझ गई कि हो न हो, सुरैया बेगम यही है। कनखियों से देखा और गरदन फेरकर इशारे से सिपहआरा को बुलाकर कहा—इनको पहचाना ? सोचो तो, यह कौन हैं ?

सिपहआरा—ऐ बाजी, तुम तो पहेलियाँ बुझवाती हो।

हुस्नआरा—तुम ऐसी तबीयतदार, और अब तक न समझ सकीं ?

सिपहआरा—तो कोई उड़ती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता।

हुस्नआरा—उस शेर पर ग़ौर करो।

सिपहआरा—अल्लाह ! (सुरैया बेगम की तरफ देखकर) अब समझ गई।

हुस्नआरा—है औरत हसीन ?

सिपहआरा—हाँ है, मगर तुमसे क्या मुकाबिला।

हुस्नआरा--सच कहना, कितनी जल्द समझ गई हूँ।

सिपहआरा—इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कब मिली थीं? मुझे तो याद नहीं आता।

हुस्नआरा—खुदा जाने। अलारक्खी बन के आने न पाती, जोगिन के भेस में कोई फटकने न देता। शिब्बो जान का यहाँ क्या काम?

सिपहआरा—शायद महरी-वहरी बनके गुजर हुआ हो।

हुस्नआरा—सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है। इन्हें तो यह चाहिए था कि जहाँ आज़ाद का नाम सुनतीं, वहाँ से हट जातीं न कि ऐसी जगह आना!

सिपहआरा—इनसे यहाँ तक आया क्योंकर गया?

हुस्नआरा—ऐसा न कहो कि यहाँ कोई गुल खिले।

सिपहआरा ने जाकर बहार बेगम से कहा—जो बेगम अभी आई हैं, उनको तुमने पहचाना? सुरैया बेगम यही हैं। तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए। ग़ौर से देखकर बोलीं—माशा-अल्लाह! कितनी हसीन औरत है! ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आई।

सिपहआरा—बाजी को खौफ है कि कोई गुल न खिलाएँ।

बहार—गुल क्या खिलाएँगी। अब तो इनका निकाह हो गया।

सिपहआरा—ऐ है, बाजी! निकाह पर न जाना। यह वह खिलाड़ हैं कि घूँघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार—ऐ नहीं, क्यों बिचारी को बदनाम करती हो।

सिपहआरा—वाह! बदनामी की एक ही कही। कोई पेशा, कोई कर्म इनसे छूटा? लगावटबाजी में इनकी धूम है।

बहार—हम जब इस ढब पर आने भी दें।

उधर नाज़ुकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगम से पूछा—

बहन, यह बात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहाँ से क्यों निकल आई। सुरैया बेगम ने कहा—बहन, इस जिक्र से रंज होता है। जो हुआ, वह हुआ, अब उसका घड़ी-घड़ी जिक्र करना फ़ुज़ूल है। लेकिन जब नाज़ुकअदा बेगम ने बहुत जिद् की तो उन्होंने ने कहा—बात यह हुई कि बेचारे पादरी ने मुझ पर तरस खाकर अपने घर में रक्खा और जिस तरह कोई ख़ास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरह मुझसे पेश आते। मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझसे रोज कहते कि तुम ईसाई हो जाओ लेकिन मैं हँसके टाल दिया करती थी। एक दिन पादरी साहब तो चले गए थे किसी काम को, उनका भतीजा, जो फ़ौज में नौकर है, उनसे मिलने आया। पूछा—कहाँ गए हैं? मैंने कहा—कहीं बाहर गए हैं। इतना सुनना था कि वह गाड़ी से उतर आया और अपनी जेब से शराब की बोतल निकाल कर पी। जब नशा हुआ तो मुझसे कहने लगा, तुम भी पियो। उसने समझा, मैं राजी हूँ। मेरा हाथ पकड़ लिया। मै उससे अपना हाथ छुडाने लगी। मगर वह मर्द, मैं औरत! फिर फौजी जवान, कुछ करते-धरते नहीं बनता थी। आख़िर बोली—साहब, तुम फौज के जवान हो। मैं भला तुमसे क्या जीत पाऊँगी? मेरा हाथ छोड़ दो। इस पर हँसकर बोला—हम बिना पिलाए न मानेंगे। मेरा तो खून सूख गया। अब करूँ तो क्या करूँ। अगर किसी को पुकारती हूँ, तो यह इस वक्त मार ही डालेगा। और बेइज्ज़त करने पर तो तुला ही हुआ है। चाहा कि झपटके निकल जाऊँ पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला—हमसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मेरा बदन थर-थर काँप रहा था कि या खुदा आज कैसे इज्ज़त बचेगी। और क्या होगा! मगर आबरू का बचानेवाला अल्लाह है। उसी वक्त पादरी साहब आ पहुँचे। बस, अपना-सा मुँह लेकर रह

गया। चुपके से खिसक गया। पादरी साहब उसको तो क्या कहते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता हो, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज़ करता है। जब वह भाग गया, तो मेरे पास आकर बोले—मिस पालेन, अब तुम यहाँ नहीं रह सकतीं।

मैं—पादरी साहब, इसमें मेरा ज़रा कुसूर नहीं।

पादरी—मैंने खुद देखा कि तुम और वह हाथापाई करते थे।

मैं—वह मुझे जबर्दस्ती शराब पिलाना चाहते थे।

पादरी—अजी मैं खूब जानता हूँ। मैं तुमको बहुत नेक समझता था।

मैं—पूरी बात तो सुन लीजिए।

पादरी—अब तुम मेरी आँखों से गिर गईं। बस, अब तुम्हारा निबाह यहाँ नहीं हो सकता। कल तक तुम अपना बंदोबस्त कर लो। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे यह ढंग हैं।

उसी दिन रात को मैं वहाँ से भागी।

उधर बड़ी बेगम साहब इंतजाम करने में लगी हुई थीं। बात बात पर कहती जाती थीं कि अल्लाह! आज तो बहुत थकी। अब मेरा सिन थोड़ा है कि इतने चक्कर लगाऊँ। उस्तानीजी हाँ-में-हाँ मिलाती जाती थीं।

बड़ी बेगम—उस्तानीजी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गई।

उस्तानी—अरे तो हुज़ूर, दौड़ती भी कितना हैं! इधर से उधर, उधर से इधर।

महरी—दूसरा हो तो बैठ जाय।

उस्तानी—इस सिन में इतनी दौड़-धूप मुशकिल है।

महरी—ऐसा न हो, दुश्मनों की तबीयत ख़राब हो जाय। आख़िर हम लोग किस लिए हैं?

बड़ी बेगम—अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जायगा। इसके बाद करना ही क्या है।

उस्तानी—यह क्यों? खुदा सलामत रक्खे, पोते-पोतियाँ न होंगे?

बड़ी बेगम—बहन, जिंदगानी का कौन ठिकाना है।

अब बरात का हाल सुनिए। कोई पहर रात गए बड़ी धूम-धाम से बरात रवाना हुई। सबके आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। हाथी के सामने कदम-कदम पर अनार छूटते जाते थे। महताब की रोशनी से चाँद का रंग फ़क़ था। चर्ख़ी की आन-बान से आसमान का कलेजा शक़ था। तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ़ के कमरे फटे पड़ते थे। जिस वक्त गोरों का बाजा चौक में पहुँचा और उन्होंने बैंड बजाया तो लोग समझे, आसमान से फरिश्ते बाजा बजाते-बजाते उतर आए हैं।

इतने में मियाँ खोजी इधर-उधर फुदकते नज़र आए।

ख़ोजी—ओ शहनाईवालो! मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—आइए, आइए! बस, आप ही की कसर थी।

ख़ोजी—अरे हम क्या कहते हैं? मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—कोई आपकी सुनता ही नहीं।

खोजी—ये तो नौसिखिए हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे।

लोग—इनसे कुछ फ़र्माइश कीजिए।

ख़ोजी—अच्छा, वल्लाह! वह समाँ बाँधूँ कि दंग हो जाइए! यह चीज़ छेड़ना भाई।

करेजवा मे दरद उठी;
कासे कहूँ ननदी मोरे राम।

सोती थी मैं अपने मँदिल में;
अचानक चौंक पड़ी मोरे राम।
(करेजवा में दरद उठी..।)

लोग—सुभान-अल्लाह! आप इस फ़न के उस्ताद हैं। मगर शह-नाईवाले अब तक आपका हुक्म नहीं मानते।

ख़ोजी—नहीं भई, हुक्म तो मानें दौड़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूँ। मगर इसको क्या किया जाय कि घनाढी हैं। बस, ज़रा मुझे आने में देर हुई और सारा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने खोजी के नजदीक जाकर जरा कंधे का इशारा किया तो ख़ोजी लड़खड़ाए और उनके चेले अफीमी भाइयों ने बिग-डना शुरू किया।

एक—अरे मियाँ! क्या आँखों के अंधे हो?

दूसरा—ईंट की ऐनक लगाओ मियाँ।

तीसरा—और जो ख्वाजा साहब को भी धक्का देते तो कैसी होती?

चौथा—मुँह के बल गिरे होते और क्या।

पाँचवाँ—अजी यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती।

खोजी—अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से लड़ते झगड़ते थोड़े ही हैं। मगर हाँ, अगर कोई शोदा हमसे बोले तो इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि याद करे।

जब बरात दुलहिन के घर पहुँची तो दूल्हे को दरवाज़े के सामने लाए और दुलहिन का नहाया हुआ पानी घोड़े के सुमों के नीचे डाला। इसके बाद घी और शक्कर मिलाकर घोड़े के पाँव में लगाया। दूल्हा महल में आया। दूल्हा की बहनें उस पर दुपट्टे का अंचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ से औरतें धीड़ा हर कदम पर डालती जाती

थीं। इस तरह दूल्हा मँडवे के नीचे पहुँचा। उसी वक्त एक औरत उठी और रूमाल से आँखें पोंछती हुई बाहर चली गई। यह सुरैया बेगम थीं।

आज़ाद मँडवे के नीचे उस चौकी पर खड़े किए गए, जिस पर दुलहिन नहाई थी। मीरासिनों ने दुलहिन के उबटन का, जो माँझे के दिन से रक्खा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कहा—कहिए, दूल्हा भेड दुलहिन शेर।

आज़ाद—अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़, बस।

डोमिनी—ऐ वाह! यह तो अच्छे दूल्हा आए। आप भेड वह शेर!

आज़ाद—अच्छा साहब, यों सही। आप भेड, वह शेर।

डोमिनी—ऐ हुजूर! कहिए, यह शेर मैं भेड।

आज़ाद—अच्छा साहब, मैं भेड़ यह शेर।

इस पर खूब कहकहा पड़ा। इसी तरह और भी कई रस्में अदा हुईं, और तब दूल्हा महफिल में गया। यहाँ नाच-गाना हो रहा था। एक नाज़नीन बीच में बैठी थी, मज़ाक हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फिक़रा कसा—बी साहब, आपने गज़ब का गला पाया है। उसकी तारीफ ही करना फुजूल है।

नाज़नीन—कोई समझदार तारीफ करे तो खैर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ़ की तो क्या?

नवाब—ऐ साहब, हम तो खुद तारीफ करते हैं।

नाज़नीन—तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं? बतलाइए, यह बिहाग का वक्त है या घनाक्षरी का।

नवाब—यह किसी दाढ़ी बचे से पूछो जाके।

नाजनीन—ऐ लो! जो इस फन के नुकते समझे, वह दाढ़ी-बचा

कहलाए। वाह री अक्ल ! वह अमीर नहीं, गंवार है, जो दो बातें न जानता हो—गाना और पकाना। आपके-से दो-एक बामज़ाक रईस शहर में और हों तो सारा शहर बस जाय।

नाजनीन ने यह ग़ज़ल गाई—

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाकी;
रुके न हाथ अभी है रगे-गुलू बाकी।
जो एक रात भी सोया वह गुल गले मिलकर;
तो भीनी-भीनी महीनों रही है बू बाकी।
हमारे फूल उठाके वह बोला गुंच-देहन;
अभी तलक है मुहब्बत की इसमें बू बाकी।
फ़िना है सबके लिये मुझप' कुछ नहीं मौकूफ़;
यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाक़ी।
जो इस ज़माने में रह जाय आबरू बाकी।

नवाब—हाँ, यह सबसे ज्यादा मुकद्दम चीज़ है।

नाज़नीन—मगर हयादारों के लिये। बगड़ेवाजों को क्या ?

इस पर इस ज़ोर से कहकहा पड़ा कि नवाब साहब झेंप गए।

नाज़नीन—अब कुछ और फरमाइए हुज़ूर ? चेहरे का रंग क्यों फक हो गया ?

मिरजा—आपसे नवाब साहब बहुत डरते हैं।

नवाब—जी हाँ, हरामज़ादे से सभी डरा करते हैं।

नाज़नीन—ऐ है ! अभी आप अपने अब्बाजान से इतना डरते हैं।

इस पर फिर कहकहा पड़ा और नवाब साहब की जबान बंद हो गई।

उधर दुल्हिन को सात सुहागिनों ने मिलकर इस तरह सँवारा कि

हुस्न की आब और भी भड़क उठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। काजी साहब अंदर आए और दो गवाहों को साथ लाए। इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आज़ाद पाशा के साथ निकाह मंजूर है ? दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया।

बड़ी बेगम—ऐ बेटा, कह दो।

रूहअफ़ज़ा—हुस्नआरा, बोलो बहन। देर क्यों करती हो ?

नाज़ुक—बस, तुम हाँ कह दो।

जानी—(आहिस्ता से) बजरे पर सैर कर चुकीं, हवा खा चुकीं और अब इस वक्त नखरे बघारती हैं।

आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से "हूँ" कहा।

बड़ी बेगम—लीजिए, दुलहिन ने हुँकारी भरी।

काज़ी—हमने तो आवाज़ नहीं सुनी।

बड़ी बेगम—हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं।

काज़ी साहब ने बाहर आकर दूल्हा से भी यही सवाल किया।

आज़ाद—जी हाँ, क़ुबूल किया।

काज़ी साहब चले गए और महफ़िल में तायफ़ों ने मिलकर मुबारकबाद गाई। इसके बाद एक परी ने यह ग़ज़ल गाई—

तड़प रहे हैं शबे इंतज़ार सोने दे,
न छेड़ हमको दिले-बेकरार सोने दे।
क़फ़स मे आँख लगी है अभी असीरों की,
गरज न बाग़ में अबरे-बहार सोने दे।
अभी तो सोए है यादे-चमन में अहले-कफ़स;
जगा उनको नसीमे-बहार सोने दे।
तड़प रहे हैं दिले-बेकरार सोने दे।

शरबत-पिलाई के बाद दूल्हा और दुलहिन एक ही पलंग पर बिठ
गए। गेतीआरा ने कहा—बहन, जूती तो छुआओ।

जानी—वाह! यह तो सिमटी सिमटाई बैठी है।

बहार—आख़िर हया भी तो कोई चीज़ है।

नाज़ुक—अरे जूती कंधे पर छुआ दो बहन, वाह!

उस्तानी—अगले वक्तों में तो सिर पर पड़ती थी।

नाज़ुक—इस जूती का मज़ा कोई मर्दों के दिल से पूछे।

जब दुलहिन ने ज़रा भी जुम्बिश न की तो बहार बेगम ने दुलहिन के
दाहने पैर की जूती दूल्हा के कंधे पर छुला दी।

नाज़ुक—कहिए, आपकी डोली के साथ चलूँगा।

रूहअफ़ज़ा—और जूतियाँ झाड़के धरूँगा।

जानी—और सुराही हाथ में ले चलूँगा।

आज़ाद—ऐं! क्यों नहीं, ज़रूर कहूँगा।

नाज़ुक—ऐं वाह! अच्छा रंग लाए।

जानी—रंडियों के नखरे बहुत सीखे हैं।

इस फ़िकरे पर ऐसा कहकहा पड़ा कि मियाँ आज़ाद शर्मा गए।
जानी बेगम इस्कीम पान का बीड़ा लाईं और उसे कई बार आज़ाद के
मुँह तक ला-लाकर हटाने के बाद खिला दिया।

सिपहआरा सुहागा लाईं और दूल्हा के कान में कहा—कहो,
मैं सुहागा मोतियों में भागा और बन्ने का जी बन्नी से लागा।

इसके बाद आरसी की रस्म अदा हुई।

जानी—बन्नू, जल्दी आँख न खोलना?

नाज़ुक—जब तक अपने मुँह से गुलाम न बनें।

हैदरी—कहिए बीबी, मैं आप का गुलाम हूँ।